JAN SAHITY 1964 G.K.V.

Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Google

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
078742
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078742

COMPILED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RT-01302

जन-साहित्य

(मासिक प्रकाशन—अप्रैल, १९६४)

इमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः

वर्ष ३ अंक ४

अनुक्रम

१. सम्पादकीय		
२. गीत	श्री त्रिलोकी नाथ "रंजन"	१
३. एक दूसरी औरत (कहानी)	श्री सुखवीर	३
४. तांत्या टोपे (एकांकी)	डा० सुरेश चन्द्र शुक्ल	१२
५. गीत	श्रीमती सुदर्शन बाहरी	२२
६. अनचाही याद (कहानी)	श्री पीताम्बर,	२३
७. रावण वध के पश्चात	श्री पीताराम बाहरी	३३
८. हृदय परिवर्तन (रेडियो रूपक)	श्री जयनाथ मणि त्रिपाठी	३५
९. नेहरू की ललकार (कविता)	श्री कृष्ण कुमार खन्ना	३९
१०. कंचन कुमार (बंगला कहानी)	श्री परशुराम	४०
११. कविता	डा० रवीन्द्र कुमार जैन	५२
१२. दो चेहरे (कहानी)	श्री कंवर गुलाटी	५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३. मण्डी : जहां हिमाचल का मानसरोवर है	श्री खेमराज गुप्त	६०
१४. उसका कोई (कहानी)	श्री शैलेन्द्र	६९
१५. भारतीय शहीद के प्रति	श्री शिवकुमार शर्मा	७४
१६. भागम भाग युग और ज्ञानी जी	श्री ईश्वर चन्द्र शर्मा	७५
१७. समाधि के फूल (एकांकी)	श्री शशि भूषण शर्मा	७८
१८. ज्ञान तरंग		८७
१९. विभागीय गतिविधियां		८८
२०. पुस्तक-समीक्षा		९२

सम्पादक--डा० परमानन्द

परामर्श समिति :-

१. श्री कृष्ण मधोक
२. श्री त्रिलोकी नाथ 'रञ्जन'
३. श्री साधुराम शारदा
४. श्री गुरुदत्त शर्मा
५. श्री हरिचन्द पाराशर

हिन्दी विभाग, पंजाब, पटियाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

078742

साहित्यिक समारोह

पंजाब भाषा विभाग की ओर से १४, १५ मार्च १९६४ को बृहत साहित्यिक समारोह का आयोजन किया गया। पंजाब भर के साहित्यकार इस आयोजन में सम्मिलित हुए। इन साहित्यकारों में हिन्दी, पंजाबी तथा उर्दू के विख्यात विद्वानों, प्राध्यापकों, लेखकों तथा साहित्य सेवियों का उल्लेख किया जा सकता है।

पहले दिन बृहत समारोह केन्द्रीय मन्त्री, प्रो० हमायूं कबिर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस समारोह में हिन्दी, पंजाबी तथा उर्दू के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकारों तथा राज्यकवियों को सम्मानित किया गया। पंजाब के प्रसिद्ध समीक्षा शास्त्री डा० इन्द्रनाथ मदान को ११०० रुपए, आदरी वस्त्र तथा अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किए गए।

डा० इन्द्रनाथ मदान ने पंजाब में हिन्दी के अध्ययन अध्यापन का बीजारोपण किया। पंजाब विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के विस्तार का श्रेय आपको ही है। आपने इस विभाग को वटवृक्ष के रूप में परिणत कर दिया। आपकी लेखनी से आधुनिक नई कहानी तथा नई कविता के मानदंड निर्धारित करने में बड़ा योग मिला है।

अपने सम्मान के समय जिस त्याग का परिचय डा० मदान ने दिया है, वह अपूर्व है। आपने ग्यारह सौ रुपए की थैली हिन्दी के धुरन्धर विद्वान् आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी जी को समर्पित कर दी ताकि वे इसका हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए सदुपयोग कर सकें। आपने अभिनन्दन का उत्तर देते हुए जिस विनयभाव एवं स्पष्टता का परिचय दिया, वह अनुपम है। आपने कहा कि "मुझे गल्ती से साहित्यकार समझ लिया गया।" डा० मदान का सम्मान वस्तुतः पंजाब में हिन्दी की प्रगति का सम्मान कहा जा सकता है।

क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस वर्ष [illegible] दी गई। इस वर्ष हिन्दी के प्रसिद्ध कवि प्रो० परमानन्द शर्मा को राज्यकवि घोषित किया गया। अंग्रेजी के प्राध्यापक होते हुए भी आपने हिन्दी में 'छत्रपति शिवाजी' तथा 'छत्रसाल' आदि महाकाव्यों की रचना की है। प्रो० साहब ने अभिनंदन का उत्तर अपनी कविता में दिया।

असहाय लेखकों को भी सहायतार्थ धनराशि दी गई। राज्यपाल महोदय के एतदर्थ निधि-संस्थापन की मुक्तकंठ से प्रशंसा की जा रही है।

उस दिन सायंकाल लेखक गोष्ठी में पंजाबी तथा उर्दू के दो विद्वानों ने क्रमशः 'पंजाबी तथा उर्दू के भारतीय साहित्य को योगदान' नामक विषयों पर प्रकाश डाला। 'भारतीय साहित्य के प्रति हिन्दी के योगदान' नामक विषय का सुचारु प्रतिपादन पंजाब के भूतपूर्व शिक्षामंत्री, श्री यश जी ने किया। आपके भाषण का सारांश पाठकों के लाभ के लिये इसी अंक में उद्धृत किया जा रहा है। इस गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए पंजाब के वित्त एवं भाषा मंत्री डा० गोपीचंद भार्गव ने गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कहा कि प्रत्येक भाषा ने मां भारती का भंडार भरने के लिए अपना अपना महत्त्वपूर्ण योग दिया है। अध्यक्षीय भाषण देते हुए पंडित अमरनाथ विद्यालंकार ने कहा कि प्रत्येक भाषा की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं जिनकी छाप समग्र भारतीय साहित्य पर परिलक्षित होती है।

रात्रि को पंजाब विधान परिषद् के अध्यक्ष सरदार कपूरसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए कवि दरबार से श्रोताओं का पर्याप्त मनोरंजन हुआ।

अगले दिन का कार्यक्रम हिन्दी शोध गोष्ठी का प्रारंभ हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी के शोध-पत्र--"कालिदास और लालित्य" से हुआ। इस विषय का प्रतिपादन इतना रोचक था कि श्रोतागण मन्त्रमुग्ध हो गए। भावों, विचारों के अजस्र प्रवाह से आचार्य द्विवेदी ने इस दुरूह विषय को हस्तामलकवत सुगम बना दिया। डा० विनय मोहन शर्मा ने "खड़ी बोली और उसका पंजाब में व्यवहृत रूप" नामक शोधपत्र पढ़ा। आपने प्रमाणों एवं उदाहरणों से इस बात की पुष्टि की कि पंजाब की भाषा खड़ी बोली का ही एक व्यवहृत रूप है। इसके बाद, प्रो० बलराज शर्मा ने "संतकवि तुलसीदास की दार्शनिक पृष्ठभूमि" नामक विषय की समीचीन व्याख्या की। आपका शोधपत्र अतीव परिश्रम का द्योतक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। आपने गोस्वामी तुलसीदास के समय उनके साहित्य का अध्ययन करके इस अछूते विषय पर अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किए। अध्यक्षीय भाषण देते हुए लोकसम्पर्क विभाग के अध्यक्ष श्री हरिश्चन्द्र खन्ना ने साहित्यिकों को अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरुक कराया और कहा कि आज ऐसे स्वस्थ साहित्य की रचना की आवश्यकता है।

इसी प्रकार की पंजाबी शोध-गोष्ठी के बाद रात को एक विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कवि-सम्मेलन के अध्यक्ष एवं कराधान मन्त्री पंजाब, श्री रामसरन चन्द मित्तल ने कवियों द्वारा समाज को संकटकाल में दिए गए योग की सराहना की। हिन्दी के विख्यात कवियों ने अपनी मनोहर रचनाओं द्वारा श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध बनाए रखा। इस कवि सम्मेलन को सुनने के लिए लगभग दस हजार व्यक्ति उपस्थित थे। इस सफलता को देख कर हिन्दी कविसम्मेलनों के उज्ज्वल भविष्य की आशाएँ व्यक्त की जा रही थी। श्रोताओं के तीव्र अनुरोध के कारण श्री देवराज दिनेश तथा अन्य कवियों ने दूसरी बार अपनी रचनाओं का पाठ किया।

इस साहित्यिक समारोह से पंजाब के साहित्यकारों को एक मंच पर किसी भेदभाव के बिना एकत्र होने का सुअवसर मिला। लेखक गोष्ठी तथा शोध गोष्ठी में आज तक अछूते साहित्यिक विषयों का विवेचन हुआ। विराट कवि सम्मेलनों ने साहित्यास्वादन के ऐसे वातावरण का सृजन किया जिससे राष्ट्र निर्माण के लिए प्रचुर परिमाण में प्रेरणा मिलेगी।

इस प्रकार इन साहित्यिक समारोहों से ऐसे स्वस्थ वातावरण का निर्माण होता है जिससे निस्संदेह सत्यं, शिवं, सुन्दरम् के स्पृहणीय आदर्शों को प्रोत्साहन मिलेगा।

५/२.१५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्याग

त्याग आपको हिमालय के घने जंगल में जाने का आदेश नहीं देता, त्याग आपसे कपड़े उतार डालने का आग्रह नहीं करता, त्याग आपको नंगे पाँव और नंगे सिर घूमने के लिए नहीं कहता ।

त्याग न तो अकर्मण्य, लाचारी और नैराश्यपूर्ण निर्बलता है । और न दर्पपूर्ण तपश्चर्या ही । ईश्वर के पवित्र मन्दिर अर्थात् शरीर को बिना प्रतिरोध मांसाहारी निर्दय भेड़ियों को खाने देना कोई त्याग नहीं है ।

ईश्वरत्व और त्याग पर्यायवाची शब्द हैं । संस्कृति और सदाचार उसकी बाह्य अभिव्यक्तियां हैं । अहंकारपूर्ण जीवन का छोड़ देना ही त्याग है और वही सौन्दर्य है ।

हृदय की शुद्धता है अपने आपको सांसारिक पदार्थों की आसक्ति से अलग, पृथक् रखना । त्याग का अर्थ इससे रंचमात्र कम नहीं ।

कामना से रहित कर्म ही सर्वोत्तम त्याग अथवा पूजन है ।

—स्वामी रामतीर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
78222

गीत

श्री 'रंजन'

भीगी पलकों के दर्पण में भी देख !
केवल कजरारी आंखों से अभिसार न कर !
केवल मीठी मुस्कानों से ही प्यार न कर !

'जो घाट-घाट में चमका करता है—
यह सच तो नहीं कि सब कुछ सोना हो।
क्या अचरज दीप-शिखा के घर में भी
मन का कोई अंधेरा कोना हो ।

पतझारों को भी हँसकर गले लगा
केवल बसन्त के दो दिन से मनुहार न कर !

यों बूंद-बूंद सागर तक आती है,
हर बूंद न पर सीपी का मोती है,
ओ दुख से घबराने वाले, सुनले—
'गीतों की जननी पीड़ा होती है।'

स्वर में कुछ घोल हृदय का अपनापन
केवल खाली छन्दों को ही झंकार न कर !

कहते ने बने जो खिलते फूलों से
मुरझाई पाँखुरियां कह जाती हैं,
तुम कहो उसे बेचैनी या पीड़ा
विद्रोहों को वे ही घर लाती हैं,

नयनों की अपनी भी तो भाषा है,
केवल ओठों को बार-बार लाचार न कर !

यों कहने को हर रात अँधेरी है,
पर रात भोर को राह दिखाती है,
बेहोशी का ही नाम नींद लेकिन
पल दो पल को सब कष्ट भुलाती है,

जो मिले पिपासित उसकी प्यास बुझा
केवल पनघट पर ही अपना अधिकार न कर।

सुख-दुख दोनों अपने सहपाठी हैं,
सुधियों के चौराहों पर मिलते हैं,
नोकीले कांटे हों कि फूल कोमल
बगिया में एक साथ ही खिलते हैं,

कुटिया के घायल दिल को भी सहला
केवल ऊंचे महलों का ही सत्कार न कर ! ●

लाल बाग, पटियाला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दूसरी औरत

सुखबीर

आज बड़ा सुहाना दिन चढ़ा था । पिछले तीन चार दिन तो बरसात होती रही थी, मैला आसमान था और उदास चौगिरदा । हर चीज़ भीगी हुई, चू रही, निचुड़ रही । अन्दर बाहर एक नमी ही नमी । न सुबह का पता लगता था कब आई है, न दोपहर का पता लगता था, न शाम का । और रात आती थी तो एक अजीब-सा डर लेकर आती थी ।

पर आज की सुबह रोशनी लेकर आई थी । आसमान साफ था और चारों ओर का वातावरण निखरा हुआ । शीला को महसूस हुआ जैसे बहुत दिनों के बाद वह सोई उठी थी । यह पिछले दिन, जबसे उसका पति 'टूर' पर गया हुआ था, ऐसे बीते थे कि पता नहीं कैसे बीते थे । एक अकेलापन था, एक लम्बी उदासी और जीवन की कमी खतम न होने वाली उकताहट ।

विवाह के नौ वर्षों में से यह पिछले सात वर्ष इसी प्रकार बीत गये थे । शीला का पति एक कम्पनी में टूरिंग सेल्ज़मैन था । महीने के अधिकांश दिन वह शहर से बाहर ही रहता । कई बार तो दो-दो महीने तक न लौटता । और शीला अकेली ही दिन काटती । यह अकेलापन खाने को आता था, घर खाली खाली लगता था, और दिल में एक हौल उठा करता था । पर फिर जैसे इस जीवन की एक आदत ही बन गई थी । बस विवाह के पहले दो वर्ष ही स्वाद से बीते थे, जब उस छोटे से घर में पति का संग होता था और घर भरा-भरा सा लगता था । फिर पति को अच्छी बड़ी तनख्वाह वाली यह नई नौकरी मिल गई थी और पति के साथ वह भी बहुत खुश हुई थी । उन्होंने अपना पुराना घर छोड़ कर यह नया फ्लैट ले लिया था । पर कुछ ही महीने के पश्चात् शीला को लगा था कि छोटे-छोटे दो कमरों वाला वह पहला घर कहीं अच्छा था । भरा-भरा तो लगता था । पर इस फ्लैट के तीनों कमरे जैसे खाली खाली से लगते । पीछे की ओर खुलने वाले एक कमरे में तो वह जाती ही नहीं थी । उसे सदा बन्द रखती थी । बस पति के आने पर ही वह खुलता था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काश, उसका कोई बच्चा ही होता। यह नौ वर्ष बच्चे की आशा में ही बीत गए थे। बच्चा होता तो घर न इस प्रकार खाली-खाली सा लगता, न जीवन इतना शून्य और उदास लगता।

आज सुहाना दिन चढ़ा था तो शीला की लम्बी उदासी में एक हल्की-सी चमक पैदा हुई। और फिर वह बिस्तर पर से उठ कर घर के छोटे मोटे काम काज में लग गई। उसने नाश्ता तैयार किया, चाय बनाई और खा पीकर खिड़की के पास आकर बैठ गई। खिड़की का लाल पर्दा हटा कर उसने बाहर देखा : वृक्षों और पौधों के रंग उघड़ आए थे। वे बिल्कुल नये लगते थे। और उनमें सफेद और पीले रंग के फूल टहक रहे थे। साफ पानी की धारायें बह रही थीं। एक पक्षी इधर उधर उड़ रहा था। किसी पौधे पर बैठता, उसके पत्तों में चोंच मारता, इधर-उधर देखता और उड़ जाता। फिर किसी और पौधे पर बैठता, पंखों पर चोंच रगड़ता, कुछ देर तक एक टक सामने देखता रहता और जैसे कोई बात याद आई हो, उड़ जाता। किसी किसी समय कोई राही गुजरता। कोई आदमी, कोई स्त्री, कोई बच्चा ! धूप निखर आई थी। और आसमान ऊंचा हो गया था.....

शीला देखती रही, देखती रही और अचानक उसे रात के एक सपने का ख्याल आया। वह सपना याद करने लगी। पर वह पूरी तरह उसके सामने साकार नहीं हो रहा था। वह उलझा हुआ सपना था और टूटा हुआ, टूट-टूट कर जुड़ा हुआ। उसका कोई सिर पांव नहीं बन रहा था। उसमें एक बूढ़ी स्त्री थी जो सिर पर एक छोटी सी गठरी उठाए जा रही थी। उसका एक पांव कहीं पड़ता था, दूसरा कहीं। देखते देखते वह गायब हो गई और गठरी जैसे हवा में लटकने लगी। फिर उस पर एक काला सांप बैठा हुआ दिखा। उसका कुचला हुआ सिर नीचे की ओर लटक रहा था। उसी समय कहीं दूर से बीन के बजने की आवाज़ आई। पर नहीं, यह तो शहनाई की आवाज़ थी। नहीं बीन ! तभी जोर का धमाका हुआ। शीला की आँख खुली और फिर बन्द हो गई। तभी उसने देखा, वह गठरी नीचे गिरी पड़ी थी और उसमें की चीजें बिखरी हुई थीं। और उस पर बैठा हुआ सांप एक तरफ भागा जा रहा था.....

सोचते-सोचते शीला को एक डर सा अनुभव हुआ। उसने उधर से मन हटाने का यत्न किया, पर बार-बार वह सपना उसके सामने आता रहा। और फिर उसके साथ कई और पुराने सपने जुड़ने लगे, टूटने लगे, बिखरने लगे। उसे बहुत सपने आते थे। अजीब-अजीब किस्म के सपने। उस समय उसके सामने अन्धकार था और अनगिनत टूटे हुए सपने उस अन्धकार में बिखरे हुए थे। उसे एक झुनझुनी-सी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आई, उसने सिर को झटका और उठ खड़ी हुई ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठ कर वह घर की साफ सफाई करने लगी । फिर नहाने चली गई । नहा कर निकली तो उसे अपना आपा बहुत हल्का सा लगा । हल्के आसमानी रंग की साड़ी में उसने एक ताज़गी सी महसूस की । शीशे के सामने खड़े होकर उसने अपने बालों में कंघी की अब उन बालों में यद्यपि पहले की सी चमक नहीं रही थी, पर वे बाल अभी भी बहुत लम्बे थे और मुलायम । उसने नई किस्म का जूड़ा किया । एक लट बालों में से निकाल ली जो उसके माथे पर एक लापरवाह अन्दाज़ में लहरा गई । उसी समय शीला ने ज़रा आगे होकर शीशे में देखा । उसे अपने बालों में चार-पाँच सफेद बाल दिखे । उसे कुछ हैरानी हुई । अभी परसों तो उसने तीन चार सफेद बाल उखाड़े थे । दूसरे चौथे जब देखो नये उग आते हैं । वह कुछ देर उन्हें देखती रही । फिर उसने उन्हें एक-एक करके पकड़ा और झटक कर उखाड़ डाला । फिर कुछ देर वह बालों को देखती रही । पर कहीं कोई सफेद बाल नहीं था । फिर वह चेहरे पर क्रीम लगाने लगी । क्रीम मलते हुए वह ध्यान से चेहरे को देख रही थी जो उम्र के साथ ढलने लग गया था । आँखों तले कालिमा उघड़ आई थी और कपोल ढीले पड़ गये थे । पिछले पाँच सात महीनों में ही कितना फर्क पड़ गया था ।

जब वह तैयार हो गई तो उसे कुछ करने को नहीं था । दोपहर का भोजन तो आधे घण्टे में बना लेगी । बाज़ार जाने का भी यह समय नहीं । वैसे बाज़ार जाकर खरीदना भी क्या है । पड़ोसिन के पास भी इस समय जाना ठीक नहीं । वह घर के काम-धंधे में लगी होगी । बस सारा दिन ही लगी रहती है । शायद ही कभी उसे फुर्सत मिलती हो । परसों जो जासूसी उपन्यास लाई थी, उसे तो कल ही खत्म कर लिया था । इतना मनोरंजक नहीं कि फिर से पढ़ा जा सके । बीच में तो भर्ती ही थी । पहले उपन्यास वाली बात नहीं थी.....

आखिर वह सुई धागा लेकर खिड़की के सामने कढ़ाई करने बैठ गई । हमेशा जैसी कढ़ाई थी । वही फूल । वही पत्तियाँ वही हरे, लाल, नीले धागे । वह वर्षो से यह कढ़ाई करती आ रही थी । वह अचानक चौंकी । उसकी अंगुली में सुई चुभ गई थी । उसने झट बायें हाथ की अंगुली मुंह में डाल कर चूसी और उसे खून का अजीब सा स्वाद अनुभव हुआ । उसने खिड़की में से बाहर थूका । एक बार फिर थूका । और फिर बाहर देखने लगी । बाहर वही वृक्ष थे, वही पौधे, वही फूल । धूप तेज़ हो गई थी । देखते-देखते उसे दूर सामने एक बुढ़िया चली जा रही दिखी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत धीमी चाल थी उसकी । वह शीला को कुछ परिचित-सी लगी । जैसे पहले कहीं उसे देखा हुआ हो । पर उसे याद नहीं आ रहा था, कहाँ देखा था । शायद कहीं बाज़ार में मिली होगी । कुछ समय से उसकी याददाश्त को पता नहीं क्या हो गया था कि कोई बात ठीक से याद ही नहीं रहती थी । अचानक वह बूढ़ी शीला की आँखों के सामने से गायब हो गई और उसकी जगह एक गाय चली जा रही दिखी । उसी की तरह बहुत धीमी चाल चल रही थी वह । शीला को हैरानी हुई । वह बुढ़िया कहाँ चली गई ? अभी तो वह उसे देख रही थी । और यह गाय कहाँ से आ गई ? उसे एक कहानी याद आई जिसमें एक बूढ़ी जादूगरनी अजीब अजीब शक्लें धारण कर लेती थी । वह तोता बन जाती थी, बकरी बन जाती थी, बिल्ली बन जाती थी । कहीं यह गाय वही बुढ़िया न हो जिसे अभी-अभी वह देख रही थी । गाय इधर-उधर मुंह मारती हुई चर रही थी । शीला को अपनी अंगुली में दर्द महसूस हुआ जिसमें कि सूई चुभी थी । उसने देखा, उस पर खून की एक बूंद उभरी हुई थी । उसने खून पोंछा । तभी उसे मुंह में खून का स्वाद महसूस हुआ और उसे उस बूढ़ी जादूगरनी का ख्याल आया जो हंसों का लहू पिया करती थी । उसी समय शीला की नज़र सामने गई । अब वहाँ गाय नहीं थी बल्कि एक छोटी-सी लड़की थी । कितनी प्यारी थी यह लड़की ।....कभी वह भी ऐसी ही छोटी-सी लड़की थी । बचपन कितना सुहाना होता है । बचपन में कितनी सहेलियां होती हैं । कितनी खेलें होती हैं, कितनी खुशियां.....और बचपन बीतते ही लड़कियां नीम के पेड़ की तरह बढ़ने लगती हैं, जवानी में पांव रख देती हैं और फिर उनका विवाह हो जाता है ... वह लड़की भी...पर वह लड़की कहाँ चली गई थी ? अभी-अभी तो वह नीम के पेड़ के नीचे खड़ी थी....शायद गाय को चराने लाई हो और अब लेकर चली गई हो.....और वह नीम बाकी के पेड़ों से हट कर कैसे अकेली खड़ी थी ।.....

शीला से वहाँ बैठा न गया और वह उठ खड़ी हुई और बिस्तर पर जाकर लेट गई । लेटी हुई कुछ देर तक कढ़ाई करती रही । फिर उठ कर खाना बनाने में लग गई । खाना बना कर और खा पी कर लेट गई । पता नहीं कब आँख लग गई । और जब आंख खुली तो शाम हो चुकी थी ।

शाम बहुत उदास थी । शीला को घर में अन्धेरा-सा दिखा । बाहर देखा तो आकाश में बादल भागे जा रहे थे । यह वर्षा के बादल नहीं थे । कुछ ही देर में आकाश साफ हो गया । शीला ने सोचा, बाज़ार हो आये । काम तो कोई नहीं था, बस यूंही एक चक्कर लगा आये ।

-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायद कोई नई सब्जी ही आई हो । सो वह तैयार होने लगी । तीन चार साड़ियाँ उसने निकालीं, पर पसन्द न आई । वे ज्यादा शोख़ लगीं । अब वह कम ही यह साड़ियाँ पहनती थी । वे दिन अब नहीं रहे थे । आखिर उसने बादामी रंग की एक सादी सी साड़ी चुनी जिसके बार्डर में हल्की सी शोखी थी । वास्तव में उम्र के बदलने के साथ ही कपड़ों का रंग-ढंग भी बदल जाता है ।

बाज़ार घर से ज्यादा दूर नहीं था । छोटा सा बाज़ार था । छोटी-छोटी दुकानें थीं । यह बाज़ार एक वर्ष पहले भी ऐसा ही था, दो वर्ष पहले भी ऐसा ही था और तब भी ऐसा ही था जब शीला सबसे पहले इस शहर में आई थी । बस कुछ एक दुकानें नई खुली थीं । पर उनके खुलने से कोई खास फर्क नहीं पड़ा था । और दुकानों जैसी ही दुकानें थीं वे ।

बाज़ार में घूमते हुए शीला की दृष्टि एक स्त्री पर पड़ी । ध्यान से देखा तो वह वही बुढ़िया लगी जिसे उसने सुबह देखा था । पर अब वह इतनी बूढ़ी नहीं लगती थी । वैसे वह बुढ़ापे में कदम रख चुकी थी । उसके कुछ नक्श जाने पहचाने से लगे । सुबह तो इसका चेहरा अच्छी तरह देख नहीं सकी थी । भला इससे पहले उसने इसे कहाँ देखा था ?.....

वह बुढ़िया भी शीला की ओर ऐसे देख रही थी जैसे उसे पूरी तरह पहचान न रही हो । शीला को उसकी दृष्टि और ही तरह की लगी । उससे नज़र बचा कर शीला दूसरी ओर देखने लगी । पर उसे लगा, वह उसकी ओर ही आ रही थी । फिर उससे बचने के लिये शीला कपड़ों की एक दुकान के सामने जाकर खड़ी हो गई और कपड़े देखने लगी ।

तभी वह बुढ़िया भी उसकी बगल में आ खड़ी हो गई ।

शीला ने ज़रा मुड़ कर देखा तो बुढ़िया ने कहा, "क्यों बहन, पहचाना नहीं मुझे ?"

"याद नहीं आ रहा । लगता है कहीं देखा हुआ है ," शीला ने पहचानने का यत्न करते हुए कुछ हैरानी से कहा ।

बुढ़िया हौले से मुस्कराई, "याद करो तो । एक बार नहीं, कई बार देखा हुआ है ।"

पर शीला उसे पहचान न सकी ।

तभी बुढ़िया ने उसकी ओर से जैसे लापरवाह होकर दुकानदार से कहा, "कोई साड़ी दिखाओ तो । सादी-सी हो । किसी हल्के रंग की ।"

दुकानदार साड़ियाँ दिखाने लगा तो शीला भी देखने लगी, उनमें से शीला को एक साड़ी पसन्द आई । हल्के हरे रंग की वह सादी सी साड़ी थी । हरा रंग शीला को बचपन से ही बहुत पसन्द था । जब छोटी थी तो उसके ज्यादातर फ्राक हल्के और गहरे रंग के ही होते थे । यह कुदरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की रानी का रंग था। शीला ने वह साड़ी खरीद ली। उसके पास जो तीन चार हरे रंग की साड़ियां थीं, वे बहुत शोख थीं। यह साड़ी सादी भी थी और सुन्दर भी।

उसने साड़ी के बारे में बुढ़िया से राय लेने के लिये मुंह फिराया तो वह वहां नहीं थी। शीला ने इधर-उधर देखा तो वह तीन चार दुकानें आगे एक दुकान के सामने खड़ी थी। शीला ने साड़ी खरीद ली। कुछ देर और वह बाज़ार में घूमती रही। उसने एक आने की हरी मिर्चें लीं। एक निम्बू लिया और थोड़ा सा अदरक। फिर घर जाते हुए उसकी दृष्टि अनायास ही खिलौनों की दुकान पर पड़ी। उसके शो केस में एक गुड़िया थी जिसने सलवार कमीज़ पहनी हुई थी। उसके पास ही एक काफी बड़ा भूरा रीछ था जिसकी आँखों के स्थान पर पर दो काले मोती जड़े हुए थे और वह घुरता हुआ शीला को देख रहा था। शीला के दिल में आया कि वह गुड़िया और रीछ दोनों खरीद ले। पर वह चुपचाप दुकान के सामने से गुजर गई और उसने सोचा, कभी मौका आया तो वह बहुत सारे खिलौने खरीदेगी।

शाम की धुंध अंधकार में बदलने लगी थी। शीला चलती हुई मन ही मन हिसाब लगा रही थी कि अभी नौ दिन और थे उसके पति के लौटने में हो सकता है अन्तिम दिन पर तार ही आ जाये कि दो दिन और लग जायेंगे। बारह दिन हो गए थे उसे गये हुए आजकल तो वह यहां से बहुत दूर होगा—बिल्कुल दक्षिणी हिन्दुस्तान में। कहते हैं बहुत सुन्दर देश है। कभी वह भी उसके साथ वहां जायेगी। कभी बंगाल भी जायेगी। कलकत्ता देखने की उसकी बहुत चाह है। पर पता नहीं कब मौका लगे। इतने वर्ष बीत गये हैं। अभी पता नहीं और कितने वर्ष.....

उसी समय शीला को लगा जैसे कोई उसके पीछे-पीछे चलता आ रहा है। उसने मुड़ कर देखा तो उसे बुढ़िया की झलक दिखी जो बाजार में मिली थी। पर नहीं, वह तो कोई और ही स्त्री थी। वह तेज़ कदमों से चल रही थी। देखते-देखते वह उसके पास से गुजर कर आगे निकल गई। शीला सोचती हुई फिर पुराने विचारों का धागा पकड़ने लगी। पर धागे का सिरा उसे कहीं न मिला और वह रात के भोजन के बारे में सोचने लगी कि जाकर क्या कुछ बनायेगी।

घर के नज़दीक पहुंची तो देखा, बैठक में बत्ती जल रही थी। कभी रात होने पर वह घर पहुंचती और आगे घर में अन्धेरा होता तो उसे बहुत डर लगता। सो वह शाम को जब भी घर से बाहर निकलती, बैठक की बत्ती जला कर जाती। घर में प्रकाश देख कर उसे सन्तोष हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताला खोल कर अन्दर जाते ही उसने सब से पहले दूसरे कमरे की बत्ती जलाई और रसोई की भी । जो तीसरा कमरा बन्द रहता था उसे उसी प्रकार बन्द रहने दिया । उसने हाथ में का सामान रखा और कपड़े बदले फिर रेडियो चालू किया और रसोई में गई । पर खाना बनाने को उसका मन न हुआ । दोपहर की एक रोटी बची हुई थी और थोड़ी सी तरकारी भी । एक आम भी पड़ा हुआ था और परसों के दो केले भी । काफी कुछ था पेट भरने के लिये । सो वह रसोई में से बैठक में आ गई । रेडियो ज़रा-सा मद्धम करके कढ़ाई करने बैठ गई ।

रेडियो पर कुछ देर तक गीत बजते रहे । इन गीतों को वह पता नहीं कितनी बार सुन चुकी थी । अब सुने अनसुने वे एक बराबर ही थे । कई गीत, तो जब रेडियो न भी बजता, तब भी उसके कानों में गूंजते रहते और साथ ही इश्तहार भी जो थोड़ी-थोड़ी देर के बाद बोले जाते ।

गीतों के पश्चात् एक नाटक शुरू हुआ । कुछ ही देर में शीला बड़े ध्यान से सुनने लगी । उसे लगा, नाटक के पात्रों में एक स्त्री की आवाज़ उसकी अपनी आवाज़ जैसी थी । बिल्कुल उसी की आवाज़ जैसी । कोई बाहर से सुने तो सोचे कि वही घर में किसी से बातें कर रही है । उसने और ध्यान से नाटक सुनना शुरू किया । उसे लगा कि उसकी आवाज़ जैसी आवाज़ वाली स्त्री बूढ़ी स्त्री का रोल कर रही थी । हो सकता है वह स्वयं भी बूढ़ी ही हो । भला कैसी होगी वह ?—शीला ने सोचा और उसके सामने उसका चेहरा आया । और उसे हैरानी हुई कि वह चेहरा काफी हद तक उस बुढ़िया जैसा था जो उसे कपड़ों की दुकान पर मिली थी । क्या वही तो नहीं रेडियो पर इस नाटक में भाग ले रही ?.....भला उसे पहले कब देखा था ? कहाँ देखा था?—सुबह खिड़की में से ? रात सपने में ? हफ्ता भर पहले—भला कहाँ ?

पौने घंटे बाद नाटक समाप्त हुआ तो शीला को लगा, वह उस बुढ़िया को जैसे बहुत अर्से से जानती थी । वह उसकी हूबहू शक्ल बता सकती थी । उसके लिबास का वह वर्णन कर सकती थी । नाटक में वह विधवा थी और कितनी अकेली थी । पड़ोसी उसे शक की नज़र से देखते थे और कभी उसके साथ खुल कर नहीं मिले थे । उसका पति भी जब तक जीवित रहा, उससे विमुक्त ही रहा । उसका किसी और स्त्री से सम्बन्ध था.....

शीला देर तक बैठी उस स्त्री के बारे में सोचती रही । आखिर वह उठी । उस का भोजन करने को दिल न चाहा । उसने दर्वाज़ा बन्द किया । बैठक की ओर रसोई की बत्ती बुझाई और सोने के कमरे में चली गई । अभी वह बिस्तर पर बैठी ही थी कि बूंदें पड़ने लगीं । फिर देखते-देखते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्षा ज़ोर पकड़ने लगी। बादल गरजे बिजली चमकी और मूसलाधार वर्षा होने लगी। चोगिरदा वर्षा के लगातार शोर से गूंजने लगा। शीला को उस शोर से डर-सा लगा और उसने कमरे की दोनों खिड़कियाँ बन्द कर दीं। इतने दिनों के बाद वर्षा मुश्किल से आज सुबह रुकी थी, पर अब फिर शुरू हो गई है। ऐसे हो रही है जैसे फिर कई दिन तक रुकेगी नहीं। अब दिन रात सारा समय घर में बैठे ही कटेगा। कोई हिसाब है इस वर्षा का...।

शीला मन ही मन वर्षा को कोस रही थी कि बैठक के दर्वाजे पर खट खट की आवाज़ हुई। एक क्षण के लिये बन्द होकर फिर आवाज़ हुई। भला इस समय कौन हो सकता है? अचानक शीला को अपने पति का ख्याल आया और वह झट उठ कर बैठक में गई और बत्ती जलाई। जब दर्वाज़ा खोला तो हैरान ही रह गई। सामने वही बुढ़िया खड़ी थी। वह सिर से पाँव तक भीगी हुई थी।

एक क्षण के लिए शीला को सूझा नहीं कि क्या कहे। फिर उसने कहा, "क्यों बहन——" और आगे उसके मुख से कोई शब्द न निकला।

बुढ़िया ने कहा——"घर जा रही थी कि बरसात ने घेर लिया। भला पता था, ऐसे बेमौके बरसात होने लगेगी। नहीं तो ज़रा पहले घर चली जाती। यहाँ से गुज़र रही थी कि सोचा, दो पल यहीं अटक जाऊँ, जब तक बरसात नहीं रुकती।"

"आओ, अन्दर आ जाओ।" शीला ने न चाहते हुए भी उसे कहा, "कपड़े बदल लो, कहीं ठंड न लग जाये। आजकल आदमी बरसात में ज़रा सा भीगा नहीं कि बुखार चढ़ा नहीं।"

बुढ़िया कुछ झिझकी, पर फिर अन्दर आ गई। शीला ने उसे ब्लाउज़ दिया और साथ में वही साड़ी जो वह आज खरीद कर लाई थी। बुढ़िया ने कपड़े बदल लिए और बिस्तर पर बैठ गई।

"बाज़ार में तुम मिली और फिर चली ही गई," शीला ने जैसे शिकायत करते हुए कहा।

"मैंने सोचा, फिर मिलूंगी। पर तब तक तुम जा चुकी थीं। फिर मुझे एक सहेली मिल गई। उससे बातों में लग गई। वह अपने घर ले गई। अब वहीं से आ रही हूँ।"

"कहाँ है तुम्हारा घर?" शीला ने पूछा।

"बड़े चौंक के नज़दीक ही है। वहाँ से बायें हाथ जो सड़क जाती है, उस पर है। घर क्या है, एक छोटा-सा कमरा है। उसी में रहती हूँ।"

"और तुम्हारा घरवाला?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह तो कब का छोड़ गया है। मैं बस अकेली ही अपने बुरे भाग्य को रोती दिन काट रही हूँ।"

काफी देर शीला उससे बातें करती रही। वर्षा रुकने का नाम नहीं ले रही थी। शीला की आँखें बोझल होने लगीं। उसने देखा बुढ़िया की आँखों में भी नींद थी।

"अब यहीं सो जाओ। बरसात तो रात भर रुकती नहीं दिखती। सुबह चली जाना," शीला ने उसे कहा।

"अच्छा," उसने हौले से कहा और बिस्तर पर लेट गई। वह शीला का बिस्तर था। शीला पास में बिछे अपने पति के बिस्तर पर लेट गई।

पति के बिस्तर पर लेटने पर शीला को विचित्र सा आभास हुआ। उसने अपने बिस्तर पर लेटी हुई बुढ़िया को देखा जो सो रही थी। उसका चेहरा, शीला को लग रहा था, जैसे बहुत अर्से से जाना पहचाना हुआ चेहरा हो। पता नहीं क्यों शीला को उस पर तरस आ रहा था। उसके सिर के बाल आधे से ज्यादा सफेद थे। उसके चेहरे का मास ढलका हुआ था। आँखें सूखी हुई छोटी-छोटी लगती थीं जिनके गिर्द बारीक बारीक झुर्रियों का जाल था।

देखते-देखते शीला की आँख लग गई।

रात भर शीला सपनों में उस बूढ़ी से बातें करती रही।

[illegible] आँख खुली तो सुबह हो चुकी थी। वह चौंक कर उठी और उसकी दृष्टि पास के बिस्तर पर पड़ी जिस पर रात बुढ़िया सोई थी। पर वह बिस्तर खाली था। उस पर की चादर ऐसे साफ सुथरी बिछी हुई थी जैसे उस पर कोई सोया ही न हो। तो वह किस समय चली गई? जाते समय बताया ही नहीं। कहीं कोई चीज़ ही न उठाकर ले गई हो। शीला जल्दी से उठ कर बैठक में गई। पर जब देखा कि दर्वाजे को अन्दर से वैसे ही ताला लगा हुआ है जैसे उसने रात के के समय लगाया था तो उसका आश्चर्य बढ़ा। तो वह कहाँ से चली गई? शीला फिर सोने के कमरे में गई। इधर-उधर देखा, पर कहीं उसके जाने का निशान न मिला। कहीं गुसलखाने में न हो। उसने देखा, गुसलखाना खुला पड़ा था। रसोई भी देखी, वहाँ भी वह नहीं थी। फिर बन्द रहने वाला कमरा भी देखा, वह भी खाली था।

शीला हक्की-बक्की रह गई।

वह फिर सोने के कमरे में आई तो तो उसने देखा, अपना जो ब्लाउज़ उसने बुढ़िया को दिया थी, वह उसी प्रकार हैंगर पर लटका हुआ था और कल की खरीदी हुई साड़ी भी तिपाई पर पड़ी हुई थी।

वह कुछ समझ नहीं पा रही थी कि बुढ़िया कब चली गई थी और कैसे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहाँ से चली गई और कहाँ कोई जादू गरनी ही न हो ।

शीला देर तक बैठी सोचती रही ।

फिर वह थकी हुई उठी और शीशे के सामने खड़ी हो गई । उसे अपना चेहरा उड़ा हुआ लगा । उसने आँखें मलीं, बिखरे हुए बालों को हाथ से साफ किया और ढलके हुए जूड़े को ज़रा सा कसा । कुछ देर और शीशे में देखती रही । तभी थोड़ा-सा शीशे के नज़दीक होकर उसने अपने बालों में दिख रहे दो सफेद बाल उखाड़े और फिर बैठक में आकर खिड़की के सामने बैठ गई । खिड़की खोली, उसका पर्दा हटाया और बहर देखने लगी । बाहर वही वृक्ष थे, वही पौधे, वही सब कुछ ! और वर्षा ऐसे हो रही थी जैसे उसने कभी रुकना न हो ।

निर्मल निवास,
सुनारी रोड, विले पार्ले
बम्बई—५७

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तांत्या टोपे

डॉ० सुरेशचन्द्र शुक्ल

पात्र—

तांत्या टोपे--मराठों का अन्तिम सेनापति
सर राबर्ट्स नेपियर--मध्य-भारत सेना का प्रधान-अधिनायक
मेजर मीड--घुड़सवार-सेना का अधिनायक
मानसिंह--नरवर का राजा
विक्रमसिंह--नरवर का महामन्त्री
विजयसिंह--सेनापति
गुप्तचर, प्रतिहारी इत्यादि

काल--१ अप्रैल, १८५९ ई०

१

नरवर का समीपवर्ती-वन
(सर राबर्ट्स नेपियर और मेजर मीड)

नेपियर--तांत्या का पीछा करते हुए एक वर्ष हो गया, पर हम लोग उसको पकड़ने में सफल न हो सके ।

मीड--साहब ! उसमें बड़े-बड़े कमाल और हुनर हैं, उसे पकड़ना आसान नहीं ।

नेपियर--फिर भी सरकार की आज्ञा मानना हमारा फर्ज़ है । किसी न किसी तरह तो उसे पकड़ना ही होगा ।

मीड--साहब ! उसे पकड़ने के लिए अपनी सैनिक-शक्ति में वृद्धि करनी होगी ।

नेपियर--कहाँ तक वृद्धि की जाय ? सात सेनाएँ तो निरन्तर उसका पीछा करने में लगी हैं । क्या एक छोटे से क्रांतिकारी के पीछे सात सेनाओं का लगना आश्चर्य की बात नहीं है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीड—है, पर तांत्या छोटा होता हुआ भी अपन में असीम है। हम लोग पीछा करते-करते निराश हो गए हैं। उसमें जादू की सी करामात है; कभी तो उसके पास हज़ारों सैनिक रहते हैं; क्रांतिकारियों की सेनाएं अचानक आ जाती हैं, तोपों और शस्त्रों की खड़खड़ाहट से हम लोग भयभीत हो जाते हैं, कभी एक छोटी सी टुकड़ी लिये ही सामने से निकल जाता है।

नेपियर—सच्चा देशभक्त है मीड साहब! वह जिधर से निकल जाता हैं, वहीं के लोग उसके सहायक हो जाते हैं। सुना है, उसकी वाणी में महान-शक्ति है; वह जहाँ बोलता है, क्रांति की आग फूंक देता है।

मीड—वाणी ही में नहीं साहब! शारीरिक शक्ति और बुद्धि से भी वह अपराजेय है। उसकी सैन्य-संचालन शक्ति तो मुझे चकाचौंध में डाल देती है—गुप्तचरों से ज्ञात होता है, वह समीप ही है और जब हम लोग निर्दिष्ट-स्थान पर पहुंचते हैं तो वह पचासों मील दूर निकल जाता है। उसमें फुरती तो बिजली से भी अधिक है। उसे पकड़ना टेढ़ी-खीर है।

नेपियर—मैं भी यह मानता हूँ, पर निराश होने से तो काम न चलेगा। कोई न कोई उपाय तो निकालना ही होगा।

मीड—मैं निराश नहीं होता, आप जो भी आज्ञा दें मैं सर आंखों करने को तैयार हूँ।

नेपियर—अब तो सरकार ने उसको पकड़ने के लिए दस हज़ार रुपए का इनाम भी घोषित कर दिया है।

मीड—दस हज़ार उसके सामने कुछ भी नहीं है साहब! वह वीर धन्य होगा जिसको यह यश हाथ लगे। उसकी शोहरत ही उसके लिये बहुत बड़ा इनाम होगी!

(गुप्तचर का प्रवेश)

गुप्तचर—(सलूट मार कर) साहब! अभी पता लगा है कि तांत्या आजकल नरवर के राजा मानसिंह के संरक्षण में है।

नेपियर—मानसिंह, ने उसे अपने संरक्षण में क्यों लिया?

गुप्तचर—मानसिंह, तांत्या का विश्वसनीय मित्र है। इधर एक वर्ष से दौड़ते-दौड़ते ताँत्या थक गया था और उसका स्वास्थ्य भी बहुत बिगड़ चुका था इसलिये उसे कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन के लिए मानसिंह के संरक्षण में जाना पड़ा ।

नेपियर--लेकिन मानसिंह को यह ज्ञात नहीं है कि तांत्या राजद्रोही है और उसको संरक्षण में लेना सरकार को चुनौती देना है ?

मीड --सब कुछ ज्ञात है । भारत का बच्चा-बच्चा तांत्या की क्रांति से परिचित है । लेकिन मानसिंह क्षत्री है और क्षत्री अपने देश तथा मित्र की रक्षा करना अपना धर्म समझता है ।

नेपियर--ऐसी स्थिति में हमें मानसिंह के पास अपना प्रस्ताव भेजना चाहिए ।

मीड--मानसिंह कभी तांत्या को देने को तैयार न होगा । उससे तांत्या को सहज नहीं छुड़ाया जा सकता ।

नेपियर--फिर क्या करना होगा ?

मीड--मानसिंह को पक्ष में लाने के लिए कोई न कोई षड्यन्त्र रचना होगा, क्योंकि बिना मानसिंह की सहायता के तांत्या का पकड़ा जाना सम्भव नहीं है ।

नेपियर--अच्छा चलिए, इसके लिये शीघ्र कोई योजना बनानी चाहिए ।

(प्रस्थान)

२

राजसभा

(राजा मानसिंह, विक्रमसिंह, और विजयसिंह)

मानसिंह--तांत्या साहब के रहने की समुचित व्यवस्था हो गई, मन्त्री जी !

विक्रम सिंह--हाँ, महाराज ! पाड़ौन के जंगल में एक गुप्त-स्थान है वहीं उनके निवास की व्यवस्था कर दी गई है तथा सुरक्षा के लिए गुप्तचर और कुछ सैनिक भी नियुक्त कर दिये गए हैं ।

मानसिंह --उनकी सुरक्षा का विशेष ध्यान रखना होगा, महामन्त्री ! उनके पकड़ने के लिए सरकार अपनी पूरी शक्ति लगा रही है ।

विजय सिंह--उसका भय नहीं है महाराज ! पाड़ौन के जंगल में अपने पर्याप्त सैनिक पहुँच चुके हैं ।

मानसिंह--हम सब को बड़ी सतर्कता से काम करना होगा, सेनापति जी! तांत्या की रक्षा करना अपना प्रथम कर्त्तव्य है । तांत्या भारत मां का सच्चा सपूत है, उससे भारत को बहुत सी आशाएं हैं । इस वीर सेनानी की रक्षा तन, मन, धन की बाज़ी लगा कर करनी होगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विक्रमसिंह—उसके लिए चिन्ता न करें, महाराज ! उनकी रक्षा के लिए हम सब लोग स्वतः प्रयत्नशील हैं ।

मानसिंह—अब तांत्या साहब के स्वास्थ्य के क्या समाचार हैं ?

विक्रमसिंह—अब तो कुछ सुधार हो रहा है ।

विजयसिंह—तांत्या जी का स्वास्थ्य बहुत बिगड़ चुका था महाराज ! केवल अस्थिपंजर मात्र ही शेष था ।

मानसिंह—अगर ऐसा न होता तो वह संरक्षण में रहने वाला वीर नहीं था । जब उसके पास बिल्कुल सैनिक-शक्ति नहीं रही और स्वास्थ्य भी बिगड़ गया—सभी ओर से लाचार होकर ही उन्होंने अपना संरक्षण स्वीकार किया है । उनकी वीरता, साहस और कौशल्य सराहनीय है ।

(प्रहरी का प्रवेश)

प्रहरी—(महाराज को सिर झुका कर) महाराज ! सरकारी घोड़सवार सेना के अधिनायक मेजर मीड आपसे मिलना चाहते हैं ।

मानसिंह—आने दो ।

(प्रहरी का जाना मेजर मीड का प्रवेश)

मीड—महाराज ! सुनने में आया है कि तांत्या साहब ने आपके यहां संरक्षण ग्रहण किया है ?

मानसिंह—संरक्षण नहीं, वह आजकल मेरे आतिथ्य में हैं । तांत्या साहब मेरे खास मित्रों में से हैं ; बहुत अनुरोध के बाद उन्होंने मेरे यहां कुछ दिन रहना स्वीकार किया है ।

मीड—लेकिन आपको ज्ञात होगा कि तांत्या राजद्रोही है और उसे पकड़ने के लिए सात सेनाएं एक साल से उसके पीछे लगी हुई हैं ।

मानसिंह—ज्ञात है पर जब तक वह मेरे आतिथ्य में हैं तब तक उन्हें नहीं पकड़ा जा सकता ।

मीड—अच्छी तरह सोच लीजिए मानसिंह जी राजद्रोही को रखना सरकार से लोहा लेना है । तांत्या का रखना आपके लिए खतरे से खाली नहीं है ।

मानसिंह—मैं मानता हूँ, पर अपने अतिथि की रक्षा करना मेरा कर्त्तव्य है । मैं उसके लिए अपना सभी कुछ उत्सर्ग कर सकता हूँ ।

मीड—कोरी भावुकता में न बहिए मानसिंह जी ! मैं आपके हित में कह रहा हूँ, तांत्या को मेरे हवाले कर दीजिए । इससे सरकार आपको बहुत सा पारितोषिक देगी । राजकर से आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्त कर दिए जायेंगे और आपका राज्य भी एक स्वतंत्र स्थायी-राज्य बना दिया जायगा ।

मानसिंह—मैं इन प्रलोभनों से अपने कर्त्तव्य को अधिक महत्त्व देता हूँ मीड साहब ! मैं तांत्या साहब को कभी आपके हवाले नहीं कर सकता ।

मीड—लेकिन इसका परिणाम आपने सोचा है ?

मानसिंह—हां, इस नश्वर शरीर से मुक्ति और यही क्षत्रिय के लिए वरदान है ।

मीड—आपका सम्पूर्ण राज्य विनष्ट हो जायगा मानसिंह !

मानसिंह—एक देशभक्त की रक्षा में उत्सर्ग होना मेरे लिए स्वाभिमान का विषय होगा ।

मीड—अच्छा मैं जाता हूँ, तैयार रहना ।

मानसिंह—खुशी से, अभी तैयार हूँ ।

(मीड का आवेश में जाना)

मानसिंह—सेनापति ! सेना की समुचित व्यवस्था करो ।

विजयसिंह—अपने सभी सैनिक पहले से ही तैयार हैं ।

विक्रमसिंह—लेकिन सरकार की विशाल सेना के सामने अपने थोड़े से सैनिक क्या कर सकेंगे ?

विजयसिंह—अपना एक सैनिक दुश्मन के दस सैनिकों को अकेला मारने में समर्थ है ।

विक्रमसिंह—फिर भी सरकार पर विजय पाना असम्भव है । उसके पास अपने से हज़ारों गुना अधिक शक्ति है ।

मानसिंह—तब क्या करना चाहिए महामन्त्री ! मित्र की रक्षा तो कैसे भी हो करनी ही होगी ।

(प्रतिहारी का प्रवेश)

प्रतिहारी—धोखा, घोर धोखा महाराज ! गजब हो गया, सम्पूर्ण राज-महिलाओं को सरकारी सैनिक पकड़ ले गए ।

मानसिंह—क्या ! राज-महिलाओं को सरकारी सैनिक पकड़ ले गये ?

प्रतिहारी—हाँ, महाराज ।

मानसिंह—यह कैसे हुआ ? क्या वहाँ अपने सैनिक नहीं थे ?

प्रतिहारी—थे, पर धोखा दिया गया ।

मानसिंह—कैसा धोखा ?

प्रतिहारी—आपके ही सगे संबंधी नारायण देव ने विश्वासघात किया । अंग्रेज़ अफसरों को पहले से ही ज्ञात था कि महाराज आसानी से तांत्या को देने वाले नहीं। जिस समय मेजर मीड आपके पास आया था, उसी समय नारायणदेव महल में पहुँच चुके थे और उन्होंने महल से सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रहरियों को हटा दिया था और उनके स्थान पर सरकारी सैनिक-वेष बदल कर तैनात कर दिए गए थे। बहुत से सैनिक इधर-उधर भी लगे हुए थे। मेजर मीड के दरबार से बाहर होते ही गुप्तचरों को इशारा किया गया और बात की बात में सैंकड़ों सैनिक महल में घुस गये और जब तक अपने सैनिक वहाँ पहुंचे, पूरा महल खाली हो चुका था।

मानसिंह—यह तो मेरे साथ बहुत बड़ा विश्वासघात हुआ। जिस नारायण देव को मैं अपना समझता रहा वही आस्तीन का सर्प बन गया और मेरी इज्जत धूल में मिला दी। यह घटना मेरी राज-मर्यादा पर अमिट कलंक है। (राजा चिन्ताकुल हो जाता है)

विजयसिंह—अब हम सबको शीघ्र उद्यत हो जाना चाहिए।

विक्रमसिंह—पर शक्ति द्वारा हम राज-महिषियों को छुड़ाने में सफल नहीं हो सकते।

विजयसिंह—फिर भी मान रक्षा के लिए हमें अपने प्राणों की बाज़ी लगानी ही होगी।

विक्रमसिंह—लेकिन प्राणों की बाज़ी लगाने से ही हमें सफलता नहीं मिल जायेगी। षड़यन्त्र का उत्तर षड़यन्त्र से ही देना होगा।

मानसिंह—क्या आशय है महामन्त्री ?

विक्रमसिंह—महाराज ! यह षड़यन्त्र धमकाने के लिये किया गया है। राज-महिलाओं का अपहरण केवल इसलिए हुआ है कि महाराज घबड़ा कर और अपनी मान रक्षा के लिए तांत्या को सरकार के हवाले कर दें।

मानसिंह—लेकिन मर्यादा की रक्षा भी तो अनिवार्य है।

विजयसिंह—बेशक अनिवार्य है और वह बिना युद्ध के या तांत्या साहब को बिना दिये, नहीं हो सकती।

विक्रम सिंह—नहीं, धोखा का उत्तर धोखा से भी दिया जा सकता है। धैर्य से काम लेना होगा महाराज ! मानरक्षा का भार मेरे ऊपर छोड़ दीजिए।

(पटाक्षेप)

३

पाड़ौन का वन

(तांत्या कुछ सैनिकों के साथ बैठे हैं, चर का प्रवेश)

चर—महाराज बहुत बड़ा विश्वासघात हो गया !

तांत्या—कैसा विश्वासघात ?

चर—सम्पूर्ण राज-महिलाओं को—धोखा देकर अधिनायक सर राबर्ट्स नेपियर ने बन्दी बना लिया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और महाराज मानसिंह के पास कहला भेजा है कि यदि तात्या साहब को मेरे हवाले नहीं किया जाता तो सभी रानियों को मृत्यु के घाट उतार दिया जायगा। ऐसी दशा में महाराज बहुत चिन्तित हैं।

तांत्या--ओह ! वस्तुतः यह घटना बड़ी चिन्तनीय है। महिलाओं की रक्षा करनी ही होगी। मेरा मित्र मेरे लिए इस प्रकार के कष्ट उठाये--उसकी इज्ज़त मिट्टी में मिले; एक व्यक्ति की रक्षा के लिए अनेक महिलाओं के प्राण जायें, यह कभी सम्भव नहीं। तांत्या यह कभी सहन नहीं करेगा। मैं अभी महाराज से जाकर मिलता हूँ।

(जाता है, पट परिवर्तन)

४

राजकीय उद्यान

(राजा का चिन्तित अवस्था में टहलना, तांत्या का प्रवेश)

तांत्या--मेरे लिए आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए मित्र ! मेरा कार्य अब समाप्त हो चुका है। शरीर से भी अस्वस्थ हूँ, सैन्य-शक्ति भी नहीं है अतः मेरा जीना अब निरर्थक है। मुझे अब यहां से जाने दीजिए। निःप्रयोजन खून खराब हो, यह उपयुक्त नहीं जान पड़ता।

मानसिंह--पर मित्र की रक्षा करना मित्र का कर्त्तव्य है।

तांत्या--मानता हूँ, पर सरकार से विरोध लेकर रक्षा नहीं की जा सकती। सरकार के पास अपार शक्ति है, उसके सामने हमारी शक्ति कुछ भी नहीं। युद्ध करके भी अंग्रेजों के चंगुल से नहीं बचा जा सकता। आप मेरी रक्षा के लिए चिन्तित न हों। मेरी शरीर-रक्षा अब कोई मूल्य नहीं रखती।

(विक्रम का प्रवेश)

विक्रमसिंह--षड़यन्त्र सफल हुआ महाराज !

मानसिंह--(प्रसन्नता से) धन्य हो महा-मन्त्री। तुम से वीर पाकर मैं बड़े गौरव का अनुभव करता हूँ। आज ही आपको दस सहस्र मुद्राओं के पुरस्कार से विभूषित किया जायेगा।

विक्रमसिंह--महाराज ! मैं तो आपका अनुचर हूँ, मैंने तो अपने कर्त्तव्य का पालन किया है।

मानसिंह--ठीक है, फिर भी वीरता का मूल्यांकन होना ही चाहिए। अच्छा यह तो बताइए, सरकार उस जाली वीर को पहचान नहीं सकी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विक्रमसिंह—महाराज ! सरकार अभी तांत्या जी की छाया तक से परिचित नहीं है। तांत्या साहब ऐसी होशियारी से उसे चकमा देते रहे हैं कि वह अभी तक इन्हें पहचान नहीं सकी ।

(तांत्या चिन्ता और आश्चर्य की मुद्रा में)

मानसिंह—तब फिर यह राज़ किसी प्रकार खुलना न चाहिए ।

विक्रमसिंह—नहीं महाराज ! यह राज़ मेरे अतिरिक्त और किसी को ज्ञात नहीं ।

तांत्या—कैसा राज़ ? कैसा वीर ? विक्रम ।

विक्रमसिंह—राज-महिलाओं को दुश्मनों के चंगुल से छुड़ा लिया गया सेनानी जी ! काम बनाने के लिए 'जैसे को तैसा' का सिद्धान्त अपनाना पड़ा । आपके स्थान पर एक-दूसरे वीर को सरकार के हवाले कर दिया गया। सरकार उस जाली वीर को ही वीर सेनानी समझी और राज-महिलाओं को छोड़ दिया ।

तांत्या—मेरे लिए एक निरीह वीर का खून, असह्य ।

मानसिंह—रक्षा के लिए आपको सहना ही होगा मित्र ।

तांत्या—(क्रोध से) कभी नहीं, तांत्या कायर नहीं है मानसिंह ! शरीर की रक्षा से नाम की रक्षा अधिक महत्त्व रखती है; युद्ध-क्षेत्र में लड़ते-लड़ते मर जाना तांत्या को स्वीकार है पर एक वीर के बलिदान द्वारा स्थायी रहना स्वीकार नहीं ।

विक्रमसिंह—उस वीर सैनिक ने सहर्ष अपनी बलि स्वीकार की है, सेनानी जी !

तांत्या—तब तो वह वीर और भी सराहनीय है । ऐसा देशभक्त वीर जीवित रह कर, बहुत कुछ देश का हित कर सकता है । अब मुझे अपने को समाप्त कर देना ही उपयुक्त है । अब मैं जाता हूँ और अपने को समर्पित करके उस वीर को छुड़ाऊंगा । वह वीर मुझसे भी अधिक देश के लिए उपयोगी सिद्ध होगा ।

(जाना चाहता है)

विक्रमसिंह—लेकिन वह वीर अब इस लोक में नहीं रहा सेनानी जी ।

तांत्या—क्यों, क्या उसे फांसी पर चढ़ा दिया गया ?

विक्रमसिंह—हां, सेनानी जी! सरकार ने ऐसे सशक्त वीर को अधिक दिन जीवित रखना खतरे से खाली नहीं समझा और उसे शीघ्र फांसी दे दी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तांत्या—ओह ! मुझे ग्राज इस लोक में नहीं रहा (माथा पकड़ लेता है).....लेकिन ग्राप सबने इस षड्यन्त्र द्वारा मुझे कलंकित कर दिया । मेरे सम्पूर्ण जीवन का शौर्य व त्याग इस निरीह हत्या के खून में वह गया । यह सब करने से पहले मुझ से क्यों नहीं बताया गया ?

मानसिंह—इसलिए कि मुझे पहले से ज्ञात था कि ग्राप इस प्रस्ताव को स्वीकार न करेंगे ।

तांत्या—लेकिन ग्राप लोगों ने मेरे पक्ष में विचार नहीं किया, केवल ग्रपनी रक्षा के लिये इस जघन्य कार्य की ग्रोर प्रवृत्त हुए । यदि पहले से मुझे ज्ञात होता कि ग्राप मेरे साथ विश्वासघात करेंगे तो कभी ग्रापके संरक्षण में रहना स्वीकार न करता । ग्रब समाज मुझे क्या कहेगा ? एक वीर की हत्या मेरी रक्षा के लिए.....

मानसिंह—यह हत्या ग्रापकी रक्षा के लिये नहीं, देश की रक्षा के लिए की गई है ।

तांत्या—देश की रक्षा के लिए मुझे जो कुछ करना था कर चुका । ग्रब ग्रागे कोई कार्य होना सम्भव नहीं । मुझे इस कलंक को धोना ही होगा । ग्रब मैं इस राज़ को छिपा नहीं सकता । मेरे साथ यह धोखा है, धोखा !

(जाना चाहता है)

मानसिंह—रुकिए मित्र ! ग्रापके समर्पण से वह वीर जीवित नहीं हो जायगा ?

तांत्या—लेकिन मेरा कलंक तो धुल जायगा ?

मानसिंह—कलंक दूसरी तरह भी धुल सकता है मित्र ! ग्रभी भारत मां को ग्रापसे सपूतों की बड़ी ग्रावश्यकता है । जब तक देश स्वतंत्र नहीं हो जाता तब तक हमारे कार्यों की इतिश्री नहीं । यही सोच कर मैंने यह षड़यन्त्र रचा था ग्रौर उस वीर ने भी देशप्रेम से प्रेरित होकर ही ग्रपने प्राण विसर्जित किये हैं । ग्रापके समर्पण से उसकी ग्रात्मा को शांति न मिलेगी मित्र !

ताँत्या—(सोचते हुए).....

विक्रमसिंह—सेनानी जी ! धैर्य से काम लीजिए । व्यक्ति के देश ग्रधिक महत्त्वपूर्ण है ।

तांत्या—लेकिन शक्ति से ग्रभाव में ग्रब क्या हो सकता है ?

मानसिंह—इस समय ग्रापकी वाणी ही क्रांति के उद्घोष के लिए पर्याप्त है । सैनिक ग्रापके निर्देशन मात्र से बहुत-कुछ सफलता प्राप्त कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेंगे । आपसे कुशल सेनानी की बौद्धिक सहायता ही देश के लिए वरदान सिद्ध होगी ।

तांत्या—खून का बदला चुकाना आसान नहीं है मित्र ! जब तक मेरे पास पर्याप्त सैन्य-शक्ति नहीं हो जाती तब तक मैं पूरी तरह इसका बदला कैसे चुका सकता हूँ ?

मानसिंह—आप केवल सैनिकों को युद्ध शिक्षा दीजिए और उनका मार्ग प्रशस्त कीजिए; यह बदला भी कुछ कम नहीं है, इससे भी देश की पर्याप्त सेवा होगी ।

तांत्या—(सोचते हुए) ठीक है, अब तो इस कार्य को हाथ में लेना ही होगा, फिर भी मैं जब तक शक्ति नहीं संगठित कर लूंगा और उस वीर के खून के एक-एक बूंद का बदला नहीं चुका लूंगा तब तक मुझे शान्ति नहीं ।

मानसिंह—हम सब भी आपकी सहायता के लिए कटिबद्ध हैं ।

तांत्या—अवसर आने पर आपकी सहायता भी स्वीकार होगी । अभी तो देश को एकता के सूत्र में बांधना है और क्रांति के बीज बोते हुए राष्ट्रप्रेम को रग-रग में प्रवाहित करना है । (शांत होकर) हे प्रभु ! अब मुझे शक्ति दो, जिससे उस वीर के खून का बदला ले सकूं । अब मुझे फिर से रणचण्डी का आवाहन करना है और अपने को गुप्त रखते हुए उस अमरात्मा को शांति प्रदान करना है । अतः मैं जब तक बदला नहीं चुका दूंगा तब तक संन्यासी वेष में रहूँगा और जीवन पर्यन्त दुःखों का ही वरण करते हुए इस गुरुतर कार्य को निभाऊंगा । अब तक मैं अपने लिये जीतता रहा हूँ अब उसके और देश के लिए जीऊंगा ।

(यवनिका)

प्राध्यापक हिन्दी विभाग
सी०एम०डी० पोस्टग्रेजुएट कालेज,
बिलासपुर (म० प्र०)

पुस्तकालय
028742
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

सुदर्शन बाहरी

गीत गाने दो मधुरतम
हैं मिलन की मदिर बेला
मौन मन कब राह कटती ?
कब चला पंथी अकेला ?

नील नभ की नीलिमा में
रंग नये छाने लगे हैं
स्वप्न शतदल पर भ्रमर फिर
गूंज मंडराने लगे हैं
दीप सौ सौ जल उठी हैं
प्यार की पीड़ा पुरानी
चिनगियों की हाट पर ये
शलभ फिर आने लगे हैं

कौन कहता है ? प्रणय के दीप में धूमिल उजेला

साध के सुन्दर सुमन ले
सज गया सुरभित हुआ मन
विश्व में कुछ सार पाने
बन गया अनमोल जीवन
दीप पग-पग पर संजोए
प्राण सुरभित गा उठे हैं
सुखद स्मृतियों के सहारे
कर रहा मन मोर नर्त्तन

अगिन चाहों की डगर पर मस्तियों का एक मेला

प्राण पिक पागल प्रणय के
गीत मधुरिम गुनगुनाती
मौन साधें मूक चाहें
मिलन के उत्सव मनातीं
किस अपरिचित प्यार की
शहनाइयां मन ने सुनी हैं ?
नयन की कलियां अजाने
खिलखिला घूंघट उठातीं

झिलमिलाने दो नयन में मधुर चितवन का झमेला ।

सी० आर० ए० कालेज,
सोनीपत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनचाही याद

पीताम्बर

बलात्कार, हत्या..... .मस्तिष्क चकरा रहा है। सामने दैनिक पत्र पड़ा है। बलात्कार और नृशंस हत्या की इस हृदयविदारक घटना से शरीर जड़ हो गया है और मैं आराम कुर्सी की पीठ पर सर टिकाए निष्प्राण हो पड़ी हूँ। सोचती हूँ सभ्यता और जागरुकता के इस युग की परिभाषा क्या है? विनाश, आतंक, दमन, शोषण प्रधान आज का विश्व मानव की सुख सुविधा के साधनों की नई नई खोजों में होड़ लगाए न जाने ऐश्वर्य की किस सीमा को छूने के प्रयास में लीन है। उस महत्तम की उपलब्धि के लिए इन छोटे, छोटे साधन हीन और अपनी रक्षा करवाने में अशक्त जीवों को मसल डालना जैसे आज अनिवार्य हो उठा है। ये उपभोग्य जीव ! इन्हें भला आपत्ति और प्रतिरोध करने का अधिकार किसने दिया ? इसी सोच की उलझन में अपना अस्तित्व लुप्तप्राय सा प्रतीत होता है और मैं चौंक उठती हूँ —

'पम्मी'

अर्ध निमीलित आंखों से मैं जैसे अपने से ही प्रश्न करती हूँ —'कौन ?' अवसाद और विषाद की इन अपनी घड़ियों पर भी न जाने कौन इस सूने घर में आकर अधिकार दिखाना चाहता है। उपेक्षा के आश्रय में कुछ देर और इन्हें अपना बनाए रखने की लालसा में आंखें बन्द करते ही पुकार फिर होती है और 'अरे यह कौन ?' सम्मोहन और मूर्छा के राज्य में इस व्यक्ति का न तो मैं स्वागत ही कर पाती हूँ और न ही तिरस्कार।

"किशोर ! ओह ! आज जैसे युगों के बाद तुम्हें देखा है। पर आज, आज मैं उस स्थिति में नहीं हूँ। आज मैं तुम्हारी बातों में नहीं आ सकती। चाहते हुए भी तुम्हारे साथ नहीं जा सकती। तुम्हारी याद—यह भी तो नहीं कह सकती कि भूल चुकी हूँ। इस याद से सम्बद्ध एक एक घटना तो जैसे कल की ही प्रतीत होती है।'हां, कल ही की तो बात है—तुम मेरे पास आए थे—'पम्मी ! तुम्हें कालेज के छात्रसंघ की अध्यक्षा बनना होगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं तो चौंक उठी थी सबसे पहले इस बात पर कि तुमने पहले ही साक्षात्कार में पहली ही बात पर समस्त औपचारिकता को छोड़ मुझे केवल 'पम्मी' कह कर पुकारा था।

'यह निश्चित है कि तुम्हें हार नहीं होगी और अब तुम अस्वीकार भी न करोगी।' बस इतना कहकर तुम चले गए थे। छात्रसंघ की अध्यक्षा--यहां तक कभी मैंने सोचा नहीं था। कालेज की राजनीति में सक्रिय भाग लेते रहने पर भी मैं यहां तक जाना नहीं चाहती थी किन्तु तुमने तो अस्वीकार करने का अवसर भी न दिया था। तुमने मेरे पर इतना अधिकार न जाने कैसे समझ लिया था। खैर–कृतज्ञता का धुंधला सा भाव उस समय मेरे में उभरा था जिसे कभी प्रकट भी न कर पाई।

अध्यक्षा चुनी जाने के बाद तुम्हारा पहला पत्र मुझे मिला था--'सबसे पहले तो अध्यक्षा बनने की बधाई लो और बोलो, मिठाई कब और कहां खिलाओगी? और फिर.....सोचोगी पत्र लिखने की क्या आवश्यकता थी? मिल कर भी तो बधाई दी जा सकती थी। ठीक है, पर..... खैर, मेरी बात का उत्तर देना।' पत्र तो मैंने पढ़ लिया--किन्तु इसमें था क्या? बहुत सोचा --और प्रयास भी बहुत किया कि कुछ न सोचूं। और मैंने इसका उत्तर नहीं दिया था। तुम्हारा दूसरा पत्र मिला --तुम्हारा उत्तर नहीं मिला। क्या कभी मिल भी नहीं सकती? आज शाम ५ बजे नेहरू पार्क में।'

तुमने मेरी बेचैनी को बढ़ा दिया। मैं इन रास्तों से अनभिज्ञ थी। डर भी बहुत था--चाहती भी नहीं थी, मैं तुम्हारे साथ किसी भी तरह का सम्बन्ध रखूं। घर में मेरा जीवन परिवार का था और घर से बाहर केवल कालेज तक पढ़ाई का। किन्तु तुम थे कि मुझे बहकाए जा रहे थे। शाम निकट चली आ रही थी। मैं जितना ही इस ओर से ध्यान हटाना चाहती थी उतनी ही बेबसी प्रकट हो रही थी। अन्तर में पहली बार इस प्रकार का संघर्ष अनुभव हुआ और मैं शिथिल होकर विवश, अचेत सी लेटी रही।

दूसरे दिन भरपूर प्रयास करने पर भी मैं तुम्हारी आंखों में देख न पाई थी। मैंने कोई भी तो अपराध न किया था। दोष तुम्हारा था। सीमाओं और विवशताओं को जानते समझते तुमने मुझे बुलाया था। क्यों? तुमने ऐसा क्यों किया था? मेरा तुम्हारा क्या नाता था? क्या परिचय था? सहपाठी होने के नाते तुम्हारा यह साहस दुस्साहस का ही तो रूप था। फिर भी मेरे में साहस न था--तुम्हारी ओर देख सकूं, तुम से बात कर सकूं। मुझे अनुभव होने लगा--मैंने अपराध किया है, मैं दोषी हूँ और पहली बार ऐसा लगा कि युवा मन की उदण्ड तरंगें पत्थरों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर सर फोड़ने लगी है और हृदय की बेसमझ भावनाएं स्वाभाविक किन्तु अनुचित मार्ग पर बढ़ चली हैं ।

कान्ता ने एक पुरज़ा सा हाथ में दिया । मैंने संशय और जिज्ञासा से उसकी ओर देखा । वह गंभीर थी और शांत । उसके नयनों में विचित्र सी दृढ़ता थी । उसे मौन देख मैंने पुरज़े को खोला—'जानता हूँ—एक दिन तो आओगी ही ।' ओह ! कितने हठी थे तुम ! और कितने दुर्निवार । समझती थी और स्पष्ट था तुम याचक के रूप में प्रार्थना कर रहे हो किन्तु तुम्हारे शब्दों में, तुम्हारे व्यवहार में कितना अहं था—कितना अधिकार था । तुम्हारे इस अधिकार और अटूट विश्वास के आगे मैं अपने को तुच्छ और हीन पाने लगी । पढ़ कर मैंने कान्ता की ओर देखा । मेरी आंखों में असामर्थ्य और विवशता के पुंजीभूत भाव जैसे कान्ता से सहायता की याचना कर रहे थे । कान्ता ने सब कुछ समझते हुए कहा—'मैं साथ दूंगी ।' मुझे विस्मय हुआ और निराशा भी । मैंने ऐसा तो नहीं चाहा था । मैं तो चाहती थी कि वह अन्धे की लाठी पकड़ कर उसे मार्ग के बीच ला दे —कि वह किनारे की खाई में न गिर जाए । परन्तु यह तो सब उलट हुआ जा रहा था । मैंने अनुनय के स्वर में कहा था 'नहीं कान्ता ! नहीं ! तेरे पांव पड़ती हूँ—मुझे ऐसे रास्ते मत दिखा ! कह दे उनसे मुझे पत्र न लिखा करें मैं उनसे नहीं मिल सकती । मेरे में वह साहस नहीं है । मैं.....' मेरा कण्ठ अवरुद्ध हो गया था । चुप न कर जाती तो आंसू टपक पड़ते । कान्ता की ओर याचना भरी तरल आंखों से देखती रही और फिर घर चली गई ।

नेहरू पार्क के उस एकान्त कोने में तुम प्रतीक्षा में थे जब मैं अपने आप से बाहर होकर वहां चली आई थी । आन्तरिक संघर्ष के घात-प्रतिघात से निढाल होकर आई थी मैं । तुम से अभी तक परिचय ही क्या था ? मौन खड़ी थी—आंखें झुकी और हृदय की तेज धड़कन से हांफती हुई भय की सिहरन समस्त साहस को समाप्त किए दे रही थी किन्तु साथ ही एक अनोखी सी हल्की पुलक मुझे किसी तरह खड़ा किए थी —'तुम आ गई ?' जैसे तुम्हें विश्वास न था — 'मैं जानता था, आज या कल, कभी तो तुम आओगी ही ! बैठो ।' मैंने थोड़ी सी आंखें उठा कर तुम्हारी धीमी सी मुस्कान को देखा और सीली सी घास पर बैठ गई । लगता था जैसे तुम थोड़ी देर और बैठने को न कहते तो पुलक का सहारा खो कर मैं अपने आप ही ढेर हो जाती । कितनी ही देर हम वहां बैठे रहे थे । घर लौट जाने का साहस भी जैसे मेरे में न रहा था । तुम्हारी बातों में मादकता थी, ठीक वैसी ही जैसी किसी रोचक प्रेम कथा में होती है । उपन्यासों में पढ़ी हुई बातें और ऐसे मिलन अवसरों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की स्थितियां साकार हो रही थीं। सम्मोहन पल भी दूर न रहने वाली कान्ता के वशीभूत मैं मौन, खोई सी सुने जा रही थी। शायद तुम ऊब भी गए थे। मेरा मौन तुम्हें खल गया था किन्तु मैं तो अपने से भी बेखबर थी--क्या करती?

मैंने तुम्हें पहला पत्र लिखा था--'किशोर ! रास्ते के कांटे सोने नहीं देते। फूलों की रंगत, उनकी सुगन्धि उसे पल के लिये मादक बना देती है किन्तु कांटों की चुभन, जो उस क्षणिक चुप्पी के बाद असीम तीव्रता से उभरती है तो पल भर को भी चैन लेने नहीं देती। नहीं जानती तुम कितने अनुभवी या अनाड़ी हो किन्तु अपने नितान्त अनाड़ीपन के कारण यही भय लगा रहता है कि जाने कहां, किस क्षण ढेर हो जाना होगा हर्ष और विषाद की इस गंगा यमुनी में। अन्त में कौन भारी पड़ता है--यह देखना है। मन न जाने क्या क्या सोचता है प्रयास करूंगी -- थोड़ा बहुत तो तुम्हें बता पाऊँ ! अभी यहीं तक।'

X X X

सच, मेरे में साहस बढ़ता गया। कान्ता डाकिए और सन्देशवाहक का कार्य करती करती ऊब गई। कई बार तो वह खीझ उठती। 'किसी दिन रुक भी जाया करो। इधर उधर तुम्हारे सन्देश पहुंचाने के सिवा मुझे कोई काम ही नहीं रह गया है न?' उस क्षण वह कितनी प्यारी लगा करती थी। वह न जाने अब कहां है? एक किस घने अंधेरे में लुप्त हो गई--कुछ पता नहीं। हर कठिनाई में वह सहायक रही। हर दुर्दिन में उसने साहस बढ़ाया। तुम्हारे प्रति उसका स्नेह--तुम्हारी इच्छा के प्रति सम्मान की भावना --असीम थी। वह सब कुछ किए जा रही थी--जानते हो किसलिये? केवल तुम्हारे लिये किशोर ! केवल तुम्हारे लिये ! किन्तु तुम ! शायद आज भी यह सब नहीं जानते।

पत्रों में, पार्कों में, सिनेमा घरों में हम मिलते थे। संकोच, झिझक, भय कहां थे ये सब? आज उन पत्रों की, मिलन के समय की बातों की याद आती है, तो फीकी हंसी बरबस होठों पर फैल जाती है। हां, उस दिन तुमने कहा था--'कल पिक्चर चलोगी?' 'नहीं' 'क्यों'? 'नहीं जा सकती' 'पर क्यों?'

'कह दिया न, नहीं जा सकती।' मेरी इस रुखाई पर तुम्हें अचम्भा हुआ था। और दूसरे दिन तुमने बोलना बन्द कर दिया था। बिन बताए उस नाराजगी के प्रत्युत्तर में मैंने भी मौन साध लिया था तो याद है कान्ता की क्या दशा हो गयी थी। अब भी कभी-कभी उसकी याद में मन कुछ पल के लिए खो जाता है। वह अभागी रही। क्या मिला उसे? खैर, तुम्हारे मौन का कारण जाने बिना स्वयम् ही चुप हो रहना दो ही दिन में मुझे खल गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरे ही दिन तुम्हें कण्टीन में घेर लिया था, मैंने पूछा था —आखिर इस मौन का कारण ?'

'कुछ नहीं'

'तो यह रुखाई क्यों ?'

'यह भी कुछ नहीं ।'

'जिस दिन तुम्हारे साथ पिक्चर जाने को मना किया, उसी दिन से मुंह फुलाए हो । इसलिये न कि तुम्हारे साथ पिक्चर नहीं गई ? किसी की विवशता भी जानते हो ?'

'जान लो तो विवशता । जब किसी और के साथ पिक्चर जाना हो तो साथ चलने के लिए नहीं कहना चाहिए—सो नहीं कहते ।'

'क्या मतलब ?'

'उस दिन तीन बजे पिक्चर गई थी ?'

'ओ !' बात मेरी समझ में आ गई थी । और तुम्हें बनाने का वह अवसर भी हाथ से जाने न देना चाहती थी ।

इसीलिए मैंने कहा था—'हां! गई तो थी ।'

'साथ कौन था?'

'साथ ! कोई भी तो नहीं ।' मैंने विस्मित सी होकर कहा था तुम्हारे मुख पर क्रोध की लालिमा देख कर हंसी फूट रही थी । किन्तु मैं अनजान बनी थी और इसीलिये गंभीर रहना भी ज़रूरी था । तुमने कहा था—'बहुत भोली बनती हो ।' क्या समझा है तुमने ? मेरे साथ पिक्चर नहीं जा सकती और उसी दिन, उसी समय किसी और के साथ वही पिक्चर देख सकती हो ? बोलो तो वह कौन था ?' तुम्हारा उपालम्भ बहुत मीठा लगा था । परन्तु मैंने उपेक्षा भाव से उसी अजानेपन में कहा था, "कोई हो भी—तो तुम्हें क्या ज़रूरी तो नहीं तुम्हें सब कुछ बताया जाए ।" और तुम्हारी तिलमिलाहट में और भी मज़ा था । क्रोध भी सीमाओं को तोड़ देने को था और तभी कान्ता आ गई थी । स्थिति को संभाल और सारी बात जान कर उसने बता दिया था कि वह व्यक्ति मेरा चचेरा भाई था । तुम खिसिया गए थे । अपने व्यर्थ के क्रोध और मूर्ख बन जाने पर लज्जित हो गए थे । तब तो तुम मेरी ओर खुल कर देख भी न पाए थे ।

बात उड़ने लगी थी । और हमारे विचार दृढ़ होते जा रहे थे । घर वालों से सब कुछ कह देने का साहस अब भी मेरे में न था । शंका तुम्हारे नहीं मेरे ही घर वालों से थी किन्तु कान्ता यह सब दायित्व उठाए हुए थी । वह घर वालों से बात करने वाली थी और हम प्रतीक्षा में थे—परीक्षा समाप्त होगी और, और ! डेढ़ मास की अवधि । और वह कितनी लम्बी हो गई ? इतनी लम्बी कि जीवन भर पार न हो पाए ।

परीक्षा की तैयारी की छुट्टियों में सप्ताह भर के बाद एकाएक मिल जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पर तुमने कहा था ––'मेरे साथ छात्रावास तक जाना होगा ।'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्यों ?'

'तुम्हारे सभी पत्र लौटा देना चाहता हूँ । तुम्हारा और मेरा साथ यहीं समाप्त होता है ?' इतनी देर बाद मिल कर तुम यही कहोगे––ऐसी आशा न थी । एकाएक तुम्हें क्या हो गया था, कुछ समझ नहीं पाई । मुख पर उभरे भावों को पढ़ने के लिये मैंने आंखें उठाईं––तो हिला न सकी । सोचती थी यह सब बनावटी होगा । मेरी बेकली और भय को देख कर समस्त कृत्रिमता काफूर हो जायेगी । परन्तु वहां तो सच ही दृढ़ता और सत्यता थी । स्नेह और प्यार की मोहकता और स्निग्धता लुप्त थी । मेरा समस्त शरीर कांप उठा, जड़ता और शून्यता अंग अंग में भर गई । न चाहते हुए भी विश्वास करना पड़ रहा था । यही था इस साहचर्य और प्यार का परिणाम । यही थी पत्रों की परिसमाप्ति ? कुछ देर की मूर्छ्ना के बाद मैंने कहा––'क्या हो गया है तुम्हें ? यह सब किस लिए ?'

'बस इतना ही बहुत है । सब कहना ज़रूरी नहीं । दो दिन से तुम्हें ढूंढ रहा था । चलो ।' दृढ़ता में तनिक भी ढील नहीं थी, मुझे कुछ भी सूझ नहीं रहा था । कुछ पल मौन ठहरी रही । जड़ता के कारण देह सुन्न हो रही थी। हृदय में बवंडर था। पिघल कर वह तो जाना चाहता था किन्तु आंखें जैसे मरु बन गई थीं । मुझे वैसे ही खड़े देख तुम बोल उठे थे––'मेरे पत्र सुविधानुसार लौटा देना अब चलो––अपने पत्र ले आओ । देखो, देर न करो, शाम ढल रही है ।' मुझे जैसे चेत हुआ । मैंने देखा सूर्य लालिमा की ओट में छिपता जा रहा था और कुछ ही क्षण में घनी काली छाया लालिमा को ढक लेने वाली थी । अवसाद के बोझ से दबी मैं निष्प्राण सी घिसटती तुम्हारे पीछे चल रही थी । तुम्हारे साथ तुम्हारा वही साथी था, जिसने अनेकों कठिन समयों पर हमारी रक्षा की थी । तुम आगे चल रहे थे––कभी बातें करते, कभी मौन । और मैं यही सोच रही थी कि किनारा दिखाई देने लगा तो नाविक ने नैया न खेने की ज़िद ठान ली । मुझे इस रास्ते पर इतनी दूर लाकर असहाय छोड़ देने वाले तुमसे मैं क्या कहती ? क्या अनुनय करती ? तुम नहीं जानते थे कि तुम्हीं ने मुझे इस राह का परिचय करवाया था और मार्ग-दर्शन कराते हुए मुझे लक्ष्य तक पहुंचाना भी तुम्हारा ही कर्त्तव्य था । तो मैं क्या कहती ? विडम्बना अखरती अवश्य थी कि कल तक बराबर साथ चलते चलते आज एकाएक मुझे पीछे छोड़ कर तुम आगे बढ़ गए थे ।

छात्रावास आ गया था । मुख्य द्वार पार करते ही मेरे पांव क्षण भर के लिये रुके । मुझे लगा कुछ अशोभन हो गया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हां-हां प्रकाश महाशय के सामने में [illegible] लड़कों के छात्रावास में आना ठीक ही तो अशोभन था। कालेज की छात्रा और तुम्हारी सहपाठिनी के रूप में मेरा आना सर्वथा आपत्तिजनक न होते हुए भी सन्देह और आक्षेप का विषय अवश्य था। कुछ न सही तो कोई भी छात्र कोई भी बात कह कर मेरे जीवन को कंटकमय बना सकता था। द्वार पार करते ही य आशंकाएं मेरे मस्तिष्क को घेर उठीं। अब तक मैं सम्मोहित सी चली आ रही थी। शायद मुझे इतना भी ध्यान न था कि मैं कहां और क्यों जा रही हूँ। तुम्हारा इतना कह देना ही क्या बहुत न था कि तेरा मेरा साथ समाप्त हो गया, जो मैं चलती अबोध बनी तुम्हारे पीछे चली आई। तुम कौन थे मेरे तब जिसके पीछे मैं समय और स्थान का किंचित भी ध्यान न कर चली आई। शायद तुम्हारे नाता तोड़ लेने पर भी मैंने उसे वैसे ही बनाए रखा था। पर यहां आकर यह सब सोचने से क्या होता ? किसी तरह साहस कर अपने भावी जीवन की चिन्ता में अपने हाथ के लिखे पत्रों को लेने के लिए मैं एक ही पल रुक कर बढ़ चली थी।

तुम भी परिस्थिति से अबोध नहीं थे। मुझे गाढ़े अन्धेरे में वहां ला कर तुम भी उसी विपत्ति में फंस सकते थे। नियम-भंग का दोष तुम पर भी उतना ही भारी पड़ता इसीलिये शायद तुमने कमरे का [illegible] मित्र को पुकारा था, जिसने चट्टान-सी दृढ़ता से कहा था—'तुम निश्चिन्त रहो किशोर। जब तक मैं यहां हूँ कोई आंख उठा कर नहीं देख सकता।' और तुमने मुझे अन्दर लेकर किवाड़ बन्द कर लिये थे।

तुम्हारे साथ एकान्त में न जाने कितना समय मैंने बिताया था। प्रत्येक समय तुम अपने थे और मैं अपना सर्वस्व तुम्हारे हाथ में देकर सदा निश्शंक रहती। आज तुम्हीं ने अपनी ही वस्तु को अपने से अलग कर दिया था। न चाहने पर भी आज मुझे आभास होता था कि मैं किसी अपरिचित व्यक्ति के साथ अपरिचित एकान्त में हूँ। तभी मैं सिहर उठती थी। इस सब को झुठला देने का भरसक प्रयास करने पर भी मुझे सफलता न मिल रही थी।

कमरे में शेड वाली टेबल लैम्प के जल उठने से हरी हरी मादक ज्योति जल उठी। "बैठो" कह कर तुम कपड़े बदलने लगे तो मैंने अपनी वाणी में समस्त आर्द्रता भर कर कहा था —'किशोर! जो कुछ तुमने करना है उससे मेरे कहने पर तुम टल जाओगे—ऐसा तो नहीं मानती। किन्तु विनय कर सकती हूँ — कम से कम इस एकाएक परिवर्तन का कारण तो बता दो।' मेरी भीगी आवाज़ की सील—मुझे लगा तुम्हारे तक अवश्य पहुंची क्योंकि तुम एक पल कुछ बोल नहीं पाए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी ओर देख कर जैसे तुम विचलित हो उठे थे और दूसरे ही क्षण, जैसे भूल सुधारने के लिए, मेरी ओर से आंखें फेर कर पुनः दृढ़ हो गए थे।

'कारण ! क्या करोगी कारण जानकर ? पर यह बताओ कि तुमने आज जाना ज़रूर है ?' मेरी ओर पीठ किए खड़े ही तुम बोल रहे थे और अन्तिम शब्द पर सर घुमा कर मेरी ओर देख रहे थे। तुम्हारे इस अन्तिम वाक्य ने मुझे चौंका दिया। इसका उत्तर तुम मेरे से चाहते थे, स्वयं ही नाता तोड़ कर। फिर भी मैंने कहा था "मैंने तुम्हें छोड़ कर जाने का तो कभी सोचा न था किशोर ! तुम कैसी कैसी बातें करते हो ? समय आने दो, परीक्षा समाप्त होते ही तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा।" भावुकता में मैंने यह सब कहा था। किन्तु समय और स्थान का आभास होते ही मैंने फिर कहा था--'तो मैं जाऊँ ? चलो मुझे छोड़ आओ। जाने लोग क्या कहेंगे।' मेरी वाणी में उत्साह भर गया था ! मैं समझी थी कि अब तक का नाटक अवश्य ही सुखान्त होगा। यह सब तुम्हारा उपहास ही था। किन्तु मेरा उत्साह दूसरे ही क्षण नष्ट हो गया, जब तुमने कहा था–'ये बातें छोड़ो, पत्र तो तुम ले ही जाओगी और.....'

'और क्या ? ऐसा ही है तो लाओ मेरे पत्र, मुझे देर हो रही है।' मेरी वाणी में यह कटुता और आक्रोश कहां से आ गया, मुझे स्वयम् पता नहीं चला। तुम मेरे निकट आ चुके थे। मेरे मुख को ऊपर उठा कर तुमने कहा था--'अब तुम जाओगी कहां ?' तुम्हारा वह व्यवहार मेरे लिये पूर्ण तथा अपरिचित था ! तुम्हारी वाणी की थिरकन भी नई थी और आंखों से आंखें मिलते ही मैं एकदम कांप उठी। मैं झटके से खड़ी हो गई थी। निकट आशंका से मन प्राण त्रस्त हो उठे। भीत त्रस्त मैं कुछ बोल भी नहीं पा रही थी। तुमने मेरा हाथ पकड़ कर अधिकार और अनुनय के स्वर में कहा था -- "पम्मी ! यहां आकर तुम ऐसे ही लौट जाओगी ?"

किसी प्रकार साहस बटोर कर मैंने कहा था --'तुम्हारे तो हर पत्र में लिखा होता था किशोर कि तुम्हारे प्यार में वासना नहीं है' और तुम एकदम परास्त होकर भौंचके से खड़े रह गए थे। मेरे प्राण जैसे लौट आए थे। भय की छाया तो अभी वैसी ही बनी थी। सोच रही थी-- आज तुम्हें क्या हो रहा था। मैंने अपने को तुम से अलग करके देखना तो कब से छोड़ दिया था। फिर भी तुम्हारा यह व्यवहार, और वह भी ऐसे अवसर पर, जब तुम मेरे से नाता तोड़ चुके थे। तो क्या नारी का उपयोग या उपभोग केवल यहीं तक सीमित है ? हर पुरुष के लिये नारी का रूप क्या वासना की चौखट के पार नहीं हो पाता ? जब नारी स्वयम् ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुष को सर्वस्व समर्पण कर देती है तो भी उसके साथ यह व्यवहार किस सभ्यता का प्रतीक है ? ओफ ! इसे भाग्य कहूँ या विडम्बना कि अपने को संरक्षण में सौंप कर भी नारी सुरक्षित नहीं, उसका अस्तित्व सुरक्षित नहीं। विचारों को छिन्न-भिन्न करते हुए तुम कह रहे थे 'पम्मी ! मानता हूँ मैंने तुम्हें प्यार किया किन्तु उसकी एक अवधि थी, जो अब समाप्त होने पर है। तुम्हें देखने पर तुम्हारी ओर खिंचने का कुछ भी कारण न था। यह स्वीकार करना होगा कि मुझे ललकारा न गया होता, तो हम दोनों का परिचय औपचारिकता की सीमा पार न करता। मेरे कानों में आज भी वे शब्द गूंजते हैं 'इस लड़की को अपने चंगुल में ले आओ, तो तुम्हारी धाक माने' और पम्मी ! मैंने कभी हार नहीं मानी'....तुम्हारी बात सुनकर मुझे चक्कर आने लगा था। आक्रोश और क्रोध से वातावरण का मान भुला कर मैं चीख उठी थी–'कितने नीच हो तुम।..... और तुमने मेरे मुंह को ज़ोर से बन्द कर दिया था। तुम्हारे ज़ोर के थप्पड़ से मेरा सर भन्ना गया था। ग्लानि, पीड़ा, और तुम्हारे व्यवहार के आघात से मैं बेसुध सी हो तुम्हारी भुजाओं में गिर पड़ी। मैं निश्शक्त और प्रतिरोध करने में पूर्णतः असमर्थ हो गई।

X X X

और अब तुम मेरे पत्र भी नहीं दे रहे थे। इतने सशक्त होकर भी तुम्हें भय था कि मैं तुम्हारे पत्रों से तुम्हारा अनिष्ट कर सकूंगी। सर्वस्व लुटा कर भी नारी ने आज तक क्या पाया है। वह सर्वाधिकारी मनुष्य का क्या बिगाड़ पाई ? इस पर भी तुम डर रहे थे। कैसी विडम्बना थी ! और मैं ही आवेश में कैसी पागल हो उठी थी––भविष्य की आशंका से पत्र छीनने लगी, तो तुमने मुझे पीछे धकेल दिया था। उस हाथापाई में निश्चय ही तुम्हारा पक्ष भारी रहा। चोटों से मैं शिथिल हो गई थी किन्तु तुम थे कि पौरुष के अभिमान में गर्व से हांफ रहे थे। क्या खूब था तुम्हारा वह रूप !

हम दोनों को ही अपनी भूल का आभास हुआ जब द्वार पर थपथपाहट की आवाज़ चरम सीमा तक ऊंची हो गई। द्वार टूट भी सकता था और हम जो काण्ड कर बैठे थे उसके असंख्य चिन्ह वहां पर थे। एकाएक तुमने अटैची में मेरे पत्र, बिखरे कपड़े और बालियों को समेट कर डाल लिया और द्वार खोल दिया। बाहर का दृश्य देख कर हमारे होश उड़ गए थे। कमरे के भीतर का शोर सुनकर छात्रावास के सभी छात्र इकट्ठे हो गए थे। और तुम्हारा वह साथी अकेला ही उन्हें रोके खड़ा था। द्वार खुलते ही उसने कहा–– 'किशोर, इसे लेकर निकल जाओ। और जिसने तुम्हारा पीछा करने की चेष्टा की, उसके लिए मैं हूँ।' और हम बाहर निकल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गए थे। मुझे घर छोड़ कर तुम कहां लापता हो गए थे कुछ पता नहीं। विवाह के बाद तुम्हारा पार्सल मिला था, बस। और हां एक पत्र भी था ——'उस दिन जो कुछ कहा था—— उस सब को सत्य करने वाले अक्षम्य अपराध के लिये क्षमा किस मुंह से मांगूं? तुम्हारा विवाह हो गया है—— बधाई हो! अपने दोष के लिये मुझे दण्ड भोगना ही चाहिए किन्तु क्या करूँ? लगता है जैसे तुम्हें भी दण्ड दिया गया है और इस प्रकार मेरा अपराध और भी गुरुतर हो गया है। कुछ प्रायश्चित्त कर सकूं, तुम्हारे भय और अपने पशु को उभरने का अवसर न दूं ——तुम्हारे ये पत्र तुम्हें लौटा रहा हूँ।'

उफ़! तुम फिर वैसे ही हठीले रहे। तुम्हें भुला देने के प्रयास में सफल होती होती मैं एकदम पछाड़ खा कर गिर पड़ी। पत्र लौटा कर तुमने मेरे पर उपकार तो किया ही ——साथ ही क्या तुम एक बार फिर मेरे अपने नहीं हो गए थे। तुम्हारे पत्र के अक्षर मुखर होकर कानों के कपाटों को तोड़ हृदय को मथे जा रहे हैं। किन्तु तुमने कितनी देर कर दी थी किशोर! क्या तुम विवाह से पहले मुझे नहीं मिल सकते थे? क्या यही पत्र पहले नहीं लौटा सकते थे? तुमने काम अधूरा क्यों छोड़ दिया था? इस घटना की तरह ही तुम भी सब पूरा करते तो मैं जीवन भर के उत्ताप से मुक्त तो हो जाती।

हिन्दी विभाग, पटियाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रावण-वध के पश्चात्

सीताराम बाहरी

राम का क्रोध भी परम सात्विक होकर रावण की नाभि के संधान में प्रखर शर बन गया और रावण दोनों हाथों से अपनी अंतड़ियां समेटे गिर पड़ा।

चारों ओर जय जय कारकी ध्वनि गूंज रही थी। रावण के सेनानी भी 'राम राम' पुकार उठे थे। उनके शोक में भी द्रवण-शीलता थी। लक्ष्मण ने राम को देखा। वह उदासीन भाव से निस्तब्ध खड़े थे—"तात! क्या बात है, आप इस महान विजय के पश्चात् उलटा उदास उदास खोए खोए प्रतीत होते हैं?"

'तुमने वह क्रंदन नहीं सुना जो रावण की तपोपूत विभूतियों ने उसके भौतिक शरीर के पतन पर किया। इस युग के महान विद्वान् के मोहग्रस्त हृदय पर मुझे भी दुःख होता है। ऐसा व्यक्ति विरले ही मिलेगा जिसको पाप भावना से बचाने के लिये अनेक संस्कार उसे घेरे रखते थे। मैंने तो रावण का बाह्य व्यवहार ही देखा। जाने आप उसके हृदय की गति मति को कैसे भांप गए।'

'अरे, तुमको भी एक दुःख रहा, सीता हरण का, और मेरा मोह। तीर की वह नोक जो रावण की नाभि को छेद कर पार निकल गई, सचमुच उसने उसके पाप के भौतिक साधनों को समाप्त कर दिया। इसी लिये ज्ञान की आभा अब भी उसे घेरे हुए है, लक्ष्मण उस आभा को अर्जित करो, उससे शिक्षा लेने जाओ।'

लक्ष्मण युद्ध का सारा प्रकोप भुला कर सौम्य रूप में रावण के पांव छूने गया और बड़े विनीत स्वर से शिक्षा की याचना करने लगा।

रावण ने कहा—'राम के बाण में जो शक्ति काम कर रही थी वह सत्य और शील की शक्ति थी। ज्ञान के प्रकाश में सत्य तो प्राप्त किया जा सकता है किन्तु शील के लिए तपस्या, उदारता और शालीनता की साधना आवश्यक है। राम के बाण ने मेरी भौतिकता का सारा आडम्बर तोड़ दिया मेरे पापों का मार्ग ही नष्ट कर दिया। मैं स्पष्ट देख रहा हूँ कि मेरी मोह मुक्ति का साधन बन कर राम का बाण चला। न कोई किसी को मारता है न कोई मारने वाला है। जीवन के रंगमंच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर हम सभी कठपुतली के पुतले हैं । वह महा सूत्रधार जब तक, जिस रूप में नचाता है, हम नाचते हैं, किन्तु मुझ जैसा देवत्व का पुजारी खल नायक बन सका, दंभ के सूत्र ने मुझे यह दिन दिखाया । लक्ष्मण यह घटना भी युग युग तक याद रहेगी, विधि की विडम्बना यह रूप भी धारण कर लेती है ।

X X X

दशहरा मनाया जा रहा था । रावण का पुतला जल चुका था । राम का अभिनय करने वाले जा चुके थे । रजनी की काली शीत चादर ने सारे दृश्य को छिपा दिया ।

आधी रात को जब दूर के तारे सायं सायं करते घूम रहे थे,एक हवा का विवर्त सा उठा और राख को लपेटता हुआ ऊंचा होता गया, चांद ने आंखें फाड़ फाड़ कर देखा रावण खड़ा है और पूछ रहा है—'पृथ्वी पुत्र ! चंद्रमा ! तुम मर्त्य लोक के इतिहास के साक्षी हो । सच सच बताना, आज के कपटी, नास्तिक और अश्लील मानव को क्या अधिकार है कि मेरा पुतला बना कर मुझे जलाता रहे । बहन के प्रतिशोध-वश में सीता को उठा लाया था, किन्तु मैंने सीता से बलात्कार नहीं किया । मैं सदैव अपनी पत्नी मंदोदरी के साथ अशोक वाटिका में जाता था । किंतु आज का कामी, खल, लोलुप मानव क्या मेरी दृष्टि से भी नारी को देख सकता है ? क्या मेरे ज्ञान का शतांश भी आज किसी मानव के पास विद्यमान है ? क्या मनुष्य का स्तर उन्नत नहीं हो चुका ? बोलो हे चन्द्रमा, बोलो आसमान !'

और चांद फीका पड़ गया, तारे डोल गये, ध्रुव नक्षत्र भी करवट बदल कर रह गया ।

× × ×

रात बीत गई, रावण का प्रश्न गूंजता रहा । उषा आई, सिमटी सिमटी, सहमी सहमी, अंशुमाली की छटा से आकाश जगमगाने लगा । शतरंगी धनुष, रामधनुष आकाश में दिखाई दिया, किन्तु वह भी प्रश्न चिह्न ही बना हुआ था, मानो राम कह रहे थे—

"इस मानव ने श्रद्धा भक्ति द्वारा मुझे घटघटवासी बन जाने की प्रार्थना की—'राम हमारे पाप के रावण को भी नष्ट कर देना ।'—ऐसा कहने वाले चले गए । उनका वंशज आज का मानव तो मेरे बाण पर पहले ही अपने छल-कपट का गुरुभार रख देता है और मुझे विवश करता है कि मैं 'पतित-पावन' न बनूं । जब वह अपने अंतःकरण की सात्त्विक आवाज़ को दबोच रहा होता है तो कौन जानता है मेरी क्या दशा होती है । रावण मेरे बाण से एक बार ही मारा गया था किन्तु मुझे अनेक बार अनेक व्यक्तियों के अंतस्थल में मरना पड़ता है । रावण मुझे नहीं मार सका किन्तु यह मानव, मेरा नाम-लेवा ही, मुझे अपने पाप के विष से मार डालना चाहता है । हे सूर्य देव ! फिर लोग 'राम की जय', 'सीतापति रामचंद्र की जय' क्यों बोलते हैं ? कैसी विडम्बना !"

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय-परिवर्तन

जयनाथ मणि त्रिपाठी

पात्र

पुरुष--

सुभाष--एक सामाजिक कार्यकर्त्ता (युवक मंगलदल)

ठाकुर--एक साहूकार-- सूद पर रुपया देने वाला

कुल्हड़--एक विनोदी किन्तु जागरुक युवक

स्त्री--

माधुरी--एक सामाजिक कार्यकर्त्ती

ठकुराइन--सीधी सादी किंतु कंजूस महिला

चाची--ठकुराइन की सहेली

अतिरिक्त साऊंड : जनरव--बातचीतः होहल्ला ।

(बाहर जनपथ पर कोलाहल : दूर से आ रहे गाने का स्वर--

ऐ मेरे वतन के लोगो,
जरा आंख में भरकर पानी,
जो शहीद हुए हैं उनकी,
कुछ याद करो कुरबानी।

धीरे धीरे स्वरावसान : --सड़क पर दो आदमी बात करते हैं।)

पहला--ऐसों को तो गोली मार देनी चाहिए ।

दूसरा--इसमें हमारा-आपका भी तो दोष है । अगर हम लोग इनका सामाजिक बहिष्कार कर दें तो वे अपने आप रास्ते पर आ जाएं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहला--चलो भाई अभी कोतवाली में रिपोर्ट भी दर्ज करानी है ।

दूसरा--चलो ।

(दोनों जाते हैं : पद-चाप)

साउंड-- (संगीत) X X X

माधुरी--(किलकती हुई) अरे चाची ! कुछ सुना तुमने ?

चाची--बताओ न ऽ। मैं यहा बैठी-बैठी क्या सुनूं -जानूं ।

माधुरी--मेहनत के धन और लूट के धन में यही तो अंतर है । किसी ने ठीक ही कहा है : लालच बुरी बलाय .....

चाची--तू तो पहेली बुझा रही है : साफ साफ कह न ।

माधुरी--अरे वह जो सिद्ध-महात्मा आये थे न जिसकी प्रशंसा ठकुराइन चाची करते नहीं अघाती थीं, उनकी सारी महात्मागिरि निकल गई ।..... चाची बेचारे का सारा पोल खुल गया ।

चाची--कैसे कैसे लोग हैं । (लम्बी सांस लेती है ।)

माधुरी--चाची ! बाबा जी मेहमान-खाने भेज दिये गये ।

चाची--बाहर क्या यही शोर था बेटी ! (रुक कर) ईश्वर की बड़ी कृपा रही बेटी जो मैं बच गयी । कल मैं भी रुपया दूना कराने जाने वाली थी ।

(दीर्घ नि:श्वास)

माधुरी--क्यों नहीं, हम लोग तो नास्तिक हैं, बच्ची हैं, भगवान का डर नहीं लगता, यही न ? तुम्हीं तो कल कह रही थी ।

चाची--बेटी ! तुम लोग पढ़ी लिखी हो । हम बिना पढ़ी लिखी औरतों को जो कुछ कोई समझा दे, वही मन में बैठ जाता है । अब भला साधु और फकीर के भेष में भी लोग ठगी करने लगे तो अब धर्म कहां रह गया ।

माधुरी--(व्यंग के स्वर में) मुझे तो बड़ा अफसोस है चाची, तुम्हारे रुपये और गहने दोनों ही बिना दूना हुए ही रह गये । (हंसती है।)

चाची --काहे को जलाती हो बिटिया । भगवान सीधे थे । नहीं तो, मैं तो आज किसी ओर की न होती । मैं तो ठकुराइन के कहने पर विश्वास कर बैठी थी ।

(दरवाजे पर दस्तक होती है : रह रह कर जंजीर पीटने की आवाज़)

माधुरी--कौन है ?

ठकुराइन--मैं हूँ, माधुरी बिटिया, तुम्हारी ठकुराइन चाची ।

(घबराई हुई आवाज़)

(माधुरी उठ कर दरवाज़ा खोल देती है : खटाक की आवाज़ : ठकुराइन का प्रवेश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठकुराइन—माधुरी बिटिया ! तुम ठीक कहती थी । मैं तो लुट गई ..... हाय.....पहले परीक्षा लेने के लिये दस रुपया दूना करा लिये थी । सारी पूंजी बाबा जी को 'दूना' करने के लिए दे आई थी । (बिलखती है) लेकिन हाय....मैं तो लुट गई । बाबाजी सारी पूंजी लेकर चम्पत हो गये ।.....आह ! मेरा ४०००।

माधुरी—बिना सोचे समझे काम करने का यही फल होता है । ठकुराइन चाची ! अगर चाची का रुपया भी डाकखाने में न होता तो आज तुम्हारे साथ इनका भी यही हाल हुआ होता । अगर यही रुपया तुम राष्ट्रीय बचत में लगाये होती अथवा इनामी बांडों में लगाये होती तो संभव था कि तुम्हारा रुपया दूना-चौगुना भी हो जाता । अगर दूना -चौगुना न भी होता तो सूद के साथ धन तो तुम्हारा बचा ही रहता, साथ ही साथ तुम्हारे रुपए से हमारे देश की ताकत बढ़ती, जवानों का हौसला बढ़ता और योजनाओं में लग कर तुम्हारा स्वयं का कल्याण होता ।

(सुभाष का प्रवेश : सब का अभिवादन करता है ।)

चाची और ठकुराइन—(एक साथ) आओ बेटा । युग युग जियो ! बैठो ।

माधुरी—भैया सुभाष ! तुम्हारी यह ठकुराइन चाची भी रुपया दूना कराने गई थीं और सब कुछ गवां आई हैं । इनकी ओर से भी जाकर रिपोर्ट लिखा दो ।

सुभाष—सो तो मैं पहले ही लिखा कर आ रहा हूँ । मुझे पहले ही मालूम हो गया था । भगवान जाने इन लोगों को कब 'अक़्ल' आयेगी !

(साउंड संगीत : जनपथ पर झगड़ने का शोर)

सुभाष—क्या बात है क्यों झगड़ते हो तुम लोग ?

कुल्हड़—मैं बताता हूँ । मैं कुल्हड़ हूँ न । मेरे पास बुद्धि नहीं है, इज्जत नहीं है.....उस तरह की बुद्धि, उस तरह की इज्जत मुझे चाहिए भी नहीं । इन्हें देखो, यह ठाकुर साहब हैं । इज्जत वाले हैं । क्योंकि इनके पास रुपया है, पैसा है । पैसा ही इनका सब कुछ है । ईमान है, धर्म है । .....जो धन देश के काम न आये..जो धन किसी गरीब का प्राण न बचा सके....जो धन किसी के गर्म आंसुओं से सींचा गया हो, लानत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ऐसे लोगों को लोगों को आंख कराते हैं)

सुभाष——तुम्हारे कहने का मतलब क्या है ? जो एक सांस में ही सब कुछ बक गये ।

एक आदमी——भैया ! यह जो ठाकुर साहब हैं न यही उस ढोंगी बाबा को सूद पर रुपया दिये थे जिससे वह रुपया दूना करता था यही ठाकुर बेचारे उन मजदूरों की, जिन्होंने अपनी पूरी की पूरी तनख्वाह सुरक्षा कोष में दे दी थी, मजबूरी का लाभ उठा कर दो आने प्रति रुपया सूद का वसूला है । उनके देश-भक्ति की हंसी उड़ाई है ।...यही ठाकुर उस ढोंगी बाबा की जमानत के लिए कचहरी सिर पर उठाये घूम रहा था ।...और तो और मिट्टी के तेल की दुकानों पर छापा मार कर जिन ब्लैक करने वालों को पकड़ा गया था उनको भी छुड़ाने के लिये यही ठाकुर दिन रात एक किये है ।..... ऐसे देश के दुश्मन से हम लोग निपट कर रहेंगे ।

समवेत स्वर——हां, अब हम अधिक नहीं बर्दाश्त कर सकते । हम देश के दुश्मनों को, आस्तीन के सांपों को कुचल कर रहेंगे ।

(कोलाहल : सुभाष और माधुरी

सुभाष——बहुत ! खूब ! वही ढोंगी बाबा इनके घर का चार हज़ार रुपया मार ले गया और उसी की वकालत....: उसी के साथ इतनी हमदर्दी ...क्यों न हो ...।

कुल्हड़——उसकी इनको कौन फिक्र । इधर से आया उधर चला गया ।

ठाकुर——(चौंक कर) हमारे घर का रुपया ?

सुभाष ——हां! हां! आप ही के घर का रुपया , ठकुराइन का रुपया..... आठ हजार होने के लिए चार हजार रुपया ।

ठाकुर ——(सिर पकड़ कर) हे भगवान !

कुल्हड़——बना है, ठाकुर का बच्चा ।

सुभाष ——चुप रहो कुल्हड़ । जो भी बात करोगे तुम उजड्डता की ही करोगे ।

कुल्हड़ ——हां ! हां! हम उजड्ड हैं, बेवकूफ हैं लेकिन देश की दुश्मन नहीं..... गद्दार नहीं ....किसी की मजबूरी का नाजायज़ लाभ नहीं उठाता । इस ठाकुर जैसे कितने ही देश के, राष्ट के तथा समाज के दुश्मन हमारे बीच पल रहे हैं । देश के इन जयचंदों को, इन गद्दारों को हमें पहले समाप्त करना है ।

(शेष पृष्ठ ५९ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेहरू की ललकार

कृष्ण कुमार खन्ना

सुन कर नेहरू की ललकार
जाग उठे हैं भारतवासी
मरने-मिटने को तैयार !
भारत माता--अपनी सबकी माता है
अपनी है यह जन्मदायिनी
--सच्चा इसका नाता है
हिन्दू, मुस्लिम, सिख इसाई
आपस में है भाई-भाई
चारों ही इसके अपने हैं
सभी लाडले
सबने मिल कर माँ की प्यारी ममता पाई
आज यदि माँ के आँचल पर
--कोई दाग लगाने चाहे
एक नहीं चारों ही मिल कर
बलिवेदी पर--
माँ के कारण
मरने मिटने को तैयार !
सुन कर नेहरू की ललकार
जाग उठे हैं भारतवासी
मरने मिटने को तैयार !

यह भारत है
भारत के तो बच्चों ने भी
दूध पिलाया है शेरों को
आज नहीं यह पहली बार
हमें जूझना पड़ा जंग में
देखो तो इतिहास हमारा
--हमने पहले भी दुश्मन को
कितनी बार भगाया है;
तुम बुज़दिल हो
तुम्हें भगाने को तो केवल
थोड़ा सा साहस काफी है
साहस के अब राजा हैं हम
खैर मनाओ चाऊ, माऊ
सदा रहा है--
सदा रहेगा
हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर
भारत का अधिकार !
सुन कर नेहरू की ललकार
जाग उठे हैं भारतवासी
मरने-मिटने को तैयार !

दोस्त तुम्हें समझा था हमने
शत्रु से भी बदतर निकले
कहते कुछ हो--करते कुछ हो
इससे घटिया हो सकता है क्या व्यवहार
बोली तेरी समझ गए हैं
चिकनी चुपड़ी बातों में न आएंगे अब
उत्तर देंगे--अब तो केवल
भारत के हथियार !
सुन कर नेहरू की ललकार
जाग उठे हैं भारतवासी
मरने-मिटने को तैयार !

● ● ●

हिन्दी विभाग, पटियाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंचन कुमार

मूल कथाकार स्वा० "परशुराम"

पाठशाला की छुट्टी के बाद मानिक बोला—"अरे कंचन, आज शाम को पाँच बजे हमारे यहाँ चाय पीने आना ।"

कंचन ने पूछा—"क्यों रे, आज तेरी सालगिरह है क्या ?"

"धत्, मूर्ख कहीं का । साल गिरह साल में कितनी बार हुआ करती है ! अभी कुछ दिन पूर्व तो मनाई थी । जब नेवता खाके तेरे पेट में गड़बड़ी हुई थी । क्यों तुझे भी याद नहीं रहा ?"

"तो फिर काहे की दावत है आज ?"

"आज शाम को जीजी का वर आएगा ।"

"तेरी रूबी जीजी की शादी हो गई क्या ?"

"धत्, शादी का अभी कुछ ठिकाना ही नहीं हुआ । आज खगेन बाबू जी से मिलने आएगा । अगर ज्यादा मेल हो जाय तो शादी तय होगी ।"

कंचन अक्लमंद की तरह बोला—"अः अब समझा ।" दावत में शामिल हो जाने को वह हमेशा तैयार रहता है । चाहे वह किसी कारण से हो, मेल से हो या अनबन से, शादी का प्रीति भोज हो, अन्न-प्राशन हो या श्राद्ध । चना, केक, बिस्कुट, कचौड़ी, पुलाव, संदेश कलिया किसी में उसे कोई उज्र नहीं है ।

शाम को पाँच बजे जहां तक हो सका, साफ कपड़े पहने कंचन मानिक के घर जा रहा था कि उसकी बड़ी बहन बोली—"देख कंचन, इस टिफिन कैरियर को लेता जा, मानिक की माँ को देना जाकर । संभाल कर ले जाना, कहीं गिरा न देना । खाली होने के बाद लौटते वक्त वापस लेते आना ।"

टिफिन कैरियर हाथ में लेते हुए कंचन बोल उठा —"अरे बाप, कितना भारी है । इसमें क्या-क्या है, बहन जी । बादाम की नमकीन, मछली की कचौड़ी, माँस की पैटी, पिश्ते की बर्फी और आम की चटनी । क्यों मैंने ठीक कहा न ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, हाँ सब है इसमें। मानिक के नौकरी पेशा देखने से मालूम होता है घर जाकर सब मालूम हो जाएगा, और खाने को भी मिलेगा।"

"उसके घर में खाना-पीना होगा, सो तुमने क्यों खाना बनाया ? बोलो न जीजी ?"

'चुप रह, तेरा क्या मतलब इन सब बातों से। मानिक की माँ ने बनाने को कहा था, बस बना लिया।"

× × ×

"मानिक का घर ज्यादा दूर नहीं था। कंचन चंद मिण्टों में वहां पहुँच गया और मानिक की माँ को टिफिन कैरियर देकर बोला—"मौसी जी, रूबी जीजी के जमाई बाबू अब तक नहीं आए हैं ?"

मानिक की माँ बोली—"छोकरे के बोलने के ढंग को देख कर शरीर जलने लगता है। दस साल की उम्र हो गई, अब भी अक्ल नहीं आई। अरे, वह तो पानु का मित्र खगेन है, चाय पीने को बुलाया है। कंचन, याद रखना, कहीं उसके सामने बदतमीजी न कर बैठना।"

सिर हिलाकर कंचन ने बतला दिया कि वह बदतमीज़ी करने वाला लड़का नहीं है। मानिक उससे बोला—"खगेन बाबू छः बजे आ पहुंचेंगे, तब तक चल उस कमरे में केरम खेलें।"

नियत समय पर मानिक के बड़े भाई पानु या पन्नालाल के साथ खगेन बाबू का आगमन हुआ। सुन्दर चेहरा, कि किसी रईस घराने का है ! अपनी कार ले आया है। उम्र कोई २६-२७ की होगी ! उसके पिता का अबरक या कोयले का कारोबार है ! रूप, गुण, इल्म, दौलत की हैसीयत से ऐसा इंसान खोजना मुश्किल है। मानिक की माँ उसे अपने दामाद के रूप में पाने को बेचैन हो उठी। फिलहाल अपने बड़े लड़के पानु के साथ खगेन का परिचय हुआ। माँ के अनुरोध से पानु अपने रईस दोस्त को पकड़ लाया है।

छः आदमी चाय की मेज पर बैठे। खगेन प्रधान अतिथि बने हैं, रूबी आकर्षण की मुख्य वस्तु है। प्रधान वक्ता के रूप में मानिक की माँ है। दोनों भाई पानु व मानिक तथा मानिक का दोस्त कंचन उसमें शामिल हैं। घर के मालिक काफी देर से दफ्तर से लौटेंगे। इसलिये उनकी प्रतीक्षा करने को मना कर दिया गया है।

बाकायदा मामूली बातचीत, तथा बिना किसी कारण के हंसी मजाक होने लगा। रूबी ने दो-चार गाने गाए। उसकी माँ बोली—"खगेन बेटा, तुम्हें शायद मालूम नहीं है, इन्फ्लुएंजा के बाद रूबी की आवाज़ ज़रा रुकी-सी हो गई है। वरना, उसका गाना लोगों को बहुत ही पसंद आता है। दरअसल उसने उस्ताद से गाना सीखा है। अब इस चित्र को ज़रा गौर से देखो, इसे रूबी ने बनाया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका नाम दिया है ? अरे मेरे राम नहीं मालूम था। अमीरों ने का सिगरेट-आकाश में बादल छाए हुए हैं, पोखर पानी से लबालब भरा है और उसमें लाल जुही खिली हुई है ।"

रूबी बोली—"लाल-कमल।"

"हाँ-हाँ, लाल कमल खिले हैं । सरोवर के किनारे हंस पाँत बाँधे बैठे हैं । कंठ फुला-फुलाकर जोर-जोर से चिल्ला रहे हैं , मानो उनका दिल फटा जा रहा है । इस सिलसिले में अवनी ठाकुर को देखने की इच्छा थी, पर उनका देहावसान हो गया । और देखो, रूबी ने कितनी सुन्दर चीज़ें बुनी हैं । यह टेबुल-क्लाथ बिलकुल अजन्ता पैटर्न का है, चारों ओर पद्म और बीच में एक मुर्गी । बहुत ही सुन्दर बनाया है , क्यों ? अरे पानु, खगेन की छाती का नाप तो ज़रा ले लो, रूबी उसके लिए एक वेस्ट बुन कर देगी । बेटा खगेन, लोग कहते हैं कि लड़की जब इतनी खूबसूरत है, तब मिस इंडिया के कम्पिटिशन में क्यों अपना नाम नहीं देती । मैं तो बहुत चाहती हूँ, लेकिन लाख कहने पर भी बाप नहीं माना । अफसर होने से क्या होगा, जन्म तो मामूली गाँव में हुआ है ।"

इधर मानिक ने अपने होने वाले बहनोई का प्रश्नों की बौछार से नाकों दम कर दिया—आपकी इस घड़ी को चाबी नहीं लगानी पड़ती होगी ? फाउंटनपेन का क्या दाम है ? मोटर में रेडियो क्यों केस ज़रा दिखलाइए न, विलायती है, क्या ? आपका कैमरा नहीं है ? हम लोगों की फोटो नहीं उतारिएगा ? आदि-आदि ।

कंचन को खगेन बहुत पसंद आ गया था । उसने तीन चार मर्तबा बातें छेड़ने की चेष्टा की, मगर जब कभी वह बोलने को हुआ रूबी और उसकी माँ ने उसकी ओर कड़ी निगाह डाली । आखिर उसे चुपी मार कर बैठ जाना पड़ा । इस पार्टी में कंचन को बुलाने की इच्छा रूबी की माँ की ज़रा भी नहीं थी, लेकिन घर में बैरे के अभाव के कारण वह प्लेटें उठाकर देगा । इसलिये उसे बुलाना जरूरी था ।

आखिर खाद्य-पदार्थ आ पहुंचे । घर का नौकर हाफ-पैंट व हाफ-शर्ट पहने प्लेटें और चाय की ट्रे एक के बाद एक लाया । नौकर मेदिनीपुर का रहने वाला है । लेकिन रूबी की माँ उसे "ब्याय" कह कर पुकारने और हिन्दी में आज्ञा देने लगी । रूबी परोसने लगी । कंचन सारा अनादर भूल कर खाने की चीज़ों का सत्कार करने लगा ।

रूबी की माँ बोली—"क्यों बेटा खगेन, तुम तो कुछ खाते ही नहीं, और दो कचौड़ियाँ व पैटी ला दूं ? अरी रूबी तू भी जरा बोल, इतनी मेहनत करके तूने खाना बनवाया, यदि खगेन न खायें तो तेरी सारी मेहनत बेकार जाएगी !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटा, सब चीज़ें कैसी बनी, ज़रा बताओ तो ?"

खगेन बोला—"क्या बताऊँ, ऐसा खाना तो मैंने आज तक नहीं खाया, सचमुच बहुत ही स्वादिष्ट बना है।"

इस बात पर रूबी की माँ खुशी से नाच उठी, बोली—"सच कहते हो बेटा ? तुम्हारे लिए रूबी ने सभी चीज़ें मेहनत से अपने हाथों से बनाई हैं, वाकई वह खाना बहुत ही अच्छा बनाती है।"

कंचन का मुंह कचौड़ी से बिलकुल भरा था, फिर भी उससे न रहा गया। कचौड़ी का कौर मुंह के एक तरफ ले जाकर आवाज को रोक कर कहा—"पर मौसीजी ये सब चीज़ें तो मेरी बड़ी बहिन ने बनाई हैं।"

रूबी की माँ झिड़क कर बोली—"चुप रह, बदतमीज़ कहीं का। जो बात तुझे मालूम नहीं है, उसमें टाँग क्यों अड़ाता है ?"

कचौड़ी का ग्रास गालों के भीतर डालते हुए कंचन ने कहा—"वाह रे। मैंने ही सब घर से लाकर दिया है न ?"

रूबी ने अपने मुंह पर जो तीन परत गुलाबी रंग के लगाए थे, उनमें से बैंगनी आभा निकल आई। उसकी माँ पुचकारती हुई बोली—"पानु, इस बेहूदा, पाजी छोकरे को जरा उसके अपने घर छोड़ आ। सिर्फ बड़ी-बड़ी बातें बनानी सीखी हैं। पहले ही मैंने मना किया था कि उसे मत बुला, मानिक नहीं माना। उसका प्यार दोस्त जो है।"

पानु कंचन का हाथ पकड़ उसे घसीटता हुआ कमरे में ले आया और कहा—"कंचन, तूने खाना खा लिया है, अब घर जा ?"

कंचन बोला—"नहीं, अभी तक तो कुछ भी नहीं खाया। अभी पैटी, नमकीन, वर्फी, लेंगचा और चाय बाकी है। फिर खाली टिफिन कैरियर भी तो साथ ले जाना है।"

"अच्छा, मैं सब चीज़ें यहीं लाए देता हूँ। तू यहीं चुपचाप अकेला बैठे खा लेना फिर सीधा घर चले जाना। क्यों ठीक है न ?"

पानु ने जो कुछ उसे ला दिया, वह उसके लिये काफी नहीं था। जो असली चीज़ें थीं, यानी लंगड़े आम का लेंगचा, वह उसे नहीं मिलीं। जो कुछ मिला उन्हें ही वह बहुत देर तक खाता रहा, फिर किसी से कुछ भी कहे बिना वह घर चला गया।

कंचन की लापरवाही के कारण जो बात उसके मुंह से निकल गई थी, उससे उस कमरे की चाय पार्टी कुछ कमजोर हो गई थी। ऐसा कोई खास हो-हल्ला नहीं हुआ। जिस उद्देश्य से इतना आयोजन किया गया था, वह भी आगे नहीं बढ़ सका। रूबी मुंह फुलाए बैठी रही, उसके मुंह से हाँ-ना के सिवाए दूसरा कोई शब्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं निकल पाया। ऐसा मालूम होता था कि अगर बे-हया कंचन एक बार हाथ आ जाए, तो उसे वह खा जायेगी। और माँ की भी कैसी बुद्धि है, अपनी लड़की ने जो खाना बनाया था, इस बात को वह इशारे से बतला सकती थी, बुलंद आवाज से उसे बतलाने की क्या ज़रूरत थी। लगातार बेकार की बातें कहती गई, मगर एक बार भी ख्याल नहीं किया कि शैतान, बेहूदा लड़का खुद वहीं बैठा है।

इस काले मामले को ढंकने के लिए रूबी की माँ अगड़म-बगड़म बकने लगी। पानु भी अपने दोस्त को खुश करने के लिए तरह-तरह की रसभरी बातें छेड़ने लगा। खगेन कभी मुस्कराता था, तो कभी किसी प्रकार हाँ में हाँ मिलाता था। थोड़ी देर बाद वह खड़ा होकर बोला--"तो फिर मौसी जी, आज इजाज़त दीजिए, दूसरी एक जगह जाना है। उफ, आज तो आपने इतना खिला दिया कि उसे पचाने में तीन-चार दिन लग जाएंगे।"

रूबी की माँ बोली--"तुमने खाया ही क्या है? फिर किसी दिन आना, सबेरे, दोपहर को, या शाम को किसी भी समय, जब तुम्हारा जी चाहे चले आना। तुम तो अपने बेटे जैसे हो, घर में जो कुछ रहेगा, वही खाओगे।"

× × ×

थोड़ी दूर जाते ही खगेन ने देखा कि एक छोटा-सा लड़का टिफिन कैरियर हाथ में लिये चला जा रहा है। गाड़ी रोक कर खगेन बोला--"अरे लड़के, सुनते हो?"

कंचन झट से खड़ा हो गया--"मुझे बुला रहे हैं क्या?"

"हाँ-हाँ, तुम्हारा नाम क्या है?"

"जी, कंचन।"

"आओ, गाड़ी पर चढ़ जाओ। तुम्हें घर पहुंचा दूंगा।"

कंचन बैठ गया। खगेन बोला--"मालूम होता है कि तुम एक जगह से दूसरी जगह खबरें ले जाया करते हो, इसलिये तुम्हारा नाम कंचन रखा गया है--क्यों, मैंने ठीक कहा है न?"

कंचन ने जवाब दिया --"धत्, ऐसा क्यों होगा। मेरा पूरा नाम श्री कंचन कुमार चौधरी है। मेरा जन्म कंचन पूजा के दिन हुआ था। तभी मेरे नाना जी ने मेरा यह नाम रखा। और बड़ी जीजी का नाम है--जयंती मंगला, छोटी जीजी का प्रत्यंगिरा।"

"ओहो, तुम लोगों के बड़े भारी-भारी नाम रखे गए हैं। घर कितनी दूर है? किस क्लास में पढ़ते हो? घर में कौन-कौन हैं?"

कंचन ने बताया कि उसका घर ज्यादा दूर नहीं है। वह छठी क्लास में पढ़ता है। पिता जी रेल में काम करते हैं। ज्यादातर बाहर ही घूमा करते हैं। कभी-कभी आते हैं। घर में दो बहनें हैं, माँ है और वह खुद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। बहनों की शादी अभी तक नहीं हुई है। इनके अलावा भुपों कुत्ता और रूपसी बिल्ली भी है। भुपों बड़ा पेटू है, उस दिन मालपुआ चोरी करके खा गया था। लेकिन रूपसी वाकई बड़ी अच्छी है, खाने को कहने पर ही खाती है। जल्दी ही उसके बच्चे होंगे। अगर खगेन को ज़रूरत हो तो जितने चाहे बिल्ली के बच्चे ले जा सकता है।

कंचन शर्मीला नहीं था। परिचय न रहने से उसका जो कुछ संकोच था, वह थोड़े से परिचय से दूर हो गया। उसने पूछा ––"रूबी जीजी से आप मिले थे?"

खगेन हंस कर बोला––"कहाँ मिल सका। चाय की मेज पर तुमने जो बम फेंका उससे सबों का दिमाग ही बिगड़ गया।"

"आप ख़ामख़ा मुझ पर नाराज होते हैं, लेकिन इसमें मेरा कोई कसूर नहीं है।"

"नहीं, नहीं, तुम तो बड़े अच्छे लड़के हो, सिर्फ अक्ल की थोड़ी कमी है। जो कहना नहीं चाहिए था, उसे कह दिया।"

"क्यों, मैंने तो सच ही कहा था। मेरी बड़ी बहन ने ही तो कहा था कि मानिक की मां के कहने पर उसने वह सब बना दिया है।"

"नहीं, तुम कुछ भी नहीं जानते। तुम्हारी रूबी जीजी ने अपने हाथों खाना बनाया है।"

"कभी नहीं। आप कुछ नहीं जानते। रूबी जीजी सिर्फ आलू और अण्डा बनाना जानती हैं। हाँ मेंढ़क का जो चित्र था, वह उसी ने बनाया है, लेकिन वह जो कमल फूल और मुर्गी के चित्रवाला टेबुल क्लाथ था, उसे रूबी जीजी ने नहीं बनाया। मानिक के घर के पास हमारी क्लास का एक लड़का केल्टे रहता है, उसी की फूफी ने वह बनाया था। मैं उसके यहाँ जाता हूँ, इसलिये मुझे सब कुछ मालूम है।"

"अरे बाप! तुम तो बड़े नटखट हो। लेकिन तुम्हारी जयंती मंगला जीजी ने वह सब बनाया है, इसका सबूत क्या? तुम्हारे घर जाने पर वैसा खाना खिला सकोगे?"

"ज़रूर, अगर न खिला सकूं तो मेरे दोनों कान मल दीजिएगा।"

"और तुम्हारी जीत हुई, तो क्या तुम भी मेरे दोनों कान मल दोगे?"

"धत्, आप तो मुझ से बड़े हैं। अगर आप हार गए तो मुझे जुर्माना देंगे?"

"कितना जुर्माना देना पड़ेगा?"

कुछ सोच कर कंचन बोला––"एक रुपया देंगे।"

"बस, एक ही रुपया?"

"अच्छा, तो दो रुपए दें तो और भी अच्छा है। आखिर आप भी मेरे दो कान मलेंगे। मेरे दो कानों के बदले में दो रुपए। अभी चलिए न हमारे यहां?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पागल हो गए हो ? खाकर फिर तुम्हारे यहां कैसे खाऊंगा ?"

"अच्छा, परसो इतवार है। बोलिए उस दिन शाम को आइएगा न ?"

"तुम्हीं क्या घर के मालिक हो ? वहां तो मुझे कोई नहीं पहचानता। अगर मैं बिना बुलाए वहां पहुंच जाऊं, तो सब समझेंगे कि मैं एक पेटू बदतमीज़ आदमी हूँ।"

"वाह, कैसे समझेंगे। मैं तो आपको जानता हूँ। मेरे कहने पर आप अगर हमारे यहाँ आएं, तो आपको कौन रोक सकता है ? लेकिन देखिए, हम लोग गरीब हैं, उतना अच्छा खाना हम न बनवा सकेंगे। मानिक की माँ ने मछली, पिस्ता, बादाम सब चीज़ें भेजी थी, तभी तो बड़ी जीजी बना सकी थी। अच्छा, तो फिर इतवार की शाम को आप ज़रूर आ रहे हैं।"

"ठीक है, तुमने जब दावत दी है, तो ज़रूर आऊंगा। मगर देखना खाना-वाना कुछ नहीं बनाना, सिर्फ चाय।"

"वाह रे, तो फिर आपको विश्वास कैसे होगा ?"

"कोई खाना बना सकता है या नहीं, यह मैं किसी के चेहरे से ही मालूम कर लेता हूँ। हाँ, और एक बात सुनो। मानिक के यहाँ आज जो कुछ तुमने किया है। अपने यहाँ उसकी एक भी बात न बताना वरना मुझे शर्म से भागना पड़ेगा। हाँ, [illegible] तो मत बुलाना।"

"नहीं, मैं मानिक से बात भी नहीं करूंगा। आज कितनी देर तक उसके पढ़ने के कमरे में रहा, लेकिन वह एक बार भी नहीं आया।"

"क्यों नहीं बात करोगे, सिर्फ परसों उसे घर में मत बुलाना। अच्छा, कंचन कुमार, तुम्हारी बड़ी जीजी का तो बड़ा जोरदार नाम है, जयंती मंगला काली, भद्रकाली, कपालिनी, खाना-बनाने में भी तेज है, अच्छा तो देखने में वह कैसी है।"

"बहुत ही सुन्दर। रूबी जीजी एक घंटे तक रंग लगा कर भी गोरी नहीं बन पातीं। लेकिन बड़ी जीजी को इसकी कोई ज़रूरत ही नहीं है।"

"जीजी के संगीत के मुकाबले में रूबी जीजी का संगीत बिलकुल कौए की आवाज़ है, लेकिन, यो कहने पर बड़ी जीजी नहीं गातीं। आप अगर कई बार उनसे कहें, तभी वह गाएंगी। आप तो नहीं जानते, बड़ी जीजी ने एम.ए. पास कर लिया है। छोटी जीजी अगले वर्ष मैट्रिक में बैठेगी, लेकिन रूबी जीजी तीन बार फेल हो चुकी है। बड़ी जीजी को जल्दी ही नौकरी मिलेगी। नाना जी कहते हैं, आपको मालूम है ? लक्ष्मी व सरस्वती व अन्नपूर्णा इन तीनों को जोड़ कर तीन से भाग करने से जो मिलता है, वही बड़ी जीजी हैं।"

"और तुम्हें वह क्या कह कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुकारते हैं ?"

हिः हिः करके कंचन हंस दिया और बोला—"वह बहुत ही खराब है। मुझे बे-पूंछ का वीर हनुमान कहकर पुकारते हैं।"

"इसमें खराबी क्या है ? हनुमान जैसा चरित्रवान देवता कितने होते हैं ? मेरी धारणा कुछ और ही है। तुम नारदमुनि हो, पक्के दलाल, मानिक की माँ तुम्हारी तुलना में बिलकुल बच्ची है। किसी मुकाबले में नहीं आ सकती।.....यही तुम्हारा मकान है न ? अच्छा तो आज चला फिर परसों मिलेंगे।"

घर पहुँच कर कंचन बोला—"जीजी तुझे एक बड़ी खुशखबरी सुनाऊंगा। खगेन बाबू को मैंने दावत दी है। परसों शाम को वह चाय पीने हमारे यहाँ आएंगे।"

जयंती बोली—"यह खगेन बाबू भला कौन है ?"

"वही, जिन्होंने आज मानिक के यहाँ चाय पी थी। उनसे मेरी बड़ी दोस्ती हो गई है। उफ्, कितनी बड़ी मोटर गाड़ी है उनकी। तुम्हें ज्यादा कुछ नहीं बनाना पड़ेगा। सिर्फ मछली की कचौड़ी, मटन की पैटी, लंगड़ा आम का लेंगचा और चाय।"

जयंती ने अपनी माँ को बुलाकर कहा "माँ, देखो अपने लाड़ले बेटे की करतूत। बिना पूछताछ के कहाँ के खगेन बाबू बगेन बाबू को दावत दे आया है। फिर मुझे खाना बनाने का आर्डर दे रहा है। तुम्हें कितनी मुश्किल, यही सस्ती नजर आ रही है ? इसका सारा खर्च क्या तू देगा ? बता !"

कंचन हाथ हिला कर बोला—"उसके लिए जीजी तुम्हें कुछ भी चिन्ता नहीं करनी होगी। मैं तुम्हें दो रुपए दूंगा। लेकिन आज नहीं, परसों के बाद तरसों दूंगा।"

"तू रुपए कहाँ से लाएगा ? मानिक की माँ से क्या कुली-भाड़ा-वसूल कर लाएगा ?

"धत्, तुम नहीं जानती। सो मैं पीछे बताऊंगा। आज कहने को मना है।"

"देख, अजनबी के लिए मैं खाना नहीं बना सकूंगी।"

"अजनबी क्यों, मेरी तो उससे गहरी दोस्ती हो गई है। अपनी मोटर से उन्होंने मुझे यहाँ तक पहुँचाया है।"

"अब समझी, क्यों तू उनकी इतनी तरफदारी कर रहा है।" कंचन की माँ बोली—"तो कंचन ने जब दावत दी है, खगेन बाबू को तो उसे आने तो दे न जयंती।"

× × ×

इतवार की शाम को खगेन बाबू कंचन के घर आ पहुँचे। बैठक, खाने का असबाब बहुत ही मामूली है। सिर्फ चारपाई पर एक फर्श बिछा हुआ है। लेकिन अतिथि सत्कार में कोई कमी नहीं हुई। कंचन की माँ खगेन से आत्मीय की भांति बातें करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगी । आज मैं कंचन को मुख्य मान कर बनाऊँगा, क्योंकि हम दोनों का वक्ता है । वह नए दोस्त पर अपनी जीजी की तरह नजर रखने लगा और लगातार बकता गया ।

कुछ देर बाद जयंती और उसकी छोटी बहन नाश्ता लेकर आई । खगेन बोला--"कंचन कुमार, यह तुम्हारा भारी अन्याय है, मैंने मना किया था फिर भी तुमने इन चीज़ों का इन्तज़ाम करवाया है ?"

कंचन बोला--"वाह रे, तो क्या सिर्फ आपही के लिये जीजी ने खाना बनाया है, मैं भी तो खाऊंगा । उस दिन मानिक के घर मैं ठीक से नहीं खा पाया ।"

जयंती बोली--"पेटू कहीं का ।"

कचौड़ी चबाते-चबाते खगेन के कान से मुंह लगा कर कंचन चुपके से बोला--"क्यों, अब तो आपको विश्वास हुआ ? आप हार गए, निकालिये दो रुपए । हाँ, आज ही देने पड़ेंगे । सुनिए, अब जीजी को गाने के लिए कहिए ।"

खगेन धीरे से बोला--"नहीं, आज नहीं, फिर किसी दिन कहूँगा ।"

कंचन की माँ बोलीं--"कंचन, उन्हें क्यों दिक् करता है रे । क्या उन्हें खाने नहीं देगा ?"

जयंती ने कहा--"जोंक से जैसे पकड़े हुए हैं ।"

खगेन हंसकर बोला--"नहीं, नहीं, दिक् काहे को करेगा । वह मुझे बहुत परिचय सिर्फ दस मिनिट का है । कंचन अपनी जीजी का बड़ा भक्त है, मेरे कानों में आपही की प्रशंसा कर रहा था ।"

जयंती बोली --"तू बड़ा बदतमीज है ।"

कंचन ने कहा--"तूने मेरी बदतमीज़ी कहाँ देखी जीजी । मैं सिर्फ कह रहा था कि तुम बहुत अच्छा खाना बना सकती हो । इसमें बदतमीजी क्या है ? अच्छा ठीक है, तुम खाना नहीं बना सकतीं, गा नहीं सकतीं, सितार नहीं बजा सकतीं, कुछ भी नहीं जानतीं । जीजी, तुम्हें मालूम है, खगेन बाबू की मोटर से आवाज़ बिलकुल नहीं निकलती ।"

खगेन बोला--"तो चलो न, मेरे साथ जरा घूम आओ । फिर तुम्हें घर पहुंचा जाऊंगा ।"

आनन्द के मारे कंचन हनुमान की तरह जैसे हुप-सी एक आवाज़ निकाल कर गाड़ी पर जा बैठा । कंचन की माँ व जीजियों से विदा लेकर और फिर आने का वायदा करके खगेन चला गया ।

× × ×

जाते-जाते कंचन खगेन से बोला--"सचमुच रूबी जीजी कुछ नहीं जानती है, उसकी माँ और भी निकम्मी है । आप मेरी बहन से मिलिए ।"

खगेन बोला--"हाँ, बात तो तुम्हारी सही है । लेकिन किस तरह तुम्हारी जीजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बातें की जाएं, जरा सिखा तो दो । अरे, बाजी हारने की बात तो मैं भूल ही गया । यह लो दो रुपए ।"

कंचन ने रुपए जेब के हवाले किए, और फिर कहा --"हम लोग स्कूल में किस तरह एक-दूसरे से मिल लेते हैं, जानते हैं ? समझिए, कोई नया लड़का आया, उसके नज़दीक जाकर पूछते हैं-- अरे, तेरा नाम क्या है, वह कहता है हाबुक। हम उसकी पीठ पर थपकी मार कर कहते हैं, तुझसे हमारा वास्ता हो गया, ले काँच की ये दो गोलियाँ । फिर किसी से बातें बन्द करना और भी सरल है, चिबुक पर उंगली टेक कर तीन बार बोलना होता है--तुझ से नहीं बोलूंगा, नहीं बोलूंगा, नहीं बोलूंगा, बस ।"

"बड़ा सीधा कानून है । हाँ, तुम्हारी रूबी जीजी से इस प्रकार बोल सकता हूँ क्योंकि वह मुझ से बोलने को तैयार है । लेकिन तुम्हारी जयंती मंगला जीजी बिलकुल दूसरी किस्म की है । पीठ पर थपकी मार कर बातें नहीं की जा सकतीं । उस जैसी नारी का मन हज़ारों साल तप करने के बाद ही पा सकता हूँ--दोस्त! जो भी ही मैं तुम्हारे कहे अनुसार कोशिश करता जाऊंगा । लेकिन हज़ार वर्ष तप करने का साहस तो मुझ में नहीं है । मेरे माँ बाप मेरी शादी करने के लिए तैयार हैं । उन्होंने कह दिया है--जो पसंद हो, उससे शादी करलो । लेकिन और ज्यादा देर न हो, माघ महीने में हम लोग तीर्थयात्रा को निकलेंगे । इससे पहले ही शादी कर देना चाहते हैं । देखूं, इसके पहले कुछ कर सकता हूँ या नहीं । देखो कंचन, तुम बड़े नटखट हो, कहीं अपनी जीजी को वास्ता बनाने के लिये तंग मत करना ।"

"अरे बाप, फिर तो वह मेरी अच्छी मरम्मत कर देगी ।"

"मुझे तो कहीं मार न पड़ेगी"

"नहीं, आपसे वह कुछ नहीं कहेगी ।"

× × ×

घूमने के बाद खगेन कंचन को उसके घर पहुंचा कर चला गया । फिर वायदा पूरा करने के लिये एक महीने के भीतर वह एक बार मानिक के यहां और तीन बार कंचन के यहाँ गया । खगेन बड़ी दुविधा में पड़ा है । एक तरफ रूबी की माँ उसे बार-बार बुलावा भेजती है--इधर कंचन बार-बार अपने घर आने को कहता है । बच्चे की बात टालना उचित नहीं । अतः खगेन ने कंचन के घर में ही ज्यादा आना-जाना शुरू कर दिया है ।

कुछ दिन बाद कंचन ने पूछा--• "क्यों , जीजी से वास्ता कर लिया ।

खगेन बोला--"धीरे कंचन कुमार, जरा धीरे । पंडितों का कहना है, फासला तय करना, कंथा सीने जाना और पहाड़ का पार करना शनैः शनैः यानी धीरे धीरे होना चाहिए । किसी से वास्ता लगाना भी उसी प्रकार का है, जल्दबाजी से सारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम बिगड़ सकता है। पिता जी ने अगर मुझे त्याग दिया होता तो मैं कल ही बात कर लेता। पर वह तो मुझे त्यागने को तैयार नहीं हैं। उनके पास पैसा काफी है, सब मुझे ही मिलना है। यही तो झमेला है।"

"झमेला क्यों? पैसा रहना तो अच्छा ही है। कितना मज़ा लूटा जा सकता है। आइसक्रीम, चॉकलेट, बैडमिंटन, पिंगपाँग, लूडो, और कितनी प्रकार की चीज़ें सब पैसे से आती हैं।"

"तुम्हारी जीजी यह सब नहीं चाहती। उनकी धारणा है कि बराबर का मुकाबला बराबर से ही हो सकता है। मैं उनसे कहता हूँ--तुम भी किस तरह छोटी हो। देखने में मुझ से ज्यादा सुन्दर हो। पढ़ाई में मुझ से आगे हो। तुम्हारे नाना जी ने तो कह ही दिया है कि तुम लक्ष्मी, सरस्वती और अन्नपूर्णा इन तीनों की औसत हो। तुम कितना अच्छा गाती हो और मेरा गला दबाने से भी आवाज़ नहीं निकलती। तुम कितने किस्मों की चीज़ें बना सकती हो यहाँ तक कि लंगड़ा आम का लेंगचा भी और मैं डबल रोटी की स्लाइस तक काटना नहीं जानता। फिर भी तुम्हारी जीजी मानती ही नहीं है। खैर तुम चिन्ता मत करो कंचन सब ठीक हो जाएगा और कुछ दिन ज़रा धीरज धरो।"

पाँच दिन के बाद फिर कंचन ने पूछा-- "क्या, बात हुई।"

खगेन बोला--"अभी ज़रा-सी बाकी हैं।"

कंचन नाराज़ होकर बोला-- "इतने दिनों में भी वास्ता नहीं बना। मुझ से तो आपका एक मिनट में परिचय हो गया था। बड़ी जीजी का सचमुच यह बड़ा अन्याय है। आप उससे कह दीजिए कि तीन दिन में यदि वास्ता न जोड़ा तो तुमसे नहीं बोलूंगा।"--

"मेरे प्यारे कंचन कुमार, धैर्य एक बड़ा गुण है। अगर मैं लंकेश्वर रावण होता तो अल्टीमेटम दे देता कि तीन दिन के भीतर वास्ता न जोड़ने से कटलेट बना कर खा लूंगा। लेकिन ऐसा तो मैं नहीं कर सकूंगा। जल्दबाज़ी करने से तुम्हारी जीजी घबड़ा जाएंगी। हो सकता है कि गुस्से में आकर अपने किसी क्लासफ्रेंड तरुण कुमार या करुण कुमार से वास्ता कर लें। तब बेहाल होकर रूबी जीजी के पास जाने के सिवा और कोई चारा नहीं रहेगा।"

हाथ-पैर फटफटाते हुए कंचन बोला-- "खबरदार, वहां मत जाइएगा मैं कहे देता हूँ। ठीक है, और कुछ कोशिश करिए।"

तीन दिन और बीत जाने पर कंचन ने फिर सवाल किया--"क्या हुआ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खगेन बोला—"अब कुछ आशा हो चली है। तुम्हारी जीजी से मैं कह दिया है कि रुपए के लिए इतनी चिन्ता न करो। वह तो पिताजी का रुपया है। मेरे हाथ आने से तीन ही दिन में फूंक दूंगा! यदि यों न मानो, तो अस्पताल हैं, स्कूल-कालेज हैं, रामकृष्ण-मिशन, गौड़ीय-मठ हैं, महाराजाओं के तरह तरह के अखाड़े हैं, जहां भी कहोगी, दे दूंगा। इसके बाद कपोत-कपोती जैसे ऊंचे वृक्ष पर बसेरा डालकर दोनों खाली हाथ आराम से जिन्दगी बसर करेंगे।"

"लेकिन मोटर गाड़ी तो चाहिए ही।"

"हां, चाहिए तो ज़रूर। उसी में चढ़ कर तो भीख मांगने को निकलेंगे। जो चावल-आटा मिलेगा। उसी से तुम्हारी जीजी पकवान बनाएगी। हां, देखो हमारी झोंपड़ी से सटी हुई तीन मंजिल वाली धर्मशाला होगी उसी में तुम और मानिक, केल्टे, मुल्टु, ताबुल आदि तुम्हारे दोस्त कभी-कभी आ ठहरेंगे। उनके सामने ही खेल का लंबा-चौड़ा मैदान रहेगा।"

"ओहो—कितना मज़ा आएगा, और देर मत कीजिए, झट से वास्ता कर लीजिए।"

× × ×

देर नहीं हुई। तीन दिन के बाद स्कूल में मानिक ने पूछा—"अरे, कंचन—खगेन बाबू तेरे यहां रोज़ आते हैं?" कंचन ने अभिमान के साथ उत्तर दिया—"आएंगे ही तो। बड़ी जीजी से संबंध हो गया है?"

लेकिन इस परिचय से कंचन के घरवालों और मानिक के घरवालों में अनबन तो हो गई। रूबी की मां केल्टे की फूफी से बोली—"उफ! जयंती कैसी बेहया लड़की है—जान नहीं, पहचान नहीं, लफंगे छोकरे खगेन के साथ ही जुट गई।

केल्टे की फूफी ने कहा—"भाड़ में जाए, बेशर्म लड़की कहीं की।"

जयंती की शादी में मानिक के यहां से कोई नहीं आया। लेकिन केल्टे के घर से सब आए थे, यहां तक कि उसकी फूफी भी। वह कपड़े के भीतर एक थैली छिपाकर ले गई थी। फूफी को थोड़ा मिलने से ही संतोष था। भण्डार से सिर्फ बीस-तीस सन्देश और जयंती की उपहार सामग्रियों में से कहानी की दो मनोरंजक पुस्तकें उसने थैली में रख लीं थी।"

अनु० कान्ति मोदी,
पो० देवकी (सागर)
(म. प्रदेश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता

रवीन्द्र कुमार जैन

लो मिटने का अभ्यास बना, जिन्दगी कदम चूम लेगी आकर ।

सरिता अपने सुकुमार अंग,
पर्वत की छाती से टकराती;
अनगिनत बार जूझती है,
धक्के देकर लौटायी जाती ।
पर पर्वत की क्या हस्ती है,
अरमान बदल दे सरिता के;
बढ़ना ही जीवन है जिसका,
वह प्रीत करे क्यों जड़ता से ।
क्रियाहीन, जड़, शुष्क, अचल,
जीवन-सम्मुख क्या ठहरेगा;
जो धैर्यशील औ' कर्मठ है,
ध्वज तो उसका ही फहरेगा ।

तो, जीवन जड़ता का धिक्कृत है, वह चलो आज पानी बनकर ।।
लो मिटने का०

यदि चन्दन चर्चित होना है,
सांपों का स्वागत मत भूलो;
मधुऋतु का आलिङ्गन प्रिय है,
तो लखकर पतझर भी फूलो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मत देखो रत्नों के सपने—

यदि थाह जलधि की पा न सको,

मत झूमो कजरारी बदरी पर,

बिजली पर प्राण चढ़ा न सको ।

मत बनो लाड़ली राधा तुम,

यदि मार विरह की खा न सको ;

लो चूम विश्व की कली कली,

यदि कांटों से घबरा न सको ।

है भाग्य तुम्हारी मुट्ठी में, बढ़ चलो कर्म का व्रत लेकर ।।

लो मिटने का०

● ● ●

तरुपति विश्वविद्यालय,
तिरुपति, (आन्ध्र प्रदेश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

दो चेहरे

कँवर गुलाटी

और सुमन खीझ कर चिल्लाई—"हां, हां, कह दिया न मैं उनके साथ नहीं रह सकती। राकेश को अगर मेरी ज़रा भी परवाह होती तो क्या वह मुझे साथ लिये बगैर चले जाते", रीता के बार बार पूछने पर सुमन ने इस तरह उसके बहुत से प्रश्नों का उत्तर दे ही दिया।

"चिल्लाती क्यों है! लेकिन यह तो कोई कारण न हुआ, होगी कोई मजबूरी नहीं तो वह ऐसे चला जाता, तूने इस बात को इतना सीरयसली क्यों ले लिया है" रीता फिर बोली।

"तुम इसे मजबूरी कहती हो, तुम ही बताओ रीता क्या मेरा उन पर कोई अधिकार नहीं है, आखिर मैं उनकी पत्नी हूँ, उनसे कम पढ़ी लिखी नहीं, उनके बराबर का कमाती हूँ। हर मास पूरा वेतन उन्हें दे देती हूँ, उनसे पूछे बिना एक नया पैसा भी खर्च नहीं करती। उनकी हर खुशी के लिए मैं सब कुछ कुर्बान करने को तैयार हूँ, फिर भी उन्हें मेरी कोई परवाह नहीं, अगर उन्हें नहीं तो मुझे भी क्यों हो, देख रीता, मैं तेरे को कह रही हूँ कि मैं उनसे तलाक ले रही हूँ, हां तलाक, और यह मेरा अंतिम निर्णय है, मिलें तो कह देना उनसे। आज से मेरा उनका रिश्ता खत्म, नाता टूट गया। मैं उनके साथ कभी भी नहीं रहूंगी, उस घर में भी मैं कभी नहीं जाऊंगी, कभी-नहीं..... "यह कह सुमन फफक उठी, और दोनों हाथों से अपना मुह छिपा कर रो उठी।"

"तलाक,.....अरे सुमन की बच्ची, तेरा सिर तो नहीं फिर गया, तूने तलाक तक की बात सोच ली है, तूने इसे कोई मामूली सी बात समझा है क्या। तू ज़रा उस बच्चे का ध्यान तो कर जो कुछ देर बाद तेरे जीवन में आने वाला है। देख तू रो मत, मुझे बता, पूरी बात क्या हुई है, बोल तुझे मेरी क़सम, बता, बोल न"

"....." परन्तु सुमन कुछ भी उत्तर न दे वैसे ही रोती रही!

"अच्छा बाबा, न बता मुझे, लेकिन तू रो तो मत, वायदा करती हूँ तुझसे कभी इस संबंध में कुछ नहीं कहूँगी, बस....."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—और सुमन की बात रोकते हुए रीता ने कहा खासा विषय रही थी। रीता ने बहुत मनाया, दोस्ती का वास्ता दिया, परन्तु सुमन ने तो जैसे आगे कुछ न कहने की कसम ही खा रखी थी। रीता उसे यूं रोता देख कर उदास सी हो गई, उसे मालूम था सुमन बहुत ही टची है। वह उसे अधिक कुछ कह कर दुखी नहीं करना चाहती थी, इसलिये वह चुपके से उठी और दूसरे कमरे में चली गई। वहां पलंग पर लेटते ही वह गहरी सोच में डूब गई, उसकी विचारधारा सुमन और राकेश के दो चेहरों में ही उलझ कर रह गई। सुमन और राकेश, जिनका विवाह एक वर्ष पूर्व हुआ था और आज सुमन तालाक की बात कह रही है.....

X X X

सुमन तलाक की बात इस तरह से कह देगी, रीता कभी स्वप्न में भी ऐसा नहीं सोच सकती थी, परन्तु बात सच थी, क्योंकि सुमन ने अभी कुछ क्षण पहले ही उसे यह बात पूरा ज़ोर देकर कही थी। समय कितनी शीघ्रता से बदलता है, रीता को वह दिन याद आ रहे थे, जब पिछले वर्ष सुमन और राकेश की पहचान हुई थी। जब वह पहली बार उनके कालेज में नियुक्त होकर आई थी। परिचय बढ़ा, समय और समीपता ने उन्हें एक दूसरे को समझने का अवसर दिया। और धीरे-धीरे आपस की सहानुभूति ने प्रेम को जन्म दिया। बात उड़ने लगी। लोगों को तो मिल गया। दोनों एक बार कांपे, परन्तु बात बड़े-बूढ़ों तक भी जा पहुंची थी। कई विवशताओं तथा अड़चनों ने राहें रोक लीं : मित्र मण्डली ने सहायता की और रीता ने सुमन का साथ दिया। कई लोगों ने हार कर तथा मन मार कर, कई लोगों ने प्रसन्नता और हज़ारों शुभ कामनाओं से उन्हें विवाह के गठबन्धन में बांध ही दिया। कितनी धूमधाम से सुमन की बारात आई थी। राकेश घोड़ी पर दूल्हा बन कर आया था। रीता खुश थी। सुमन सजी, नवेली, सकुचाई दुल्हन बन कर रोती हुई परिचित होते हुए भी अपरिचित राकेश के साथ चली गई। सुमन चली गई। उसका विवाह हो गया था। रीता का मन भर आया। और वह फिर गहरी सोच में डूब गई। उस रोज़ उसे भी अपने सूने, अकेले और बनावटी जीवन पर क्रोध आया था। अवचेतन मन में एक चुभन थी और वह इस विषय पर जान-बूझकर अधिक नहीं सोचना चाहती थी! पिता की मृत्यु के बाद दुनियादारी सीखने का उसे बहुत मौका मिला। किसी अपने नातेदार ने सहायता नहीं की। आदिकाल में मनुष्य इतना मतलबी नहीं था। वैसे तो मनुष्य जीवन अधिक लम्बा नहीं होता एक कौआ जबकि एक हजार वर्ष से भी अधिक जीवित रहता है तो केवल चालीस या पचास वर्ष में ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाप्त होने का पुतला क्यों ? रीता के रिश्ते-नाते वाले उससे पैसे तो ले लेते थे, परन्तु उसके जीवन, उसके भविष्य, उसके अरमानों से शायद उन्हें कोई सरोकार नहीं था। आज भी उसके मन में एक चुभन थी, अकेलापन आज भी है ! सुमन की तरह उसे भी डोले में बिठा कर ले जाने वाला राकेश मालूम नहीं कब आएगा, हो सकता है शायद कभी न आए, और रीता कितनी देर तक इन्हीं उलझनों में उलझी रही।

X X X

रीता के बार बार कहने, झगड़ने, तकरार करने और बहस करने पर भी सुमन राकेश के घर जाने को तैयार नहीं हुई थी। रीता को कालेज से पता चला कि राकेश कुछ दिनों का अवकाश लेकर अपनी मित्र मण्डली के साथ घूमने के उद्देश्य से आगरा गया है। रीता सोचती, राकेश विवाह के बाद कितना बदल गया था। वह सादगी और भोलापन उसमें शायद अब रीता को नहीं दीखता था। विवाह के बाद सुन्दर तरुण और भावुक युवक यदि आज़ादी पा जाएं तो वह बहुत शीघ्र ही बूढ़े और अभावुक बन जाते हैं। उनकी शिक्षा, ज्ञान, आदर्श और स्वरूप शादी के बाद अधिक दिन काम नहीं करता। पत्थर पर लगी काई की तरह धीरे धीरे नष्ट हो जाता है। समाज तो शादी की चिन्ता करता है, किसी की चिन्ता नहीं। नवयुवकों तथा युवा औरतों को यह सोचने का समय ही कब मिलता है, वह तो कामुत्तर होकर जीवन के डर और लोक लाज को भूल जाते हैं। रहे माता पिता वह मानों शादी के बाद गंगा स्नान कर बैठते हैं। पिछले वर्ष के और अबके राकेश में कितना अन्तर आ गया था ! रीता जानती थी कि बीती हुई जीवन घटनाओं को पीछे मुड़कर देखना कोरी भावुकता है। वर्तमान की कसौटी पर उसे परखना है और भविष्य पर उसे लागू करना है। अतीत की स्मृतियां तो केवल कुछ झांकियां मात्र हैं। वह महान् इतिहास के कुछ व्यक्तियों की चुनी जीवन घटनाओं के संस्मरण से हैं। वह झांकियां क्षण भर हरियाली लाती हैं और बहुत प्यारी लगती हैं। किन्तु वास्तविक जीवन इनसे बड़ी दूर है।

X X X

सुमन को पा कर राकेश कुछ दिन तो वैवाहिक जीवन की मस्ती में खोया रहा, परन्तु जैसे ही समय बीतता गया राकेश उसके साथ चंचल तथा शक्की होता गया। कालेज में, मुहल्ले में, उन दोनों की चर्चा होती ! सुमन के पिछले जीवन के साथ कई कहानियां जोड़ी जातीं। राकेश जानता था उनमें कोई सच्चाई नहीं थी। सोचता भी था कि पिछले एक वर्ष में सुमन ने ऐसा कोई अवसर भी नहीं दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु उसके अवचेतन मन में एक चोर था, एक भय था, एक चुभन थी जो उसे प्रायः कचोटती रहती थी। राकेश प्रायः सोचता था मनुष्य जिसे भाग्य समझता है, उसमें दुर्भाग्य की काली रेखाएं भी छुपी रहती हैं, किन्तु चकाचौंध में वह दिखाई नहीं देतीं। तो क्या उसने सुमन के साथ विवाह करके गलती की है? सन्देह, जलन और बुरे भाव में सभी वह जाते हैं, राकेश की भी यही दशा थी। रोग से डरने वाले रोगी को रोग अवश्य ही डराता है। इसी प्रकार सन्देह को सन्देह डरा डरा कर अधमरा कर देता है। और युग का मनुष्य तो सन्देह का अवतार है। राकेश के पास दिमाग है, दिल है, अक्ल है, फिर भी वह इन सब को शायद कष्ट देना नहीं चाहता था। सुमन ने भी इसका अनुभव किया था। उसने राकेश के मन में छुपे सन्देह को निकालने का प्रत्येक सम्भव प्रयास किया। समझाया, झगड़ा किया, तर्क किया, रोयी भी, और रूठी भी, परन्तु अपने उद्देश्य में वह ज़रा भी सफल हो सकी हो ऐसा अनुभव उसने कभी भी नहीं किया। सुमन के मन में भी एक ग्रन्थि पड़ गई जो समय की राख और राकेश के व्यवहार की राख में दबती गई, दबती चली गई। और सुमन ने राकेश से अलग होने का एक दिन फैसला कर लिया। वह सोचती थी प्रेम और उसका निर्वाह तो अन्तर चाहता है, नज़दीकी नहीं। गंगा के किनारे बसने वाले नल के जल से स्नान करते हुए पाए जाते हैं, किन्तु दूर से आया हुआ यह नहीं कर सकता। प्रकाश अपनी नज़दीकी में अंधकार भी छुपाए रहता है। पुरुष एक स्थान पर घृणित सिद्ध होकर भी यदि चाहे तो दूसरे स्थान पर सम्मानित हो सकता है, परन्तु स्त्री का क्षेत्र तो बहुत ही सीमित होता है। वह एक बार किसी क्षेत्र में गिर कर फिर उठ नहीं सकती, इसलिये उसे बहुत सम्भल कर चलना चाहिए, और परिस्थितियों ने एक दिन ऐसा षड्यन्त्र रचा कि जिसके फलस्वरूप सुमन ने अपना घर छोड़ दिया। वह घर जो उसका था। राकेश का था। घर के बाहर इस तरह पैर रखते एक बार तो उसका हृदय कांपा परन्तु.....

X X X

समय बीतता गया। राकेश और सुमन कालेज में एक दूसरे को देखते और अपरिचितों की भांति एक दूसरे से अलग राह पकड़ लेते। परिचित फिर अपरिचित होने का नाटक कर रहे थे। जैसे उनकी पहचान ही न हो, आपस में कोई संबंध ही न हो। रीता यह सब देखती और दुखी होती। कई बार दोनों को समझाया लेकिन लगता था दोनों के लिये यह मान प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया था। राकेश स्वयं को भी भूल जाना चाहता था। उसे घर अकेला काटने को दौड़ता। सुमन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याद आती । न ठीक ढंग से खाता था न इतना याद आते हो .....
पहनता था, जो हुआ जैसे हुआ समय बीत रहा था । एक थका और लुटा सा जीवन उसके साथ चल रहा था । घर का सम्पूर्ण वातावरण उसकी उदासी को और भी बढ़ा देता । चारों ओर एक अजीब सी निर्जीवता सी फैली हुई थी । लगता था कि घर के कोने से कोई श्रापग्रस्त आत्मा अपना अहंकार चारों ओर फैला रही हो !

X X X

सोचते-सोचते, रोते हंसते सुमन के दिन बीतने लगे । उसका वियोगियों का बाना, हंसना, बोलना सब कुछ उसके दिल के दर्द को बतला रहे थे । उसे राकेश की बहुत याद आती । उसके बिना उसे होने वाली कठिनाइयों का ध्यान आता ! उसे उसका भी ध्यान आता जो कुछ दिनों बाद उसके जीवन में आने वाला था । कैसे होगा सब राकेश के बगैर । अगर उसे कुछ हो गया तो उस बच्चे का क्या होगा और वह उसके परिणाम की कल्पना मात्र से कांप उठती ! वह राकेश को देखती थी । उसके जीवन की लापरवाही और सूनेपन से भी परिचित थी । न वह ढङ्ग से रहता था न ढङ्ग से किसी से बात करता था । परन्तु वह भी क्या करे । उसका मन भर आता और आंखों से आंसू की धार बह निकलती । वह सदा किसी गहरी सोच में डूबी रहती.... राकेश.....ओ राकेश.....तुम मुझे क्यों

X X X

और एक दिन रीता से राकेश को पता चला कि सुमन ने एक सुन्दर से बच्चे को जन्म दिया है । रीता बहुत ही खुश थी । सुमन का चाँद सा लड़का हुआ था ! राकेश ने सुना तो मारे खुशी के उछल पड़ा, 'राजीव नाम रखेंगे हम उसका, ऐसा मैंने और सुमन ने सोचा था', राकेश कह रहा था । रीता ने जब उसे सुमन और बच्चे के पास जाने की याद दिलाई तो राकेश का चेहरा एकदम गम्भीर हो गया । "नहीं रीता, मैं उनके पास नहीं जाऊंगा । मैं जा ही नहीं पाऊंगा" और इतना कह कर वह चला गया था । राकेश के दर्द को रीता जानती थी, परन्तु वह भी क्या कर सकती थी । दोनों ने मिल कर नादानी की थी और चाहते हुए भी दोनों एक दूसरे से न मिलने की बेकार ज़िद्द पकड़े हुए थे ।

X X X

और एक संध्या को कमरे में होने वाली आवाज़ को सुन कर सुमन की नींद खुल गई । उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था । पलंग के पास बैठा राकेश, राजीव को प्यार कर रहा था । उसकी आंखों में आंसू थे, शायद स्नेह के आंसू—खुशी के आंसू । जैसे वह राकेश को गोद में लेने के लिए तड़प रहा हो, ऐसा उसे लग रहा था ! राकेश को इस तरह अपने इतने पास देख कर सुमन हैरान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह गई। उठ कर उसने राजीव को उसकी की गोद में दे दिया "देखो—है न तुम्हारी कार्बन कापी, लो सम्भालो अपने लाड़ले को, आखिर इसका प्यार तुम्हें यहां तक खींच ही लाया न, ओ राकेश तुम नहीं जान सकोगे कि एक स्त्री के लिए उसके पति से एक पल भी अलग रहना कितना कठिन हो जाता है।" राकेश हैरान खड़ा था। देख रहा था सामने सुमन खड़ी थी। अनुभव कर रहा था उसकी गोदी में राजीव था, राजीव, उसका अपना राजीव, और राजीव.....वह सो रहा था। राकेश कह रहा था। 'मेरा मुंह क्या देख रही हो, कुछ मत कह सुमन, चल घर चल, अपने घर जो राजीव का घर है, मेरा घर है, हमारा घर है! जो तेरे बगैर सूना पड़ा है। लौट चल सुमन, नहीं तो मैं उस घर में अकेला पागल हो जाऊंगा। तुम से दूर रह कर ही मैंने यह अनुभव किया है कि तुम्हारे बगैर मेरा जीवन कितना अधूरा है, न मत कर सुमन, नहीं तो....., और सुमन ने उसे आगे कुछ भी कहने से रोक दिया !

दूर खड़ी रीता इनको निहार रही थी। और उसकी दृष्टि राकेश और सुमन दो चेहरों से हट कर राजीव के नन्हें से एक चेहरे पर आकर रुक सी गई थी जिस पर उसे सुमन और राकेश के दो चेहरों का व्यक्तित्व लुप्त प्राय सा होता लगा।

हिन्दी विभाग पटियाला।

● ● ●

(पृष्ठ ३८ का शेष)

सुभाष—चुप भी रहो कुल्हड़ !

ठाकुर—कह लेने दो सुभाष, इसे खूब जी भर कर कह लेने दो। सचमुच मैं बड़ा नीच हूँ। जो दूसरों के लिये गड्ढा खोदता है कभी कभी स्वयं ही उसमें गिर पड़ता है।

माधुरी—अरे चाचा ! अभी बिगड़ा ही क्या है सुबह का भूला अगर शाम को भी घर लौट आये तो उसे भूला नहीं कहते। अब से भी अगर तुम रास्ते पर आ जाओ तो ठीक ही है, नहीं तो इस समाज में तुम्हारा जीवन दूभर हो जायेगा।

ठाकुर—ठीक कहती हो बिटिया ! मैं अभी जाकर अपने रुपयों का सुरक्षा-बांड तथा सोने का स्वर्ण-बांड खरीदता हूँ। अब मैं उन विचारों से, जिन्होंने अपना पूरा वेतन सुरक्षा-कोष में दे दिया है, एक नया पैसा भी सूद के न लूंगा।

(कुल्हड़ मस्ती में गाता है। सभी का प्रसन्नतापूर्वक प्रस्थान)

(समाप्ति सूचक संगीत)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मण्डी
जहां हिमाचल का मानसरोवर है

खेमराज गुप्त

हिमाचल प्रदेश, भारत का एक ऐसा पर्वतीय प्रदेश है जिसे देवधरा के नाम से भी जाना जाता है परन्तु इस देवधरा की अपनी भी एक देवभूमि है। उसी का नाम है मण्डी। कहने को तो मण्डी आज हिमाचल प्रदेश का एक ज़िला है परन्तु इस क्षेत्र का जो धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व रहा है उसे देखते हुए यह कहना ही पड़ता है कि मण्डी, देवधरा हिमाचल प्रदेश की भी देव भूमि है। दो भूतपूर्व पहाड़ी रियास्तों, मण्डी और सुकेत को मिला कर आज का मण्डी ज़िला बनाया गया है। सामूहिक रूप से सारे ज़िले का क्षेत्रफल १६२० वर्ग मील—यानी तकरीबन ४१९६ किलोमीटर है। इसमें भूतपूर्व मण्डी रियास्त का क्षेत्रफल १२०० वर्गमील, और सुकेत का ४२० वर्गमील है।

इस सारे क्षेत्र में तीन पर्वत श्रेणियां गुज़रती हैं जिनके नाम हैं—घोघर पर्वत श्रेणी, पूर्वी पर्वत श्रेणी और सिकन्दर पर्वत श्रेणी। सिकन्दर लोधी ने अपने शासन काल, १४५९ से १५१७ ईसा पश्चात् में, एक बार जिन पहाड़ी क्षेत्रों पर आक्रमण किया था उनमें मण्डी भी शामिल थी। उसी आक्रमण के कारण इस पर्वत श्रेणी का नाम सिकन्दर धार पड़ा।

मण्डी रियासत की स्थापना ईसा पश्चात् १००० में राजा बाहु सैन ने की थी। पुरानी मण्डी में स्थित त्रिलोक नाथ मन्दिर में लगे एक शिला लेख में मण्डी का प्राचीनतम नाम भी मण्डी ही लिखा गया है। यह शिलालेख ईसा पश्चात् १५२० ईस्वी में खुदवाया गया था।

सुकेत रियासत की स्थापना बंगाल के चन्द्रवंशी राजाओं के एक वंशज राजा वीरसैन ने की थी। राजा वीरसैन सेन-गोत्रीय थे। और ईसा पश्चात् ७६५ में इन्होंने सुकेत में अपना राज्य स्थापित किया था। प्राचीन ग्रन्थों में कहीं कहीं सुकेत का नाम सुक्षेत्र भी मिलता है।

मण्डी को यह गौरव प्राप्त है कि यह स्थान हिन्दुओं, सिक्खों और बौद्धों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए समान रूप से पूजनीय है। बुद्ध धर्म के महान् आचार्य पद्मसंभव, ईसा पश्चात् ७०० से ८०० तक यहाँ रहे और उस समय के तिब्बती शासक राजा ठेसुंग-देचन्न की प्रार्थना पर उन्होंने तिब्बत की यात्रा की तथा वहाँ बुद्ध धर्म का उपदेश दिया। तिब्बत के धर्म ग्रन्थों में मण्डी को "ज़ौहर" नाम दिया गया है। और आचार्य पद्म संभव को लोफन्न रिम्बोछे कहा गया है। तिब्बत के धर्म ग्रन्थों में लिखा है कि ईसा पश्चात् ९०० ई० में तिब्बत पर राजा लंगदर का शासन था। तिब्बती भाषा में लंगदर का अर्थ है "एक सींग वाला"। यह शासक बहुत ही ज़ालिम था। इसने वहां के बौद्ध भिक्षुओं पर तरह तरह के ज़ुल्म ढाए और बहुत से धर्म ग्रन्थों को जला डालने की आज्ञा भी दी। उस समय कुछ श्रद्धालु लेकिन साहसी लामा बहुमूल्य ग्रन्थों को लेकर तिब्बत से निकल भागे और उन्हें मण्डी ले आए।

लामाओं द्वारा प्रार्थना का दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज भी हिमाचल के मानसरोवर रिवालसर झील के किनारे एक शानदार बौद्ध मन्दिर है जिसमें आचार्य पद्म संभव की भव्य मूर्ति प्रतिष्ठित है। इसी झील के आसपास किसी सुरक्षित गुफा में वही अप्राप्य ग्रन्थ सुरक्षित रखे गए हैं, जिनमें से कुछ तो एक गुफा से मिल गए हैं लेकिन बहुत से अभी मिल नहीं पाए हैं। लामाओं का विश्वास है कि एक महान् "तेरतुन" लामा उन्हें अपनी योग विद्या से खोजेंगे। "तेरतुन" लामा, वह लामा होते हैं जो अपनी योग विद्या से गड़े हुए ख़ज़ानों या दूसरे दफीनों को खोजते हैं।

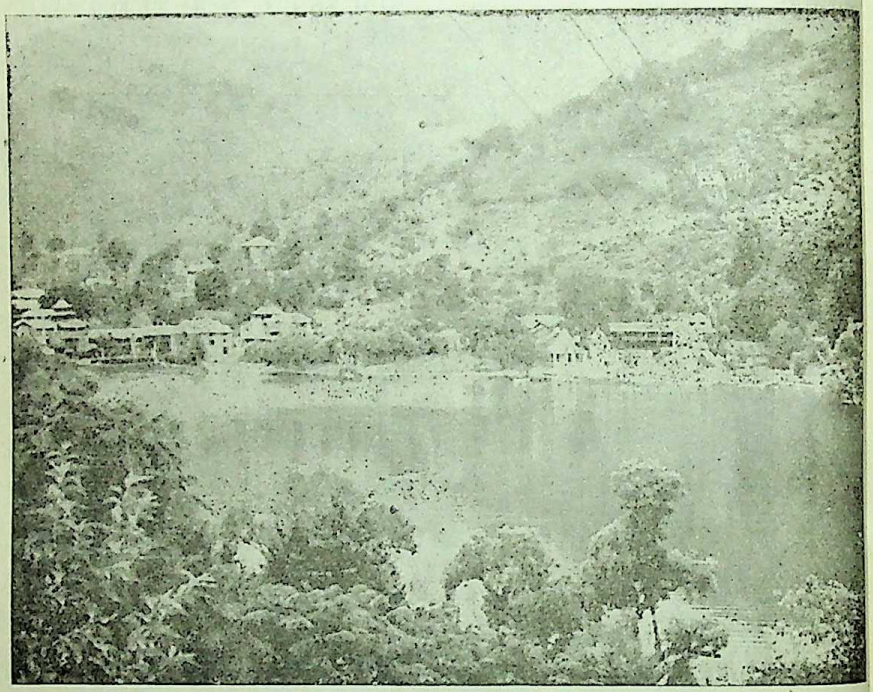

हिमाचल का मानसरोवर--रिवालसर

(Riwalsar) रिवालसर झील मण्डी नगर के दक्षिण पश्चिम में, नगर से लगभग १५ मील दूर है। अब तो वहां तक जाने के लिये मोटर मार्ग भी है। चारों ओर पहाड़ों से घिरी समुद्रतट से लगभग ५,००० फुट की ऊंचाई पर स्थित यह झील हिमाचल का मानसरोवर कहलाती है। इस झील में छोटे छोटे टीले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकसर तैरते रहते हैं। उन्हें "छो पद्मा" कह कर भी पुकारते हैं। उनका विश्वास है कि इन तैरते टीलों पर आचार्य पद्म संभव की आत्मा निवास करती है। हिन्दू मतवालम्बी इसे लोमस ऋषि की झील कहते हैं इसी झील के एक ओर बौद्ध मन्दिर है तो एक ओर भगवान शंकर का मन्दिर भी और साथ ही साथ एक ओर को एक ऊंची पहाड़ी पर गुरुद्वारा भी बना है। सिक्खों के दसवें गुरु श्री गोबिन्दसिंह, भी यहां पधारे थे और कुछ दिनों तक यहां तपस्या की थी। इन सब बातों को देखते हुए रिवालसर को अगर हिमाचल का मानसरोवर कहा जाए तो कोई गलत बात नहीं होगी। सुरम्य तथा रमणीय झील का घेरा एक मील है। हर साल वैशाख महीने में जब यहां मेला लगता है तो हज़ारों की तादाद में हिन्दू, बौद्ध तथा सिक्ख यात्री यहां आते हैं।

ईसा पश्चात् १६८४ में जब राजा सिद्ध सैन मण्डी के राजा थे तो सिक्खों के दसवें गुरु श्री गोबिन्दसिंह जी ने मण्डी की यात्रा की थी। राजा सिद्ध सैन जो स्वयं भी एक भक्त थे और कहा जाता है कि उन्हें बहुत सी सिद्धियाँ भी प्राप्त थीं, ने गुरु जी का शानदार स्वागत किया। राजा सिद्ध सैन के व्यवहार से प्रसन्न होकर गुरु जी ने मण्डी को एक वरदान दिया कि मण्डी का नाम सदा अमर रहेगा। उन्होंने अपना वरद हाथ आकाश की ओर उठा कर कहा था "मण्डी को जब लूटेंगे, असमानी गोले छूटेंगे" और साथ ही राजा को एक हण्डी देकर गुरु जी ने वरदान दिया था, "जब तक रहेगी मेरी हण्डी, तब तक रहेगी तेरी मण्डी।" आज तक भी सिक्खों का यह विश्वास क़ायम है कि जब भी महाप्रलय होगी, मण्डी सलामत रहेगी।

मण्डी को झीलों और मन्दिरों की धरती भी कहा जाता है। रिवालसर के अतिरिक्त, पराशर, कमरुनाग, कुन्तभयो, और नीलासर नाम की छोटी छोटी झीलें देख कर मन इसी धरती का होकर रह जाने को मचलने लगता है।

नगर के उत्तर में पराशर झील के किनारे महर्षि पाराशर का एक प्राचीन काष्ठ मन्दिर अतीत की बहुत सी कहानियां कहता हुआ सा प्रतीत होता है। कहते हैं इसी झील के किनारे बैठ कर महर्षि ने तपस्या की थी। नगर से पूर्व की ओर तकरीबन बीस मील चल कर कमरुनाग झील के किनारे बैठ कर ऐसा लगता है जैसे संसार की सारी शांति सिमट कर यहीं आ गई हो, झील के किनारे कमरुनाग देवता का एक प्राचीन मन्दिर भी है। कहते हैं अपनी हिमालय यात्रा के दौरान पांडवों ने ही इस मन्दिर को प्रतिष्ठित किया था। हर साल आषाढ़ महीने की संक्रांति को यहां एक भारी मेला लगता है। श्रद्धालु महिलाएं न जाने कितने ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोने और चाँदी के जेवर नाग देवता को चढ़ाने के लिये झील में फेंक देती हैं।

इसी प्रकार रिवालसर झील से कोई दो मील दूर कुन्तभयो झील के बारे में भी लोगों का विश्वास है कि माता कुन्ती के नाम पर ही झील का नाम कुन्तभयो पड़ा है। नीलासर झील नैणादेवी धार के किनारे पर स्थित है। झील के नीले पानी के नाम से ही इसका नाम नीलासर रखा लगता है।

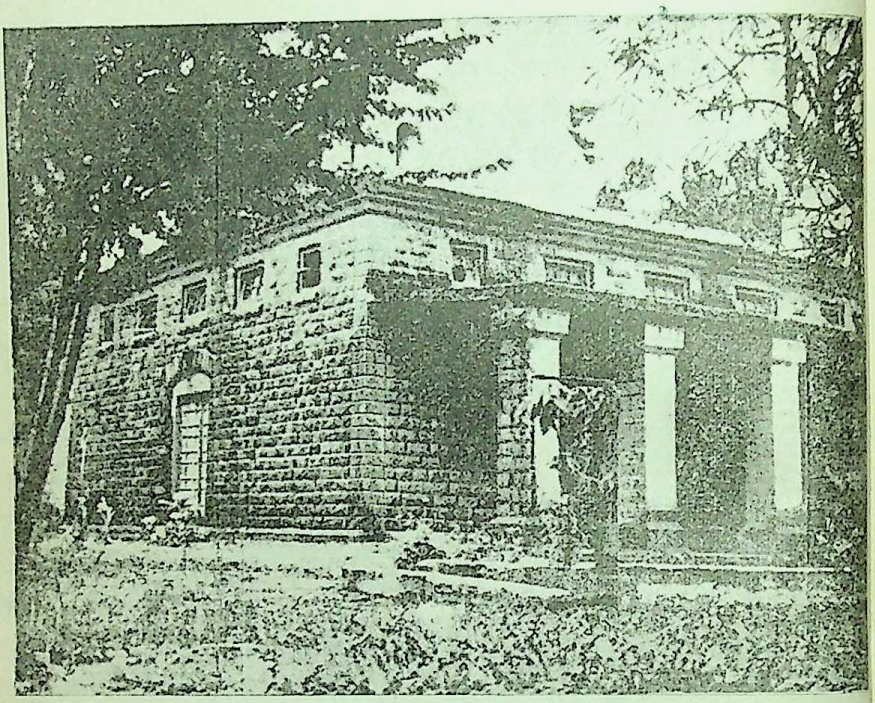

रिवालसर स्थित गुरु द्वारा

त्रिलोकनाथ, पंचवक्त्र, भूतनाथ और अर्धनारीश्वर के मन्दिरों की चर्चा किए बिना, मण्डी के बारे में कुछ भी कह सकना सम्भव नहीं है। त्रिलोकनाथ मन्दिर का निर्माण ईसा पश्चात् १५२० में, तत्कालीन राजा अजबर सैन की रानी सुलतान देवी द्वारा कराया गया था। पत्थरों से बने इस सुन्दर मन्दिर में भगवान शंकर की मानवाकार मूर्ति स्थापित है। महामाया पार्वती के साथ नन्दी पर आरूढ़ भगवान शंकर की इस प्रतिमा के तीन मुख हैं। पीठ की ओर का मुख रुद्ररूप है, पुराने ज़माने में जब कोई भी नारी अपने पति के साथ सती होना चाहती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी उसे इसी तरह मुख में रखकर, जहां स्थान के अनुसार प्रतिमा मिले उसी की जाते थे। पंचवक्त्र मन्दिर मंडी में बहने वाली स्थापना करके मन्दिर बनवाने से तुम्हारा दो नदियों, व्यास और सुकेती के संगम पर कल्याण होगा"। वही स्थान जहां गाय बना है। इस प्राचीन पाषाण मन्दिर में खड़ी होकर दूध की धारा बहाती पंचमुखी शिव प्रतिष्ठित है। पत्थरों पर थी उसी के नीचे से भगवान भूतनाथ नक्काशी का काम बहुत ही बारीक एवं लिंग महादेव की प्राप्ति हुई। हर साल कलापूर्ण है। पंचमुखी प्रतिमा को किसी शिवरात्रि के अवसर पर यहां एक भव्य भी ओर से देखने पर केवल तीन मुखों के मेला लगता है जिसमें देश भर के लोग दर्शन होते हैं। पूरे पाँचमुखों के दर्शन शामिल होते हैं।

के लिए परिक्रमा करना ज़रूरी है। निर्माता मण्डी के अर्धनारीश्वर मन्दिर में कलाकार ने शायद इसी उद्देश्य से इस प्रतिष्ठित भूतभावन भगवान का आधा मूर्ति की रचना ऐसी की है, कि श्रद्धालु शरीर नारी रूपा है। यह सुन्दर मूर्ति चार भक्तों को दर्शनों के साथ साथ परिक्रमा फुट चार इंच लम्बी और तीन फुट तीन इंच का पुण्य भी प्राप्त हो सके। चौड़ी है। मूर्ति के दाहिनी ओर भैरव और

भूतनाथ मन्दिर तो मण्डी निवासियों बांई ओर हनुमान जी की प्रतिमाएं की श्रद्धा का सब से बड़ा केन्द्र है। इस प्रतिष्ठित हैं।

मन्दिर के इर्द-गिर्द मण्डी नगर बसा हुआ जाहिर है जिस क्षेत्र की ऐसी शानदार है। इस मंदिर की स्थापना के साथ जुड़ी परम्पराएं रही हों वहाँ के लोक जीवन पर एक लोक कथा के आधार पर कहा जाता भी उनका अमिट प्रभाव रहेगा। शायद है कि जहां आज का मण्डी नगर बसा है यही कारण है कि मण्डी के लोग सीधे वहां पहले बंजर ज़मीन थी। लोग वहां सादे, सचाई पसन्द, धर्मनिष्ठ और महमान अपने पशु चराने जाया करते थे। एक नवाज़ हैं।

ग्वाले की गाय नित्य प्रति एक स्थान पर प्राचीन सांस्कृतिक भण्डारों वाली खड़ी होकर दूध की धाराएं बहाती रहती। यह धारा नित नए विकास की सीढ़ियाँ होते होते यह समाचार तत्कालीन शासक चढ़ रही है। यहां की नमक खान एशिया राजा अजबर सैन के कानों तक भी पहुंचा, की बड़ी खानों में से एक है। हाल ही में राजा ने उस स्थान की खुदाई की आज्ञा पश्चिमी जर्मनी सरकार की सहायता से दी। कहा जाता है कि अभी खुदाई चल मण्डी में सघन ज़िला कृषि कार्यक्रम भी ही रही थी कि राजा को एक स्वप्न आया शुरू किया गया है क्योंकि मण्डी हिमाचल जिसमें भगवान शिव ने कहा कि, "खुदाई प्रदेश के उपजाऊ क्षेत्रों में से एक अच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्र है । खास तौर से भात की खेती के लिये तो यहां की आबोहवा विशेष रूप से उपयुक्त है । सुधरे तरीकों से मधुमक्खी पालन की एक बड़ी योजना मण्डी के सुन्दर नगर स्थान पर शुरू की गई है ।

मण्डी नगर के बाहर जहां भी कहीं भी जाइए आपको नयनाभिराम नज़्ज़ारों के दर्शन होंगे । जोगिन्दर नगर मण्डी का एक बहुत ही खूबसूरत स्थान है । यहां का पनबिजली केन्द्र भारत के प्राचीनतम पनबिजली केन्द्रों में से एक है । बरोट नाम के स्थान पर रस्सियों की ट्राली का अपना ही आकर्षण है । गुम्मा और द्रंग की नमक खानें, देखने के लिए हर रोज़ न जाने कितने सैलानी आते हैं । इनके अतिरिक्त शंकरसुमेर झटींगरी, सुन्दर नगर, कटौला तथा चौंतरा नाम के स्थानों में पर्यटकों के दल के दल आते हैं । और देवधरा की देव भूमि मण्डी के अछूते कुआँरे आकर्षण से लुत्फअन्दोज़ होते हैं । मण्डी के लोक गीतों का रसास्वादन किए बिना मण्डी के लोक जीवन की सच्ची तस्वीर सामने नहीं आ पाएगी, क्योंकि मण्डी के लोक गीतों में भोले मन की भावनाओं का बड़ा ही मार्मिक चित्रण देखने को मिलता है--सीधे सादे शब्दों में लोक गायक बड़ी ही कुशलता से मन की बात कह डालता है जैसे कि :--

बैठ बाबा घर आपणे, जी मैं चली बगाने देश रे
हो बेटी रमदी भली साहोरे--
अंगणा ता बाबा पर्वतभया, देहल भई परदेस रे--
हो बेटी रमदी भली साहोरे--
खिनुँए खलादे बीरन, घोड़े घोड़े रे सखियां--
री खेल रे, हो बेटी रमदी भली साहोरे
बटलोहियां ता बाबे अणगिणत दित्तियां--
हो कड़छियां दे नाल--बेटी रमदी भली साहोरे--
कपड़े ता बाबे अणगिणत दित्ते--
इक न दिती बाबे कांघी हो--
हो बेटी रमदी भली साहोरे--

"पिता उदास बैठे हैं--उनकी लाडली बिटिया उनके सामने ही पराई होकर जा रही है किसी का घर बसाने के लिए । यही पिता का घर जहाँ मैं गेंद खेला करती थी जहाँ सखी सहेलियों के साथ तरह तरह के खेल खेला करती थी आज वही पिता का घर पराया हो गया है --घर का आँगन पहाड़ के समान है और देहरी बिदेस बन गई है--पिता ने मेरे लिए दहेज में बहुत सी चीज़ें दी हैं हाँ मैं अब पति के घर जा रही हूँ ।"

बिदा होती हुई पुत्री के मनोभावों का हृदयस्पर्शी वर्णन इस गीत में हो पाया है । एक दूसरा गीत भी कोमल भावनाओं से भरा पड़ा है :--

सिंजदी मैं मरुए जो पाणी मेरे हाकमा हो
इस मरुए दी लम्मी लम्मी लरजां
मूर्खा ते तोड़ी बी नी जाणी,
सिंजदी मैं मरुए जो पाणी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरुआ ता मेरा हरा भरा रैन्दा,
मूर्खा ए ता मेरा नसाणी,
सिंजदी मैं मरुए जो पाणी,
लोका देणे बोल ओ मेरे हाकमा,
मेरी तेरी लगी ओ पुराणी,
सिंजदी मैं मरुए जो पाणी,
कियां करी रैणा-दस्सी जा मेरे हाकमा
मुसकल लगियां निभाणी --
सिंजदी मैं मरुए जो पाणी ।

"तुम्हारी याद में लगाया मरुए का पौधा सुख न जाए--इसी लिए तो मैं उसे अपने हाथों से सींचता हूं--मरुए का यह पौधा हमारे पवित्र प्रेम की साक्षी है लोग भले ही मुझे तानें दें लेकिन मैंने तो तुम्हें दिल दिया है -- प्रीत कह लेना आसान होता है उसे निभाना बहुत ही कठिन काम है--परन्तु मरुए का यह पौधा मुझे सिखाता है कि प्रेम की परिभाषा क्या है-- मेरे प्रियतम यही तो हमारे प्यार की निशानी है ।"

मण्डी के लोक नर्तक

इसी प्रकार मण्डी के लोक गायक चैत महीने का एक मनोरम गीत गाते हैं--जिसके भाव पढ़ने सुनने वालों को मंत्र मुग्ध सा कर देते हैं ।

चैत्र सुहावणा,
पीपलां दे हेठ मेरी अम्मा खड़ी हो--अम्मा खड़ी वारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

झड़ झड़ पौदे पिपल-पात-चैत्र सुहावणा,
जाओ तू जाओ अम्मा घर आपणे,
वीरना गुमानी जो भेजे,
आओ तू आओ बीरा बैठ तू पटड़े केहड़े आदर देऊं,
दुधे दुहाणिए बीरा पैराँ छुहाऊं दन्तुए पटड़ा देऊं,
लड्डू सुकोतिए बीरा भोजन देऊं, भरिए देऊँ ठंडा नीर,
चन्दा ता देखी देखी थाली घड़ाऊं,
तारेयां गिणदे कटोरे,
झिंझण दा छांटी छांटी भत्त रिन्हाऊं,
खायां ता खायां बीरा बडड़े गराहे, आवेगी सासू कंग्यारी,
सासू ता बीरा मेरी अगणी दा पूला,
ननद लसकदी बीज,
चैत्र सुहावणा ।

"भाई अपनी बहन से मिलने बहन की ससुराल गया है। बहन भाई को देख कर हर्षित हो उठी—दूध मिले जल से बहन ने भाई को पैर धोने के लिए पानी दिया, हाथी दान्त का आसन बैठने को दिया और लड्डू तथा सुकोतों के साथ जलपान कराया—

भैया तुम जल्दी जल्दी जल पान कर लो मेरी सास बड़े तीखे स्वभाव की है और ननद तो आकाश की बिजली के समान ही है। उनके आने से पहले पहले ही जल पान कर लो—

तू चिन्ता न कर बहन मैं सब ठीक कर लूंगा —"

मण्डी के लोक गीतों में कोमल भावनाओं का चित्रण बड़े सीधे सादे शब्दों में बड़ी कुशलता से किया गया है। लोक संगीत की धरोहर पीढ़ी दर पीढ़ी इसी प्रकार चलती आ रही है और उस समय तक सुरक्षित रहेगी जब तक हम हृदय की भाषा "प्यार" को संजोए रखेंगे ।

नार्थ ब्रक टैरेस, टॉप फ्लैट,
माल, शिमला

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका कोई

●

शैलेन्द्र

चौंक पड़ी रजनी ।

न जाने उन कुछ शब्दों में क्या था, वह पलट कर उन शब्दों को कहने वाले की ओर देखने के लिए मजबूर हो गई ।

वह एक साधारण-सा युवक था, मात्र एक युवक, जिसके कहे शब्द भी साधारण थे : "मां की पुकार पर जा रहे हैं मोर्चे पर । लौटेंगे तो जीत कर, नहीं तो.....मर गए तो कोई ग़म नहीं । मेरा कौन है ? न कोई आगे, न कोई पीछे । इस देश की मिट्टी से बना हूँ, इसी में मिल जाऊंगा ।"

चीनी आक्रमण के प्रतिक्रिया-स्वरूप देश में जो उफान उठा था, जिस आवेग पूर्ण स्पन्दन ने समूचे देश को आलोड़ित कर दिया था; यह मात्र उसी के एक अंश की अभिव्यक्ति थी ।

लेकिन इन कुछ शब्दों में कुछ ऐसा था जिसने रजनी के अंतर को हिला दिया । अजाने ही उस युवक पर उसे ममता हो आई, नेह का एक सागर-सा छलछला उठा उसके अंतस में ।

स्टेशन पर बड़ी चहल-पहल थी । पास की छावनी से सैनिकों का एक दल मातृभूमि के सन्मान की रक्षा के लिए सीमा पर चीनी आक्रमणकारियों से जूझने को भेजा जा रहा था । जिन सैनिकों के मित्र सम्बन्धी नगर में रहते थे, वे समाचार पाकर अपने प्रियजनों को विजय-कामना के साथ विदा कहने के लिये स्टेशन पर आए थे । रजनी का अपना भाई अवनीश, मेजर अवनीश भी मोर्चे पर जा रहा था । सारा परिवार उसे विदा कहने आया था । मां ने उसका माथा चूमकर उसे विजयी होकर लौटने का आशीर्वाद दिया, पिता ने केवल खामोशी से उसके सिर पर हाथ रख दिया, बहिन ने उसके माथे पर मंगल तिलक लगाया और अवनीश की पत्नी अचला ने सजल नयनों से किन्तु मुस्कराते अधरों के साथ पति को निहारा जैसे कह रही हो : मैं सदा तुम्हारी, और केवल तुम्हारी प्रतीक्षा में रहूँगी ।

बहिन ने भाई के लिये मंगल कामना की लेकिन नेह का जो आवेग सहसा उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अज्ञात-कुल-नाम [illegible] ट्रेन ने दूसरी सिसकारी । अवनीश मन में पैदा हुआ वह अवनीश के लिये नहीं पैदा हो सका । अवनीश के बारे में वह आश्वस्त थी; इतने लोगों का नेह-कवच उसने पहिना हुआ था । रजनी का मन उस युवक के लिये आर्द्र हो उठा । कौन जाने, सच ही वह लौट के न आए ! कौन उसे आशीर्वाद देगा ? कौन उसकी मंगल-कामना करेगा ?

और युवक अपने में मस्त साथियों से बातें करने में लीन था । जो कुछ उसने कहा था, शायद वह एक क्षणिक आवेग था जिसे प्रकट करके वह भूल भी गया था । लेकिन रजनी के कानों में वे शब्द अब भी प्रतिध्वनित हो रहे थे : "मेरा कौन है ? न कोई आगे न कोई पीछे ।"

रजनी एक टक उसे देखे जा रही थी । वह अनजाना–अनदेखा युवक उसे बहुत जाना हुआ, बहुत देखा हुआ प्रतीत हो रहा था । अजाने ही वह धीरे धीरे आगे बढ़ कर कम्पार्टमेंट की उस खिड़की के पास जा पहुंची । जहां वह युवक बैठा था ।

तभी ट्रेन ने ह्विसल दी ।

रजनी का ध्यान भंग हो गया । मां उसे बुला रही थी । वह पलटी । पास आई तो मां ने पूछा : "तू कहां चली गई थी ?"

"कहीं नहीं, मां, यहीं तो थी" कह कर रजनी ने टाल दिया और चेष्टा करके स्वस्थ हो गई ।

अवनीश माता और पिता के चरण छूकर कम्पार्टमेंट के दरवाज़े में जा खड़ा हुआ । गाड़ी रेंगने लगी थी । अवनीश उनसे दूर होने लगा । विदा कहने के लिये सभी के हाथ लहरा उठे ।

सारा परिवार भारी मन से घर लौट आया । अवसाद की एक परत सभी पर छा गई और दिन बीतने के साथ यह परत मोटी होती चली गई ।

मोर्चे से अवनीश के पत्र प्रायः आते । उनमें एक उत्साह होता था, मातृभूमि पर न्योछावर होने की उमंग होती थी । उन पत्रों से परिवार के जीवन में थोड़ी हलचल मच जाती पर वह कुछ ही समय बाद ऐसे ही खत्म हो जाती जैसे तालाब के खड़े जल में फैंके गए पत्थर से उत्पन्न चंद लहरें कुछ ही क्षणों में ग़ायब हो जाती हैं ।

रजनी भाई के पत्रों की उत्सुकता से प्रतीक्षा करती । पत्र आता तो सब से पहले रजनी ही उसे पढ़ती । वह बड़े उत्साह से पत्रों को पढ़ना शुरू करती, लेकिन हर बार ऐसा होता कि पत्र के अंत तक पहुंचते-पहुंचते उसका सारा उत्साह खत्म हो जाता । एक गहरी वेदना की अनुभूति उसे चारों ओर से घेर लेती और वह चुपचाप पत्र भाभी को या मां को, जो भी उसके पास होता, थमा कर वहां से चल देती । रजनी बालकनी के अंतिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोने पर जा खड़ी होती। अवनीश तो यह [illegible] क्योंकि जो कोना उसे सदा से प्रिय रहा है क्योंकि नीचे घास के लॉन के किनारे किनारे रखे गमलों में उसी के लगाए फूल खिले होते हैं। छत के खम्बे का सहारा लिए खड़ी रजनी के मन को ये फूल भी बांध न पाते और दृष्टि उन पर से फिसलती हुई दूर किसी वस्तु पर जा टिकती, पर वह उसे देखते हुए भी देख न पाती। उसका मन न जाने कहां-कहां भटकने लगता। रजनी अपने में इतना उलझ जाती कि उसे कहीं कूल-किनारा न मिल पाता, न ही कभी वह यह निश्चित कर पाती कि वह क्या सोचती है। घंटों खड़ी रहती रजनी, यहां तक कि उसकी टांगें दर्द करने लगतीं और तब वह थक कर कमरे में लौट आती, हताश-सी कुर्सी में गिर कर आंखें मूंद लेती।

रजनी समझ नहीं पाती कि उसे यह क्या हो गया है। अवनीश के पत्रों को पाने की लालसा उसे रहती है, पर पत्र पाकर उसका यह उत्साह बिखर क्यों जाता है? इस प्रश्न का उत्तर उसे कभी नहीं मिल पाता। जब भी उसने उत्तर ढूंढने की कोशिश की है, वह और अधिक उलझ जाती रही है। क्या अवनीश के पत्रों में कोई ऐसी बात खोजती है वह जिसे न पाकर वह निराश हो जाती? है रजनी अपने से पूछती है। पर इसका उत्तर देते उससे नहीं बनता। सच्चाई तो यह है कि वह उत्तर उसका मन देना चाहता है, रजनी उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं। थक-हार कर रजनी अपने मन के आवेग को दबाने के लिए घर के कामों में लग जाती। पर उसके करने को भी तो बहुत कुछ नहीं। रजनी रसोईघर में जाकर महाराजिन का हाथ बंटाने लगती या यूंही अपने कमरे की वस्तुओं को उठा उठा कर नए ढंग से सजाने लगती। लेकिन उसका मन शीघ्र इन सब से ऊब जाता और वह अपने कमरे में जाकर पड़ी रहती।

कभी कभी उसकी आंखों में एक सांवला चेहरा तिर आता और वह देखती कि वह स्टेशन पर अवनीश को विदा कर रही है। गाड़ी धीरे-धीरे रेंगती हुई प्लेट फार्म को पार कर रही है। बीसियों चेहरे रजनी के सामने से गुज़रते जा रहे हैं। उन अजाने-अनदेखे चेहरों में एक सांवला स्वस्थ चेहरा भी है जो उसे कुछ देखा, जाना लगता है। रजनी का हिलता हुआ हाथ भाई को विदा कहता है, लेकिन मन उस चेहरे के पीछे दौड़ने लगता है। वह उसके लिये मंगल कामना करती है। उसके विजयी होकर लौटने की प्रार्थना करती है।

तभी रजनी के भीतर से कोई पूछ बैठता है : "कौन है यह ?"

"होगा कोई, मैं क्या जानूं ?

"सच ही तुम कुछ नहीं जानती ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां"

"तुम गलत कहती हो। तुमने स्टेशन पर उसके लिए मंगल कामना की थी। भला क्यों ?"

"केवल मानवीय सहानुभूति से। उसका कोई जो नहीं इस संसार में।"

"उस अभाव की पूर्ति की ज़रूरत तुम्हें ही क्यों महसूस हुई ? और भी तो सैंकड़ों व्यक्ति थे। उनके लिये क्यों नहीं वह भाव उमड़ा तुम्हारे मन में ? शायद वह मात्र सहानुभूति नहीं थी, कुछ और था।"

"प्रणयभाव।"

रजनी विद्रुप भाव से हंस पड़ती : "वह अज्ञात कुल-नामा एक अनाथ युवक, और मैं एक संभ्रांत परिवार की बेटी। एक रिटायर्ड जनरल की बेटी, एक मेजर की बहन एक साधारण सैनिक से प्यार करेगी ! हा हा हा ! एक से एक बढ़ कर बैल-सैटल्ड युवक मेरे लिये आंखें बिछाने को तैयार हैं। मैं भला उससे क्यों प्यार करूंगी ?"

प्रश्नकर्त्ता निरुत्तर हो जाता, पर अपने उत्तर पर रजनी को संतोष नहीं होता बल्कि उसके मन को उद्विग्नता और बढ़ जाती।

और फिर अवनीश के पत्र आने एकाएक बंद हो गए। घर वालों ने जो पत्र उसे भेजे, वे भी वापस आ गए। सारे घर में चिंता छा गई।

मोर्चों से जो समाचार आ रहे थे, वे कुछ अच्छे न थे। रजनी की वेदना और बढ़ गई। एक छटपटाहट-सी उसके भीतर भरने लगी। पहाड़ से दिन उससे काटे न कटते। कोशिश करने पर भी वह अवसाद की परतों को तोड़ने में अपने को असमर्थ पाती। और तभी जैसे उसके परिमाण की ही सरकार ने नर्सों की आपात भर्ती और ट्रेनिंग की घोषणा कर दी। भटकती-सी रजनी को किनारा मिल गया। उसने ट्रेनिंग के लिये अर्ज़ी दी और चुन भी ली गई। बड़ी लगन से उसने काम सीखा और ट्रेनिंग पूरी होते ही एक अस्पताल में उसे भेज दिया गया। जहां युद्ध के मोर्चों पर घायल हुए सैनिक परिचर्या-धीन थे। युद्ध तब रुक गया था।

रजनी सैनिकों की सेवा में जुट गई। उसने इस काम को एक मिशन के रूप में अपना लिया था। लगातार वह वार्ड में इस बैड से उस बैड तक घूमती रहती। वह घायल और बीमार सैनिकों की पीड़ा कम करने का यत्न करती, उनको सांत्वना देती, उनको पत्र-पत्रिकाएं पढ़ कर सुनाती, उनके घरों को पत्र लिखती और सैनिकों से उनके संघर्ष की शौर्यगाथाएं सुनती कि कैसे हमारे सैनिकों ने शत्रु का मुकाबला किया, मातृभूमि के सन्मान की रक्षा के महायज्ञ में कैसे असंख्य भारतीय वीरों ने अपने प्राणों की आहुतियां दीं।

और सहसा एक सांवला चेहरा उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसपटल पर उभर आता । रजनी सोचने लगती [illegible] चट्टानों पर, बुलंद चोटियों पर या बीहड़ जंगलों में किसी भी समय शत्रु से लोहा लेने के लिए डटा हुआ होगा या लड़ते-लड़ते वीर गति को....यह विचार आते ही ठक्-सा उसके दिमाग में कुछ बज उठता और रजनी कांप जाती । बड़ी तेज़ी से वह स्वयं ही अपनी बात का प्रतिवाद कर देती । नहीं नहीं, वह ज़रूर कहीं मोर्चा संभालेगा । वह सफल होकर लौटेगा, विजयी होकर ।

तभी उसके भीतर से कोई पूछ बैठता : "वह तेरा कौन है ?"

रजनी इस प्रश्न का उत्तर न देकर अपने को काम में व्यस्त कर लेती । लेकिन उसके बारे में [illegible]छ जानने की उत्सुकता बराबर उसके मन में रहने लगी । वह घायल सैनिकों से अवनीश की बटालियन के बारे में पूछती पर उसे कोई जानकारी न मिल पाती क्योंकि कोई भी सैनिक उस बटालियन का वहां न था, सभी दूसरी बटालियनों के थे । शायद अवनीश की बटालियन कहीं दूसरी जगह तैनात थी ।

समय गुज़रने के साथ रजनी की व्यग्रता बढ़ती जाती थी । उसकी प्रतीक्षा लम्बी हुई जाती थी ।

लेकिन एक दिन वह प्रतीक्षा खत्म हो गई ।

रजनी ड्यूटी संभालने के लिये एक सुबह जब अस्पताल के आफिस में पहुंची तो वहां एक अखबार पड़ा उसे मिल गया । [illegible] देखने लगी, पर दूसरे ही क्षण अखबार उसके हाथ से छूट कर गिर पड़ा । अखबार के पहले पृष्ठ पर एक चित्र छपा था जो निश्चय ही उस युवक का था । भारत मां का वह सपूत आखिरी दम तक मोर्चे पर डटा रहा । अपना सारा गोली-सिक्का खत्म हो जाने पर भी वह परास्त नहीं हुआ । मरते मरते भी उसने अपनी संगीन से कई शत्रुओं को पिरो डाला था ।

रजनी को लगा कि वह सम्बलहीन हो गई है, जीवन-यात्रा में लक्ष्यहीन । वह जैसे टूट कर कुर्सी में गिर पड़ी । नयन सजल हो उठे । रजनी का जी चाह रहा था कि वह खुल कर रोए । पर नहीं, रजनी को लगा कि वह ग़लत बात सोच गई है । वह नहीं रोएगी । जब उसने भीरुता नहीं दिखाई तो रजनी भी भीरु नहीं बनेगी । वह एकाकी अवश्य रह गई है पर सम्बलहीन नहीं । उसकी स्मृति का सम्बल उसे सदा रहेगा । रजनी ने अपने आंसू पोंछ डाले और ड्यूटी संभालने के लिये वार्ड की ओर चल दी । वह दृढ़ पगों से आगे बढ़ती जा रही थी, पर एक बात रह-रह कर उसके मन में उमड़ रही थी । काश, एक क्षण के लिए वह रजनी के पास जीवित लौट सकता और वह उसे बता सकती कि इस संसार में वह अकेला नहीं; उसका भी कोई है, यह सारा देश, यह समूचा राष्ट्र और उसकी अपनी यह रजनी !

हिन्दी मिलाप जालंधर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय शहीद के प्रति

शिवकुमार शर्मा

तुम जीवित थे हे आर्यवीर !
मन था दर्शन का अभिलाषी ।
बलिदान हुए जिस धरती पर ।
बन गई वही पावन काशी ।।

यह मरण तुम्हारा मरण नहीं,
आदर्शों की परिभाषा है,
निज मातृभूमि-हित सब कुछ,
अर्पण कर देने की भाषा है ।।

हे वीर भारती ! हिमगिरि के--
शुभ शिखर तुम्हारी जय-गाथा,
भारत का हर बालक, नर-नारी--
झुका रहा तुमको माथा ।।

जिन हाथों ने हैं खड़े किये
थे 'ताज' और भाखड़ा यहां,
वे कोटि-कोटि कर उठे--
तुम्हारे अभिनन्दन को जहां तहां ।।

हे अमर वीर ! ध्रुव धैर्य-धीर !
जननी तुमसे सन्तानवती,
सौभाग्यवती तुमसे धरती,
तुम धन्य धन्य हे वीर व्रती !

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागमभाग युग और ज्ञानी जी

●

ईश्वर चन्द्र शर्मा

भगवान् विष्णु के सहस्र नामों की तरह आज का युग भी न्यूनाधिक रूप से 'सहस्र नाम स्तोत्र' का अधिकारी है। कोई इस युग को योजना युग, कोई टैक्सयुग, कोई भाषण युग, कोई उद्घाटन युग, कोई वचन युग, न जाने किन-किन नामों से संबोधित करते हैं। भाव यह कि हर इन्सान ने अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार नाम रख लिये हैं और सच पूछिए तो ये सब हैं भी ठीक। इसलिए क्षमा करें यदि मैं भी इस युग को एक नाम "भागम भाग युग" देना चाहूँ तो गलत तो नहीं। आज आप किसी को भी देखें-मिलें न जाने सब किस जल्दी में हैं और हर काम को दो मिनट में ही कर लेना चाहते हैं। जो पैदल चल रहा हो वह भाग कर जल्दी पहुंचना चाहे तो बात समझ में आती है। मगर ये साइकल वाले, स्कूटर वाले, बस वाले, कार वाले, वायुयान वाले, जो पहले ही सामान्य से कहीं अधिक तेज चल रहे हैं, न जाने क्यों इतनी तेज़ी से चलते हैं मानो आग बुझाने जा रहे हों। किसी से भी बात कीजिएगा तो उसका यही उत्तर होगा कि 'अब तो ज़रा जल्दी में हूँ फिर बात करेंगे' जैसे किसी को किसी के दुख-सुख सुनने या बात करने का समय ही नहीं। कितनी अशांति—कितनी बेचैनी है! हम चैन का सांस ही नहीं ले पाते। गरीब को तो भला शांति ही कहां से, अमीर भी बिल्कुल अशान्त है। न जाने यह बेचैनी और अशान्ति कब और कहां समाप्त होगी?

आज ३०—३५ साल पुरानी बात याद आती है। तब लोग कितने शान्त और निश्चिन्त थे मानो इस धरती के मालिक वही हों, चौपालों में, बैठकों में, पीपल के पेड़ तले, कुंए की मुंडेर पर घंटों महफिलें जमा करतीं। देहाती इकट्ठे होकर गांव भर की और शहरदार मुहल्ले भर की चर्चा परिचर्चा कर लेते थे। मगर आज क्या कमाल कि हवेली में ऊपर का किरायेदार नीचे के किरायेदार का नाम भी जानता हो कुशल-मंगल जानना तो दूर की बात ठहरी। जिन दिनों की बात कहने चला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हूँ उन दिनों यातायात के साधन सीमित थे । हमारे शहर के एक ड्राइवर सज्जन, जिन्हें लोग भाइया जी के नाम से पुकारा करते थे, एक अट्ठारह सीट वाली पुरानी मोटर गाड़ी चलाया करते थे । सूरज चढ़ते ही अड्डे पर अपनी मोटर गाड़ी, जिन्हें उन दिनों लारी कहा जाता था, लेकर आ जाते और ऊंची आवाज़ में चिल्लाते "चलो सामाने तीन आने सवारी" इस प्रकार आवाज वह हर घण्टे, आध घण्टे लगा देते और धीरे धीरे तीन आने देकर मोटर में बैठने वाले लारी में यथास्थान आ जमते । नीचे की सीटें भर जाने के बाद मोटर की छत का नंबर आता । मोटर पर सीढ़ी तो आज की बात है, उन दिनों तो इंजन के ऊपर से ही छत पर चढ़ा जाता था । भाइया जी थे कि जूता पहन कर किसी को इंजन पर से चढ़ने नहीं देते थे । वह स्वयं जूता पहन कर मोटर नहीं चलाते थे । इंजन उनके लिए अत्यन्त पवित्र वस्तु था जिसे वह देवता की भांति पूज कर कानों को हाथ लगा कर और वाहि गुरु का नाम लेकर स्टार्ट किया करते थे । लगभग दो बजे तब अपनी मोटर में तीस पैंतीस सवारियां भर कर वह सामाने की ओर चल पड़ते, सामाना पटियाला से अठारह मील दूरी पर है पर वह पहुँचते थे लगभग शाम के पांच बजे । देरी का कारण मोटर का तेजी से न चलना न होकर भाइया जी का उन ग्रामीणों के प्रति प्रेम भाव था जो कि अपने गांव में मोटर के पहुँच जाने पर भाइया जी को दूध पिलाए बिना या गन्ने का रस पिलाए बिना या मक्की की रोटी, साग-मक्खन खिलाए बिना जाने ही नहीं देते थे ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाइया जी बड़े सच्चे सुच्चे विचारों के थे यदि सुबह से दोपहर तक उनको तीस पैंतीस सवारियां नहीं मिलती थीं तो वह उन सवारियों से स्पष्ट कह देते थे कि "भाई आज मोटर नहीं जाएगी, कल को जाएगी" उस समय अगर कोई कह देता कि "भाइया जी फिर पैसे तो लौटा दें" तो भाइया जी बड़े विश्वास से कह देते कि "अरे भाइया कल मर तो नहीं जाएगा । कल को सामाना पहुंचा देंगे ।" लोग विश्वास के साथ घरों को लौट जाते और दूसरे दिन सूरज निकलते ही फिर अड्डे पर आ पहुंचते । मगर उन दिनों में न तो कभी भाइया जी को किसी ने धोखा दिया और न ही भाइया जी ने किसी का पैसा हज़म किया । भाइया जी लिखना-पढ़ना बिल्कुल नहीं जानते थे इसलिये लोगों के नाम लिखने या याद रखने की ओर से भी उन्हें विरक्ति ही थी । जितना कुछ उन्हें याद रहता वह इस प्रकार होता— लाल दुपट्टे वाला एक रुपया दे गया, नीली चुन्नी वाली दो रुपए दे गई, दाढ़ी वाला पूरे पैसे दे गया, लौंग वाली टिकट के पैसों की जगह घी दे गई ।

ज्ञानी जी की मोटर की सीटें तो एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसी ही थीं मगर इन तीन डब्बों को भाइया जी का रात का पड़ाव सामाने बना छोड़े थे। पैसा दो पैसे किराए का भी फरक था जो कि मोटे तौर पर समझ में नहीं आता था। कई पूछ बैठते—'भाइया जी, यह किराए का फरक कैसे है ?' तो भाइया जी सरल भाव से कह देते कि—'अरे भाई, इसका पता आगे चल कर चलेगा।' कोई बड़ी रकम की बात तो नहीं। कई धनी युवक फस्ट क्लास में बैठ जाते, कई सैकण्ड क्लास में और शेष थर्ड, फोर्थ क्लास में। फोर्थ क्लास छत की सीटों को कहा जाता था पटियाला से दस मील दूर जाने पर लगभग तीन मील का रेतीला रास्ता आता था, उस समय भाइया जी फर्स्ट क्लास के यात्रियों को बीच में बैठा रहने देते थे, शेष सब को उतार देते। तब पता चलता था कि फर्स्ट और बाकी क्लासों में क्या फरक है ? भाइया जी उतारे गये मुसाफिर को डिक्टेराना लहजे में आज्ञा देते—"चलो भई सैकंड वालो पैदल चलो ! चलो भई थर्ड वाला बहादुरो ! मोटर को धक्का लगा कर रेत में से बाहर निकालो।" लोग बड़ी हिम्मत से इसे अपना ही काम समझ कर मोटर को रेत में से निकाल देते और तब सैकंड के पैदल यात्री और थर्ड के बहादुर यात्री फिर से अपनी-अपनी सीटों पर जा जमते और इस तरह सामाना जा पहुँचते।

ही होता था। बड़ी शांति से रात वहीं गुजारी जाती और दूसरे दिन वही लारी दोपहर को पटियाला के लिये चल पड़ती। रात्रि को भाइया जी के पड़ाव पर उनके इर्द-गिर्द किसानों, मजदूरों, आढ़तियों आदि के झुंड जा जमते जो शहर की खबरें, महाराजा की बातें और नाते-रिश्ते की बातें, 'कोई योग्य वर बतलाइए, किसी सुकन्या का पता दीजिए,'—जैसी बातें करते रहते। अब तक कई सम्बन्ध भाइया जी ने स्वयं ही करवा दिये थे पटियाला और सामाना दोनों ओर की डाक भी भाइया जी ही ले जाया करते थे, रुपए पैसे भी ले जाते थे। ईमानदारी यह कि कभी किसी को यह कहते नहीं सुना कि भाइया जी ने रुपए कम दिये या हज्म कर लिए।

आज भाइया जी संसार में नहीं हैं उनका कारोबार भी किसी और ने नहीं संभाला। मगर आज भी उस पुराने बस स्टैण्ड पर भाइया जी की बातें करते हुए लोग आपको मिल जायेंगे। चर्चा करने वाले अन्त में—'आज तो समय को ही जैसे आग लग गई है—क्यों कि भागमभाग-धक्कम धक्के का जमाना है।'क्या शांति का जमाना था वह पुराना जमाना।' जैसे दो चार वाक्य कहते भी सुनाई देंगे।

शान्ति औषधालय पटियाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाधि के फूल

शशि भूषण शर्मा

(मंच पर गाढ़ तमिस्र छाया है। धीरे धीरे मन्द प्रकाश होता है। नेपथ्य से समर-लय पर बजते हुए वाद्य-यन्त्रों का स्वर उभरता है और विलीन हो जाता है—फिर गंभीर स्वर में स्पष्ट सुन पड़ता है—

त्रिशंकोटिकण्ठकलकलनिनादकराले,
द्वित्रिंशकोटिभुजैधृतरवरकरवाले
के बोले मा ! तुमि अबले ?
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं रिपुदल-
वारिणीं मातरम्
बन्दे मातरम् !

नेपथ्य से तोपों की गड़गड़ाहट गूंज उठती है और रह-रह कर "हर-हर महादेव" एवं "भारतमाता की जय" के नारे स्पष्ट सुन पड़ते हैं।)

कैप्टन शमशेर सिंह—शाबाश बहादुरो, आज शत्रु को दिखा दो कि भारत-वासी अपने में वज्र की शक्ति, भीम का बल, अर्जुन सा शौर्य रखते हैं (उच्च स्वर में) भारत माता की जय !

एक सैनिक—स्वामी, चिन्ता न कीजिए। आज हमारी शिराओं में महारानी झाँसी का, महाराणा प्रताप का एवं वीर शिवाजी का रक्त खौल उठा है। जब तक रक्त की एक बूंद भी शेष रहेगी, हम शत्रु को भारत के अतुल बल का परिचय देते रहेंगे।

नायक सुमेरासिंह—जान पड़ता है आज रणचण्डी स्वयं सिंह पर सवार होकर युद्ध-क्षेत्र में शत्रु का रक्त-पान करने आई है।

सम्मिलित स्वर—महाकाली की जय !

नायक सुमेरासिंह—(कैप्टन शमशेरसिंह से) स्वामी, आप दिन भर के परिश्रम से थक गए होंगे। शत्रु अपने दम्भ पर तुला है। हमें पूर्ण सतर्क रहने की आवश्यकता है (कुछ क्षण रुक कर) हाँ, स्वामी मैं कह रहा था कि आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैम्प में जा कर कुछ देर विश्राम करें ।

कैप्टन शमशेरसिंह--नहीं सुमेरा ! मुझे कोई थकावट नहीं । आज हमें विश्राम की बात सोचनी भी नहीं चाहिए । हमने आज भारत माँ के चरणों में अपना जीवन अर्पण करना है।

नायक सुमेरासिंह--किन्तु.....

कैप्टन शमशेरसिंह--आज हमारे कंधों पर देश की स्वाधीनता निर्भर है । एक क्षण भर में कुछ भी सम्भव हो सकता है--हमें अपने कर्त्तव्य को समझना है ।

(अस्त-व्यस्त वेश में एक सैनिक का प्रवेश । माथे पर खून का गहरा निशान पड़ा है । कैप्टन शमशेरसिंह के समीप आकर अभिवादन करता है)

कैप्टन शमशेरसिंह--कहो शेखर, क्या समाचार लाए हो ?

शेखर--स्वामी ! शत्रु ने हमारे अगले मोर्चे पर धावा बोल दिया है । अत्यन्त सतर्क रहने की आवश्यकता है । (छाती पकड़ कर लड़खड़ाते हुए) स्वामी !

कैप्टन शमशेरसिंह--शेखर ! अरे सुमेरा! शेखर को सम्भालो (स्वयं शेखर को अपनी भुजाओं का सहारा देते हुए) शेखर !

शेखर--(धीमे से आहत स्वर में) स्वामी, मुझे दुःख है कि मैं भारत माँ की और अधिक देर तक सेवा न कर सका.....स्वा.....मी.....

कैप्टन शमशेरसिंह--नहीं शेखर, तुमने अभी भारत माँ के लिए बहुत कुछ करना है ।

शेखर--स्वा.....मी (कराहते हुए) पंखेरु उड़ना चाहता है...एक वचन... दो....मे....स्वामी.....

कैप्टन शमशेरसिंह--बोलो शेखर, क्या कहना चाहते हो ! बोलो चुप क्यों हो !

शेखर--(मृदु स्वर में) स्वामी एक ही कामना है, मेरे.....बाद शत्रु को पराजित करके एक बार मेरी समाधि के समीप दो क्षण के लिए आ जाना । मेरी आत्मा आपको विजयी रूप में देखना चाहती है ।

कैप्टन शमशेरसिंह--शेखर....न....हीं....

शेखर--(रुँधे स्वर में) तो....क्या....

कैप्टन शमशेरसिंह--शेखर, मैं वचन देता हूँ (आंखों में आंसू छलक उठते हैं) तुम्हारी आज्ञा का अन्तिम साँस रहते-पालन करूँगा (कुछ रुक कर) शेखर !

शेखर--(धीमे स्वर में) स्वामी !

(पुन. तोपों की गड़गड़ाहट तेज होती है । बिजली सा प्रकाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह-रह कर कौंधता है और फिर चहुँ ओर पूर्ण अन्धकार छा जाता है)

(पटाक्षेप)

× × ×

(दृश्य द्वितीय)

(कैम्प में कैप्टन शमशेरसिंह, हवलदार दामोदर और नायक सुमेरासिंह बैठे हैं। कैम्प के द्वार पर एक सशस्त्र सैनिक पहरा दे रहा है)

हवलदार दामोदर––शत्रु ने यद्यपि हमारे कुछ एक वीर सैनिकों को समाप्त कर दिया है फिर भी हमारे एक-एक सैनिक ने शत्रुओं की सैंकड़ों कतारों को चीर कर वीरगति प्राप्त की है ।

कैप्टन शमशेरसिंह––यह सच है कि हमने बहुत से वीर इस युद्ध की भयंकर ज्वाला में अर्पित किए हैं ।

हवलदार दामोदर––स्वामी, यह तो हम भारतवासियों के लिये गौरव की बात है––क्या इसी भांति राणा प्रताप, शिवाजी जैसे वीरों ने युद्ध में अपनी प्राणाहुति नहीं दी ?

नायक सुमेरासिंह––स्वामी, हो सकता है हमें अपने प्राण भारत माँ के चरणों में अर्पित करने का सौभाग्य प्राप्त हो ।

हवलदार दामोदर––वैसे तो हमारे वीर सैनिकों के असाधारण शौर्य को देख कर शत्रु का साहस टूट गया है ।

(सहसा द्वार पर एक सैनिक का प्रवेश । पहरे पर खड़े सैनिक को आगन्तुक पर शत्रु होने का सन्देह होता है । आगन्तुक भीतर जाना चाहता है किन्तु सैनिक उसे रोकता है)

आगन्तुक––हम साहब को मिलेगा ।

सैनिक––तुम्हारा नाम क्या है––कौन सी यूनिट के हो––साहब को क्यों मिलना चाहते हो ?

आगन्तुक––हमारा नाम पूछता है ! हम कमाण्डिङ्ग ऑफीसर है । तुम हमारा नाम कैसे पूछ सकता है ? हम तुम्हारे साहब को मिलना चाहता है । (भीतर जाने का प्रयत्न करता है किन्तु सैनिक उसे भीतर जाने से रोकता है––फिर भी न रुकने पर उसे अपनी पिस्टल से समाप्त कर देता है । पिस्टल की आवाज़ सुनकर कैप्टन शमशेरसिंह, व अन्य सभी व्यक्ति बाहर आते हैं ।)

हवलदार दामोदर––क्या हुआ ? यह कौन है ?

सैनिक––स्वामी यह बलात् भीतर जाने का प्रयत्न कर रहा था । मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर सन्देह हुआ, सन्देह ही नहीं ठीक भी है। यह शत्रु हमारी गतिविधियाँ जानने हेतु यहाँ आया था और स्वामी से मिलना चाहता था किन्तु स्वामी से पहले मौत से पाला पड़ गया।

कैप्टन शमशेरसिंह—(शव के समीप आकर उसकी जेब से कुछ पत्र निकालता है और उन्हें पढ़ता है) बहुत बहादुर हो सैनिक! अच्छा किया इस दुष्ट को यहीं समाप्त कर दिया।

नायक सुमेरासिंह—स्वामी, युद्ध में सभी कुछ सम्भव है। शत्रु नई से नई चालें चल कर हमें विजित करना चाहता है।

कैप्टन शमशेरसिंह—और हम शत्रु की चालों को खेल समझते हैं। जब तक भारत में वीरों का अस्तित्व रहेगा, कोई भी नीच इस पावन धरा को हथियाने का दुस्साहस नहीं कर सकता।

नायक सुमेरासिंह—इस नीच की लाश के मुंह पर देखो कैसे दम्भ, कपट के भाव स्पष्ट परिलक्षित हो रहे हैं।

हवलदार दामोदर—हाँ सुमेरा, कपट ऐसी कालिख है जो भीतर और बाहर दोनों ओर अपना घृणास्पद रूप प्रकट कर देती है।

(मंच पर एक ओर से सैनिक का प्रवेश। समीप आकर अभिवादन करता है)

सैनिक—स्वामी, शत्रु द्रुत गति से हमारी ओर बढ़ा आ रहा है, शीघ्रता कीजिए अपना कैम्प यहां से पीछे भिजवा दीजिये। अभी कुछ क्षणों में हमें शत्रु का मुकाबला करना है।

कैप्टन शमशेरसिंह—ठीक है ऐसा ही होगा (हवलदार दामोदर से) सब सैनिकों से कहदो कि तैय्यार रहें। आज खूनी होली खेलने का दिन आया है। ऐसा जान पड़ता है प्रलयकर शंकर स्वयं ताण्डव नृत्य करेंगे। (नायक सुमेरासिंह से) आप सब सैनिकों को यथोचित निर्देश देते रहें।

नायक सुमेरासिंह—आपकी आज्ञा का पालन होगा स्वामी।

(पटाक्षेप)

× × ×

(दृश्य तृतीय)

(नेपथ्य में भगदड़ का कोलाहल तोपों और गोलियों की गड़गड़ाहट में खो जाता है। धीरे धीरे गड़गड़ाहट धीमी पड़ती है और गंभीर स्वर उभरते हैं—

नृसिंहरूपेणोग्रेणहन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे
त्रैलोक्यत्राण सहिते नारायणिनमोऽस्तुते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनः "भारत मां की जय" के गगनभेदी नारे गूंजते हैं। सैनिक मोर्चे पर अपनी बन्दूकें सम्भाले बैठे हैं। कैप्टन शमशेरसिंह का प्रवेश)

कैप्टन शमशेरसिंह--शाबाश सैनिको ! अपने कर्त्तव्य पर डटे रहो। शत्रु की कायरता को आज तुम्हारे शस्त्रास्त्रों की बौछार समाप्त कर देगी !

सभी सैनिक--भारत माँ की जय !

कैप्टन शमशेरसिंह--मैं दूसरे मोर्चे तक जाकर आता हूँ कुछ आवश्यक निर्देशन देना है और....दे... खो...

(तभी हवा को चीरती हुई शत्रु की गोली कैप्टन शमशेरसिंह के माथे पर लगती है और वह एक ओर लुढ़क जाता है। सैनिक उसे सम्भालते हैं)

हवलदार दामोदर--(चीख कर) स्वामी यह क्या हुआ ! आपकी उपस्थिति हम में नई स्फूर्ति का अबाध सञ्चार करती रही है। आपके न होने से.....अब क्या होगा ! हे ईश्वर, स्वामी के स्थान पर मेरे प्राण ले लो, प्रभु मेरी विनती सुन लो--स्वामी को जीवनदान दो।

(नेपथ्य में करुणलय पर धीमा सा वाद्य-स्वर सिहरता है और तभी धाँय -धाँय की आवाज़ के साथ शत्रु की गोली हवलदार दामोदर के वक्ष में लगती है। वह अचेत हो भूमि पर लुढ़क जाता है।)

हवलदार दामोदर--(तड़पते हुए) तो क.....या प्रभु आपने मे....री पुका.....र सुन ली। क्या प्रभु अब मेरे स्वामी जीवित रहेंगे ?

(कुछ सैनिक हवलदार दामोदर को सम्भालते हैं)

नायक सुमेरासिंह--प्रभु, आजका दिन कितना भयानक है (दामोदर से) दामोदर जी, क्या आप हमें छोड़ कर जा रहे हैं ?

हवलदार दामोदर--नहीं सुमेरा....अपने कर्त्तव्य को समझो। स्वामी को यथाशीघ्र चिकित्सा के लिये कैम्प भेज दो। सुमे...रा चिंता न करो....मेरा भौतिक शरीर समाप्त हो रहा है किन्तु आत्मा सदा अमर रहेगी। मेरी आत्मा आपकी आत्माओं में विलीन होकर शत्रु का सर्वनाश.... करे गी :

(आँखों ही आँखों में हवलदार दामोदर कैप्टन शमशेरसिंह को न जाने क्या कहता है और चला जाता है सदा के लिए--कहीं और- बहुत दूर..

कैप्टन शमशेरसिंह--(होश में आते हुए)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं दामोदर, तुम हमें छोड़ कर नहीं जा सकते (अब सजग से स्वर में) सुमेरा, पूर्ण सतर्क रहो शत्रु से । जीवन -मरण तो इस प्रकृति का अटल नियम है ! (सैनिकों से) बहादुरो, भून दो शत्रु को अपनी गोलियों से ! शत्रु के खून से आने वाले इतिहास के पृष्ठ रंग दो !

(सभी सैनिक भारत माँ का जयघोष करते हैं)

नायक सुमेरासिंह—चलो स्वामी आपको कैम्प तक पहुंचा आऊँ ।

कैप्टन शमशेरसिंह—हाँ सुमेरा, मुझे अभी जीवित रहना है । मुझे जीवन की चाह नहीं....किन्तु मैंने शेखर को वचन दिया है कि मैं विजयी होकर उसकी समाधि पर लौटूंगा । अपने वचन को निभाने के लिये जीवित रहूँगा !

(मोर्चे के पीछे सैनिक गाड़ी आकर रुकती है । नायक सुमेरासिंह कैप्टन शमशेरसिंह को सहारा देकर गाड़ी में बिठाता है । गाड़ी कैम्प की ओर प्रस्थान करती है)

(पटाक्षेप)

× × ×

(दृश्य चतुर्थ)

(सैनिक कैम्प में कैप्टन शमशेरसिंह शैया पर लेटा है । समीप ही नायक सुमेरासिंह बैठा है । डाक्टर कैप्टन शमशेर सिंह को इंजैक्शन देता है)

डाक्टर—कोई चिन्ता की बात नहीं, किन्तु आपके लिए आराम करना आवश्यक है : (नायक सुमेरासिंह से) यदि आप इस समय साहब को आराम करने दें तो अच्छा है ।

(नायक सुमेरासिंह उठ कर जाने लगता है किन्तु कैप्टन शमशेरसिंह जाने नहीं देता)

कैप्टन शमशेरसिंह—नहीं सुमेरा ! तुम मत जाओ !

(सुमेरासिंह पुनः बैठ जाता है)

कैप्टन शमशेरसिंह—पता नहीं क्यों सुमरा आज घर की याद आ रही है ।

नायक सुमेरासिंह—स्वस्थ होते ही आप यहाँ से अवकाश लेकर घर हो आना ।

कैप्टन शमशेरसिंह—जब मैं घर से आया था तब मेरी पत्नी बहुत रोई थी और वह मेरा मासूम बेटा दीपक मुझ से लिपट गया था ।

नायक सुमेरासिंह—दीपक ! कितना प्यारा नाम है !
वैसे भी पुत्र घर का दीपक होता है ।

कैप्टन शमशेरसिंह—हाँ सुमेरा, तुम ठीक कहते हो —मेरा दीपक मेरे घर का दीपक ही तो है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नायक सुमेरासिंह--स्वामी ! आपका दीपक केवल आपको दीपक नहीं सारे भारत का प्रकाश है। आजके ऐसे हजारों छोटे दीपकों के प्रकाश से आने वाला कल प्रकाशित होगा !

कैप्टन शमशेर सिंह--कुछ दिन हुए घर से पत्र आया था--लिखा था दीपक आपको बहुत याद करता है। मेरी तस्वीर से बातें करता है। कहता है-बोलो पापा कब आओगे (आंखों में आंसू छलक उठते हैं)

नायक सुमेरासिंह--आप आराम कीजिए स्वामी ! शांत रहिए ईश्वर की दया से आप शीघ्र स्वस्थ होकर दीपक से मिलेंगे !

कैप्टन शमशेरसिंह--जब मैं अपने घर से चला तो मेरे सम्मुख दो पहलू आए—परिवार का प्रेम और देश के लिए बलिदान ! मैंने पहले कर्त्तव्य को दूसरे पर न्योछावर कर दिया। सुमेरा ! पुत्र प्रेम से भी महत्त्व-पूर्ण माता की लज्जा का प्रश्न था ! और फिर यह तो भारत माता की आन का प्रश्न था (आवेग में) सुमेरा, मैं स्वस्थ होते ही शत्रु के कपट भरे अंधेरे को बलिदान के उजाले से धो दूंगा।

नायक सुमेरा सिंह--स्वामी ऐसा ही होगा ! ईश्वर आपकी भावना फलीभूत करेंगे !

कैप्टन शमशेर सिंह--युद्ध का क्या समाचार है ?

नायक सुमेरासिंह--आज प्रातः से घमासान युद्ध हो रहा है। हमारी सेना डटकर शत्रु का मुकाबला कर रही है। हमारे वीर सैनिक शत्रु को गाजर मूली की तरह काट रहे हैं।

कैप्टन शमशेर सिंह-हमारी विजय निश्चित है। अँधेरा कभी उजाले पर नहीं छा सकता। हिमालय की ठंडक को शत्रु की तृणवत् ज्वाला गर्म नहीं कर सकती। हमारी वीरता के यश-चन्द्र को शत्रु द्वारा उछाला हुआ कीचड़ नहीं छू सकता !

नायक सुमेरासिंह--स्वामी ! आराम कीजिए (दो क्षण मौन रहता है। कैप्टन करवट लेता है और फिर धीरे-धीरे सो जाता है। स्वप्न की धूमिल चित्रशाला से कुछ अस्पष्ट से शब्द सुन पड़ते हैं)

कैप्टन शमशेर सिंह--(सोते हुए)दी..... पक.....हाँ आँ मैं.....तुम्हें..... मिल.....ने आ.....

(पटाक्षेप)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(दृश्य पंचम)

(घमासान युद्ध हो रहा है। चारों ओर बारूद का धुआं उड़ रहा है। गोलियों की धाँय-धाँय और तोपों की गड़गड़ाहट अबाध गति से गूंजे जा रही है। कैप्टन शमशेरसिंह अन्य सैनिकों के साथ मोर्चे पर डटा है)

कैप्टन शमशेरसिंह--शाबाश बहादुरो ! जान पड़ता है आज शत्रु का साहस टूट गया है। सैनिको ! निरन्तर शत्रु पर गोलियों की बौछार करते रहो। मुझे विश्वास है कि विजय हमारी होगी।

एक सैनिक--हाँ स्वामी, ऐसा जान पड़ता है कि आज स्वयं सिंहवाहिनी भगवती दुर्गा हमारी ओर से शत्रु सेना का संहार कर रही है। सामने देखिए शत्रु की लाशों का ढेर लग गया है।

दूसरा सैनिक--स्वामी शीघ्रता कीजिए--वो देखिए शत्रु-सेना का कोई अधिकारी सामने से फायरिंग कर रहा है--उसे अपनी गोली का निशाना बनाइए, शीघ्रता कीजिए !

कैप्टन शमशेर सिंह--यह लो (फायरिंग करता है) वह देखो लुढ़क गया--पामर, नीच !

(नायक सुमेरासिंह का प्रवेश। वह दो शत्रुओं में डट जाता है)

कैप्टन शमशेर सिंह--कौन ? सुमेरा !

नायक सुमेरा सिंह--(अभिवादन करते हुए) हाँ स्वामी मैं आपका सेवक सुमेरा सिंह हूँ।

कैप्टन शमशेरसिंह--तुम्हें याद है सुमेरा--मैंने एक दिन वीर-शेखर को वचन दिया था कि मैं विजयी रूप में उसकी समाधि पर जाऊंगा ?

नायक सुमेरा सिंह--हाँ स्वामी ! और वह प्रतिज्ञा कुछ क्षणों में ही पूर्ण होने वाली है। शत्रु का सर्वनाश हो गया है।

कैप्टन शमशेर सिंह-मेरे जीवन का केवल एक ही लक्ष्य था--कि शेखर की समाधि पर विजयी होकर लौटूं-ईश्वर की अनुकम्पा से मेरी आशा को आज सफलता का आलोक मिल रहा है।

सब सैनिक--(सम्मिलित स्वर में) भारत माता की जय !

कैप्टन शमशेर सिंह-वह देखो सुमेरा, शत्रु ने सफेद झंडा दिखा दिया है--

(सभी सैनिकों में हर्ष छा जाता है)

कैप्टन शमशेर सिंह--सुमेरा, आज मेरे जीवन में ही नहीं विश्व के जीवन में नव-प्रभात आया है। विश्व देखेगा कि भारत के युवक अपनी मातृ-भूमि की रक्षा करने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितने [illegible] हैं। [illegible] के
शहीदों के नाम इतिहास के पृष्ठों
पर युग-युग तक चमकते रहेंगे !

नायक सुमेरा सिंह—(उच्च स्वर में)
भारत माता की—

सभी स्वर—जय !

कैप्टन शमशेर सिंह—साथियो ! अब हमें
परम वीर शेखर की समाधि पर
जाना है। चलो सभी यहाँ से
प्रस्थान करें।

(पटाक्षेप, दृश्य परिवर्तन)

(परम वीर शेखर की
समाधि के सम्मुख कैप्टन शमशेर
सिंह नतमस्तक हुए खड़ा है।
अन्य सैनिक भी समाधि के चारों
ओर सिर झुकाए खड़े हैं।
नेपथ्य में करुण वाद्य-स्वर-लहरी
सिहरती है)

कैप्टन शमशेरसिंह—(धीमे स्वर में)
प्रिय शहीद शेखर ! आज मैं
आपकी आज्ञा का पालन कर रहा
हूँ। आज हमने पापी शत्रु को
पावन-धरा से दूर हटा दिया है।
मुझे दुःख है कि आप आज का नव
प्रभात देखने के लिए जीवित
न रहे किन्तु मुझे विश्वास है
कि आपकी आत्मा इस समय
यहां उपस्थित है। मैं आपकी
आज्ञानुसार विजयी रूप में आप
की समाधि के सम्मुख प्रस्तुत हूँ।
भारत गौरव ! हम सब को ऐसा
वर दो कि हम अपना सर्वस्व
न्योछावर कर मातृभूमि की रक्षा
करने में समर्थ हों।

(कुछ क्षण मौन रहता है
और फिर नेपथ्य में राष्ट्रगान की
लय पर गंभीर वाद्य गूंजते हैं।
सहसा दो क्षण के लिये समाधि
पर तेज प्रकाश होता है और
पुनः विलीन हो जाता है)

(पटाक्षेप)

द्वारा श्री श्याम लाल शर्मा
पी. टी. आई. पुरानी नाभी माभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान-गंगा

जगत् 'वाणी और अर्थ रूप' है

सिद्धांत रूप से शक्तिमान् और शक्ति में कोई भेद नहीं है। ये दोनों अभिन्न हैं, उसी प्रकार जैसे सूर्य और प्रभा, अथवा चांद और चांदनी। व्यवहार रूप में शक्तिमान् आदि शिव के विक्षुब्ध होने पर उससे क्रियामयी शक्ति प्रकट हुई। उसके क्षुब्ध होने पर नाद की उत्पत्ति हुई, फिर नाद से विन्दु का प्राकट्य हुआ। विन्दु से सदाशिव और उनसे महेश्वर प्रकट हुए। महेश्वर से शुद्ध विद्या का प्राकट्य हुआ। यही शुद्ध विद्या वागीश्वरी अर्थात् वाणी की ईश्वरी है। यह शक्ति अक्षरों में विस्तार प्राप्त करके मातृका कहलाई। यही मातृका शक्त्यात्मा है। शक्त्यात्मा इस विश्व में उसी तरह व्याप्त है जैसे शरीर में अन्तरात्मा। इसलिए सम्पूर्ण विश्व शक्तिमय है और प्रकारभेद से यह शिव और पार्वती का प्राकृत रूप है। इस प्राकृत मूर्ति की विभूति तीन प्रकार की है, स्थूला, सूक्ष्मा और परा। परा प्रकृति ही ज्ञान के संयोग से छः अध्वाओं में विस्तार को प्राप्त होती है, इनमें से तीन शब्द रूप हैं, मन्त्राध्वा, पदाध्वा और वर्णाध्वा; और तीन अर्थरूप हैं, भुवनाध्वा, तत्त्वाध्वा और कलाध्वा। यह क्रम स्थूल से सूक्ष्म की ओर का क्रम है। ये छः अध्वा मिल कर जगत् की वागर्थात्मकता की सिद्धि करते हैं। तीन शब्दाध्वाओं का तीन अर्थाध्वाओं के साथ अभिन्न सम्बन्ध है। इस तरह प्रकृति के शब्दभावना और अर्थभावना के व्यापार में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। तभी पद और अर्थ के समास को पदार्थ कहा गया है, और जगत् पदार्थों का समूह है। यदि पद शैव रूप है तो अर्थ शाक्त रूप है, और पदार्थ शिव-पार्वती की प्राकृत-मूर्ति।

—हरिचन्द पाराशर

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभागीय गतिविधियां

हिन्दी का भारतीय भाषाओं को योगदान

(१४ मार्च, १९६४ को चण्डीगढ़ में संपन्न हुई लेखक गोष्ठी में पंजाब के भूतपूर्व शिक्षा मंत्री श्री यश के भाषण का साराँश)

१--हिन्दी भाषाभाषी प्रदेश की भौगोलिक स्थिति--जितनी भी अन्य प्रमुख प्रान्तीय भाषाएं हैं उनका हिन्दी के साथ घनिष्ठ सम्पर्क इस भौगोलिक स्थिति के कारण--क्योंकि हिन्दी के अतिरिक्त ऐसी कोई भी अन्य भारतीय भाषा नहीं जिसका प्रदेश इस प्रकार चारों ओर से विभिन्न भाषा भाषी प्रदेशों से घिरा हुआ हो। उदाहरण स्वरूप बंगाली का पंजाबी या गुजराती या मराठी के साथ सीधा लगाव नहीं हो सकता।

२--हिन्दी भाषाभाषी प्रदेश निस्सन्देह भारत का हृदय है--जिस प्रकार हृदय शरीर की धमनियों में शुद्ध रक्त का संचार कर उसे जीवन शक्ति प्रदान करता है उसी प्रकार यह विस्तृत प्रदेश भी शेष भारत रूपी शरीर को साहित्य, कला, संस्कृति रूपी शुद्ध रक्त से समय समय पर प्राणदायिनी स्फूर्ति प्रदान करता रहा है।

३--जितने भी मुख्य सम्प्रदाय हुए हैं उनका आविर्भाव इसी प्रदेश में हुआ है--जैसे वैदिक धर्म, बौद्ध, जैन, भागवत, वैष्णव, शैव, शाक्त, महायान, सहजयान, तेययान, योग, नाथ, राम, कृष्ण सम्प्रदाय आदि।

४--इसी प्रदेश में स्थित हैं हिन्दुओं के प्रमुख तीर्थ ब्रज प्रदेश, अयोध्या, काशी इत्यादि।

५--इस प्रदेश की भाषा ही सदा से सार्वभौम भाषा रही है जैसे वैदिक, संस्कृत, पाली, शौरसेनी प्राकृत, शौरसेनी अपभ्रंश, ब्रज भाषा तथा आजकल की हिन्दी।

उपरिलिखित कारणों से यह स्वाभाविक ही है कि इस प्रदेश की भाषा के साहित्य का प्रभाव भारत की अन्य भाषाओं पर थोड़ा बहुत पड़े : जैसे संस्कृत साहित्य का अमिट प्रभाव सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य पर परिलक्षित होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिन्दी साहित्य को चार कालों में विभाजित किया जाता है :—

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—आदिकाल सं० १०५० से १३७५ तक

२—भक्तिकाल सं० १३७५ से १७०० तक

३—रीतिकाल सं० १७०० से १९०० तक

४—आधुनिक काल १९०० से आज तक।

आदिकाल के अन्तर्गत रासो साहित्य, बौद्ध और जैन साहित्य, विद्यापति और खुसरो की कृतियां, नाथ तथा सिद्ध साहित्य सम्मिलित किया जा सकता है। उस समय की हिन्दी ने अरबी-फारसी के विद्वान खुसरो को भी प्रभावित किया जिसकी मुकरियां आज तक भी प्रसिद्ध हैं। उस समय अन्य प्रान्तीय भाषाएँ अभी जन्म ले रही थीं। उपरिलिखित साहित्य ने अपनी छाप उन सभी साहित्यों पर उनके प्रस्फुटन काल में लगाई।

भक्तिकाल का आविर्भाव होने पर हिन्दी साहित्य अपने पूरे यौवन को प्राप्त हुआ। यह काल हिन्दी साहित्य के स्वर्ण काल के नाम से अभिहित किया जाता है। कबीर, सूर, तुलसी, जायसी जैसे अमर कवियों ने इसे भारत-व्यापी बनाया। दादू, कबीर और उनके शिष्यों की वाणियां पंजाबी साहित्य को पर्याप्त मात्रा में प्रभावित करती रहीं। पंजाब के मुसलमान संत, फकीरों और गुरुओं ने निर्गुण मत से पर्याप्त प्रेरणा ग्रहण की।

तुलसी का प्रभाव भी भारत-व्यापी था, जहां जहां भी राम का नाम आदर से लिया जाता है वहां वहां तुलसी की रामायण भी वंदनीय समझी जाती है। तुलसी के अनुकरण पर अन्य भाषाओं में कितनी ही रामायणें लिखी गईं। इसी प्रकार मीरा और सूर के काव्य अन्य भाषाओं के कवियों की प्रेरणा के स्रोत बने। भक्ति काव्य मुसलमान कवियों को भी अपने प्रवाह में बहाकर ले गया। जायसी आदि सूफी कवि फारसी-अरबी का मोह छोड़ कर भारतीय भाषाओं और कहानियों की ओर आकृष्ट हुए। रहीम और रसखान प्रसिद्ध उदाहरण हैं जिनको हिन्दी साहित्य ने भारतीय सभ्यता, संस्कृति और धर्म के प्रति श्रद्धालु बनाया। रामचरित्र मानस के विषय में रहीम कहता है:—

"राम चरित मानस विमल सन्तन जीवन प्रान ॥
हिन्दुवान को वेदसम जमनहिं प्रकट कुरान ॥"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रसखान तो वास्तविक रूप से ही रस की खान थे। शुक्ल जी के अनुसार प्रेम के ऐसे सुन्दर उद्गार इनके सवैयों में से निकले कि जन-साधारण प्रेम या शृंगार सम्बन्धी कवित्त-सवैयों को ही रसखान कहने लगे। जैसे कोई "रसखान सुनाओ" जैसे :—

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मानुष हों सौ वही रसखानि बसों ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन।
जो पसु हों तो कहा बसु मेरो, चरों नित नंद की धेनु मंझारन।
पाहन हों तो वही गिरि को जो धर्‌यो कर छत्र पुरंदर-कारन।
जो खग हों तो बरेरो करौं निति कालिंदी-कूल कदंब की डारन।"

तभी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा था :—

"इन मुसलमानन हरिजनन पै कोटिन हिन्दुन वारियें।"

रीतिकाल के कवियों में से मुख्य बिहारी लाल है। औरंगज़ेब के तीसरे लड़के आजमशाह ने अन्य कवियों द्वारा नायक-नायिका भेद को ध्यान में रख कर सत्तसई का एक नया संस्करण बनवाया जिसका नाम उसने आजमशाही संस्करण रखा। बिहारी की नाजुक ख्याली ने कई उर्दू कवियों को प्रभावित किया। चित्र कला के क्षेत्र में बिहारी की सत्तसई और केशव की रसिक-प्रिया अपना अमिट प्रभाव चित्रकला-सम्बन्धी भिन्न भिन्न शैलियों पर डाला।

इस काल के दरबारी कवियों का काव्य भारत के विभिन्न प्रान्तों में तैयार हुआ। शृंगार कविता और नायिका-भेद की रचनाएं अन्य प्रदेशों में इनके अनुकरण पर होती रहीं। संगीत कला के क्षेत्र में भी सूर तथा अन्य वैष्णव कवियों के पदों का—जो शास्त्रीय संगीत बद्ध थे—दक्षिण के संगीत पर विशेष प्रभाव पड़ा।

आजकल की अन्य भारतीय भाषाओं पर हिन्दी का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। कुछ के उदाहरण निम्नलिखित हैं :—

कन्नड़ में श्री मधुरचन्न के लोक गीतों में उसी रहस्यवादी धारा के दर्शन होते हैं जो हमें कबीर, मीरा, महादेवी, प्रसाद, आदि में प्राप्त होती हैं। उदाहरण स्वरूप—"नन्न नल्ल" नामक भक्ति काव्य में कवि कहता है :—

"पिलुकिसद सिरिगण्णु सुतु चिन्नद रेखे
बेल्लिमिरुगिन मैय कांति निनगे
तिलिगंगे निम्मत्व मीन मूरति लितिलिसो
नन्नोडेय न डगिरुव नाव कडेगे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(हे मत्स्य देव, जगत्पावनी गंगा तुम्हारी जननी है, तुम्हारे निष्पलक नयन स्वर्णिम प्रकाश से घिरे हैं, तुम्हारी स्वर्णिम देहयष्टि अपनी ही कांति से दीप्तमान है--मुझे बता दो कि मेरा प्रियतम कहां छिपा है ?)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजराती--कुछ आधुनिक गुजराती कवियों ने हिन्दी मिश्रित गुजराती का प्रयोग किया है। मारवाड़ी और ब्रज का प्रभाव भी स्पष्ट लक्षित होता है जैसे--

"काहे को रतिया बनाई ?
नहीं आते, नहीं जाते मन से,
तुम ऐसे क्यों श्याम घनाई ? (कवि सुन्दरम्)
पिया मोरी सावन मास की रेन
कैसे कटे-तुम बनि जीयरा
पल छीन न पावत चैन (कवि पिनाकिन ठाकोर)

सुधांशु मध्य कालीन संत वाणी की परम्परा की ओर बढ़ाते हैं।

बंगला--वैष्णव काव्य का बंगाली कवियों पर विशेष प्रभाव लक्षित होता है। मधुसूदन दत्त के ब्रजांगना काव्य पर वैष्णव काव्य साधना की छाप मिलती है। रवीन्द्र नाथ ठाकुर की अंतिम कालीन रचनाओं में आध्यात्मिकता अधिक है। रवीन्द्र पर रामानुज प्रवर्तित वैष्णव वेदान्त का गंभीर प्रभाव था। अपने आरंभिक काल में उन्होंने वैष्णव पदावली की भी रचना की।

मराठी--प्राचीन मराठी कविता के प्रमुख विषय थे भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, उपदेश संसार की क्षण भंगुरता, इन सब पर हिन्दी वैष्णव-साहित्य का विशेष प्रभाव पड़ा। केशव सुत का मराठी में वही स्थान है जो हिन्दी में भारतेन्दु का। हिन्दी के माखनलाल चतुर्वेदी और श्री माधवानुज में पर्याप्त साम्य पाया जाता है। श्री दत्तात्रेय घाटे, जो प्रेम और विरह के कवि हैं, की तुलना प्रसाद से की जा सकती है।

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक समीक्षा

तिब्बत का रहस्य

लेखक--प्रेम हरद्वारी
प्रकाशक--हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणासी
पृष्ठ संख्या --१२८
मूल्य--एक रुपया

श्री प्रेम हरद्वारी की 'तिब्बत का रहस्य' कृति, एक विशेष प्रकार का लघु उपन्यास है। इस रचना में एक ओर डेनियल डीफ़ो के 'रॉबिन्सन क्रूसो' में दिए आधुनिक सभ्यता से अपरिचित और अछूते भूभाग को साहसी सेलानियों द्वारा किए गए रोमांचकारी अवगाहन के वर्णनों की छाया है और दूसरी ओर एडगर वालिस के 'फोर जस्टमेन' (Four Just-men) जैसे जासूसी उपन्यासों के लोम-हर्षक चित्रण का आलोक। पहली प्रवृत्ति की रचनाएँ हिन्दी साहित्य में प्रायः नहीं हैं। दूसरी के लिए गोपाल राम गहमरी का नाम विख्यात है।

इस उपन्यास के कथानक का प्रारम्भ, बम्बई के प्रसिद्ध जासूस अशोक सान्याल को मिलने वाले एक पत्र से होता है जिसमें डा० जयंत मोदी पर आसन्न संकट की सूचना है। जयंत मोदी अठारह महीने पहले, मेजर भंडारी और अन्य लोगों के साथ व्यापार मंडल के सदस्य बन कर तिब्बत गए थे। परन्तु अनेक नारकीय यातनाएं भोग कर, अंग भंग करवा के, किसी न किसी तरह वहां से बच निकलने में समर्थ हो सके हैं।

सिद्धान्त में समस्त तिब्बत बौद्धमतानुयायी है, भूत दया जिसका आदर्श है, अपरिग्रह सत्य, और अहिंसा जिसका आधार है तथा निश्छल सरल और सादा जीवन के द्वारा आत्मोन्नति ही जिसका व्यवहार है। परन्तु समय के अंतर ने तिब्बत के धार्मिक नेतृत्व को भौतिक सत्ता के भूखे, प्रपंच और दमन को हरबे बना कर चलने वाले महत्त्वाकांक्षी और मायावि कांगपू के हाथों में सौंप दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

है। वहीं लहासा की प्रसिद्ध नदी कोच के किनारे बने पवित्र बौद्ध आश्रम का प्रधान लामा है। उसने न केवल गैरतिब्बतियों के विनाश की क़सम खाई है वरन् समस्त ज्ञात विश्व को लहासा के प्रभुत्व के अन्तर्गत लाने का भी संकल्प किया है। इसके लिये उसके चर भारत में आकर, दिल्ली में स्थित विदेश मंत्रालय के सचिव प्रेमेन्द्र मित्रा की और फिर बम्बई में जयंत की हत्याएँ ऐसे वातावरण में करते हैं, जिसका रहस्योद्घाटन अशोक जैसा कुशल जासूस ही कर सकता है। जयंत को दिए गए वचनों के पालन के लिये अशोक अपने सहायक जासूस सुन्दर को साथ लेकर तिब्बत में व्यापार मण्डल के बचे हुए सदस्यों को कांगपू के चगुंल से मुक्त करवाने के लिए वहां जाने का जोखिम उठाते हैं और अंत में अपने अतिमानवीय साहस और विलक्षण सूझ बूझ के सहारे सफल होते हैं।

आज कथानक या घटनाएँ नहीं, मानव चरित्र का विश्लेषण ही उपन्यास का विषय हो गया है। मानवमन के अन्धकुहरों में सर्चलाइट गिरा कर वहां प्रेरणा रूप से कार्यशील उन विशेष वृत्तियों की ओर संकेत करना ही आज के उपन्यासकार का लक्ष्य बन गया है, जो व्यक्ति को उसके परिवेश के सामाजिक ढांचे में 'गोल छेद में चौकोर खूंटी' बनाए हुए हैं। यही कारण है कि आज का उपन्यास अंतः विश्लेषण, अवचेतनोद्घाटन, तथा मनोग्रंथियों का दुरूह, जटिल बंडल मात्र है। बौद्धिकता के इस घटाटोप से, प्रस्तुत उपन्यास, कुछ अवकाश दिलाने का प्रयत्न है। इसीलिए लेखक की दृष्टि पात्रों पर कम, घटनाओं पर अधिक रही है। कौतूहल की दृष्टि से घटनाओं का नियोजन करने में लेखक काफ़ी चौकस रहा है, और इसी में उसकी सफलता निहित है।

— राम गोपाल कौड़ा (प्रो)

● ● ●

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पंचांग परिचय

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक--श्री [illegible]

प्रकाशक--हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी

पृष्ठ--९८+५+५

मूल्य--दो रुपए ।

ज्योतिष एक विज्ञान है, जो गणित पर आधारित है। संस्कृत में ज्योतिष विषय पर अनेक ग्रन्थ हैं। जिनमें पंचांग बनाने की पद्धतियां भिन्न-भिन्न ढंग की लिखी हैं। हिन्दी भाषा में पंचांग बनाने की पुस्तक शायद यह प्रथम है। इसमें पंचांग देखने की सारी विधियाँ उदाहरण सहित दी हुई हैं। बारह भावों के फल और आयु आदि पर भी विचार किया गया है।

इसकी भाषा सरल और सुबोध है। स्थान स्थान पर विभिन्न सारणियां दी हुई हैं। जिनसे अधिक गणित न पढ़े हुए पाठक भी पंचांग बनाने में सफल हो सकते हैं। पुस्तक उत्तम है।

मैं हिन्दी प्रेमियों से आग्रह करूँगी कि इसका स्वागत करें, जिससे साहित्य समृद्धि में उत्साह बढ़े ।

कमलेश कुमारी

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा विभाग के हिन्दी प्रकाशन

	पुस्तक	प्रकाशन-वर्ष	मूल्य
१.	अभिनन्दन ग्रन्थ श्री यशपाल	१९५६	१६.००
२.	इंगलिश–हिन्दी–पञ्जाबी राजकीय प्रशासन शब्दावली	१९५९	०.४०
३.	पञ्जाबी के लोक–गीत (देवनागरी लिपि म)	१९६०–६१	३.७५
४.	वाणी गुरु अर्जुन देव की (देवनागरी लिपि में)	१९६०–६१	७.७०
५.	कथा हीर रांझे की	१९६०–६१	२.३०
६.	वाणी गुरु राम दास की १ (देवनागरी लिपि में)	१९६१–६२	३.५०
७.	मेरा विलायती सफर नामा (देवनागरी लिपि में)	१९६१–६२	३.५०
८.	हिन्दी प्रबोध	१९६२–६३	२.००
९.	हिन्दी बोध	१९६२–६३	१.७५
१०.	प्रशासन तथा सामान्य शब्दावली	१९६२–६३	८.००
११.	वाणी गुरु तेग़ बहादुर	१९६२–६३	३.६०
१२.	पंजाबी–हिन्दी कोश	१९६२–६३	६.२५
१३.	कांगड़ी–शब्द–संग्रह (प्रेस में)		

प्राप्ति स्थान––

कण्ट्रोलर, प्रिंटिंग एण्ड स्टेशनरी,
पंजाब, चण्डीगढ़ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी विभाग, पंजाब के दो अनूठे मासिक प्रकाशन

स प्त सि न्धु

ज न सा हि त्य

शोधपूर्ण एवं आलोचनात्मक साहित्यिक प्रबंधों का एक बोधक संचयन।

व्यंग्य-विनोद एवं सृजनात्मक सरस साहित्य का एक रोचक संकलन।

दोनों पत्रिकाएँ डी० पी० आई०, पंजाब, डायरैक्टर पंचायत, पंजाब तथा संचालक, लोक शिक्षण, मध्यप्रदेश, द्वारा पंजाब के सभी स्कूलों, कालेजों, लायब्रेरियों एवं पंचायतों तथा मध्य प्रदेश के स्कूलों, कालेजों एवं लायब्रेरियों के लिए स्वीकृत हैं।

बढ़िया कागज़, सुन्दर छपाई, आकर्षक गेट-अप

प्रत्येक का :—

वार्षिक ६ रुपये

एक प्रति ५० नये पैसे

आज ही निदेशक, हिन्दी विभाग, पंजाब, पटियाला को मनीआर्डर भेजकर ग्राहक बनिए।

श्री लाल सिंह, डायरैक्टर जनरल, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला द्वारा प्रिंटिंग एण्ड स्टेशनरी डिपार्टमैंट, पंजाब, पटियाला से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

प्रधान सम्पादक—डा० परमानन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जन साहित्य

अभिनन्दन अ

मई, १९८४

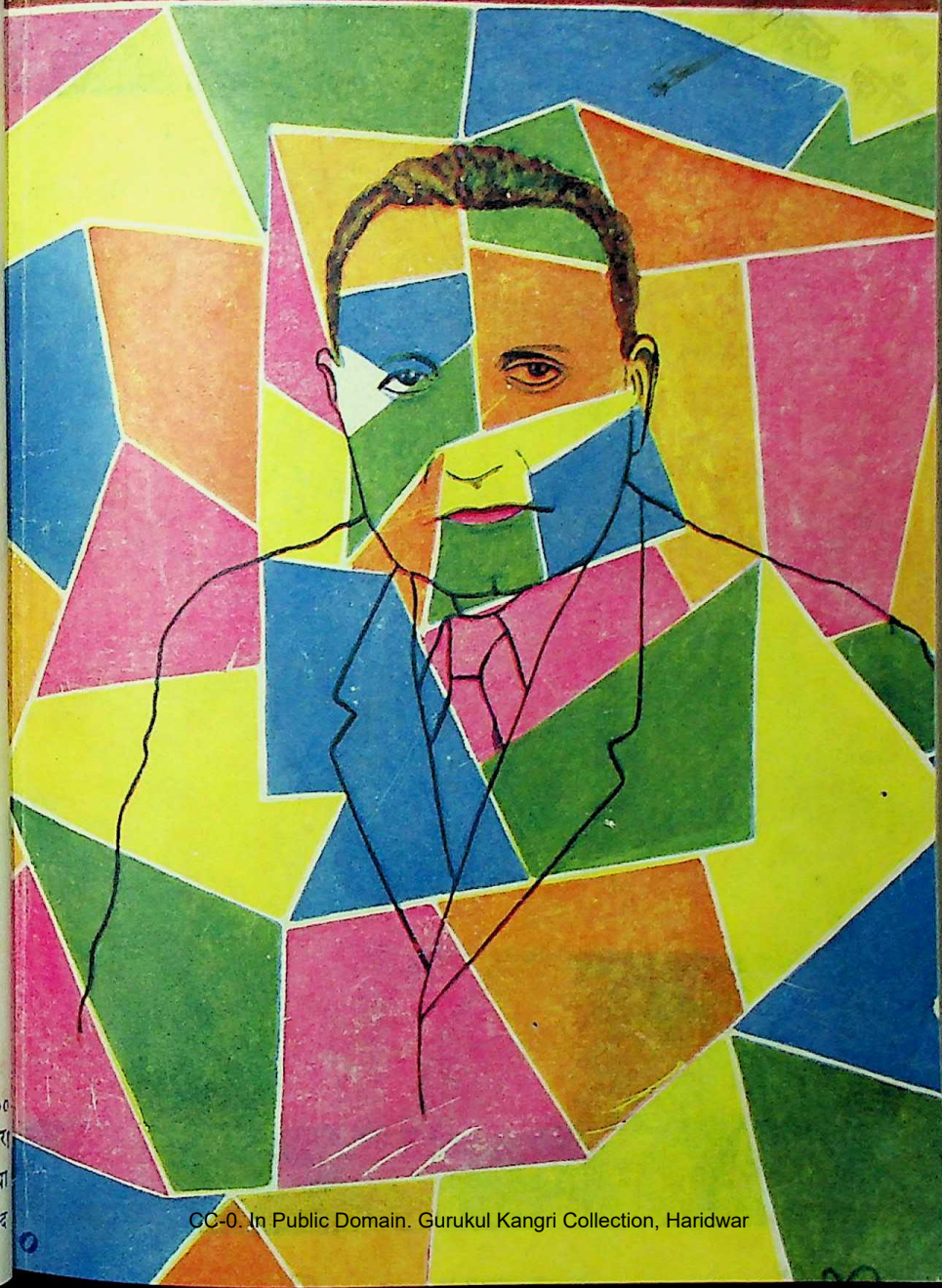

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल पुस्तकालय कांगड़ी

जनसाहित्य

इमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य :

(मासिक प्रकाशन—मई, १९६४)

वर्ष ११ अंक ५

लेख	लेखक	पृष्ठ
१. सम्पादकीय		
२. सन्देश एवं शुभकामनाएँ		
३. अभिनन्दन पत्र	निदेशक, हिन्दी विभाग	१९
४. अभिनन्दन पर	डॉ० इन्द्रनाथ मदान	२२
५. डॉ० इन्द्रनाथ मदान :एक झलक	श्री पी० एल० चावला	२५
६. खरी बात कहने के धनी	श्री सूर्य भानु	२७
७. डॉ० इन्द्रनाथ मदान : कुछ संस्मरण	श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	३०
८. ताली	श्री मोहन राकेश	४५
९. एक मोहक व्यक्तित्व	डॉ० विजयेन्द्र स्नातक	५१
१०. मेरी दृष्टि	डॉ० पद्म सिंह शर्मा 'कमलेश'	५४
११. वह जो मैंने देखा	डॉ० जयनाथ नलिन	५८
१२. कुछ यादें	श्री कमलेश्वर	६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३. डॉ० मदान : एक निर्कुण्ठ व्यक्तित्व	श्री रञ्जन	६५
१४. डॉ० इन्द्रनाथ मदान : एक झांकी	श्री गुरुदत्त शर्मा	६९
१५. डॉ० इन्द्रनाथ मदान	श्री पुरुषोत्तम कुमार निझावन	७२
१६. एक व्यक्तिगत परिचय	श्री वीरेन्द्र मेंहदीरत्ता	८०
१७. अंकल मदान	श्रीमती कुसुम विदानी	८५
१८. जब मैंने प्रथम बार डॉ० साहिब के दर्शन किए	सुश्री संतोष गर्ग	८७
१९. डॉ० इन्द्रनाथ मदान : एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व	सुश्री अनामिका	८९
२०. तनिक समीप से	श्री पुरुषोत्तम शर्मा	९१
२१. जब इन्होंने सुना	श्री कौशल कुमार धौम्य	९५
२२. कंपित लहरें और सोन मछली	श्री प्रेमपाल शर्मा	९८
२३. अभिनन्दन के बाद	डॉ० इन्द्रनाथ मदान	१०१
२४. जीवन दृष्टि	डॉ० इन्द्रनाथ मदान	१०५
२५. वार्षिक समारोह	श्री हरिचन्द पाराशर	१११

आवरण पृष्ठ : डा० इन्द्रनाथ मदान--पी०एल० चावला

सम्पादक--डा० परमानन्द

परामर्श समिति :-

१. श्री कृष्ण मधोक
२. श्री त्रिलोकी नाथ 'रञ्जन'
३. श्री गुरुदत्त शर्मा
४. श्री हरिचन्द पाराशर

नोट:--श्री साधु राम जी के स्थान पर श्री ओं प्रकाश भारद्वाज जी को समिति का सदस्य मनोनीत किया गया है ।

हिन्दी विभाग, पंजाब, पटियाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

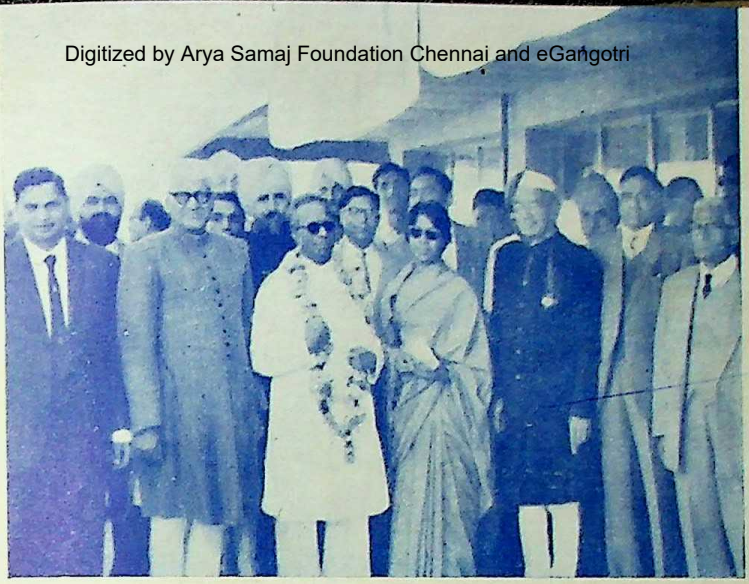

वार्षिक समारोहके अध्यक्ष प्रो० हुमायूं कबिर का स्वागत करते हुए पंजाब के भाषा मन्त्री डॉ० गोपीचन्द भार्गव, श्री अमरनाथ विद्यालंकार एम०पी० तथा भाषा विभाग के अधिकारी

समारोह के अवसर पर सम्मानित साहित्यकार, मंत्रियों एवं अधिकारियों के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सम्पादकीय

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिनन्दन की महक

पंजाब में खिले फूलों की महक इस बार फागुन-चेत के संगम पर नहा कर बाहर निकली तो बासन्ती हवा के पंखों पर लहराते हुए सुरभित छींटे सुदूर कन्याकुमारी तक के वातावरण में बिखर गये! इन छींटों की शीतल सुगन्ध में एक रसानुभूति उस अभिनन्दन की थी जिसका आयोजन पंजाब शासन द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी चंडीगढ़ में किया गया। इस वर्ष राष्ट्रभारती के अभिषिक्त युवराज थे डॉ० इन्द्रनाथ मदान--जिनकी बगिया के फूल आज केवल चंडीगढ़ के अट्ठारह सैक्टर की एक कोठी के आंगन में ही नहीं अपितु भारत के अनेक विश्वविद्यालयों, शिक्षण-संस्थाओं और शोध-संस्थानों के गुलदस्तों में अपनी खुशबू बिखरा रहे हैं। अभिनन्दन पर सौजन्यवश डॉ० मदान ने कहा--'मैं कोई साहित्यकार नहीं' किन्तु अवसर पर उपस्थित जन-समुदाय और देश के विभिन्न भागों में उल्लास-मुखर साहित्य-सेवियों ने एकमत से स्वीकार किया 'साहित्य और साधना का यह अभिनन्दन अपूर्व था।'

यों आजका युग बुद्धि-कौशल का युग है। असमर्थता बेचारी अभिधा वृत्ति की जिसमें 'कौशल' के एकान्त अर्थ को अभिव्यक्त करने की भी क्षमता नहीं--इसलिए बात कहने के अनेक लाक्षणिक और व्यंजक ढंग हैं। अभिनन्दन के अवसर पर डॉ० मदान ने अपनी बात अपने ढंग से कही तो बाद में और लोगों ने अपने ढंग से! अभिनन्दन के समाचार जहाँ-तहाँ प्रकाशित हुए थोड़े-बहुत अन्तर से क्योंकि प्रस्तुत-कर्त्ताओं और सम्वाददाताओं में थोड़ा-बहुत अन्तर 'अपनेपन' के कारण स्वाभाविक था। डॉ० मदान के अभिनन्दन पर हर्षाभिव्यक्ति हुई किन्तु आशंका का निश्वास खींचते हुए किसी ने नया प्रयोग किया-- 'सरकारी तौर पर साहित्यकार का अभिनन्दन क्या एक प्रश्रय नहीं?'--प्रश्न का उत्तर बिल्कुल स्पष्ट है--यदि यह 'प्रश्रय' हो तो भी अनुकरणीय है क्योंकि न तो आजकी सरकार वंशानुगत है और न ही आजका साहित्य कुछेक विलास-प्रेमियों की दीमागी ऐय्याशी का साधन। आज की समाज-व्यवस्था-साहित्यकार जिसके महत्त्वपूर्ण अंग हैं--उस भारतीय आदर्श को प्रतिष्ठापित करने के लिए प्रयत्नशील हैं जिसका भौतिक लक्ष्य है--

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ।।--- इसे समाजवाद कहा जाए या योजनावाद किन्तु गुलाब का फूल किसी नाम से पुकारा जाने पर भी अपनी मीठी सुगन्ध से वंचित नहीं होता ।

इसके अतिरिक्त मेरा तो यह ध्रुव विश्वास है कि यह 'साहित्य और साहित्यकारों का अभिनन्दन' भले ही वह सम्मानित करने और राज्य-कवि घोषित करने के रूप में हो या वर्ष की सर्वोत्कृष्ट रचनाओं को पुरस्कृत करने के रूप में --एक प्रेरणा है जो 'छोटे को बड़ा' और 'बड़े को और बड़ा' बनने के लिए उत्साह देती है ! आदि कवि के शब्दों में

'उत्साहो बलवानार्य, नास्त्युत्साह परं बलं ।
सोत्साहस्य हि लोकेषु न किंचिदपि दुर्लभम् ।।'

क्या आज साहित्य-साधकों में यह आत्मविश्वास भरने की आवश्यकता नहीं है, ताकि देश के नव-निर्माण में वह भी अपना उचित योगदान कर सकें। यदि है--और वस्तुतः है--तो निश्चय ही यह अभिनन्दन, जिन्हें इस व्यापक रूप में आयोजित करने का श्रेय पंजाब सरकार को है, साहित्यसाधकों को 'महान' से 'महत्तर' बनने के लिये एक प्रेरणास्त्रोत का काम देंगे !

पंजाब में तो यह अभिनन्दन-समारोह और उसकी पश्चाद्वर्त्ती गतिविधियां एक विशेष मनःस्थिति की बोधक हैं। दूसरे शब्दों में इसे पंजाब का साहित्यिक पुनर्जागरण कहा जा सकता है । हाथ-कंगन को आरसी क्या ? --पंजाब में इस साहित्यिक पुनर्जागरण के चिह्न देश-विभाजन के वर्षों बाद इन्हीं दिनों जहाँ-तहाँ दिखाई देने लगे हैं। स्थान-स्थान पर साहित्य चर्चाएँ, काव्य-गोष्ठियाँ, उत्सव-आयोजन, संवाद परिसंवाद--इसी 'पुनर्जागरण' के फल हैं। आइये, पावन ऋचाओं के सस्वर-गान से तपःपूत सरस्वती के लुप्त-प्राय कूल-कछारों के 'पुनर्दर्शन' के लिए प्रवृत्त इस 'पुनर्जागरण' में हम भी अपना उदबोधक स्वर और शक्ति साथ मिलाएँ ताकि पंजाब अपने प्राचीन ज्ञान-गौरव को अंशतः प्राप्त कर सके !

'अभिनन्दन-पुस्तिका' के बाद 'सप्तसिन्धु' और 'जन साहित्य' के दो अभिनन्दन-अंक निकालने का एकमात्र लक्ष्य भी पुनर्जागरण की इसी प्रेरणा का प्रसाद है ताकि साहित्य और साधना के ये सशक्त स्वर हृदय-हृदय में 'आत्मबोध' और 'शक्ति-बोध' का संचार कर सकें।

प. मा. न.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

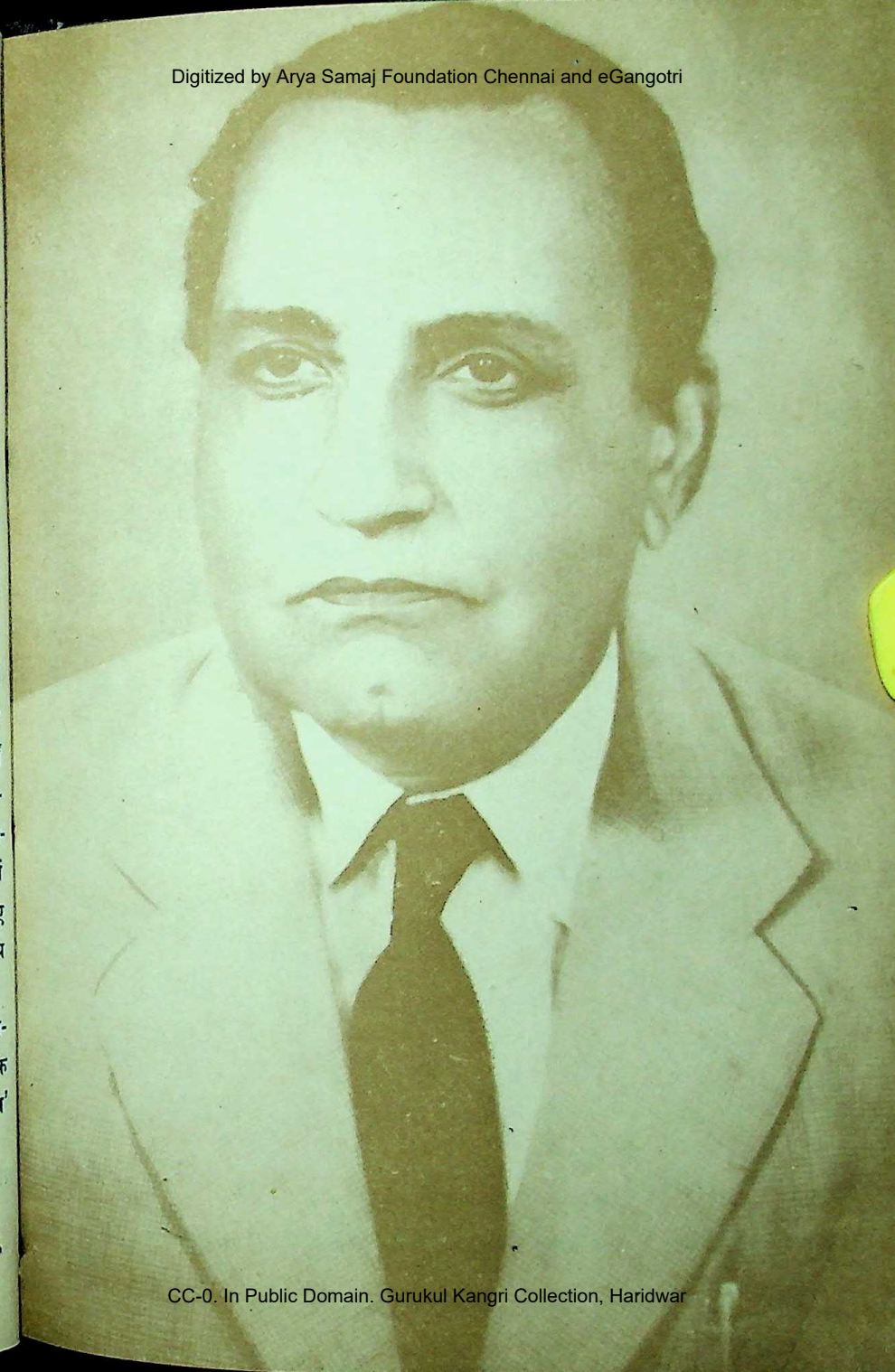

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के राष्ट्रपति का सचिव,
राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली—४

पत्रावली संख्या १८(२)–हि/६४

मार्च ३, १९६४
फाल्गुन १३, १८८५ (शक)

प्रिय महोदय,

आपके दिनांक २२ फरवरी, १९६४ के पत्र से राष्ट्रपति जी को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि हिन्दी विभाग, पंजाब, की ओर से डा० इन्द्रनाथ मदान को सम्मानित करने तथा उनके सम्मान में एक अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रकाशित करने का आयोजन किया जा रहा है।

उक्त आयोजन की सफलता के लिए राष्ट्रपति जी अपनी शुभकामनाएं भेजते हैं।

भवदीय,

(हस्ताक्षर) सुविमल दत्त

डा० परमानन्द,
निदेशक, हिन्दी विभाग, पंजाब,
पटियाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपराष्ट्रपति, भारत
नई देहली
फरवरी २६, १९६४

प्रिय महोदय,

आपका पत्र दिनांक २ फरवरी, १९६४ का प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

मुझे यह जानकर बहुत ही खुशी है कि आपने हिन्दी विभाग, पंजाब, पटियाला की ओर से हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक डा० इन्द्रनाथ मदान, हिन्दी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ को सम्मानित करने का निश्चय किया है। इस अवसर पर विभाग की ओर से उनके सम्मान में एक अभिनन्दन-पुस्तक प्रकाशित की जा रही है।

मैं अभिनन्दन-पुस्तक की सफलता एवं श्री मदान जी के दीर्घायु की कामना करता हूँ।

आपका
(हस्ताक्षर) ज़ाकिर हुसैन

डा० परमानन्द, एम०ए०,पी–एच० डी०, पी० ई० एस०,
निदेशक, हिन्दी विभाग,
पटियाला (पंजाब)

२०, अकबर रोड,
नई दिल्ली २६–२–६४

भाई श्री परमानन्द जी,

आपका पत्र मिला। डा० इन्द्रनाथ मदान का जो सत्कार हिन्दी विभाग पंजाब की तरफ से हो रहा है उचित ही है। हिन्दी साहित्य को उनकी देन अमूल्य है। मेरी ओर से डाक्टर साहब को शुभेच्छा दीजिएगा।

आपका
(हस्ताक्षर) हुकम सिंह
अध्यक्ष, लोक सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना और प्रसार मन्त्री
भारत
नई दिल्ली—१
मार्च ३, १९६४

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि हिन्दी के प्रख्यात साहित्य-समालोचक डा० इन्द्रनाथ मदान को सम्मानित किया जा रहा है और एतदर्थ एक अभिनन्दन-ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जा रहा है।

विद्वानों का समादर करना भारत को महानता की ओर बढ़ाने के लिए बहुत आवश्यक है। इससे ज्ञान-विज्ञान और संस्कृति का प्रकाश देश में तेजी से फैलता है। और भी महत्त्वपूर्ण यह है कि राष्ट्रभाषा के एक उन्नायक का सम्मान किया जा रहा है।

मैं इस सद्प्रयास की सराहना करता हूँ और आशा करता हूँ कि श्री मदान दीर्घ-आयु तक राष्ट्रभाषा की सेवा करते रहेंगे।

(हस्ताक्षर) सत्यनारायण सिंह

——0——

749/DEM/64

उप-शिक्षा मंत्री,
भारत सरकार।
नई दिल्ली-२, मार्च ३, १९६४

प्रिय महोदय,

आपका अर्द्ध-शासकीय पत्र संख्या–६४/१३८९, दिनांक २२ फरवरी प्राप्त हुआ। अनेक धन्यवाद।

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि हिन्दी विभाग, पंजाब, पटियाला की ओर से डॉ० इन्द्रनाथ मदान के सम्मान में एक अभिनन्दन-पुस्तक को प्रकाशित करने का आयोजन किया जा रहा है। मैं इस कार्य की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। मुझे आशा है कि डॉ० मदान भविष्य में हिन्दी की और भी अधिक सेवा करने में सफल होंगे।

एक बार फिर से धन्यवाद देते हुए—

आपका
(हस्ताक्षर) भक्त दर्शन

डॉ० परमानन्द,
निदेशक, हिन्दी विभाग, पंजाब,
पटियाला।

——0——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Minister,
Finance Department, Punjab
Chandigarh.

हिन्दी के आलोचना-साहित्य की श्रीवृद्धि में जिन साहित्यकारों ने बहुमूल्य योगदान दिया है उनमें श्री इन्द्रनाथ मदान का नाम आदर से लिया जाता है। डा० मदान ने राष्ट्र-भारती के भंडार को स्वस्थ आलोचना-साहित्य से समृद्ध कर के महती सेवा की है।

अत: पंजाब के हिन्दी-विभाग, ने इन्हें सम्मानित करने के लिए जो पग उठाया है, वह निस्सन्देह सराहनीय है। इस अवसर पर, मैं उनके दीर्घ-जीवन की शुभकामना करता हूँ।

(हस्ताक्षर) गोपी चन्द भार्गव
वित्त-मन्त्री, पंजाब

— — 0— —

Home Minister, Punjab
Chandigarh,
March 2, 1964

बड़े हर्ष का विषय है कि हिन्दी विभाग, पंजाब, पटियाला इस वर्ष पंजाब के प्रसिद्ध हिन्दी लेखक और प्रतिभावान् विद्वान् श्री डा० इन्द्रनाथ मदान को अभिनन्दित कर रहा है। डा० मदान वास्तव में ही इस गौरव के अधिकारी हैं। ये सफल आलोचक और राष्ट्रभाषा के उन्नायक हैं।

मैं हिन्दी विभाग को इस आयोजन के लिए बधाई देता हूँ और आशा रखता हूँ कि पंजाब के लेखकों और विद्वानों का सम्मान इसी प्रकार से किया जाता रहेगा।

(हस्ताक्षर) मोहन लाल

— — 0— —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(हस्ताक्षर) रामसरन चन्द मित्तल
मादक कराधान एवं राजधानी
परियोजना मंत्री, पंजाब
चण्डीगढ़

हिन्दी विभाग, पंजाब, पटियाला इस वर्ष डा० इन्द्रनाथ मदान का अभिनन्दन कर रहा है, यह जानकर परम हर्ष हुआ ।

डा० इन्द्रनाथ मदान हिन्दी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं । आपने एक कुशल समालोचक के रूप में हिन्दी-साहित्य का अवगहन एवं मन्थन करके समीक्षा-साहित्य में नये मापदंड स्थापित किए हैं। इस अवसर में मैं डा० मदान का व्यक्तिगत रूप से अभिनंदन करते हुए यह कामना करता हूँ कि आप हिन्दी-साहित्य के रूपांकन में सदैव योग देते रहें।

——0——

प्रिय डा० परमानन्द जी,

मुझे यह जान कर बहुत प्रसन्नता हुई कि हिन्दी के विद्वान् आलोचक एवं साधक डा० इन्द्रनाथ मदान को हिन्दी विभाग, पंजाब की ओर से इस वर्ष सम्मानित किया जा रहा है। डा० मदान का अभिनन्दन एक उचित निर्णय है क्योंकि आपने अपनी बहुमूल्य आलोचनाओं द्वारा जहां राष्ट्र-भाषा के साहित्य की अभिवृद्धि की है वहां पंजाब को भी गौरव प्रदान किया है।

मैं डा० मदान को इस प्रतिष्ठा के लिए तथा विभाग को इस निश्चय के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

यश
एम०एल०ए०,
भू० पू० शिक्षा मंत्री, पंजाब।

श्रीयुत निदेशक महोदय,
हिन्दी विभाग, पंजाब

——0——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DIWAN CHAND SHARMA

19, WINDSOR PLACE,
NEW DELHI.

No. 180|NDM

Dated : February 24, 1964

DEAR DR. PARMANAND JEE,

I thank you for your kind D. O. No. 1403 dated the 13th February, 1964. I am very glad to hear that the Hindi Department, Punjab Government, Patiala, is going to honour Dr. I. N. Madan of the Punjab University. I am equally glad to hear that you are going to present him an "ABHINANDAN GRANTH" along with a purse of Rs 1,100 and robe of honour. All these things he deserves richly for he is one of those Panjabis who has won recognition as scholar in Hindi not only in the Punjab but all over India. He has written some splendid works in Hindi on Hindi criticism and has indicated a new line of approach to the problem of appreciation of Hindi poetry, drama and prose. He is a source of pride to our University of Punjab for having established the Hindi Department after India attained Independence. I honour him not only as a scholar of Hindi and as a teacher of Hindi and as one of the pioneers of Hindi studies in the Punjab but also as a gentleman who shows his friendly disposition towards all those who come in contact with him.

With regards

Yours Sincerely,

SD/—D. C. SHARMA

Dr. Parmanand, M.A., Ph.D., P.E.S.
Director,
Hindi Department, Punjab,
PATIALA.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो पर यह समाचार सुन कर कि अजीज डा० इन्द्रनाथ मदान को पंजाब सरकार की तरफ से हिन्दी लेखक के तौर पर अभिनंदन-पत्र दिए जाने का फैसला किया गया है, मुझे दिली मुस्सरत और खुशी हो रही है।

मुझे डा० इन्द्रनाथ को अजीज कहने का फखर एक अर्से से हासिल है। उस वक्त से जब १९३८ में मेरे स्वर्गीय पिता राजा नरेन्द्रनाथ साहिब ने डा० इन्द्रनाथ को दयालसिंह कालेज, लाहौर में हिन्दी तथा अंग्रेज़ी के लैक्चरार के औहदे के लिए बहुत से मुस्तमंदों में से मुंतखिब किया था।

इस वक्त डा० साहिब अपनी किताब "श्री प्रेमचन्द की तसानीफ और उन पर एक तनकीदी नज़र" लिख चुके थे। बाद में ज्यों ज्यों वर्ष बीतते गए, डा० इन्द्रनाथ की कलम से तनकीदी मजामीन और दीगर तसानीफ निकलती रही है। इनमें इनकी तसनीफ "आधुनिक कविता का मूल्यांकन" निहायत ही काबिले कदर है।

डा० इन्द्रनाथ की राय से कि हिन्दी को आसान और आमफहम बनाना चाहिए, मुझे पूरी तरह इतफाक है।

पंजाब सरकार ने डा० साहिब को यह एजाज़ देने में बड़े इन्साफ से काम लिया है।

मेरी प्रार्थना है कि भगवान उनकी उमर दराज करे और हमेशा सेहतमन्द रखे ताकि वह अपने लेखों से हिन्दी की खिदमत करते रहें।

(हस्ताक्षर) आनन्द कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपकुलपति,
पंजाब विश्वविद्यालय
चण्डीगढ़
दिनांक फरवरी २८, १९६४

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि इस वर्ष राज्य भाषा विभाग की ओर से डा० इन्द्रनाथ मदान को पंजाब के प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान् के रूप में सम्मानित किया जा रहा है। तत्काल लाहौर स्थित पंजाब यूनिवर्सिटी से हिन्दी में पी-एच०डी० की उपाधि पाने वाले वे सर्वप्रथम व्यक्ति हैं। आधुनिक हिन्दी साहित्य में—विशेष रूप से कथा-साहित्य में—उनके अध्ययन का विशिष्ट सम्मान हुआ है। उन्होंने लगभग एक दर्जन पुस्तकें लिखीं अथवा संपादित की हैं, जिनमें आधुनिक कथा-साहित्य, आलोचना तथा काव्य की दिशाओं का पुनर्मूल्यांकन हुआ है।

'प्रेमचन्द—एक विवेचन' नामक अपनी पुस्तक में उन्होंने हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार प्रेमचन्द का नये परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन किया है। इसी प्रकार 'शरत्चन्द्र: चिन्तन और कला' नाम की उनकी पुस्तक में प्रसिद्ध बंगाली उपन्यासकार शरत्चन्द्र की कला और विचार-पद्धति का विश्लेषण अपने ढंग का एक अनूठा प्रयास है।

इस विशिष्ट सम्मान के लिए डा० मदान के चयन पर मैं भाषा विभाग को बधाई देता हूँ।

(हस्ताक्षर) अमर चन्द जोशी

—0—

PUNJABI UNIVERSITY
PATIALA
February 26, 1964

ਸ੍ਰੀ ਮਾਨ ਡਾ: ਪਰਮਾ ਨੰਦ ਜੀ,

ਆਪ ਦੀ ਚਿੱਠੀ ਨੰ: ੬੪-੧੪੦੪ ਮਿਤੀ ੨੨-੨-੬੪ ਦੀ ਮਿਲੀ।

ਮੈਨੂੰ ਇਹ ਜਾਣ ਕੇ ਪ੍ਰਸੰਨਤਾ ਹੋਈ ਹੈ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਡਾ: ਇੰਦਰ ਨਾਥ ਮਦਾਨ, ਰੀਡਰ, ਪੰਜਾਬ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਨੂੰ ਅਭੀਨੰਦਨ ਗ੍ਰੰਥ ਦੇ ਰਹੇ ਹੋ। ਇਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਵਿਦਵਤਾ ਦੀ ਯੋਗ ਕਦਰ ਹੈ ਅਤੇ ਆਸ ਹੈ ਕਿ ਤੁਹਾਡਾ ਇਹ ਯਤਨ ਸਫਲਤਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰੇਗਾ।

ਆਪ ਦਾ,
(ਜੋਧ ਸਿੰਘ)

ਡਾ: ਪਰਮਾ ਨੰਦ,
ਡਾਇਰੈਕਟਰ,
ਹਿੰਦੀ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ, ਪਟਿਆਲਾ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० इन्द्रनाथ मदान

पंजाब के भाषा-विभाग ने हिन्दी के वरिष्ठ आलोचक और प्राध्यापक डा० इन्द्रनाथ मदान का सम्मान करने का निश्चय किया है, यह जान कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है।

डा० मदान सुलझे हुए समालोचक हैं। स्पष्टवादिता उनका गुण नहीं, स्वभाव है। उधार-बाकी किसी का नहीं रखते, कुछ भी नहीं। पैसे भी नहीं, प्रत्युतर भी नहीं। तुरन्त का तुरन्त चुका देते हैं। अचार-चटनी के पूरे शौकीन हैं, मगर मानसिक अचार से एकदम अपरिचित। आचार्य शुक्ल ने लिखा है कि 'वैर, क्रोध का अचार या मुरब्बा है!' इस अचार या मुरब्बे का शौक उन्हें बिल्कुल नहीं है क्योंकि मानसिक मनघुन्नेपन में विश्वास ही नहीं करते। मन में कुछ बात हुई तो उसी समय उसे निकाल देते हैं। 'तुरन्त दान महा कल्यान' के पुराने मंत्र में उनको पूरी आस्था है। चिट्ठियों का जवाब भी वे तुरन्त दे दिया करते हैं। मैंने अपने मूक आचरण से उन्हें बहुत उपदेश दिया कि चिट्ठियों का तुरंत जवाब देना कोई अच्छे साहित्यिक का लक्षण नहीं है पर उन्हें यह बात पसंद नहीं है। मुझसे उनकी शिकायत है कि मैं साफ-साफ 'हां-ना' करके मामला खतम नहीं कर देता, लटकाये रहता हूँ, परेशान रहता हूँ! गोया यह कोई ऐब हो! न मेरी बात उनकी समझ में आई है, न उनकी बात मेरी! फिर भी ज्यादती उन्हीं की ओर से है। मैं उनकी साफ़गोई की कदर करता हूँ, उधर वे मेरी 'लस्टम-पस्टम—नीति' की कदर करना तो दूर, समझ ही नहीं पाए। उनकी रचनाओं में यह विचित्र व्यक्तित्व सर्वत्र मुखर है। कहीं भी बात को घुमा कर कहने का प्रयत्न नहीं मिलता, किसी की मुरौव्वत नहीं, किसी से द्वेष नहीं! मगर यह नहीं कहा जा सकता कि वे ममताहीन हैं। जिस पर ढरक गए उसके लिए औढरदानी हैं! दोस्त हो तो मदान-जैसा, और शायद दुश्मन भी हो तो मदान-जैसा!

उन्होंने अपने अध्ययन का क्षेत्र आधुनिक साहित्य को बनाया है। प्रेमचन्द और शरत्चन्द्र का मर्मोद्घाटन किया है, छायावाद की महिमा और लघिमा की जांच की है, नई कहानियों की उपलब्धि और अनुपलब्धि का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है और कभी-कभी मौज में आकर व्यंग्य-विनोद का रस बरसाया है। सर्वत्र बेलौस रहने का प्रयत्न किया है (कभी कभी प्रयत्न कारगरा नहीं भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ है !) उनमें एक बड़ा भारी गुण पाया जाता है । वे प्रत्यालोचना की चि से एकदम मुक्त हैं । वे खुद चोट कर सकते हैं पर कोई और भी चोट क सकता है, यह जानते ही नहीं । इस गुण ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व लापरवाह मस्ती का स्वर जोड़ दिया है। यही कारण है वे नयी पीढ़ी के पाठ को आकृष्ट करते हैं, उनके विश्वास-भाजन बन जाते हैं । वे पंजाब फक्कड़ाना मस्ती के सच्चे प्रतिनिधि हैं ।

ऐसे आकर्षक व्यक्तित्व वाले, निष्ठावान् प्राध्यापक और मर्मोद्घाटी आलोचक का सम्मान करके भाषा विभाग ने उचित समय पर उचित प्रति का उचित सम्मान किया है ।

(हस्ताक्षर) हजारी प्रसाद द्विवेदी
डीन आफ यूनिवर्सिटी इन्स्ट्रक्शन

चण्डीगढ़—३
दि० ३ मार्च, १९६४

——0——

१६, कैथेलरी लाइंस, दिल्ली—६
दिनांक : ६–३–६४

महोदय,

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि हिन्दी विभाग, (पंजाब) पटियाला की ओर से १४ मार्च को बन्धुवर डा० इन्द्रनाथ मदान को सम्मानित किया जा रहा है। डा० मदान हिन्दी के एक वरिष्ठ प्राध्यापक और सुलझे हुए आलोचक हैं : उन्होंने हिन्दी-आलोचना-साहित्य, विशेषतः कथा-साहित्य-सम्बन्धी आलोचना के विकास में महत्त्वपूर्ण योग दिया है। मैं इस अवसर पर उनके प्रति अपनी स्नेहमयी शुभकामनाएं अर्पित करता हूँ । ईश्वर उन्हें सुख-स्वास्थ्यमय चिरायुष्य प्रदान करे ।

भवदीय
(हस्ताक्षर) नगेन्द्र

——0——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोफसर रामकुमार वर्मा
एम०ए०,पी-एच०डी०
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
भू०पू० हिन्दी प्रोफ़ैसर, मास्को (सोवियत् संघ)

हिन्दी विभाग
विश्वविद्यालय, प्रयाग
९-३-१९६४

प्रिय महोदय,

आपका २२ फरवरी का पत्र मिला । यह जान कर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि मेरे परम प्रिय सहयोगी डा० इन्द्रनाथ मदान का सम्मान हिन्दी विभाग, पंजाब, पटियाला की ओर से होने जा रहा है । इसके लिए डा० मदान को बधाई और आपको धन्यवाद देना मेरा पुनीत कर्त्तव्य है ।

डा० मदान आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रख्यात् और मान्य समालोचक हैं। उन्होंने अपने अध्ययन और चिन्तन से हिन्दी के क्षेत्र में नवीन मान्यताएँ स्थापित की हैं और समालोचना को अधिक गंभीर और विचारोत्तेजक बनाया है।

यह अभिनन्दन जहां उनके साहित्य का महत्त्व स्थापित करेगा, वहां नवीन लेखकों को उनके इंगित पथ पर बढ़ने की प्रेरणाएँ भी प्रदान करेगा ।

कृपया उन तक मेरा हार्दिक साधुवाद पहुंचा दें ।

भवदीय,
(हस्ताक्षर) रामकुमार वर्मा

श्री परमानन्द जी,
निदेशक, हिन्दी विभाग, पंजाब

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० विनय मोहन शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग ।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,
कुरुक्षेत्र
दिनांक ३ मार्च, १९६४

डा० इन्द्रनाथ मदान व्यक्तित्व

डा० इन्द्रनाथ मदान से मेरी सन् १९५२ या ५३ में प्रथम बार पटने में भेंट हुई थी । भारतीय हिन्दी परिषद् के हिन्दी पाठ्यक्रम गोष्ठी के वे सभापति थे । पंजाब विश्वविद्यालय में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में उनकी सेवाओं से पूर्व परिचय था––समीक्षा-क्षेत्र में भी उनका कृतित्त्व विश्रुत था । प्रथम भेंट में ही उनके सरस व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा । उनकी मित्रता अहेतु की होती है और आनन्ददायिनी । गत बारह-तेरह वर्षों से जो सम्बन्ध प्रारम्भ हुआ वह अबाधित और एक रस चला जा रहा है। सम्बन्ध को जीवित रखने के लिये बीच बीच में पत्रों के टानिक की आवश्यकता नहीं पड़ी––मुझे ही क्या किसी को नहीं पड़ती । इनकी संभाषण की भी एक अदा है––बड़ी मीठी। बात खरी कह जायेंगे पर वह किसी के जी को छू कर दुखा नहीं पायेगी । मुसकुराहट और हंसी तो उनके चेहरे पर दिनरात खेलती रहती है। उनके सम्पर्क में आने पर न हंसने वाला भी एक बार ठहाका न सही, धीमी हंसी तो हंस ही लेगा । उनके पास से हंसी पान किए बिना उठना कठिन है। अगर पान खाने के शौकीन हैं तो कत्थे चूने के पान का अतिरिक्त लाभ भी, आपको मिल जायेगा । उनके हँसते जीवन का प्रतिबिम्ब उनके लेखन में भी झलक जाता है। गंभीर से गंभीर विषय को बोध गम्य बनाने की कला उनसे सीखी जा सकती है, उनके 'सुगम संगीत' की प्रत्येक पंक्ति उनके व्यक्तित्व का परिचय कराती है। वे विद्वान् होते हुए भी विद्वत्ता के बोझ लादे हुए नहीं रहते । पंजाब में जो इने गिने हिन्दी साहित्यकार हैं उनमें डा० मदान का अपना एक स्पृहणीय स्थान है । कविता को छोड़ कर साहित्य की प्रत्येक विधा उनकी लेखनी से समृद्ध हुई है । साहित्य की नवीनतम प्रवृत्तियों को परखने की उनमें अद्भुत क्षमता है । हिन्दी में कथा और कविता के क्षेत्र में जो नव लेखन–शिल्प प्रचलित हो रहा है उसे भी उनके द्वारा प्रोत्साहन मिल रहा है । पंजाब में शोध की गति को अग्रसर करने में भी उनका योगदान है । मैं हिन्दी के इस अलमस्त साधक का हृदय से सप्रेम अभिनन्दन करता हूँ।

(हस्ताक्षर) विनय मोहन शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१, शिवाजी मार्ग, लखनऊ

२६ फरवरी, १९६४

डा० परमानन्द,

निदेशक, हिन्दी विभाग, पंजाब

प्रिय महोदय,

इस समाचार से बहुत संतोष और प्रसन्नता है कि इस वर्ष पंजाब सरकार का भाषा विभाग आदरणीय विद्वान् डा० इन्द्रनाथ मदान की राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा और हिन्दी साहित्य के उचित मूल्यांकन में योगदान की सराहना में उन्हें सम्मान प्रदान कर रहा है। डा० मदान की आलोचक दृष्टि सैद्धांतिक पूर्वाग्रहों से मुक्त रह कर साहित्य की कलात्मक परख तथा कला में निहित विचारों की तटस्थता से विश्लेषण करने में समर्थ हुई है। उनकी आलोचना पद्धति गंभीर अध्ययन के योग्य है। हमारे साहित्य को उनके निर्देशन और सुझाव से बहुत आशाएं हैं।

खेद है कि मैं आंख के आपरेशन के पश्चात् स्ट्रैप्टोमाईसीन टाक्सिटी की अवस्था में डाक्टरों के निर्देश के कारण किसी भी गंभीर कार्य में असमर्थ हूँ। अपने उचित और समयानुकूल कार्य के लिये मेरी सराहना और भावात्मक सहयोग स्वीकार करें। मैं आपके विभाग तथा डा० इन्द्रनाथ मदान को बधाई देता हूँ।

आपका

(हस्ताक्षर) यशपाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

PROFESSOR AND
HEAD OF THE DEPARTMENT OF ENGLISH,
PUNJAB UNIVERSITY

Bungalow No. F
SECTOR 1
University Encl
CHANDIGARH-

Dated : February 26, 19

It gives me great joy to learn that the Hindi Department ,Punj Government, Patiala, is honouring Dr. I. N. Madan, M.A., Ph.D., of t Department of Hindi, Punjab University, Chandigarh, and that a "ABHINANDAN GRANTH" along with Rs 1,100 and robe of honour also being presented to him on the occasion.

I have had the privilege of knowing Dr. Madan since the tim when we were students together, at the Government College, Lahor many years ago. He is now a reputed scholar of the Punjab and has ma an extremely valuable contribution towards the development of Hin Language and Literature. Many a time, I have listened with great intere to his lectures and radio talks, and read some of the articles, he contribut so frequently to reputed literary journals. His first love was Englis and I am sure that the background has been of some use to him in t development as a major critic and scholar of Hindi; it is certain responsible, I venture to think, for the breadth of vision in his writing

He richly deserves the honour conferred on him, and the Punj Government and the sponsors must be congratulated on their decision.

SD/—RAJ KUMAR,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० इन्द्रनाथ मदान पंजाब में हिन्दी के बोलने वालों में से हैं। उनकी जिहनी नशवो नया अंग्रेज़ी-साहित्य के साथ जिससे मगरबी अदबी नज़रियें और कदरें उनके ख्याल और मेलान का हिस्सा बन गईं। इसमें उन्होंने हिन्दी अदब का मेल किया और हिन्दी में नई तनक़ीद की बुनियादें मज़बूत कीं। हिन्दी का दायरा तो बहुत वसी है और खसूसन इस दौर में हिन्दुस्तानी अदबी कलचर और हिन्दी हमयानी बन गए हैं। जू जू वकत गुज़रता जायगा, देश के सब हिस्सों के विद्वान् हिन्दी के दामन को अपने अपने चमन के फूलों से भरेंगे। अब तक ज्यादातर शुमौली हिन्द और हिन्दी बोलने वाले इलाकों ने हिन्दी की खिदमत की है उनमें पंजाब का नुमायां हिस्सा है। पंजाबियों ने हिन्दी को अपनी ही जबान बनाया है और उसमें नया अदब और नई तनक़ीद पंदा की है। खुशी की बात है कि हिन्दी वालों में वह तंग-नज़री नहीं जो उर्दू वालों के दरमियान अहले-जबान और जबानदान का फर्क पैदा कर देती है। इन पंजाबियों में डाक्टर मदान का दर्जा बहुत बुलन्द है जिन्होंने हिन्दी के भंडार को भरा है। पंजाब यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग के वे न सिर्फ सरमुदर्स थे बल्कि हिन्दी में नावल के मुतालिक उनकी तनकीदी किताब भी पंजाब में नया संगे मील थी और हिन्दी तनकीदी अदब की नुमायां किताब। उसके बाद भी डाक्टर मदान लगातार तहकीक करते रहे हैं और किताबों और ट्रेक्टों की शकल में अपनी तहकीन के नतीजों की अशायित करते रहे हैं। पंजाब का हिन्दी विभाग वाले मुबारिकबाद और तहसील के मुसताहिक हैं कि उन्होंने इस साल अदबी एज़ाज के लिए डाक्टर इन्द्रनाथ मदान को चुना है। इस तरह इस प्रवेश के बहुत बड़े आलिम की क़दर की है।

(हस्ताक्षर) गुरबचन सिंह तालिब,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

तारीख : १ मार्च, १९६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मैं आपके आयोजन के लिए हार्दिक शुभ कामनाएं भेजता हूँ।

डा० इन्द्रनाथ मदान से मैं एक-दो बार ही मिला हूँ। और उनकी 'प्रेमचंद' पर अंग्रेज़ी में पुस्तक मैंने पढ़ी है। बाद में बच्चों के लिए उनकी कुछ किताबें पढ़ी हैं। और 'नई हिन्दी' कविता पर उनके कुछ लेख, विशेषतः 'निराला' और 'अज्ञेय' पर उनकी समीक्षा पढ़ी है। वे मुझे बहुत सुलझे हुए, नये का समुचित स्वागत समादर करने वाले उदार-चेता समीक्षक जान पड़ते हैं।

हिन्दी का क्षेत्र ज्यों-ज्यों बढ़ता जायेगा, अहिन्दी भाषा विद्वानों का हिन्दी को योगदान, एक महत्त्वपूर्ण घटना है। दुर्भाग्यवश अभी इस ओर पर्याप्त ध्यान और मूल्यांकन की इच्छा हिन्दी प्रदेश के विद्वानों ने नहीं दिखाई है। डा० मदान जैसे लोग पंजाबी और हिन्दी-भाषी प्रदेश के बीच एक सशक्त सेतु की भांति हैं। इन लोगों का कार्य एक तरह से देश की भावात्मक एकता के निर्माण में अग्रनेता की तरह ऐतिहासिक महत्त्व का कार्य है।

(डा०) प्रभाकर माचवे

नई दिल्ली
२४-२-६४

——0——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

I.N.M.—A PORTRAIT

R. M. DOGRA

I still recollect having seen Indra Nath Madan in early twenties of this century at the D.A.V. High School, Lahore. He was five years behind me; but all the outstanding players and scholars had two district free masonries of their own; and these two types were encouraged by the progressive Headmaster of the school. Later on, he followed me to the Government College, Lahore. A scholarship in Matriculation, top place in the Intermediate examination, and a scholarship for heading the list in Sanskrit Honours in B.A. were some of the academic distinctions, which he won during his career there. He did his M.A. in English, and was later on one of the earliest Ph. D.s, in Hindi.

Our early contacts ripened into a life-long friendship. His cheerful outlook on life, a satiric sense of humour and a heart, which melts easily on seeing the suffering of others have own him a large circle of friends. At first he was a Lecturer in English at the D.A.V. College, Lahore, and later on, he served Hans Raj Mahila Mahavidyala, and Dyal Singh College, in the same capacity. By his liberal financial help, he coaxed his several brothers and sisters a flutter through their educational careers; and when this task was accomplished, he thought of marrying, and in spite of serveral offers, somehow he never made up his mind to get hitched up.

His transparent sincerity and affection continued to grow. After the partition, he switched over to the teaching of Hindi in the Punjab University, and soaked himself in fiction, poetry and criticism. A crop of Ph. D.s in Hindi have matured under his able and spampathetic guidance. He has all along taken delight in encouraging talent. His attitude is objective and at times bluntly frank. I have played bridge with him for a number of years, and whenever I gave wild calls or played carelessly,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

he used to give me hell : exploding with irritation and impatience; and when I laughed, he would leave the table in protest, and we dragged him back again.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

I have seen a number of needy people flocking to his place for financial assistance, and easily succeeding in getting big sums from him. His bounty is spontaneous, and he never gives the slightest hint to such people that they are under obligation to him.

He is very slow in believing rumours, and his friends can be sure of his support when malicious people try to run them down. He might say anything to them personally, but behind their back, he will only dwell on their qualities.

At times he feels very lonely, as is very natural for a confirmed bachelor. Reading, writing and gardening are his favourite hobbies. It is a delight to see carefully tended beds of flowers in his house. Any other man in his place, might have become lop-sided or morbid, but Dr. Madan has a very healthy and balanced mind, and it is a delight to engage him in exchange of wit and homour. He is very fond of children, and knows the art of pleasing them with suitable gifts and pats of encouragement which kindle the ego of the young.

All his friends are delighted to learn that he is being honoured by the Hindi Department of the Punjab Government for his learning and scholarship, I wish, however, to pay my tribute to his humanity and gentlemanliness.

Department of Commerce,
Punjab University,
CHANDIGARH.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिनन्दन पत्र पढ़ते हुए पंजाब हिन्दी विभाग के निदेशक
डॉ० परमानन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिनन्दन-पत्र

जो

डा० इन्द्रनाथ जी मदान

को

उनकी साहित्य-सेवाओं के उपलक्ष्य में हिन्दी विभाग, पंजाब की ओर से १४ मार्च, १९६४ को भेंट किया गया ।

आदरणीय डा० इन्द्रनाथ जी मदान, आज आप जैसे प्रकाण्ड पंडित, सुप्रसिद्ध समालोचक, शिक्षा शास्त्री एवं महान साहित्यकार का अभिनन्दन करते हुए हिन्दी विभाग, पंजाब, अत्यन्त हर्ष का अनुभव कर रहा है । अपने तेजस्वी व्यक्तित्त्व और कर्मठ कर्तृत्त्व द्वारा अपनी जन्म-भूमि पंजाब और राष्ट्रभारती का जो यशोवर्द्धन आपने किया है—वह पंजाब-निवासियों के लिये गौरव और गर्व का विषय है । आपकी विद्वत्ता एवं साहित्यिक उपलब्धियों पर मुग्ध होकर जनता और सरकार ने आपके अभिनन्दन के जिस पुण्य समारोह का आरम्भ किया है उसी का एक आयोजन आज इस रूप में हिन्दी विभाग, पंजाब द्वारा किया जा रहा है ।

महामना,

आज से पचास वर्ष पहले पश्चिमी पंजाब के एक छोटे से गांव गिरोट में एक सामान्य परन्तु शालीन परिवार में जन्म पाकर अपने अध्यवसाय एवं उद्यम के बल पर आपने ऊंची से ऊँची शिक्षा प्राप्त की । पंजाब के हिन्दी साहित्य के लिए यह एक सौभाग्य-संयोग ही था कि बी०ए० ऑनर्ज में संस्कृत का शिक्षार्थी इन्द्रनाथ इंग्लिश में एम०ए० की डिग्री प्राप्त कर डाक्टोरेट के लिये हिन्दी की ओर प्रवृत्त हुआ और इस प्रकार डाक्टोरेट के लिये प्रस्तुत अपने शोध-प्रबन्ध द्वारा एक ऐसे समन्वयात्मक समालोचक रूप को प्रस्तुत किया जिसका आधार संस्कृत-हिन्दी-इंग्लिश का त्रिवेणी-संगम था । यही कारण है कि आपकी एक दर्जन से अधिक रचनाएँ तथा प्राध्यापक के रूप में विस्तृत कार्य-कला की सफलताएँ जिस सुलझे हुए व्यक्तित्त्व और सिद्धहस्त कर्तृत्त्व को हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं—वह पंजाब का सर्वश्रेष्ठ एवं कर्मठ कर्तृत्त्व है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माननीय,

शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपका सर्वप्रथम उद्देश्य एक सफल एवं सर्वप्रिय प्राध्यापक बनना रहा है और वस्तुतः देखा जाए तो अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति एवं समृद्धि के लिये आपने अपने साहित्यिक एवं समालोचक रूप का विकास किया। प्रारम्भ में आप दयालसिंह कालिज में इंग्लिश के प्राध्यापक नियुक्त हुए। अपने शोध-प्रबन्ध पर डाक्टोरेट की उपाधि प्राप्त करने के बाद से आप पंजाब यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग में अध्यक्ष एवं वरिष्ठ रीडर के पद पर कार्य कर रहे हैं। वर्षों के इस लम्बे अध्यापन काल में पंजाब और दूसरे प्रान्तों के अनेकानेक शिक्षार्थियों ने आपके चरणों में बैठ कर हिन्दी-साहित्य के विभिन्न भागों पर शोध-पूर्ण अध्ययन किया और उनमें से अनेक आज भारत के प्रसिद्ध विद्वानों में गिने जाते हैं। आपके आदर्शजीवन का सर्वाधिक सुखद पहलू यही विस्तृत शिष्य समाज है जो आपके सफल प्राध्यापक होने का उज्ज्वल प्रमाण है।

मान्यवर,

विभाजनान्तर पंजाब में पंजाब यूनिवर्सिटी के हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष के रूप में जो सराहनीय कार्य आपने किया वह अपनी मिसाल आप ही है। हिन्दी विभाग के आरंभिक रूप से लेकर आज तक के विकसित रूप का श्रेय आपके सदुद्योग एवं स्वस्थ दृष्टिकोण का ही फल है। यदि यह कहा जाए कि पंजाब विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के एकमात्र निर्माता आप ही हैं—तो कोई अत्युक्ति नहीं।

साहित्य-शिरोमणि,

एक साहित्यकार के रूप में आपका स्थान भारत के गण्यमान्य महानुभावों में है। एक समालोचक के रूप में आपकी बारह से भी अधिक महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं जिनमें 'माडर्न हिन्दी लिट्रेचर', 'हिन्दी कलाकार', 'आधुनिक कविता का मूल्यांकन', 'तुलसीदास चिन्तन व कला', 'उपन्यासकार शरच्चन्द्र', 'आलोचना और काव्य' आदि समालोचना-क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां मानी जाती हैं। इन समालोचना-पुस्तकों द्वारा आपने जहां हिन्दी साहित्य के विभिन्न अंगों पर अधिकृत विवेचन प्रस्तुत किया है वहां नई कहानी और नई कविता को मान्यता दिलाने का भी सराहनीय कार्य किया है। आज के अनेक नए कवियों एवं कहानी-लेखकों का उज्ज्वल वर्तमान आपकी समालोचनाओं एवं मान्यताओं की ही सुखद परिणति है।

समालोचक के अतिरिक्त सरस साहित्यकार के रूप में आपकी नवीनतम रचना 'सुगम तथा शास्त्रीय संगीत' अपने ढंग की अनूठी रचना है जिसने आपके सर्जक रूप को भी अप्रतिम सिद्ध किया है। इस प्रकार समालोचक एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौलिक साहित्यकार के रूप में आपने अपूर्व ख्याति एवं मान्यता प्राप्त की है।

डाक्टर साहब,

इस प्रकार एक प्रतिष्ठित शिक्षाशास्त्री, विद्वान् समालोचक एवं लब्ध-प्रतिष्ठ मौलिक साहित्यकार के रूप में आपका अभिनन्दन करते हुए हिन्दी विभाग, पंजाब उन सभी विशेषताओं एवं महत्ताओं का अभिनन्दन कर रहा है जिनका उज्ज्वल प्रतीक आपका निर्मल व्यक्तित्व है।

अन्त में हम एक बार फिर आपका स्वागत एवं अभिनन्दन करते हैं और आशा रखते हैं कि आप अपने आकर्षक एवं मधुर व्यक्तित्त्व तथा साधक कर्तृत्त्व द्वारा पंजाब और राष्ट्र भारती का दिन दुगना रात चौगुना मान-सम्मान बढ़ाते रहेंगे।

निदेशक,

चण्डीगढ़ हिन्दी विभाग, पंजाब।

१४ मार्च, १९६४

● ● ●

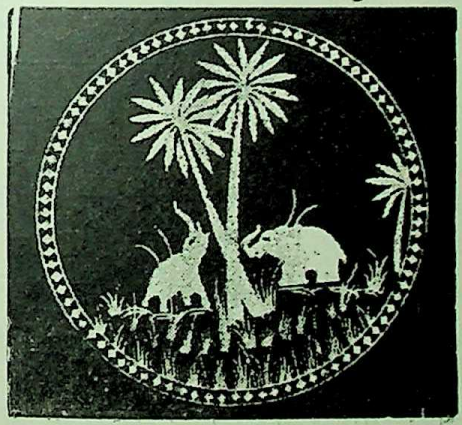

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिनन्दन पर

इन्द्र नाथ मदान

एक साहित्यकार के नाते मेरा अभिनन्दन पंजाब सरकार शायद इसलिये कर रही है कि आज का युग अभिनन्दन और उद्घाटन का है--व्यक्ति का अभिनन्दन और वस्तु का उद्घाटन। मैं सरकार के भाषा विभाग का इसलिये आभारी हूँ कि वह मेरा उद्घाटन नहीं कर रहा है, वह मुझे वस्तु नहीं समझता है। एक व्यक्ति के नाते मुझे लग रहा है कि मेरा जलूस अवश्य निकाला जा रहा है, जबकि अब तक मैं दूसरों का जलूस देखता आया हूँ। तमाशबीनी की आदत है, लेकिन आज खुद तमाशा बन गया हूँ या बनाया गया हूँ। घटना घट चुकी है और इसे लौटाया नहीं जा सकता। इसे लौटाने की क्षमता तो भगवान में भी नहीं है जिसे इतना शक्तिशाली समझा जाता है। इसे भोगने के सिवाय और चारा ही क्या है।

मैं सच कहता हूँ कि मैं लेखक नहीं हूँ और यह विनय-भाव से नहीं अहंभाव से कह रहा हूँ। अगर पंजाब सरकार को मेरे साहित्यकार होने का वहम हो गया है तो मैं इसका दोषी नहीं हूँ। मैंने कभी भी लेखक बनने का अपराध नहीं किया है। यह हो सकता है कि मेरा अभिनन्दन एक असफल लेखक के नाते किया गया हो। प्रेमचन्द ने ठीक ही कहा था कि असफल लेखक ही आलोचक बन जाता है। इसके साथ अगर यह जोड़ दिया जाए कि असफल व्यक्ति ही दूसरों की आलोचना और निन्दा करने में रस पाने लगता है तो अनुचित न होगा। मेरे लेखक न होने का यह भी एक कारण है कि मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ--देखने में, रहन-सहन में, प्रतिभा में। लेखक असाधारण व्यक्ति होता है। इसके अतिरिक्त लेखक की तरह मैंने घाट-घाट का पानी भी नहीं पिया है। केवल नलके का पानी पीने वाला लेखक कैसे बन सकता है। अपने मकान से बहुत कम निकला हूँ। इस तरह मेरा जीवन सीमित रहा है, अनुभूतियों से वंचित। अब तक केवल चार घटनाओं का आभास है--एक पैदा होने की, दूसरी खेल-कूद में गाल पर गुल्ली लगने की, तीसरी स्कूटर से गिरने की और चौथी आज तमाशा बनने की। और पांचवीं घटना जब घटेगी तब उसका मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिनन्दन का उत्तर देते हुए डॉ० इन्द्रनाथ मदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

एहसास नहीं होगा। इसलिए अनुभूतियों के बिना लिखना कैसे हो सकता था और लेखक किस तरह बन सकता था। मुझ में न तो लेखक के गुण हैं और न ही लक्षण। अगर आज लेखक बनाया गया हूँ तो एक बैरंग लेखक कहा जा सकता हूँ जिस पर भाषा विभाग ने सरकारी टिकट चिपका दी है। लेकिन इस वहम को कब तक पाल सकता हूँ। मुझे आशा है कि सरकारी टिकट के उतरने में अधिक समय नहीं लगेगा। इस पर गोंद कम हुआ करती है। जब तक यह टिकट उतरती नहीं है तब तक मुझ पर उंगलियां उठती रहेंगी कि मैं साहित्यकार हूँ और यह साहित्यकार होकर भी खुद सब्जी खरीदता है, खुद हांडी पकाता है और खुद खा जाता है, यह लेखक होकर खुद फूल उगाता है और खुद इनको देखता और सूंघता रहता है। एक लेखक का असली काम तो लिखना और पढ़ना होता है। अब तो शायद यह विश्वास हो जायगा कि साहित्यकारों की पंक्ति में खड़ा होने का मेरा अधिकार नहीं है। मैं महामानव बनने के लिये अपनी मानवीयता को खोना नहीं चाहता हूँ।

अगर सौ नये पैसे सही कहा जाए तो मैं केवल एक पढ़ाने वाला हूँ और पढ़ाने के लिए थोड़ा पढ़ना-सोचना भी पड़ा है। अपनी सोच को साफ़ करने के लिये कभी-कभी लिखने की भूल अवश्य की है। वह इसलिये की मेरी बात की कड़ी आलोचना हो। मतभेद से बात स्पष्ट हो सकती है, या उलझ सकती है, या गिर भी सकती है। मुझे गुड़ की मिठास से करेले की कड़वाहट अधिक पसन्द है। अब तक मेरी दृष्टि को कड़ी आलोचना के लायक नहीं समझा गया है, मेरी बात को पढ़ने योग्य नहीं माना गया। मेरा जीवन मेरे स्टूडैंटस तक सीमित रहा है और वे मेरी कड़ी आलोचना से परहेज़ करते रहे हैं। मेरे छात्र ही मेरी ज़िन्दगी की सब से बड़ी दौलत हैं और यह चलने फिरने वाली दौलत है; हर साल बदलती रही है। इनकी अक्ल और शक्ल मेरे रीतेपन को भरती और खाली करती रही है। किन की अक्ल और किनकी शक्ल इसका अनुमान आप बेहतर लगा सकते हैं। इनको ही मैं अपना स्नेह देने की कोशिश करता रहा हूँ। इस तरह मेरा दायरा बहुत छोटा रहा है और मैं इससे असंतुष्ट भी नहीं हूँ। अगर मैं साहित्यकार समझा गया हूँ तो यह एक भ्रम है और भ्रम को दूर करना मेरे बस का रोग नहीं है।

इस अवसर पर स्नेह की गोंद से लेखक होने की सरकारी टिकट ही नहीं, सराहना के रंग से मोहर भी आपके सामने लग चुकी है। सब के स्नेह और सराहना का आभारी हूँ। स्नेह में सराहना तो अवश्य रहती है, लेकिन कभी-कभी सराहना में भी स्नेह होता है। लेकिन

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन सब से मेरी सहानुभूति है जिनको मेरी यह सराहना अखर रही हो। इसमें मेरा न दोष है और न ही परिश्रम। आप शायद मुझ से पते की बात सुनने की आशा लगाए बैठे हों। लेकिन मैं वह पहुँचा हुआ व्यक्ति नहीं हूँ जो संदेश देने का अधिकारी होता है। मैं तो स्वयं एक भटक रहा इन्सान हूँ जो किसी राह का खोजी भी नहीं रहा, जिसे किसी मंज़िल पर पहुँचने की आशा भी नहीं है। मुझे तो लगता है मानव की नियति अभिशप्त है और हर नये संदेश ने उसे धोका दिया है। एक ने कहा कि मानव की यह अन्तिम साधना है और इसके बाद वह अतिमानव या सुपर-मैन बन जाएगा। यह नहीं हुआ। एक और ने भविष्यवाणी की कि शोषित का यह आखिरी युद्ध है और इसके बाद शोषण का अन्त हो जायगा। इसका भी अन्त नहीं हुआ। एक और ने विश्वास दिलाया कि भारत में स्वाधीनता के बाद रामराज्य की स्थापना हो जायगी। वह भी आंखों से ओझल है। आज पुराने सपने टूट रहे हैं, विश्वास गिर रहे हैं। मेरे पास तो प्रश्न ही प्रश्न हैं, इनके उत्तर नहीं। आप उत्तर चाहते हैं, समाधान चाहते हैं, असमंजस की स्थिति से निकलना चाहते हैं। मैं स्वयं इस स्थिति में पड़ा हुआ हूँ। मुझे तो यह भी संदेह है कि सत्य को पाया भी जा सकता है या नहीं। पुराने सत्य को खोया अवश्य है। अगर किसी ने इसे पा लिया है तो मैं उसको मुबारकबाद देता हूं। यह ठीक है कि असमंजस की स्थिति को जीना बड़ा कठोर होता है, इसका सामना करना बड़ा कठिन होता है। किया क्या जाए? आज स्थिति भी गति हो रही है और यह पकड़ में नहीं आ रही है। इसलिये मेरे पास कहने को कुछ नहीं है, भुलावे में डालने के लिए कोई संदेश नहीं है। झूठ बोलने से भी थोड़ा परहेज़ करता हूँ। उपदेश सुनने और संदेश देने से चिढ़ है।

अब तो आपको विश्वास हो गया होगा कि मुझ में लेखक का एक भी गुण नहीं है। यह और बात है कि कद जितना छोटा पाया है, दिल उतना ही बड़ा। मेरे मित्रों ने आपस में साज़श करके आज मेरा तमाशा देखना चाहा है। इसलिये इनके चेहरों पर अपराध की रेखाएं हैं, इनकी आंखों में शरारती मुस्कराहट है। इन सब का नाम लना मित्रघात करना होगा। अब होनी तो हो चुकी है। इसलिये इसके परिणाम को स्वीकारना है। इस साज़श में किस सव्यसाची का हाथ है उसका नाम लिये बिना नहीं रह सकता। आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने अपराध को सहज भाव से स्वीकार भी कर लिया है। इसलिये सबकी स्नेह-सराहना का ऋण चुकाने के लिये यह

(शेष पृष्ठ २९ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० इन्द्रनाथ मदान

एम० ए०, पी–एच० डी०

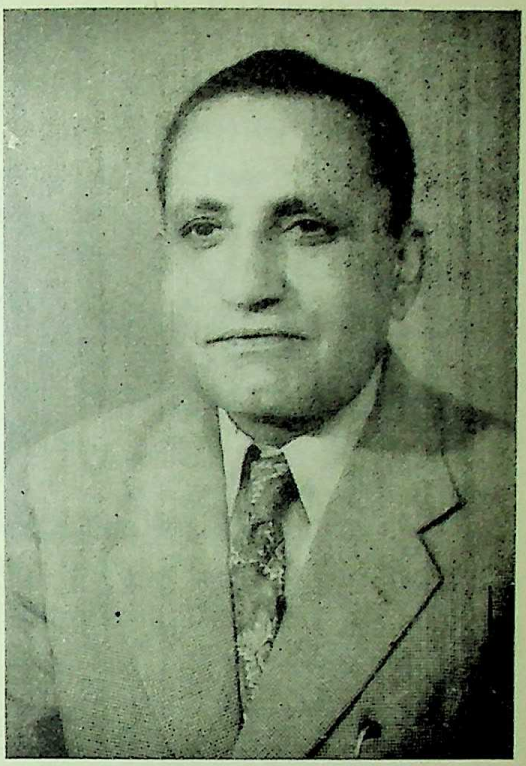

जन्म तिथि––१ मार्च, १९१४

जन्म स्थान––गिरोट, जिला सरगोधा

परिवारिक परिचय––

पिता–श्री अविनाशी राम मदान

माता––श्रीमती केसर बाई

छः भाई, चार बहनें।

२. शैक्षिक जीवन––

(अ) स्कूल, कालेज तथा विश्वविद्यालीय परीक्षाओं म छात्रवृत्ति प्राप्त की। इण्टर तथा बी० ए० (ऑनर्स) की परीक्षाओं में अनेक स्वर्ण एवं रजत पदक प्राप्त किए।

(आ) पञ्जाब विश्वविद्यालय की ओर से हिन्दी शोध प्रबंध पर पी–एच० डी० की उपाधि से सम्मानित किए जाने वाले प्रथम तथा भारत में इस विशिष्टता को प्राप्त करने वाले दूसरे छात्र।

३. अध्यापन कार्य––

दयाल सिंह कालेज, लाहौर में अंग्रेज़ी के प्राध्यापक, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पञ्जाब विश्वविद्यालय, जालंधर (१९५१–१९६१)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(सेक्टर, हिन्दी विभाग) पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़।

२० वर्ष से अधिक अवधि के लिए स्नातकोत्तर कक्षाओं को शिक्षण।

४. प्रकाशन--

१. मॉड्रन हिन्दी लिट्रेचर (अंग्रेज़ी)
२. प्रेमचन्द : एन इण्टरप्रेटेशन (अंग्रेज़ी)
३. शरत् चन्द्र चटर्जी : हिज माइंड एण्ड आर्ट (अंग्रेज़ी)
४. हिन्दी कलाकार (हिन्दी कवियों का मूल्यांकन) (हिन्दी)
५. आलोचना और काव्य (हिन्दी)
६. आधुनिक कविता का मूल्यांकन (हिन्दी)
७. आज की हिन्दी कहानी (हिन्दी)
८. उपन्यासकार अश्क (हिन्दी)
९. प्रेमचन्द : एक विवेचन (हिन्दी)
१०. शरत् चन्द्र : चिन्तन और कला (हिन्दी)
११. प्रेमचन्द : चिन्तन और कला (हिन्दी)
१२. तुलसीदास : चिन्तन और कला (हिन्दी)
१३. सुगम तथा शास्त्री संगीत (सुगम तथा आलोचनात्मक निबन्ध) (हिन्दी)

५. विशेष अध्ययन--

आधुनिक हिन्दी साहित्य

६. अन्य विशिष्टताएं--

(अ) सदस्य, इंडियन पी० ई० एन
(आ) सदस्य, पेनल केन्द्रीय साहित्य अकादमी
(इ) सदस्य, भाषा सलाहकार-बोर्ड-पञ्जाब

७. प्रवृत्ति एवं रुचि--

१. हिन्दी भाषा तथा साहित्य का अध्ययन।
२. आधुनिक हिन्दी साहित्य पर विश्वविद्यालीय अध्यापकों के व्याख्यानों का आयोजन।

८. पता-- ३१/सी, सैक्टर-१८/बी, चण्डीगढ़

पी० एल० चावला
हिन्दी विभाग, पटियाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खरी बात कहने का धनी

सूर्य भानु

लिखना तो वैसे भी कठिन है और जब किसी अपने के बारेमें लिखा जाय तब मानसिक बाधाओं का एक तन्तु जाल आच्छादित हो जाता है कि इसमें किस बात की चर्चा हो और किस बात की नहीं, क्योंकि प्रिय की सारी बातें जानी पहिचानी हैं किसको लिया जाय और किसको छोड़ा जाय। यही बात डा० इन्द्रनाथ मदान के विषय में चरितार्थ होती है।

डा० मदान नें अभी कुछ समय हुए एक पुस्तक "अश्क : एक रंगीन व्यक्तित्त्व" लिखी थी किन्तु उन्हें सम्भवतया अपने बारे में इस बात का पता न था कि कोई उनके भी रंगीन व्यक्तित्त्व पर लिखेगा। डा० मदान से मेरा परिचय आज का नहीं बड़ा पुराना है। लाहौर, दिल्ली, और जालन्धर तीनों स्थानों पर मैंने मदान को बड़े निकट से देखा है। डा० मदान विभाजन से पूर्व अंग्रेज़ी के प्राध्यापक थे, स्वाधीनता के पश्चात् क्योंकि अंग्रेज़ भारत से चले गये इस कारण डा० मदान ने अंग्रेज़ी को छोड़ कर हिन्दी पढ़ाने का कार्य प्रारम्भ किया और उसी कार्य को वह आज सम्मान के साथ कर रहे हैं। डा० मदान का यह परिवर्तन अपने में अनूठा है।

डा० मदान का जीवन नवीनता एवं अद्भुतता का एक प्रतीक है। आजसे २५ वर्ष पूर्व डा० मदान ने सन् १९३९ में हिन्दी में पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की थी, उस समय किसी को भी यह आशा न थी कि कभी भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी हो सकेगी। अपने समय में डा० मदान संयुक्त भारत में हिन्दी के दूसरे डाक्टर थे और पंजाब में सर्वप्रथम।

डा० मदान का हिन्दी में एक स्वतन्त्र आलोचक के नाते विशेष सम्मान है। नया साहित्य, विशेषकर काव्य, कथा-साहित्य आलोचना के क्षेत्र में डा० मदान ने अपना स्थान बनाया है। यह जीवन में सदैव खरी बात कहने के आदी रहे हैं। चाहे वह बात साहित्य के प्रति कही जाय या व्यक्ति के बारे में। अपनी बात को एक बार तो वे उच्च स्वर में सभी के सम्मुख प्रस्तुत कर देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९५० में मैं डी०ए०वी० कालेज, जालन्धर का प्रिंसिपल बन कर आ गया था। सन् १९५१ में इसी कालेज में पंजाब विश्वविद्यालय का एम०ए० हिन्दी विभाग था जिसके अध्यक्ष मदान थे। उस समय मदान साहब से विशेष रूप से मेल होता रहता था। सन् १९५२ से १९५९ तक मैं और डा० मदान हिन्दी बोर्ड के सदस्य रहे हैं। उस समय हम दोनों में काफी मेल-मिलाप रहता था। मैंने उन्हें दोनों स्थानों पर सदैव निर्भीक रूप में देखा। मैं डा० मदान की एक आलोचक के रूप में एवं उनके मानवीय गुणों की कद्र करता हूँ। वह कभी किसी वस्तु के प्रति लगाव नहीं रखते। मैंने कभी भी उनके मुख पर मलीनता अथवा उदासी नहीं देखी, सदैव मुस्कराहट ही मुस्कराहट पाई है। यही उनकी रंगीनता और विशेषता है।

सन् १९६०–६१ में आकाशवाणी जालन्धर से कुछ व्यंग्यात्मक वार्ताओं का प्रसारण हुआ था। डा० मदान की उस समय सम्भवतया ६ या ७ वार्ताएं प्रसारित हुई थीं। जब तो उनकी यह वार्ता "सुगम तथा शास्त्रीय संगीत" के नाम से पुस्तक रूप में भी आ गई है। डा० मदान अभी तक चिरकुमार सभा के सदस्य हैं और वे इस सभा के आजीवन सदस्य बने रहेंगे ऐसा उनका निर्णय इस समय तक तो है, कल की कौन जाने? उन्होंने अपनी एक वार्ता जो आकाश वाणी से "कही न जाय" में कहा है, "एकाकी जीवन अनुभव का विषय है बहस का नहीं, करनी की बात है कथनी की नहीं"। "विवाहित जीवन बद है और एकाकी बदनाम" आपके इस कथन से बात स्पष्ट हो जाती है कि वे अपनी बात को कितने सशक्त स्वर में कह सकते हैं।

डा० मदान ने बी०ए० तक संस्कृत पढ़ी है और एम०ए० अंग्रेजी में किया है। वे भारतीय तथा पाश्चात्य दोनों दर्शनों के सही पारखी हैं। प्रेमचन्द, शरत्चन्द्र, जयशंकर प्रसाद पर उनकी स्वतन्त्र एवं सम्पादित पुस्तकें हैं जिनका हिन्दी में अपना स्थान है और पाठकों के लिए वह नए विचार देती हैं। अभी हाल में एक लेख संयोगवश "कालिदास : सौन्दर्य के कवि" पढ़ने का अवसर मिला। कारण संस्कृत से मेरा भी बचपन से लगाव है और जब भी कुछ समय मिल जाता है तो पढ़ने का लाभ उठाता हूँ। लेख पढ़ कर ऐसा प्रतीत हुआ कि मानों मैंने समस्त कालिदास ग्रन्थावली पढ़ डाली है। लेख में सौन्दर्य का सजीव चित्रण था। इस लेख को पढ़ कर मेरे मन में शंका हुई कि अंग्रेजी का लैक्चरार हिन्दी का रीडर तो बन गया है, अब कहीं संस्कृत का प्रोफैसर न बन जाय।

संक्षेप में डा० मदान के प्रति इतना ही कहता हूँ कि आज जो पंजाब का भाषा विभाग डा० इन्द्रनाथ मदान का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिनन्दन करना है यह सब से बहुत समय पहले पूर्व हो जाना चाहिए था। यह डा० मदान का अभिनन्दन नहीं अपितु एक क्रांतिकारी का अभिनन्दन है जिसने विदेशी केंचुली को उतार कर भारतीयता का चोला

डा० मदान जीवन-पथ, साहित्य और समाज में इसी प्रकार उन्नत-पथ की ओर अग्रसर होते जाएँ, यही मेरी उनके प्रति शुभ कामना है।

उरकुलपति

कुरुक्षेत्र विशविद्यालय, कुरुक्षेत्र

● ● ●

(पृष्ठ २४ का शेष)

थैली, जो मुझे भेंट में मिली है, सव्य-साची को सौंपना चाहता हूँ ताकि यह हिन्दी के काम आ सके। हिन्दी के लिये पहले जब साधन नहीं थे तब साधना थी, लेकिन अब जब साधन हैं तो साधना रूठ रही है। अन्त में मेरी एक छोटी सी चाह भी है। इस अवसर की स्मृति को कायम रखने के लिए खाली थैली मुझे लौटा दी जाए और खालीपन से मेरा मोह भी है।

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर मदानः कुछ संस्मरण

उपेन्द्र नाथ 'अश्क'

अपनी रेडियो वार्ताओं को 'सुगम तथा शास्त्रीय संगीत' नामक संग्रह में संकलित करते हुए 'व्यक्तिगत' के शीर्षक से डाक्टर इन्द्रनाथ मदान ने लिखा है--

.....''जब इन लेखों या वार्ताओं को आकाश वाणी ने प्रसारित किया था, तब इने-गिने मित्रों तथा कुछ शत्रुओं के अतिरिक्त किसी ने भी इन्हें सुनने का कष्ट नहीं उठाया था ।....योजनाओं के इस युग में कागज़ की भी कमी नहीं है । जब तरह-तरह की पुस्तकें छप रही हैं, तब एक बेकार पुस्तक और छप जाये तो क्या बुरा है ? इसलिये इन लेखों को प्रकाश में लाना तो मैंने स्वीकार कर लिया, लेकिन किस नाम से, यह निश्चित करना मुश्किल हो गया । तब मेरे एक मित्र ने मुझे सुझाया कि सन्तान जितनी कुरूप होती है, उसे नाम उतना ही सुरूप दिया जाता है । मेरा मित्र भी कितना बुद्धिमान है और कलियुग में इस तरह के मित्र का मिलना वास्तव में वरदान है ।''.....

'आलोचना' दिल्ली के जनवरी १९६४ के अंक में 'यशपाल की कहानी कला' नामक निबन्ध डाक्टर मदान ने यों शुरू किया है :

'अभी तक स्वतन्त्र रूप से यशपाल की कहानी-कला का मूल्यांकन नहीं हुआ है । प्रेमचन्द का कहानी-साहित्य भी उनके उपन्यास साहित्य अपेक्षा प्रायः उपेक्षित रहा है । इसका एक कारण तो यह है कि उपन्यास बड़ा समझा जाता है और कहानी छोटी । और छोटे को उपेक्षा की दृष्टि से आंकना आलोचक का जन्म-सिद्ध अधिकार रहा है । इसके अतिरिक्त कहानी 'छोटा' न होकर छोटी भी है । इसलिये भी अधिक उपेक्षित रही है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यक्षीय भाषण देते हुए प्रो० हुमायूं कबिर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आज उपेक्षित को उठाने का युग है, इसलिये मैंने भी उचित समझा है कि यशपाल की कहानियों को आँकने का प्रयास किया जाय।....."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन पंक्तियों को पढ़ कर लगता है कि इनका लेखक हँसोड़, खुश-मिज़ाज और खुली तबियत का है और अपने गम्भीर लेखों को भी ऐसे प्रस्तुत करता है कि क्षीण-सी मुस्कान होठों पर आ जाय। खुश मिज़ाज के अतिरिक्त उसके कुछ और होने की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

लेकिन मदान साहब का पहला इम्प्रेशन मेरे मन पर कुछ दूसरा ही हुआ। मुझे वे एक तकल्लुफ-पसन्द, रूखी तबियत और साहबी मिज़ाज वाले व्यक्ति लगे और वर्षों तक मैं इसी इम्प्रेशन को पाले रहा। यदि छः महीने पहले सात-दस दिन मुझे चण्डीगढ़ में उनके यहाँ रहने और उन्हें निकट से देखने का संयोग प्राप्त न होता तो मैं ज़िन्दगी भर यही प्रभाव मन पर लिये रहता।

वास्तव में पहला इम्प्रेशन ही स्थायी इम्प्रेशन होता है और डा० मदान का पहला इम्प्रेशन मेरे मन पर पड़ा, वह अपने को लिये-दिये रहने वाले, कुछ ऐसे ही साहब मिज़ाज अध्यापक का था। पच्चीस-छब्बीस वर्ष पहले की बात है, मैं लॉ कर चुका था, पर चूंकि कचहरी न जाता था, और फ्री लांसिंग करता था, इसलिये सूट-बूट में लैस घूमने के बदले नेकर कमीज़ अथवा तहमद-कुर्ते, अथवा धोती कुर्ते में घूमता था। तभी मैंने पहली बार मदान साहब का नाम सुना। उन्होंने शायद प्रेमचन्द पर अंग्रेज़ी में एक पुस्तक लिखी थी, जिस पर शायद उन्हें डाक्ट्रेट की उपाधि मिली थी। मेरे एक मित्र मदन गोपाल उस पुस्तक की बड़ी चर्चा करते थे। वे स्वयं प्रेमचन्द पर शोध कार्य कर रहे थे। उन्हीं से उस पुस्तक का उल्लेख सुन कर मैं वह पुस्तक खरीद लाया था। इस बात का श्रेय पंजाब विश्वविद्यालय और डा० मदान को मिलना चाहिए कि उन्होंने एक जीवित लेखक के कृतित्व को अपने शोध का विषय बनाया और उस पर सब से पहले पुस्तक लिखी—लिखवायी। तब इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मदान साहब निरन्तर उस परम्परा को बढ़ा रहे हैं और धीरे धीरे दूसरे विश्वविद्यालयों में भी जीवित लेखकों पर शोध-कार्य होने लगा है।

मेरे मित्र मदन गोपाल को प्रेमचन्द के पत्र इकट्ठे करने का शौक था। मदान साहब ने चूंकि प्रेमचन्द पर पुस्तक लिखी थी, इसलिये उनके पास प्रेमचन्द के काफी पत्र थे। इसी सिलसिले में मदन गोपाल उनसे मिला था। प्रेमचन्द से मेरा भी पत्र-व्यवहार वर्षों रहा था, पर मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी मूर्खता में [illegible] थे । जो दो चार पत्र मेरी फ़ाइल में थे उनकी प्रतिलिपि मदन गोपाल ले गए । यों कहूँ कि मदन गोपाल से मेरी मैत्री उनके उसी अभियान के सिलसिले में हुई थी तो ग़लत न होगा । उन्होंने मेरा परिचय मदान साहब से कराया था या किसी और ने, मुझे कुछ याद नहीं । मेरी याद के पर्दे पर एक साँझ अंकित है, जब मैंने डा० मदान के यहाँ शाम को खाना खाया ।.....गोल मेज़, उस पर बढ़िया मेज़ पोश, मेरे अतिरिक्त मदान साहब का एक और मित्र.....मुझे उस शाम की कोई बात याद नहीं--सिवा खाना खाने के ढंग और सालन के डोंगों के, जो एक दूसरे के बाद आते रहे । जैसे होटल में पहले सूप आता है, फिर बारी-बारी दूसरे सालन, इसी प्रकार पहले सूप आया--मुझे यह भी याद है कि टमाटर का सूप था--लाल और गाढ़ा--मैं किचन के फर्श पर बैठ कर थाली में खाने वाला निम्न मध्यवर्गीय--तब मुझे वह सब कुछ अजीब और दूर का-सा लगा था । होटल में जाकर वैसे खाना बुरा नहीं लगता, लेकिन घर में भी होटल की तरह खाना--बहरहाल तब वह भी मेरी समझ के बाहर की बात थी । मदान साहब कुछ ज़्यादा बातें भी नहीं करते थे, कुछ मैं भी हीन-भाव से ग्रसित था । डाइनिंग टेबल पर खाने का अभ्यास न था । डर [illegible] रहता था कहीं कुछ गड़बड़ न हो जाय.....खाना खाकर हम सजे-बजे ड्राईंग-रूम में आ गये । और मदान साहब आराम कुर्सी पर बड़े इत्मीनान से बैठ कर हुक्का पीने लगे.....जी हां हुक्का ।..... कभी-कभी सोचता हूँ कि मदान साहब सचमुच हुक्का पी रहे थे या मेरी कल्पना से यह ईजाद कर लिया है --लेकिन मुझे याद है, उस सजे-बजे ड्राईंग रूम में, उस साहबियत में वह हुक्का मुझे खला था.....फिर जब वर्षों बाद मैंने उन्हें जालन्धर के मॉडल टाउन में देखा तो मुझे हुक्का कहीं दिखायी नहीं दिया। लेकिन तब एक दूसरी बात दिखायी दी, जिससे मुझे विश्वास हो गया कि ज़रूर वे हुक्का पीते होंगे ।

लेकिन माडल टाऊन की उस मुलाकात तक तो वर्षों का व्यवधान है और उस बीच उनसे जो एक दो मुलाकातें हुईं उनकी स्मृति कुछ वैसी सुखद नहीं है ।

यों मदान साहब से फिर कभी मुलाकात ही न होती, यदि १९४८ में यक्ष्मा के चंगुल से निकल कर मैं इलाहाबाद न आ गया होता और पुनर्वास के सिलसिले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

में हमें हिन्दुस्तान के तूल-अर्ज़ को नापना न पड़ता । दस-बारह साल पहले मेरी पत्नी एक काम के सम्बन्ध में जालन्धर या होशियारपुर गयी । आकर उसने बताया कि वह मदान साहब से भी दो मिनट को मिली थी-- उन्होंने काम कर देने का वादा किया है, इससे ज्यादा उनसे कुछ बात नहीं हुई ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौशल्या ने जिस तरह इस घटना का उल्लेख किया, उससे मदान साहब की रूखाई के बारे में मेरी पुरानी धारणा कुछ पक्की ही हुई । इसके दो-तीन वर्ष बाद जब मैं स्वयं जालन्धर गया तो इस धारणा पर एक और परत चढ़ गयी ।....जालन्धर में मेरा पुरखों का मकान है, पर उन दिनों उनमें कोई न रहता था । मेरा छोटा भाई कम्युनिस्ट पार्टी में काम करता था और उसी के दफ्तर में सोता था । मुझे जालन्धर एक-दो दिन के लिये जाना था । मदान साहब से भी मिलना था । सो मैंने उन्हें लिखा कि मैं दो-चार दिन के लिये आ रहा हूँ । और आपके यहाँ ठहरूँगा ।

मदान साहब से मेरा घनिष्ठ परिचय नहीं था । वर्षों पहले एक साँझ उनके यहाँ खाना खाया था अथवा लाहौर में उनसे कभी-कभार 'हिन्दी समाज' अथवा 'पंजाब लिट्रेरी लीग' की बैठकों में सलाम-दुआ हो जाती थी । वे उन्नति करते हुए अपने विभाग के अध्यक्ष हो गये थे, हिन्दी बोर्ड के मैंबर थे और मैं एक स्वतन्त्र लेखक, जो सारी जमा-जत्था अपनी बीमारी में लगा कर खाली जेब इलाहाबाद आ गया था और पुनर्वास के प्रयास में था । अनुभव बड़े कटु थे और जरा सी बात से ठेस लग जाती थी और उसी कारण स्वभाव से कुछ संकोच भी पैदा हो गया था ।...मदान साहब को लिख तो दिया था कि मैं आपके यहाँ ठहरूंगा, लेकिन मन में संकोच ज़रूर था । इतना समय नहीं था कि उनके उत्तर की प्रतीक्षा करता, इसलिये चल दिया । अपने छोटे भाई को मैंने चिट्ठी लिख दी और पहुँचने की तिथि का पता दे दिया ।

गाड़ी साढ़े आठ बजे शाम जालन्धर पहुँची । भाई स्टेशन पर मौजूद था । उसने ठहरने के सम्बन्ध में पूछा तो मैंने कहा, "मदान साहब को पत्र लिखा था । उनसे मिल लेना चाहिए । कहीं वे प्रतीक्षा न करते हों ।"

....वे उन दिनों कहीं सिविल लाइन में रहते थे । भाई को उनके मकान का पता था, सो ताँगे पर सामान लादे हम स्टेशन से सीधे उनके मकान पर पहुंचे । ठीक तो याद नहीं, पर बड़े पोस्ट आफिस के समीप कहीं वे रहते थे । ९ बजे के करीब हम उनके यहाँ पहुँचे । जाने उन्हें मेरा पत्र नहीं मिला था, जाने उनके यहां कुछ दूसरे मेहमान थे, जो भी हो, हम ताँगा बाहर सड़क पर रोक कर उनके अहाते में गये और नौकर से कहलवाया तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काफ़ी देर प्रतीक्षा के बाद मदान साहब आये। उनके चेहरे पर न मुस्कान, न आव-भगत का कोई चिह्न! हाथ मिला कर और कुछ उखड़े हुए शब्दों में अपने उसी शाम आने की बात कह कर मैं चला आया। न उन्होंने सामान के बारे में पूछा, न मैंने बताया--छोटे भाई की उपस्थिति के कारण मुझ कुछ अतिरिक्त ग्लानि हुई .....।

उन दिनों हिन्दी बोर्ड की मीटिंग हो रही थी। वे शायद कन्वीनर थे और परेशान थे। या शायद उनके यहाँ काफ़ी मेहमान थे और वे व्यस्त थे। मैंने कभी उनकी उस रुखाई का कारण नहीं पूछा। इलाहाबाद से जालन्धर को जाते हुए मैं दिल्ली में एक दिन को रुका था और मैंने अपने एक मित्र से मदान साहब को पत्र लिखने की बात कहते हुए आशंका प्रकट की थी कि जाने मदान साहब मुझे पहचानते भी हैं कि नहीं? तब उस मित्र ने कहा था--"अरे अश्क जी, साहित्य से सम्बन्ध रखने वाला कोई ऐसा भी है, जो आपको न पहचाने और आपको अपने घर पाकर गर्व अनुभव न करे .....?"

अब सोचता हूँ कि बिना किसी प्रकार की आत्मीयता अथवा घनिष्ठता के जो मैंने मदान साहब को यह लिख दिया कि मैं आ रहा हूँ और आपके यहां ठहर रहा हूँ तो उसमें अचेतन रूप से अपने प्रसिद्ध लेखक होने और तज्जनित अहं ही का हाथ था।....आदमी का अहं भी उसे कई बार कैसी स्थितियों में डाल देता है? उसे कितना हास्यास्पद बना देता है?.....अहं में अपार शक्ति है, उसके बिना आदमी में और मिट्टी के लौंदे में कोई अन्तर नहीं, पर अच्छा यही है कि आदमी अपनी बिसात समझता हुआ, अपने अहं पर हावी रहे, लेकिन कभी ऐसा भी होता है कि अहं आदमी पर हावी हो जाता है और उसकी सोच-समझ की शक्तियों को सलब कर देता है। तभी आदमी हास्यास्पद हो उठता है। यद्यपि संदर्भ से किंचित् परे है, पर इसी सिलसिले में मुझे एक घटना याद हो आई है, जब अपने अहं के अधीन मैंने ऐसी ही हास्यास्पद बात की थी। और मज़े की बात यह है कि मेरा वही छोटा भाई उस समय भी उपस्थित था.....।

कुछ वर्ष पहले मैं अपनी पत्नी के साथ दिल्ली गया। वापसी पर मैंने छोटे भाई से कहा कि जनता में नीचे की दो सीटें बुक करा दो। उसने थरी टायर डिब्बे की सीटें बुक करा दीं और आकर बताया कि नीचे की सीटें नहीं मिलीं, बीच की मिली हैं। मैं बीमार आदमी हूँ। दो-एक बार रात मुझे उठना पड़ता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर बीच की सीट पर लेटा हुआ आदमी यदि सोते में कहीं भूल जाए कि वह बीच की सीट पर लेटा है तो उठते समय उसका माथा फूट जाना आवश्यम्भावी है । मैं दो तीन बार पहले माथा फोड़वा चुका था । मैंने भाई से कहा, "तुमने यार, किसी तरह नीचे की सीटें ली होतीं । मेरा नाम ले दिया होता । हर जगह कोई न कोई मेरा पाठक मिल जाता है । किसी बाबू ने मेरी कोई कहानी या नाटक सुना या पढ़ा होता है और वे सदा मदद कर देते हैं ।"

"उनके पास नीचे की सभी सीटें बुक्ड थीं ।" भाई ने सफ़ाई दी ।

"अरे यार, तुम मेरा नाम तो लेते" मैंने कहा, "खैर, वहाँ पहुँच कर देखेंगे, कोई परिचित मिल गया तो सीटें बदल लेंगे ।"

जब हम गाड़ी पर पहुँचे तो भाई ने गाड़ी के डिब्बे पर चिपका रिज़र्वेशन का नोटिस पढ़ कर प्रसन्नता से कहा, "लीजिए भाई साहब, लोअर बर्थ ही मिल गयी है ।"

"मैंने कहा न था !" मैंने वहीं से कहा, "ज़रूर बाबू मेरा भक्त होगा, उसने मेरी कोई कहानी या नाटक या उपन्यास ज़रूर पढ़ा होगा ।"

और मैंने गर्व से अपनी पत्नी की ओर देखा और सोल्लास गाड़ी में जा चढ़ा और हम निचली सीटों पर बिस्तर जमाने लगे ।

निश्चय ही मेरी यह बचकानी गर्वोक्ति मेरे भाई को अच्छी नहीं लगी । क्योंकि एक हल्की-सी परेशान स्मिति उसके होठों पर खेल गयी । निमिष भर के लिये मैंने उसे देखा, पर झेंपने के बदले अपनी रौ में वैसे कुछ और किस्से सुनाने लगा ....जब जयपुर में सैक्रेटेरियट की रिसेप्शनिस्ट मेरा नाम सुनकर खड़ी हो गयी थी और हाथ जोड़ कर उसने मुझे नमस्कार किया था.....या मैं जब मंसूरी में रजिस्ट्री कराने डाकखाने पहुंचा था तो रजिस्ट्री करने वाला क्लर्क लिफ़ाफ़े पर मेरा नाम देख कर कह उठा था—"आप ही उपेन्द्र नाथ अश्क हैं ?...."

मैं किस्से सुना रहा था कि इतने में सिक्ख कंडक्टर गार्ड आ गया और उसने चार्ट पर निगाह डाल कर पूछा, "आप ही फूकेन्द्र नाथ आशिक हैं ।"

"फूकेन्द्र नाथ !"

तब उसी हल्की-सी मुस्कान के साथ मेरे छोटे भाई ने कहा, "बाहर चार्ट पर भी यही नाम लिखा है ।"

और सिवा अपनी झेंप को पुरज़ोर ठहाके में दबाते हुए कंडक्टर गार्ड को टिकटें दिखाने के, मेरे सामने कोई चारा न रह गया.....।

और शायद उसी अहं के अधीन मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान लिया था कि मदान साहब से जाने

लिख देना काफ़ी है । मदान साहब बड़े आदमी हो गए हैं । तो मैं क्या छोटा रहा हूँ । चेतन रूप से तो नहीं, पर अचेतन रूप से यह भाव अवश्य मेरे मन में रहा होगा । इसके अलावा मोहन राकेश ने, जो हमारे साझे मित्र हैं और जो डाक्टर मदान के साथ शिमला रह चुके थे, उनके स्वभाव की बड़ी प्रशंसा की थी और यह भी बताया था कि उन्हें 'गिरती दीवारें' पसन्द हैं और उनकी राय है कि उसका एक संक्षिप्त संस्करण भी होना चाहिए और मैं अजाने ही अपने को उनके निकट मान बैठा था । उनकी इच्छा अनिच्छा को जानना भी मैंने ज़रूरी नहीं समझा था ।.....

बहरहाल ख़ासा अस्फ़ीत (Deflated) होकर मैं मदान साहब के अहाते से बाहर निकला । भाई के होठों पर वही हल्की-सी मुस्कान होगी इसका मुझे पूरा विश्वास है, इतना ही शुक्र है कि अंधेरा था, न मुझे उसके होठों की मुस्कान दिखायी दी और न उसे मेरी झेंप .....।

मदान साहब से जालन्धर में मेरी एक-दो बार और भेंट हुई पर उनकी रुखाई और किंचित अहम्मन्यता के सम्बन्ध में मेरा पुराना विश्वास न केवल बना रहा, वरन् उसमें कुछ वृद्धि ही हुई ।

[illegible] में कश्मीर से लौटते हुए मैं राकेश के यहाँ मॉडल टाउन में रुका । मदान साहब राकेश के घर के पीछे एक लम्बी-सी ग्राउण्ड के पार छोटे से बंगले में रहते थे । दूर से उनकी छोटी-सी बँगलिया बड़ी अच्छी लगती थी । मैं और राकेश रात भर बातें करते रहे थे, तड़के सोये । साढ़े आठ बजे उठे कि मदान साहब आ गये । वहीं दरी पर फसकड़ा मार कर बैठ गये और हम दोनों पर हल्के-हल्के व्यंग्य कसने लगे । अपने पुराने परिचित मदान साहब और राकेश के कमरे में बैठे इन मदान साहब में मुझे बड़ा अन्तर लगा ।.....

मैं उस प्रवास में उनसे कई बार मिला। उनके यहाँ भी गया । उन्हें काम करते भी देखा और यद्यपि उनकी तबियत की किंचित् रुखाई के सम्बन्ध में मेरी धारणा उतनी नहीं बदली, पर उनकी साहबियत का कुछ वैसा रोब मुझ पर नहीं रहा । हुक्का मैंने उनके कमरे में नहीं देखा, पर जिस प्रकार वे काम करते थे, उसे देख कर मुझे लगा कि ज़रूर कभी हुक्का भी पीते होंगे ।.....

सितम्बर का शुरू था, पर गर्मी अभी काफी थी । एक दिन मैं मदान साहब के यहाँ गया तो वे केवल पायजामा और बनियान पहने अपनी चारपाई पर फसकड़ा मारे किसी पुस्तक को दूसरे संस्करण के लिये तैयार कर रहे थे । हम जाकर बैठ गये तो उन्होंने काम एक ओर रख दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने पूछा तो मालूम हुआ कि जो पुस्तक अभी कुछ ही महीने पहले निकली है, उसी को दूसरे संस्करण के लिये रिवाइज़ कर रहे हैं । उनका तरीका यह है कि एक-से चौड़े शीट लेकर उन पर पुस्तक का पन्ना चिपका लेते हैं ताकि काट -छाँट को स्थान मिल जाए । पुस्तक छपते ही दो पुस्तकों की सहायता से संशोधन-परिवर्धन के लिए ऐसी कापी तैयार कर लेते हैं और जब और कुछ करने को मन नहीं होता तो इसी काम में लगे रहते हैं ।

हमारे बैठने पर वे उठ कर बाथ रूम में गये और स्वयं दो पान बना लाये । एक उन्होंने काफ़ी तमाखू भर कर स्वयं मुंह में रखा, दूसरा मुझे पेश किया ।

इधर मुझे भी पान में तमाखू खाने की आदत हो गयी थी । मैंने कहा, "बुरी आदत है ।"

"आदत तो रोटी की भी बुरी है ।" मदान साहब ने बेपरवाही से हँसते हुए कहा ।.....

उस समय तो मुझे बड़ा अजीब-सा लगा था, पर बाद में मालूम हुआ कि यह बेपरवाही और व्यंग्य उनके स्वभाव तथा शैली का एक अविभाज्य अंग है । वे अपने ऊपर भी व्यंग्य कसते रहते हैं और जो व्यक्ति अपने पर व्यंग्य कस सकता है, वही दूसरों पर भी उसकी धार आज़मा सकता है ।

.....'सुगम और शास्त्रीय संगीत' को समर्पित करते हुए उन्होंने लिखा है :—

'स्वयं को समर्पित जिसे किसी अन्य से कम आशा है ।'

....और जब वह पुस्तक उन्होंने हमें भेंट की तो लिखा :—

"उपेन्द्रनाथ और कौशल्या अश्क को
सस्नेह
मेरी शैली का परिचय पाने के लिए जिसके बारे में मुझे सन्देह है ।"

मदान साहब संक्षिप्त पत्र लिखते हैं, लेकिन संक्षिप्त-तम पत्रों में भी एक आध चुटकी ले लेते हैं :—

अपने एक कार्ड में चण्डीगढ़ में अपने होने की सूचना देते हुए उन्होंने लिखा :

....."मैं चण्डीगढ़ में ही विराजमान हूँ । मदान को मैदान ही फलता है ।"

राकेश तीसरी बार दिल्ली से उखड़ा तो उन्होंने लिखा :

....."राकेश जीवन मुक्त भी है और जीवन ग्रस्त भी । वह ज़िन्दगी ही में जीनियस हो गया है ।"

.....मेरी अर्ध शती के अवसर पर 'साहित्य-संगम' जालन्धर की एक सभा में उन्होंने कहा :

"अश्क को मैं सिद्ध साहित्यकार मानता हूँ । उसकी सिद्धि इसमें नहीं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उसने साहित्य को सिद्ध किया, बल्कि उसकी सब से बड़ी सिद्धि यह है कि उसने कौशल्या को सिद्ध कर लिया।".....

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पान की गिलौरी मुंह में रख कर वे फिर चारपाई पर फसकड़ा मार कर जा बैठे।

उस सजे-बजे कमरे में उन्हें यों चारपाई पर फसकड़ा मारे बैठ देख कर मुझे विश्वास हो गया कि जब मैं पहली बार उनसे मिला था तो ज़रूर मैंने उन्हें हुक्का पीते देखा होगा।

इस बीच में जब-जब मैं जालन्धर गया, विशेषकर राकेश अथवा अपने छोट भाई से मिलने, मैं मदान साहब से ज़रूर मिला। वह पहले की दूरी कुछ कम हो गयी। ज्यों-ज्यों मैं उन्हें देखता उनसे बातें करता, कभी मुझे उनमें आत्मकेन्द्रित व्यक्ति के दर्शन होते, कभी ज़िन्दगी की यथार्थताओं को देख जान कर उन पर व्यंग्य से हँस देने वाले अनास्थावादी के—कभी वे खासे रूखे लगते, कभी फक्कड़! लेकिन उनसे मिलना, उनसे बातें करना, अच्छा लगने लगा, और कुछ राकेश की समस्याओं के कारण और कुछ अपनी समस्याओं में उनसे राय लेने के कारण मैं उनके निकट हो गया। यहां तक कि मैं गत वर्ष जब अगस्त में कसौली से उतरा तो दस दिन उनके यहां ठहरा।

मदान साहब सैक्टर १८-बी के ३१-सी बंगले में रहते हैं। छोटा-सा सुन्दर बंगला है। कुछ ही वर्ष पहले उन्होंने बनवाया है। पोर्च, बरांडा, बैठक, सोने पढ़ने का कमरा, खाने का कमरा, किचन और दो स्नानागार—बस इतने ही कमरे हैं। पिछली ओर का बरामदा ऐसे बना है कि चाहो तो कमरे में परिवर्तित हो जाय, चाहो तो खुला हवादार बरामदा बना रहे। जिस कमरे की दीवारों में पुस्तकों की अलमारियां फिट हैं, उसी में उनकी चारपाई लगी है। एक तख्त भी वहां रखा है, जिस पर गाव तकिये लगे हैं। बैठने को हल्की कुर्सियां भी हैं। मदान साहब इसी कमरे में काम करते और पढ़ते लिखते हैं। दूसरा कमरा सजा-सँवरा पड़ा रहता है, उसके साथ भी बाथ रूम संलग्न है, वह मेहमानों के काम आता है।

अपने दस दिन के उस प्रवास में मुझे मदान साहब के व्यक्तित्व के कुछ पहलुओं को निकट से देखने का अवसर मिला।

मदान साहब ने चूंकि पचास की उम्र तक विवाह नहीं किया, उन्हें प्रायः नौकर के सहारे रहना पड़ता है, इसलिये उन्होंने अपने जीवन का दर्शन अपनी जरूरतों तथा सुख आराम को सामने रख कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बनाया है ।— गर्मियों में उन्हें बनियान पायजामा पहने बैठे काम करना पसन्द है। उनका कोई छात्र आये या छात्रा, वे कमीज़ नहीं पहनते । जिसे यह नापसन्द हो, वह उन्हें यूनिवर्सिटी में मिले घर न आये, ऐसा वे चाहते हैं ।

खाने का समय उनके यहां नियमित है। उनका जो मेहमान समय से नहीं आ सकता, वह खाना यदि बाहर खा ले तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं, बल्कि उससे ऐसा कह देने में भी उन्हें कोई संकोच नहीं । अपनी इस आदत का ज़िक्र करते हुए उन्होंने एक दिन अपने बहनोई का उल्लेख किया । वे मदान साहब के यहां कुछ दिनों के लिए आये थे और रात को देर से आते थे । एक दिन मदान साहब ने उन्हें टोक दिया : "भनवैया जी, जे तुसीं रातीं दस-दस, ग्यारह-ग्यारह बजे आना है, ते खाना बाहर ई खा के आया करो। मेरे यहां बीवी ते नहीं, जेहड़ी रात रात भर बैठी रहेगी । नौकर है, ओह छड्ड गया ते मैं की कराँगा ?"

और मदान साहब अपने नौकर की सुविधाओं का पूरा ख्याल रखते हैं । उसके लिये अलग साफ-सुथरा कमरा किचन के बराबर बना है । यदि किसी कारण खाने पर देर हो जाय तो वे नौकर की अपेक्षा नहीं रखते, स्वयं ही परस-परसा लेते हैं ।

चण्डीगढ़ बहुत फैला हुआ शहर है । एक शाम प्रसिद्ध कथाकार कृष्ण बलदेव वैद ने हमें खाने पर बुलाया । वे ४ सैक्टर में एक बड़े ही सुन्दर फ्लैट में रहते हैं । १८ सैक्टर से उनका घर चार-पांच मील परे होगा । पहुंचने को तो हम किसी तरह उनके यहां पहुच गए, पर खाना उन्होंने तब पकाना शुरू किया जब हम पहुँचे । चम्पा—मिसेज़ वैद—स्वयं भी पढ़ाती हैं । दोनों अमरीका हो आये हैं, इसलिये दोनों मिल कर सब काम कर लेते हैं । उस शाम उन्हें मुख्य मंत्री की किसी सभा में शामिल होना था । हमारे पहुंचने के कुछ ही समय पहले वे घर पहुंचे थे । बहरहाल खाना पकते-पकाते, खाते और बातें करते देर हो गयी । बाहर निकले तो रिक्शा नहीं मिला । दो-एक मील जाकर वापस लौट आये । वहीं सो गये । सुबह तड़के ही उठ कर घर की ओर रवाना हुए । मदान साहब नहा चुके थे । हमने क्षमा मांगते हुए सारी स्थिति बयान की तो बोले, "मैं तो इसीलिये शाम को खाना मानता ही नहीं । पूछ लेता हूँ कि समय से वापस घर पहुंचाने की व्यवस्था है कि नहीं । न हो तो मैं कहता हूँ—"प्यार मुहब्बत ठीक है, दिन को मिल लेंगे । रात का खाना नहीं खायेंगे ।" और क्षण भर रुक कर उन्होंने कहा, "मैं तो इसी लिये मीटिंगों-बीटिंगों में भी नहीं जाता ।"

और तभी समझ में आता है कि मदान साहब ने शादी क्यों नहीं की ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शादी नाम है समझौते का—ऐडजेस्टमेण्ट का—और मदान साहब में इसकी ताब नहीं। मुझे उन दस दिनों में मदान साहब के व्यक्तित्व में तक़ल्लुफ और फक्कड़पने का कुछ अजीब-सा सम्मिश्रण मिला।

.....एक दिन हम हिन्दी विभाग गये। शायद मुझे कोई भाषण देना था। कौशल्या भी साथ थी। जब लौटे तो मदान साहब वहां तक आये, जहां स्कूटर मिलते हैं। वहीं एक आदमी आइसक्रीम बेच रहा था। बोले, "कहिए, आइसक्रीम खायेंगे?"

मैं तो कभी आइसक्रीम खाता नहीं, लेकिन कौशल्या अपनी आंतों की पुरानी बीमारी के बावजूद कुल्फी या आइसक्रीम का लोभ संवरण नहीं कर सकती। मदान साहब ने एक स्टिक अपने और एक कौशल्या के लिये खरीदी।

अभी कौशल्या ने उसे मुंह से लगाया भी न था कि एक खाली स्कूटर आता हुआ दिखायी दिया। मदान साहब ने उसे दूर ही से आवाज़ दी और हमसे बोले, "बैठिए, यहाँ बड़ी भीड़ होती है। यह स्कूटर निकल गया तो फिर घण्टा आध घण्टा खड़े प्रतीक्षा कीजिएगा।"

कौशल्या को कुछ संकोच हुआ तो बोले, "आइसक्रीम रास्ते में चूस्ते जाइयेगा।"

हम बैठ गये तो वे एक हाथ में आइसक्रीम लिए साइकिल पर जा बैठे और दूसरे क्षण हमने देखा कि साइकिल पर बड़े मज़े से क्रीम की स्टिक चूसते हुए प्रसिद्ध आलोचक हिन्दी विभाग के भू० पू० अध्यक्ष, डा० इन्द्रनाथ मदान चले आ रहे हैं। घर आकर उन्होंने कहा "मैं इस सब की नहीं परवाह करता। मुझे जिसमें आनन्द मिलता है, वही करता हूँ।"

.....मदान साहब को बाग़ीचा सजाने-सँवारने का बड़ा शौक है। किसी ने वहीं कहा कि उन्होंने अपनी शादी अपने बगिया से कर ली है।

उनकी कोठी में प्रवेश करते ही सबसे पहले सामने वाले और दायीं ओर के छोटे से कँटे-छँटे लॉनों पर दृष्टि जाती है। इन लानों के बीच पक्की ईंटों की पगडंडियां गुलाब की कतारें और सजी-सँवरी फूलों की झाड़ियां हैं। एक जंगली फूल की झाड़ी भी उस सजावट में इतनी सुन्दर लगती थी, जैसे वह किसी नायाब फूल की झाड़ी हो। दायीं ओर के लॉन की तरफ़ साथ की कोठी की दीवार है मदान साहब ने उसे विगन बेलिया से ढक दिया है। पोर्च गुलाब की बेलों से आच्छादित है। और वहीं एक अर्ध गोलाकार लम्बे लाल गमले में पोटिलाका खिला है। मदान साहब की बगिया मुझे किसी नख-शिख से दुरुस्त, सजी-संवरी नवयुवती सी लगी। मदान साहब ज्यादा कहीं आते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते नहीं । सिनेमा की तरह ही उन्हें शौक नहीं-- लिखना पढ़ना और बाग़वानी.....और इसी में वे मस्त रहते हैं ।....उनके पड़ोसी, जो अपने बाग़ में जंगल का सा आभास पाने को कला मानते हैं मदान साहब को सनकी समझते हैं लेकिन मदान साहब उनके सम्बन्ध में इससे भिन्न राय रखते होंगे, इसमें मुझे सन्देह है ।

इन्हीं चन्द दिनों में मुझे उनके व्यक्तित्त्व के उस पहलू का भी पता चला, जो कहीं अत्यन्त कोमल है, पर जिसे उन्होंने बादाम की गिरी की तरह मोटे छिलके में छिपा रखा है ।

इधर मदान साहब के निकट आने का एक कारण मेरा बड़ा लड़का उमेश है । मेरी लगातर अस्वस्थता के कारण उसने काम अपने हाथ में ले लिया है । सीधा-सरल-संकोची लड़का है । बाप उसका तेज मशहूर है (वास्तव में है या नहीं, यह दूसरी बात है, पर मशहूर है ।) लेकिन लड़का कदाचित् अपनी मां पर गया है । बड़ी-बड़ी स्कीमें बनाता है, बड़े-बड़े सपने देखता है, हिसाब किताब की किताबों में मशगूल कवि बनने योग्य है, कारोबारी नहीं, पर दुर्भाग्य ने उसे कारोबार के इस जुए में जोत दिया है । अपने दौरों में वह मदान साहब से मिलता रहा है और जाने कैसे मदान साहब उसकी लनतरानियों और सुस्ती का मज़ाक उड़ाते हुए भी उसे चाहने लगे हैं और उन्हीं की शिक्षा का यह फल है कि वह काम को अपने कंधों पर लेकर हमें छुट्टी देने की बात कम से कम सोचने (तो) लगा है । सच कहूँ तो उसी के माध्यम से मैं भी मदान साहब के ज्यादा निकट आ गया हूँ ।

एक दिन मैं शाम को घर पर ही था । अगस्त का महीना था । उमस थी । वही बनियान पायजामा पहने हुए मदान साहब लॉन पर बैठे हुए थे । एक युवक उनके पास बैठा था । मैं चुपचाप घास पर लेटा उनकी बातें सुन रहा था । मालूम हुआ कि वह मदान साहब के किसी मित्र के साहबज़ादा हैं, एक स्थानीय कॉलेज में पढ़ाता है, उसे दिल्ली के किसी कॉलेज में जगह मिल रही है, जो उसके कॉलेज से हर हालत में अच्छी है, पर वह मदान साहब के कारण चण्डीगढ़ छोड़ना नहीं चाहता । मदान साहब जैसे उस युवक को समझा रहे थे, उसे देख कर मेरी आंखों के सामने उस युवक की जगह मेरा लड़का आ बैठा और मैंने देखा कि परम आत्मीयता से मदान साहब उसे समझा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हैं ——भाई [illegible] सफलता तो मैं तब जानूं, जब तुम अपने पिता को चिन्ताओं से मुक्त कर दो। उनसे ऐसे सम्बन्ध रखो जैसे दूसरे लेखकों से रखते हो। तुम अन्य सब लेखकों की रायल्टी दे देते हो तो अपने पिता की क्यों नहीं दे पाते। तुम अभी से अभ्यास डालो कि तुम्हारे पिता नहीं हैं और तुम्हें अकेले काम देखना है।.....आदि....आदि

मैं जिस दिन चण्डीगढ़ पहुंचा, उसके पन्द्रह-बीस दिन पहले राकेश दूसरी बार दिल्ली छोड़ कर बम्बई चला गया था और सूचना मिली थी कि वह फिर घर बसाने की सोच रहा है और उसे संगिनी भी मिल गयी है, जो उसके साथ हर तरह का त्याग करने को तैयार है।

मदान साहब बड़े परेशान थे। बड़े गुस्से। "तुम लेखकों के लिए औरतों की कोई हस्ती नहीं," वे झींखते, "तुम लोग किसी तरह की जिम्मेदारी के कायल नहीं," और मुझे कोसते, "तुम्हीं ने इन लोगों को रास्ता दिखाया है। तुम्हारी परम्परा को यह निभा रहे हैं," पर तुम तो जम गये हो, स्थिर हो गए हो, ये तो अभी तक भटक रहे हैं। .....और चुप हो जाते.....फिर सहसा पूछते, "लेकिन वह बम्बई में करेगा क्या?"

"लिखेगा।" मैं कहता।

"लिखने से पेट भरता है, घर चलता है?" वे कहते "तुम देखना, दोनों समुद्र में छलाँग मारेंगे, मैं कहे देता हूँ, तुम देख लेना".....

और इन दस दिनों में कमो-बेश ऐसे ही वाक्यों की पुनरावृत्ति कई बार हुई और तार वहीं टूटा। मदान साहब झल्लाते रहे, खिजलाते रहे, मैं उन्हें राकेश का पक्ष लेकर समझाता रहा——वह फिर नौकरी कर सकता है, वह फ़िल्म में जा सकता है, वह प्रतिभा सम्पन्न है, खूब लिख सकता है? यदि उसे ठीक संगिनी मिल गयी तो जम जायेगा आदि..... आदि.....लेकिन मदान साहब शान्त नहीं हुए। इस सब खिजलाहट और झुंझलाहट में वह हितचिन्ता मेरी आंखों से छिपी नहीं रही जो उन्हें राकेश के लिए थी।.....वह कुछ भी करे, उन्हें आपत्ति न थी, पर अच्छा लिखे, जम जाय, सफल और सुखी हो ....और चूंकि उन्हें लगता था कि वह घपले पर घपले कर रहा है, उसने नौकरियां जिस तरह छोड़ी, उसे देखते हुए उन्हें लगता था कि वह नौकरी के योग्य नहीं.....वह फिल्म में जायेगा तो उसका लिखना चौपट हो जायेगा.....वह रुपया कमाने के लिये ज्यादा लिखेगा तो घटिया लिखेगा और जो यश उसने अर्जित किया है, उस पर पानी फेर देगा.....वह क्या करेगा?.... देख लेना वह समुद्र में छलांग मारेगा।.....

मुझे कभी-कभी राकेश से ईर्ष्या होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगती, जिसका एक ऐसा मित्र है, जो योजनों दूर बैठा, उसके भविष्य की चिन्ता में परेशान छटपटा रहा है और कभी मैं सोचने लगता कि क्या यह वही व्यक्ति है जिसे मैं नितान्त आत्म केन्द्रित, भावना-हीन और रूखा समझता था—मदान साहब की उस चिन्ता में अपने छोटे भाई से अथाह स्नेह करने वाले बड़े भाई की परेशानी थी—कुछ अजीब-सा ममत्व था, जो शायद किसी अत्यन्त प्रतिभाशाली पर खिलंदरे चंचल बच्चे के भविष्य की चिन्ता में परेशान माँ के हृदय ही में हो सकता है।

मैं शाम को चण्डीगढ़ पहुंचा था, कौशल्या को सुबह आना था। गाड़ी चण्डीगढ़ तड़के पांच बजे आती थी। स्टेशन पांच मील दूर था। वहां पाँच बजे पहुंचने का मतलब था कि सुबह तीन बजे उठा जाये। मैंने मदान साहब से पूछा कि स्टेशन पर जाऊं या न जाऊँ, तो हंसकर बोले, "पचास को पार कर गए हो, अब भी यह तकल्लुफ़ात निभाते हो, कौशल्या को घर का पता है। वह आ जायेगी।"

लेकिन मेरा मन न माना। मेरी लड़की उमा—वहीं यूनिवर्सिटी में एम०एस०सी० के फाइनल ईअर में पढ़ती है। मैं यूनिवर्सिटी गया। मैंने उससे कहा कि तुम्हारी ममी सुबह पांच बजे की गाड़ी से आ रही है। मेरी तबीयत वैसी अच्छी नहीं, यदि तुम अपनी सहेलियों के साथ जाकर उसे लिवा लाओ तो मेरी चिन्ता दूर हो। उमा अपनी सहेलियों को बुला लायी वे सब वार्डन से मिलीं। रिक्शे वाले चूंकि उनके होस्टल के पहचान वाले थे, इसलिये उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि कौशल्या को वे लिवा लायेंगी और मैं चिन्ता न करूँ और मैं आश्वस्त हो चला आया। आकर मैंने मदान साहब से कहा, "मैं उमा और उसकी सहेलियों से कह आया हूँ, उनके होस्टल से स्टेशन यहां की अपेक्षा निकट है, वे कौशल्या को स्टेशन पर रिसीव कर लेंगी।"

"और क्या।" मदान साहब ने कहा, "तुम कहाँ तीन बजे उठ कर रिक्शा ढूंढते फिरोगे।"

लेकिन जब वे रात को बरामदे में ताला लगा कर अपने बिस्तर को जाने लगे तो क्षण भर को मेरे सिरहाने रुके। "मैं ताली तुम्हारे सिरहाने रख देता हूँ।" वे ताली मेरे सिर के पास रखते हुए बोले, "कौन जाने तुम्हारा मन स्टेशन पर जाने को हो जाये। मैं बहुत गहरी नींद सोता हूँ। मुझे होश नहीं रहता।"

मेरी आँखों में हल्की-हल्की गनोदगी छा रही थी, पर जाने उनके स्वर में क्या था। सहसा मेरी नींद उड़ गयी। मुझे लगा—मदान साहब वास्तव में चाहते हैं, मैं कौशल्या को स्टेशन पर लेने जाऊँ। लेटे लेटे मैंने कहा, "क्या इतनी सुबह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिक्शा मिल जायेगी ?"

"सामने बाज़ार में ही कई बार मिल जाता है।" उन्होंने बेपरवाही से कहा। "एक बार जाकर कोशिश कर आना, न मिले तो आकर इत्मीनान से सो जाना। रंज तो न रहेगा कि कोशिश न की।"

मदान साहब अपने बिस्तरे पर जाकर सो गये, पर मेरी नींद एकदम गायब हो गयी। मुझे कहीं तीन बजे सुबह जाना हो तो मैं रात को सो नहीं सकता।.....वहीं बिस्तर पर लेटे-लेटे आकाश पर छितरे बादलों में ऊब-डूब करते चांद को देखते-देखते मदान साहब से अपनी पहली मुलाकातें मेरे सामने घूम गयीं। वे अन्दर से कितने नर्म हैं! मैं सोचने लगा—और तब मुझे अपनी पत्नी की बात याद आयी कि कैसे उन्होंने अपने बहन भाइयों को पढ़ाया-लिखाया और योग्य बनाया और अपना घर बसाने की ओर से बेपरवाह रहे।—'न जाने यह व्यक्ति किन घाटियों और वीरानों को पार कर आया है।' मैंने सोचा—'उसका शरीर वर्षातप से रुक्ष हो गया है पर अन्तर में कहीं अब भी भावना की नदी बहती है, जिसे साधारणतः देख पाना कठिन है।.....जब दूर कहीं घड़ियाल ने तीन बजाये, मैं उठा। धीरे से मैंने दरवाज़ा खोला। अपने कमरे में जाकर कपड़े बदले। फिर ताला लगा कर चाबी धीरे से उनके सिरहाने रख दी। रिक्शा मुझे टैगौर थियेटर के सामने ही मिल गया और मैं सूनी वीरान सड़कों को पार करता स्टेशन की ओर बढ़ चला—और तब मेरे मन में पत्नी को स्टेशन पर रिसीव करने की उत्कण्ठा गौण हो गयी और मदान साहब के उठने से पहले पत्नी के साथ घर पहुंच कर उनकी आंखों में सुरख़रु होने की भावना प्रमुख हो चली।

नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताली

मोहन राकेश

डाक्टर मदान का पत्र आया था। लिखा था : "जुलूस निकलने वाला है। ताली पीटने वालों में लोग तुम्हारा भी नाम चाहते हैं। पता उन्हें बता दिया है।"

और मुझे लगा जैसे मैं चण्डीगढ़ में हूँ, मंच पर डाक्टर मदान के गले में माला पहनायी जा रही है, कन्धे पर दोशाला ओढ़ाया जा रहा है, हाथ में अभिनन्दन ग्रन्थ दिया जा रहा है और सामने दर्शकों की पंक्ति में बैठा अफ़ग़ानी टोपी वाला एक आदमी, जोकि असली डाक्टर मदान है, पान चबाता हुआ अपने साथ की कुर्सी पर बैठे मोटे चश्मे वाले व्यक्ति अर्थात् मुझ से कह रहा है, "यार इनसे कहो अब बस भी करें। खाने का वक्त हो गया है, लोगों को भूख लगी होगी। वे ताली पीटें और चलने वाले बनें। क्यों ख़ामख़ाह अपना और दूसरों का वक्त बरबाद कर रहे हैं।" और उसके बाद, अभिनन्दित होकर मंच से उतरते हुए डाक्टर मदान को यह आदमी हंसकर आवाज़ देता है, "आ जाओ, आ जाओ, मदान साहब, यहां आपके लिये एक कुरसी ख़ाली रखी है। देखो, ज़रा संभल कर आना, दोशाला मैला न हो जाये।"

मुझे हैरानी न होगी अगर अपने अभिनन्दन के समय डॉ मदान सचमुच कोई इस तरह की बात कह बैठें, बल्कि न कहें, तभी हैरानी होगी। डॉ० मदान की सबसे बड़ी खूबी ही यह है कि जहां दूसरों के मुंह पर उनकी ग़लतफ़हमियां झाड़ने में उन्हें कमाल हासिल है, वहां अपने बारे में भी किसी तरह की ग़लतफ़हमी वे मन में नहीं पालते। जितना मज़ाक दूसरों से करते हैं, उससे ज्यादा अपने से कर लेते हैं। कभी-कभी अपने से किये मज़ाक की हद इतनी बढ़ जाती है कि दूसरों को ग़लतफ़हमी होने लगती है। इससे डॉ० मदान को मज़ाक का एक नया विषय मिल जाता है।

मुझे याद है डॉ० मदान से जब परिचय हुआ, तो मैंने बहुत औपचारिक ढंग से उनसे कहा था, "नाम आपका बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुना है। बहुत खुशी हुई आपसे मिल कर।" लिख रहे।"

पर मुझे कोफ्त हुई जब उन्होंने जवाब में ऐसी ही कोई बात कहने की जगह कहा, "छोड़ो यार ! खुशी-उशी जो लोगों को एक-दूसरे से मिल कर होती है, वह मैं सब जानता हूँ। चलो, कहीं बैठ कर चाय या काफ़ी की एक प्याली पीते हैं।"

कोफ्त के साथ सचमुच खुशी भी हुई। खुशी इसलिये कि उम्र और रुतबे में बड़े होने पर भी पहली बार किसी ने मुझे अपने साथ बराबरी का दरजा दिया था। शुरुआत वहां से की थी जहां लोग महीनों के परिचय के बाद पहुंच पाते हैं। पहले ही दिन साथ-साथ काफ़ी पीते हुए मुझे एक हैरानी यह भी हुई कि यूनिवर्सिटी से सम्बद्ध होते हुए भी इस व्यक्ति ने नये से नये लोगों की नयी से नयी रचनाएं पढ़ रखी थीं। उन सब के बारे में उसकी अपनी एक अलग राय भी थी। बात करते हुए मुझे थोड़ा संकोच भी हुआ क्योंकि जिन जिन रचनाओं का उन्होंने जिक्र किया, उनमें से कुछ-एक मैंने तब तक पढ़ी नहीं थीं। यह बात उनसे छिपी नहीं रही क्योंकि उठते हुए इस अपनी खास कत्थई हंसी के साथ उन्होंने कह ही दिया, हमारे लेखकों में एक बहुत अच्छी बात यह है कि अक्सर वे एक दूसरे की रचनाएँ नहीं पढ़ते। पढ़ते भी हैं, तो सिर्फ अपने को इतना विश्वास दिलाने के लिए कि उनके अलावा और लोग भी कुछ खास नहीं

उसके बाद वह कत्थई हंसी इतनी देर तक गूंजती रही कि आज भी उसकी आवाज़ कानों में बनी हुई है।

जिन दिनों मैंने बिशप काटन स्कूल जॉइन किया, डाक्टर मदान भी शिमला में थे। हर रोज़ स्कैंडल पाइंट पर भेंट हो जाती। रीडरों-एडिटरों के कई एक गम्भीर चेहरों के बीच उनका हंसता हुआ चेहरा अलग ही पहचाना जाता। गम्भीर लोगों की संगत मुझे रास नहीं आती, इसलिये कई बार मैं आंख बचा कर निकल जाने की कोशिश करता। तभी एक डोर पीछे से लपेट कर खींच लेती। डाक्टर मदान की आवाज़ भीड़ के कन्धे छीलती हुई मुझ तक आ पहुंचती, "अरे क्यों कन्नी काट कर जा रहा है? इन लोगों से कतराने की ज़रूरत नहीं। ये सब अपने घरों को जा रहे हैं, इनकी बीवियां इनका इन्तज़ार कर रही हैं।"

और पास आने पर कहते, "ब्याह कराने का बस एक ही फायदा है। आदमी को दोस्तों से इज़ाजत लेकर घर जाने का बहाना मिल जाता है। यूं चाहे अपने घर न जाकर जाना किसी और ही के घर हो।" बेतकल्लुफ़ी, उस हद तक कि कच्चे पैरों पर चलने वाले आदमी के पैर उखड़ जायें। सच्चाई, उस सीमा तक कि बात करने वाला अपने लबादे के बटनों पर हाथ रखे रहे। बेलागपन, यहां तक कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

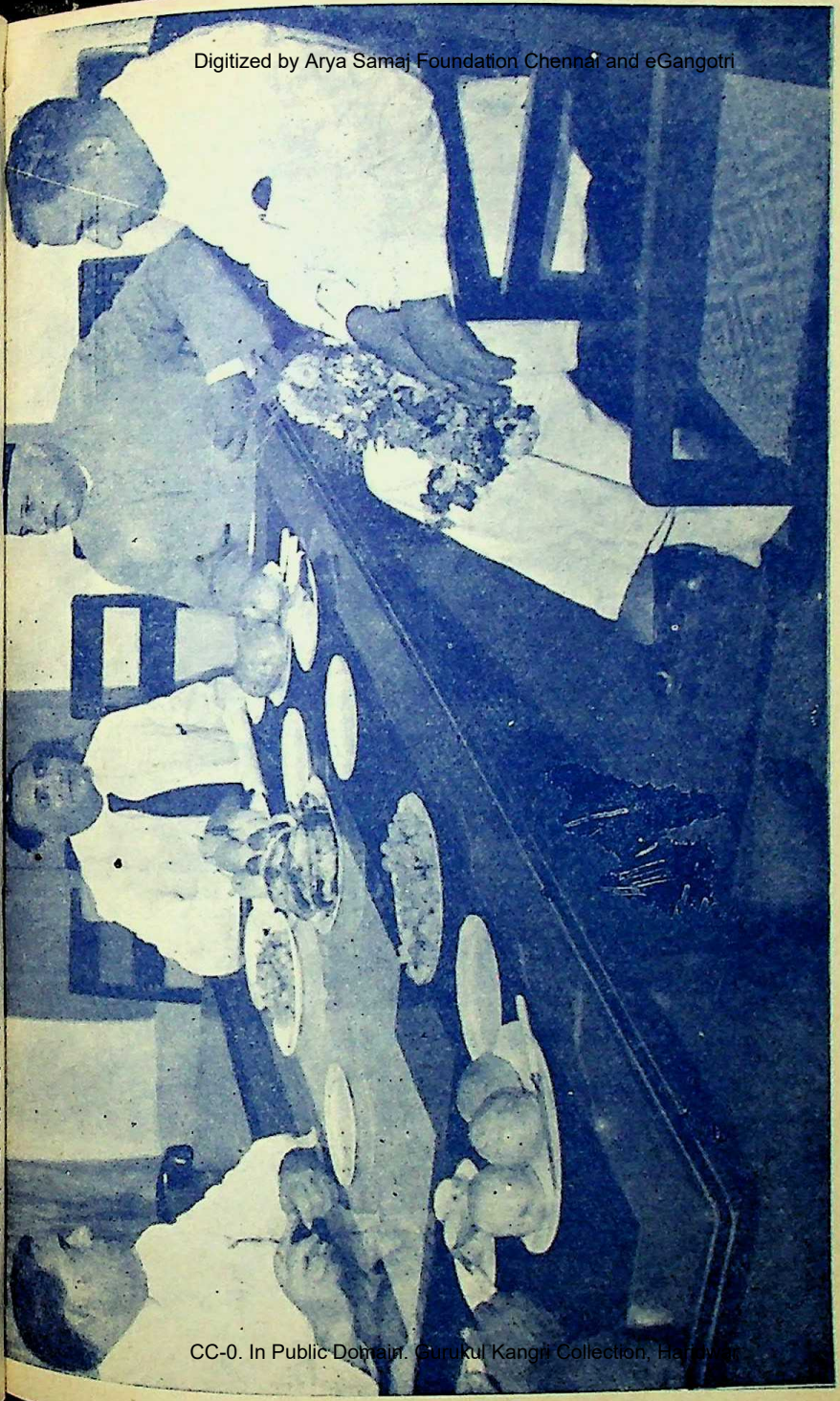

दाएँ से बाएँ—१. डा० सी० डी० देशमुख, भू० पू० वित्तमन्त्री, भारत २. श्री दीवान आनन्द कुमार, भू० पू० उपकुलपति, पंजाब विश्वविद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी
जाय
चौंक
मैंने
अन्दर
जीने
मिल
कोई
तक
तो स
लोगो
अन्दर
निकल
मदान
मन
कोई
ज़रा
कह
बात
कहीं
मुझ
साफ

यही
और
के श
शाय
घर
लुंगी
हैं अ

मई,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

किसी बड़े-से-बड़े का भी लिहाज़ न रखा जाय। दो टूक बात, इतनी कि सुनन वाला चौंक कर देखता रह जाय । आज तक मैंने जितने लोगों को जाना है, उनमें अन्दर और बाहर से एक ही सतह पर जीने वाला ऐसा दूसरा आदमी मुझे नहीं मिला। चेहरे पर कोई नकाब नहीं, बात में कोई उलझाव नहीं । खुलापन उस हद तक कि दूसरा पूरी तरह न खुल सके, तो सामने टिक ही न पाये । बहुत कम लोगों में यह सामर्थ्य रहती है कि दूसरे के अन्दर के आदमी को आंखें झुकाये बाहर निकल आने पर मजबूर कर दें । डाक्टर मदान उन्हीं थोड़े से लोगों में से हैं। अपने मन में कोई कुण्ठा नहीं, दूसरे के मन में कोई कुण्ठा रहने नहीं देंगे । किसी ने ज़रा घुमावदार बात की नहीं कि झट कह देंगे, "छोड़ यार, क्यों नयी कविता में बात कर रहा है ? कागज़ पर लिख कर कहीं छपा देगा, तो कुछ पैसे भी मिलेंगे ! मुझ से क्या मिलेगा ? मुझसे तो तू साफ साफ बात कर ।"

दो-एक बार मिलने पर आदमी को यही लगता है कि डाक्टर मदान हंसमुख और दोस्त-तबा आदमी हैं, खाने पीने के शौकीन हैं किसी भी तरह की सीरियसनेस शायद उनके स्वभाव में नहीं है। घर जाने पर आदमी यह पाएगा कि वे लुंगी और बनियान पहने किचन में खड़े हैं और हांडी में कलछी चला रहे हैं । नौकर पास में खड़ा सबक ले रहा है कि मुर्ग मुसल्लम में क्या क्या मसाला पड़ता है और रोग़न जोश को किस तरह जोश दिया जाता है, नौकर कितना ही क्यों न सीख जाय, हांडी में कलछी फिर भी वे खुद ही चलायेंगे । यह उन्हें बरदाश्त नहीं कि ज़रा सी ग़फ़लत से शोरबे के रंग और स्वाद में फर्क पड़ जाये। कोई ख़ास मैहमान बाहर से आये, तो उसे अपने हाथ से कढ़ी बना कर ज़रूर खिलायेंगे— और शक नहीं कि उस तरह की कढ़ी उस आदमी ने पहले नहीं खायी होगी । खाने की मेज़ पर जो चार तरह के अचार पेश होंगे, वे सब उनके खुद के डाले हुए होंगे और उनका अपना ही एक ज़ायका होगा । खाने के बाद पानदान से पान भी वे खुद ही लगा कर देंगे : जो लोग ज़र्दे के शौकीन नहीं, उन्हें भी एकाध बार ज़र्दा चखने का मौका उनके यहां मिल ही जायेगा । उनके यहां जो भी चीज़ मिलेगी, उसकी अपनी एकरंगत और अपना ही एक लुत्फ होगा । पर सब से ज्यादा पुर रंग और पुर लुत्फ होगी वह बात जोकि खाने और पान चबाने के साथ-साथ चलती रहेगी । "क्यों भाई, सुना है आजकल अपने वारिसों के लिये इंटें और चूना छोड़ जाने का इंतज़ाम कर रहे हो !" या : "बहुत दिनों से इलाहाबाद से किसी की चिट्ठी नहीं आयी । लगता है वहां सब लोगों का स्वास्थ्य आजकल

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ठीक चल रहा है ।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर गर्मी की भरी दोपहर में कोई अचानक उनके यहां पहुंच जाय, तो एक बिल्कुल दूसरे ही व्यक्ति से उसका परिचय होगा ।

चारों तरफ फैली हुई किताबें—फैली हुई, पर बिखरी हुई नहीं । सहेजकर रखी हुई फाइलें—पत्र-पत्रिकाओं की, अपने काग़ज़ों की । पास ही पानी की सुराही कांच के गिलास से ढकी हुई । माथे और गले से बहता पसीना, सारे शरीर की यात्रा करता हुआ । एक अधलिखे काग़ज़ पर रुकी हुई क़लम, सोच में डूबी हुई ।

आप दरवाज़े पर दस्तक दें, तो यह आदमी चौंक कर सिर उठाएगा । दरवाज़ा खोल कर पल भर अचकचायी सी नज़र से देखता रहेगा । फिर मुस्कराकर कहेगा, "आओ, आओ ।" पर इससे पहले कि आप कुरसी पर बैठ पायें, कह रहा होगा, "बिखराव बहुत है कथावस्तु में, हालांकि जीवन का अध्ययन बहुत अच्छा है !" आप आंख घुमाकर देखें, तो सामने 'बूंद और समुद्र' औंधा पड़ा नज़र आएगा । जगह-जगह उसमें स्लिपें लगी होंगी । उठा कर देखें, तो हर पन्ने पर कई-कई पंक्तियां काली पेंसिल से रेखांकित होंगी । हाशिये में एक-एक दो-दो शब्दों में कमेंट दिये होंगे : 'अस्पष्ट जीवनदृष्टि', 'युगबोध', 'अनावश्यक विस्तार', 'कांट्राडिक्शन' । डाक्टर मदान की आकृति उस समय सामने नहीं होगी । गलियारे की तरफ़ से उनकी आवाज़ आ रही होगी, "गली-मुहल्लों के जीवन का इतना सुन्दर चित्रण आज तक हिन्दी के किसी उपन्यास में नहीं हुआ । मेरे विचार में इसका स्थान हिन्दी के पहले तीन उपन्यासों में होना चाहिए । अगर बीच में मथुरा का लम्बा यात्रा-विवरण न रहता, तो उपन्यास का महत्त्व और अधिक होता । मैं नागर से पूछना चाहता हूँ कि बीच में ये बाबा जी किस लिये डाल दिये हैं ? आगरे वालों की यह ख़ास बीमारी है । अच्छा लिख कर साथ में नज़रबट्टू ज़रूर लगा देते हैं । तुम राजेन्द्र यादव को ही ले लो .....।"

और जब तक आप मुंह खोलें, पान का बीड़ा आपके हाथ में आ जाएगा । ज़र्दे की गुत्थी में से चुटकी भरते हुए वे कह रहे होंगे, "थोड़ा-सा ले लो । बग़ैर ज़र्दे के पान खाना घास खाने के बराबर है ।"

आप अगर लेखक हैं, तो ज़र्दे की चुटकी पान में छुड़वाने से पहले आपको सुनने को मिल जाएगा, "तुम्हारी इधर की दोनों कहानियां पसन्द नहीं आयीं । तुम्हें यह आत्मपरकता का रोग कब से छाने लगा है ? मुझे लगता है कि दिल्ली में रहने वाले सब लेखक एक ही दर्ज़ी के यहां से कपड़े सिलाने में विश्वास रखते हैं । यह फ़ैशनपरस्ती तुम लोगों की रचनाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को मार देगी। यह गहरी तरह समझ लो।"

और उसके बाद आप अण्डेमान भी चले जायें, तो अचानक किसी दिन यह पोस्ट कार्ड आपको डाक से मिल सकता है : 'प्रिय रवीन्द्र, साहित्यिक क़द ऊंचा उठ रहा है'—इन्द्रनाथ मदान । या : 'प्रिय राजेन्द्र, शिल्प और कथ्य में सामंजस्य आ रहा है'—इन्द्रनाथ मदान । या : 'प्रिय राकेश, पांचवें माले से नीचे मत उतरो'— इन्द्रनाथ मदान ।

जो व्यक्ति लकीर से हट कर सोचे और बंधी-बंधायी परिपाटी से निकल कर बात करे, उसे सही-सही समझ पाना कई बार बहुत कठिन हो उठता है । ख़ास तौर से ऐसे व्यक्ति की बात को जो यह सोच कर चले कि जितना उसने पढ़ा है, कम-से-कम उतना दूसरों ने भी पढ़ा ही होगा । इसलिये डाक्टर मदान की साहित्यिक सूक्तियां कई बार लोगों को कुछ विचित्र-सी लगती हैं और अचम्भे में डाल देती हैं कि आखिर यह आदमी कहना क्या चाहता है ! जो उनके विनोदी स्वभाव से परिचित हैं, वे सोचते हैं कि बात शायद मज़ाक में कही गयी है । गम्भीर से गम्भीर बात करते हुए भी डाक्टर मदान अपने स्वभाव की विनोदप्रियता बनाये रखते हैं, यह शायद उनकी कमज़ोरी है । दूसरी दृष्टि से देखा जाय, तो यह विनोद-प्रियता ही उनकी बात में एक अपनी निजता और एक ख़ास तरह की चुभन ला देती है । उस वक्त उनकी बात को आदमी हंस कर टाल दे, मगर बाद में अन्दर ही अन्दर कहीं एक अस्थिरता ज़रूर महसूस करता रहता है । घुमावदार शब्दों में लिखी गयी अकादमीय आलोचनाएं अपने बारे में सोचने के लिए उस तरह मजबूर नहीं करतीं जिस तरह चाय बनाते या सेब काट कर देते हुए अनायास कही हुई डाक्टर मदान की बातें। डाक्टर मदान की सब से बड़ी खूबी उनके खरेपन में है—यह खरापन किसी तरह के समझौते या उलझाव का अवकाश ही नहीं रहने देता । उनके व्यक्तित्व में एक आशुता, एक डायरेक्टनेस है जिसके कारण वे भूमिका के रास्ते अपने कथ्य तक नहीं आते । भूमि का या अपने कथ्य के प्रति क्षमायाचना की भावना उनमें कहीं नहीं मिलेगी । 'हालांकि', 'फिर भी' 'तो भी' का प्रयोग वे बिलकुल नहीं करते । जो भी बात कहनी हो, सीधे से कह देंगे—हर दोस्ती और दुश्मनी को ताक पर रख कर । इससे कई बार लोग चिढ़ उठते हैं । कई बार बुरा मान जाते हैं । पर यह भूमिकाहीन व्यक्ति इन बातों की चिन्ता नहीं करता । बात कह कर वह उस बात से आगे किसी और विषय में सोचने लगता है और सुनने वाला अभी पहली बात के घेरे से निकल नहीं पाता कि बात का विषय बदल जाता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचनाओं के माध्यम में अपनी बात लोग कह सकता हो जानें या न जानें, व्यक्त करने में जितना बेलागपन डाक्टर मदान में है, उतना ही लगाव उनके मन में रचनाकारों के प्रति है। अश्क हों या यशपाल, रेणु हों या कमलेश्वर, मन्नू हों या अमरकान्त, दूर रहते हुए भी सब के जीवन में वे एक व्यक्तिगत दिलचस्पी रखते हैं, उनकी खुशियों और परेशानियों में एक निजी खुशी और परेशानी महसूस करते हैं। उन लेखकों तक उनके मन की बात पहुंच पाये या न पहुंच पाये, परन्तु आसपास के लोगों को डाक्टर मदान के इस लगाव का परिचय मिलता ही रहता है। अपने अकेलेपन में रहते हुए भी वे जीते उस अकेलेपन में नहीं—साहित्य के क्षेत्र में जितना सृजनशील वर्ग है, उसके साथ वे एक आन्तरिक परिवार-भावना से जुड़े रहते हैं। पिछले पन्द्रह-बीस वर्षों में यह मानसिक परिवार धीरे-धीरे बढ़ता गया है, आज भी आये दिन उसके सदस्यों की संख्या में वृद्धि होती जाती है। परिवार के डाक्टर मदान अपनी एक-तरफा सम्बन्ध-भावना से ही सन्तुष्ट रहते हैं। परिवार के लोग इसे न समझ पायें, या गलत ढंग से लें, तो भी उनकी भावना में अन्तर नहीं आता। तब वे हंसकर इतना ही कह देते हैं, "यह सब तो चलता ही रहता है। इन बातों को ज्यादा महत्त्व नहीं देना चाहिए।"

और अब मुझे लग रहा है कि मैं मंच पर खड़ा यह लेख पढ़ रहा हूँ। भीड़ में जो चेहरा सामने नज़र आ रहा है, वह डाक्टर मदान का है। वे पास बैठे व्यक्ति से कुछ बात कर रहे हैं। अचानक मुझसे आंख मिलने पर वे मुस्कराते हैं और डब्बी में से पान निकालते हुए कहते हैं, "भई इसे पानी-वानी पिलाओ, बेचारे का गला सूख रहा है।"

और भीड़ से जो ताली की आवाज़ सुनाई देती है, वह मेरे लेख के लिये नहीं, डाक्टर मदान के इस रिमार्क के लिए ही है।

८ ए/५४ डबल्यू ई० ए० करोल बाग,
नई दिल्ली–५

● ● ●

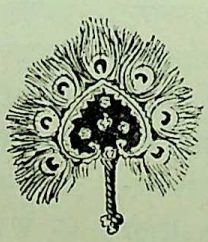

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

76222

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० इन्द्रनाथ : एक मोहक व्यक्तित्व

डा० विजयन्द्र स्नातक

आज से लगभग २५ वर्ष पूर्व मैंने किसी समाचार पत्र में यह समाचार पढ़ा कि पंजाब विश्वविद्यालय से 'आधुनिक हिन्दी साहित्य का सामाजिक वातावरण के विशिष्ट संदर्भ में अध्ययन' प्रस्तुत करने पर अंग्रेज़ी के अध्यापक ने पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की है तो मुझे आश्चर्य मिश्रित हर्ष हुआ था। उस समय मुझे यह नहीं मालूम था कि डा० इन्द्रनाथ मदान को यह उपाधि हिन्दी विषय के अन्तर्गत प्रदान की गई है या अंग्रेज़ी के। बहुत दिनों तक मैं यही समझता रहा कि यह शोध कार्य अंग्रेज़ी विभाग के अन्तर्गत हुआ है। उस समय हिन्दी जगत् में डाक्टरेट उपाधि धारी पांच-सात व्यक्ति ही थे। अतः इस महत्वपूर्ण उपाधि प्राप्त करने वाले व्यक्ति के प्रति औत्सुक्य और कुतूहल पैदा होना स्वाभाविक ही था। किन्तु पंजाब प्रान्त की साहित्यिक गतिविधि से नितान्त अनभिज्ञ होने के कारण डा० मदान के विषय में मुझे कोई जानकारी प्राप्त न हो सकी।

सन् १९४७ में उत्तर प्रदेश से मैं दिल्ली आया और धीरे धीरे पंजाब विश्वविद्यालय के हिन्दी-प्राध्यापकों से मेरा परिचय होना शुरू हुआ। डा० इन्द्रनाथ मदान पहले व्यक्ति थे जिनसे परीक्षा सम्बन्धी एक कार्य के सिलसिले में मेरा परिचय हुआ। परिचय का प्रारम्भ तो औपचारिक पत्राचार से हुआ था किन्तु शीघ्र ही वे किसी काम से दिल्ली आये और अपने आने की तिथि तथा समय की सूचना देकर मुझ से मिलने मेरे निवास स्थान पर पधारे। पहली मुलाकात में डा० मदान ने मुझे जिस आत्मीय भाव से स्वीकार किया, वह मेरे लिए अविस्मरणीय है। उस समय डा० मदान पंजाब विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष थे और अपनी तीन-चार समीक्षात्मक पुस्तकों द्वारा पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे। मैंने उनके सम्बन्ध में अपने मन में जो कल्पना की हुई थी वह पद, पदवी और पदार्थ से कुछ ऐसी मंडित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

थी कि उसमें सहजता, सरलता और सौहार्द के लिये अपेक्षाकृत कम अवकाश था। किन्तु जब वे मुझसे मिले तो पुराने परिचित स्नेही की भांति गाढ़ालिंगन में आबद्ध करते हुए बोले--"अच्छा तो तुम्हारा नाम है स्नातक ! नाम तो यार तुम्हारा सुन रखा था लेकिन तुम्हें मैंने इतना यंग नहीं समझा था। 'स्नातक' से कुछ ऐसी ध्वनि मैंने निकाली थी कि तुम कोई बुजुर्ग हिन्दी वाले होगे। मुझे खुशी हुई कि तुम यंगमैन हो।"

पिछले सोलह-सत्रह वर्षों से डा० मदान से प्रायः प्रतिवर्ष भेंट होती है और उनके स्नेह-सौजन्य पूर्ण वार्तालाप का आनन्द मिलता रहता है। प्रारम्भ के कुछ वर्षों में तो मैं यही मान कर उनसे व्यवहार करता रहा कि वे मुझसे कम से कम एक दशक बड़े तो हैं ही किन्तु एक दिन आयु की बात चलने पर मालूम हुआ कि मैं उनसे आयु में बड़ा नहीं तो छोटा भी नहीं हूँ। हाँ, उनके शील स्वभाव में जो बड़प्पन है वह भला मुझ में कहां ! डा० मदान मस्त-मौला स्वभाव के सरल व्यक्ति हैं। वे मित्रों से मिलने जुलने में वयोवृद्धतर या पद का आतंक न तो किसी पर डालते हैं और न दूसरे का आतंक स्वीकार ही करते हैं। उनका मैत्री धर्म निश्छल व्यवहार का पोषक है। सहज-प्रसन्न मुद्रा में मित्रों से मिलना, शिकायत-शिकवे से दूर रहना और कटु-तिक्त को अट्टहास में उड़ा देना उनका स्वभाव बन गया है। वे निष्कपट मैत्री के निदर्शन हैं।

हिन्दी के अनेक साहित्यकारों और प्राध्यापकों के सम्पर्क में आने का सौभाग्य मुझे प्राप्त होता रहता है। मैं विद्वानों से मिलता हूँ और उपाधिधारियों से भी, सर्जक कलाकारों से मिलता हूँ और समालोचकों से भी, अहंमन्य अध्यापकों के सम्पर्क में आता हूँ और विभागाध्यक्षों को भी दूर-पास से देखता हूँ किन्तु जैसी निर्व्याज मैत्री, मुदिता और मस्ती मुझे डा० मदान में मिलती है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है।

× × ×

हिन्दी जगत् में डा० मदान समीक्षक के रूप में विख्यात हैं। उनके स्वभाव में कथाकार की प्रतिभा लक्षित होती है लेकिन मैं नहीं जानता कि वे इस ओर कभी सक्रिय हुए या नहीं। यदि हमारे जैसे मित्रों के आग्रह से वे कहानी पर हाथ आजमा कर देखें तो बड़े सफल सिद्ध होंगे। लेकिन छोड़िए--इस प्रसंग में तो मैं उनके समीक्षक रूप की ही चर्चा करूँगा। समीक्षक से जिस निस्संगता और तटस्थता की अपेक्षा की जाती है, निस्सन्देह मदान को वह निसर्ग से प्राप्त है। मदान किसी से अभिभूत नहीं होते, किसी पर मुग्ध होकर वाह वाही में नहीं बहते, किसी कृति पर गद्गद् होकर गलदश्रु भावुकता का प्रदर्शन नहीं करते तथा उच्छ्वास और

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवेग की पदावली से किसी को यशोगान नहीं करते । उनके समीक्षात्मक निर्णयों में सदैव स्थिर सन्तुलन का निर्वाह लक्षित होता है । शब्दजाल में कथ्य को घुमाना और तथ्य को छिपाना उन्हें नहीं आता । जिस भांति वे अपने व्यवहार में स्वच्छ और स्पष्टवादी हैं वैसे ही उनकी अभिव्यंजना भी प्रांजल और प्रभावोत्पादक है । मैंने उनकी किसी समालोचना में पक्षपात नहीं देखा; खरे वे पूरी तरह हैं किन्तु खोट देखने में उनकी कोई रुचि नहीं । यही कारण है कि नये-पुराने सभी कलाकारों का मूल्यांकन वे बड़ी प्रसन्न मुद्रा में कर सके हैं ।

डा० मदान साहित्य की नवीनतम प्रवृत्तियों से परिचित रहते हैं फलतः उनकी समीक्षाओं में जैसी ताज़गी रहती है वैसी न तो लीकपीटने वाले आलोचकों में मिलती है और न शालोपयोगी समीक्षकों में । मदान हिन्दी के उन आलोचकों में से अन्यतम हैं जिन्होंने अंग्रेज़ी साहित्य का विधिवत् अध्ययन किया है और अपनी समीक्षा-पद्धति को अद्यतन बनाने के लिए उस समृद्ध साहित्य की परम्परा से लाभ उठाया है । मदान की लेखनी से हमें अभी और भी ग्रंथ रत्न प्राप्त होंगे, ऐसी आशा है । उनकी साहित्यिक सेवाओं के सम्मान के अवसर पर मैं अपनी स्नेहांजलि सप्रेम समर्पित करता हूँ ।

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली

● ● ●

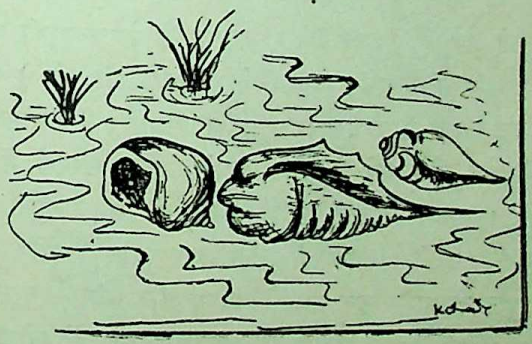

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर इन्द्रनाथ मदान : मेरी दृष्टि

डा० पद्म सिंह शर्मा 'कमलेश'

डाक्टर इन्द्रनाथ मदान से मेरा परिचय सन् १९४६ में लाहौर में हुआ था, जब वे जहां तक मुझे याद है, दयालसिंह कालेज में अंग्रेजी के प्राध्यापक थे और अंग्रेजी में आधुनिक हिन्दी साहित्य पर उनका पी०एच०डी० का शोध-प्रबन्ध छप चुका था। अंग्रेजी में ही प्रेमचन्द और शरच्चन्द्र पर भी उनके ग्रंथ निकल चुके थे। उनके प्रगतिशील दृष्टिकोण और स्पष्ट विचारधारा ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया था। तब से १८ वर्ष बीत चुके हैं और डाक्टर इन्द्रनाथ मदान भारत विभाजन के बाद लाहौर से शिमला, जालन्धर, और चण्डीगढ़–एक के बाद दूसरा स्थान बदलते रहे हैं, किन्तु मेरे साथ उनके मैत्री सम्बन्ध यथावत् बने रहे हैं। यदि यों कहूँ कि वे सम्बन्ध और भी गहरे और निश्छल होते गये हैं तो अनुचित न होगा। इस पारस्परिक घनिष्ठता के कारण उनके विषय में निस्संग भाव से कुछ कहना कठिन बात है, फिर भी जब उनका भाषा-विभाग पंजाब की ओर से सम्मान हो रहा है तो मैं भी उनके सम्बन्ध में कुछ-न-कुछ लिखना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। विशेष रूप से तब जब कि हिन्दी-विभाग के निदेशक डाक्टर परमानन्द ने मुझे ऐसा करने का कृपा पूर्वक आदेश देकर आभारी किया है।

जहां तक डाक्टर मदान के व्यक्तित्व का प्रश्न है, पहली दृष्टि में वे साधारण लगते हैं। मध्यम कद, भरा हुआ शरीर और सादा वेशभूषा के साथ जैसा कि उन्होंने स्वयं एक स्थान पर लिखा है, उनके चेहरे में भी गढ़न की दृष्टि से कोई ऐसी बात नहीं है, जो असाधारण हो। लगता है प्रेमचन्द की भांति (वे प्रेमचंद के प्रशंसक भी हैं) वे साधारण ही दिखना चाहते हैं। लेकिन ज्यों ही व्यक्ति उनके निकट सम्पर्क में आता है उनकी ग़जब की बेतकल्लुफी, हर विषय पर संक्षिप्त और निर्भीक सम्मति, निर्दोष हास्य और व्यंग्य–इन सब से उनकी ओर ऐसे खिंचता है, जैसे लोहा चुम्बक की ओर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिनन्दन पत्र, ११०० रुपए की थैली तथा आदरी वस्त्र
प्राप्त करते हुए डॉ० इन्द्रनाथ मदान

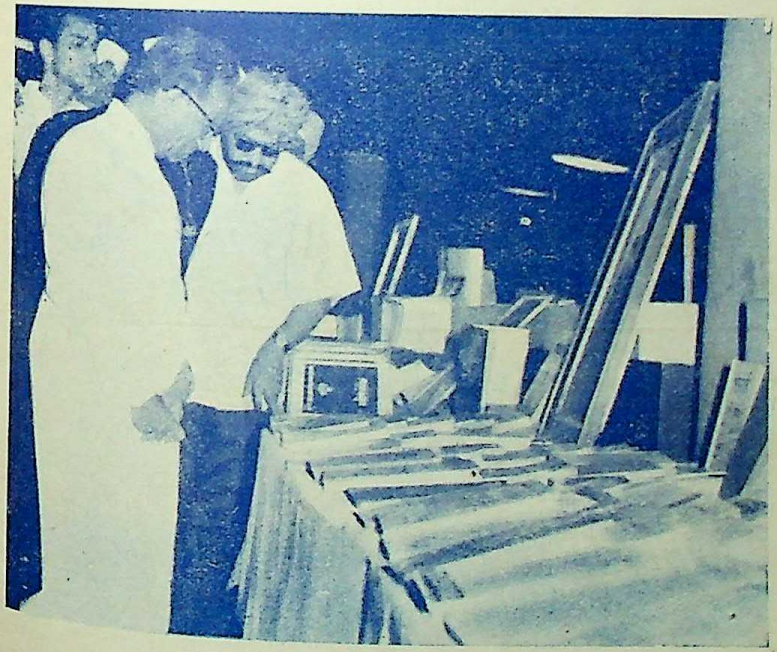

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विभाग द्वारा आयोजित पुस्तक-प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए सम्मानित अतिथि

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब और घनिष्ठता होती है तब उनकी अध्ययनशीलता, जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण और निन्दा स्तुति से परे अपने में मस्त रहने की प्रवृत्ति देख कर यह अनुभव हुए बिना नहीं रहता कि इस साधारण लगने वाले व्यक्ति में कुछ असाधारणता अवश्य है ।

डाक्टर मदान को एक बात से सख्त चिढ़ है और वह है अनावश्यक और अनपेक्षित के संग्रह से । इस दृष्टि से वे कबीर पंथी हैं । न केवल अपने खाने-पीने और पहनने-ओढ़ने में वरन् पुस्तकों के विषय में भी यही बात है । उनके पुस्तकालय में भेंट या सम्मत्यर्थ आने वाली पुस्तकों को छोड़ कर, महान् लेखकों की महान् कृतियां ही देखने को मिलेंगी । यह चुनाव उनके घर के सामने के लॉन की घास, बेलों और फूलों में भी है, और पिछवाड़े की तरकारियों की क्यारियों में भी । स्वयं उनका मकान, बहुत बड़े भूमिखण्ड पर बना होने पर भी रसोई घर और मोटर गैरिज के अतिरिक्त अतिथि-कक्ष, भोजन-कक्ष, और अध्ययन-मिश्रित शयन-कक्ष से ही पूर्णता प्राप्त कर गया है ।

उनके अध्ययन-मिश्रित-शयन कक्ष में सब से बड़ी वस्तु वह छोटी-सी खिड़की है, जिससे वे बाहर से आने वाले व्यक्ति को तो देख लेते हैं पर स्वयं अदृश्य रहते हैं । 'राम झरोखा बैठि के सबको मुजरा लेहिं" के विश्वासी डाक्टर मदान की यह खिड़की उनके साहित्यिक व्यक्तित्व की भी कुंजी है, जो बताती है कि वे अपनी उदार दृष्टि से नये-पुराने, महान-लघु और देशी-विदेशी साहित्य स्रष्टाओं का चुपचाप अध्ययन करते रहते हैं, पर किसी को पता नहीं चलने देते ।

डाक्टर मदान 'यथालाभ सन्तोष' का सिद्धान्त मान कर चलते हैं इसीलिये उनमें लोभ की वृत्ति नहीं आ पाई, और जब लोभ की वृत्ति नहीं आ पाई तो प्रलोभन उन्हें कैसे पथभ्रष्ट करते ? अपने स्वभाव की इस विशेषता के कारण वे किसी दलबन्दी के शिकार नहीं हुए । कई बार सायंकाल भोजन के पश्चात् जब हम टहलने के लिये निकले हैं और हिन्दी साहित्य तथा साहित्यकारों की स्थिति पर बात चली है, तब मैंने देखा है कि उन्होंने क्षुद्र स्वार्थों से परिचालित दिग्गजों की दयनीय स्थिति पर खेद ही प्रकट किया है । इसके साथ ही साधकों की—फिर वे पुरानी पीढ़ी के हों या नयी पीढ़ी के—मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है । सच तो यह है कि जहां भी वे गुण देखते हैं, मुग्ध हो जाते हैं । नयी पीढ़ी के कवियों, कथाकारों और आलोचकों को उनके द्वारा जो सहानुभूति प्राप्त हुई है वह भी उनकी गुण-ग्राहकता का ही प्रमाण है ।

डाक्टर मदान अविवाहित हैं और एकाकी जीवन बिताते हैं लेकिन मैंने उन्हें कभी अपनी स्थिति के प्रति असन्तोष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्त करते नहीं देखा। समय पर खाना-पीना, सोना-जागना, पढ़ना-लिखना और सहज जीवन बिताना, उनका स्वभाव बन गया है। वे तख्त पर बैठ कर लिखते हैं और उनको पान खाने का व्यसन है। मेरा अनुमान है कि पान खाने वाले हिन्दी के साहित्यकारों में उनका स्थान अग्रिम पंक्ति में पहला नहीं तो दूसरा अवश्य होगा। अपने एकाकीपन को दूर करने के लिये वे दो काम करते हैं--एक तो अपनी फुलवारी के पौधों की बच्चों की तरह देखभाल और दूसरे पड़ोसियों के बच्चों को अपने लान पर खेलते देखना। इधर टेपरिकार्डर से सुगम और शास्त्रीय संगीत के चुने हुए रिकार्ड बजा कर भी वे अपनी एकरसता दूर करने लग गये हैं।

डाक्टर मदान संस्कृत, अंग्रेज़ी, फ्रैंच, रूसी, हिन्दी, उर्दू आदि अनेक भाषाओं के साहित्य के प्रेमी हैं और उनका अध्ययन विशाल है। अंग्रेज़ी पर तो उनका अबाध अधिकार है और इस दृष्टि से हिन्दी में वे प्रसिद्ध आलोचक डाक्टर रामविलास शर्मा के सहोदर हैं। 'मेरे प्रेरणा स्रोत' नामक लेख में डाक्टर मदान ने लिखा है--"जहां अपनी भाषाओं के साहित्य से अभी रोशनदान या खिड़कियां खुलती हैं वहां अंग्रेज़ी भाषा के द्वारा मन के कपाट खुलते हैं। (सुगम तथा शास्त्रीय संगीत पृष्ठ, १०) यह कथन उनके अंग्रेज़ी-प्रेम का ही परिचायक नहीं है, इससे उन की उस उदार दृष्टि का रहस्य भी उद्घाटित हो जाता है जो साहित्य-विधाओं के वस्तु और शिल्प पक्ष में क्षण-क्षण होने वाले परिवर्तनों के मर्म को सहज ही हृदयंगम कर लेने की क्षमता प्रदान करती है।

डाक्टर मदान एक सच्चे अध्यापक हैं। उनमें गुरुडम का अभाव है। उससे बचने के लिए ही उन्होंने अपना मकान विश्वविद्यालय से इतनी दूर बनवाया है कि कोई सरलता से वहां नहीं पहुंच सकता। फिर भी वे अपने विद्यार्थियों को सभी प्रकार की सहायता देते हैं। मैंने स्वयं देखा है कि वे बड़े परिश्रम और रुचि के साथ उनके निबन्धों या प्रबन्धों का संशोधन करते हैं। उनके व्यवहार में कहीं भी ऐसा आभास नहीं मिलता कि वे अपने ज्ञान या पद से विद्यार्थी को आतंकित कर रहे हों। कदाचित् इसलिए उनके विद्यार्थी भी उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं।

डाक्टर मदान सफल आलोचक हैं। आलोच्य विषय का गंभीर अध्ययन, तटस्थ दृष्टि से उसकी छान-बीन, अति-प्रशंसा और अतिनिन्दा के दोष से बच कर निष्पक्ष सम्मति-प्रदर्शन, सहिष्णुता और उदारता सहित मूल्यांकन--ये कुछ विशेषताएँ हैं, जिन्हें उनकी आलोचनात्मक कृतियों के आधार पर हम उभरा हुआ पाते हैं। उनके व्यक्तित्त्व की मस्ती, फक्कड़पन, स्वतंत्र-चिन्तन, सरलता एवं स्पष्टता का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोध भी पग-पग पर होता रहता है। जहां आवश्यक होता है वहां वे प्रतिष्ठित आलोचकों तक से असहमति प्रकट करते हैं। इसके साथ ही अपने अनुकूल लगने वाले नये आलोचकों से सहमति प्रकट करने में भी उन्हें झिझक नहीं लगती। अपनी आलोचना में वे न लम्बे-चौड़े सिद्धान्त बघारते हैं न क्लिष्ट पारिभाषिक शब्दावली का ही प्रयोग करते हैं। यह आडम्बर उन्हें पसन्द नहीं। वे तो सीधे विषय को पकड़ कर चलते हैं और गिने-चुने प्रचलित पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग से अपनी आलोचना को पारदर्शी बना कर प्रस्तुत कर देते हैं। यही कारण है कि उनकी विवेचन-पद्धति, और निर्णय मौलिक होने के साथ-साथ विश्वसनीय भी होते हैं।

डाक्टर मदान न केवल सिद्ध आलोचक हैं वरन् वे उच्चकोटि के वैयक्तिक निबन्धकार भी हैं। इसका प्रमाण उनकी पुस्तक 'सुगम और शास्त्रीय संगीत' में दी गई वे रेडियो वार्ताएँ हैं, जिन्हें उन्होंने 'सुगम संगीत' के अन्तर्गत रखा है। 'झूठ बोलना भी एक कला है', 'मिले तो पछताए-मान', 'न मिले तो पछताए—माँ', 'कही न जाए' आदि वार्ताओं को पढ़ मेरा यह विश्वास दृढ़ हो गया है कि डाक्टर मदान में एक सच्चे निबन्धकार के सभी गुण विद्यमान हैं। इन निबन्धों को पढ़ कर वे मुझे बाबू गुलाबराय की 'मेरी असफलताएं' का स्मरण हो आया, जिसमें उन्होंने अपने व्यक्तित्व को निबन्ध के माध्यम से उँड़ेल दिया है। डाक्टर मदान ने भी अपने स्वभाव की अच्छाई-बुराई का निस्संकोच भाव से प्रकाशन अपने इन लेखों में किया है। इनमें उनके निजी जीवन की झांकी के साथ-साथ समाज में व्याप्त विकृति का भी पर्दाफाश होता है। रेडियो के लिये लिखे होने के कारण ये छोटे अवश्य हैं पर इनमें व्यंजना की गहराई की कमी नहीं है। डाक्टर मदान क्या हैं, यह जानने के लिये इन रचनाओं का पढ़ना नितान्त आवश्यक है। क्या ही अच्छा हो कि इस दिशा में वे जम कर कार्य करें और अपनी इस सर्वाधिक उपेक्षित विधा के रूप को संवारें—निखारें।

अन्त में मैं भाषा-विभाग, पंजाब को बधाई देता हूँ कि उसने डाक्टर मदान जैसे उच्चकोटि के साहित्यकार और उससे भी उच्चकोटि के व्यक्ति का सम्मान किया। साथ ही डाक्टर मदान के दीर्घ और यशस्वी जीवन की कामना भी करता हूँ! इति शुभम्।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरुक्षेत्र

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० इन्द्रनाथ मदान : वह जो मैंने देखा

डा० जयनाथ 'नलिन'

डा० इन्द्रनाथ मदान से मेरी पहली भेंट हुई, शायद जून, सन् १९४२ में, जिन दिनों मैं लाहौर के एक दैनिक पत्र "विश्वबंधु" का सम्पादक था। कृष्ण नगर (लाहौर) में मेरे कमरे पर किसी प्रकाशक ने एक पुस्तक भेंट करते हुए मुझे डाक्टर मदान से मिलाया। मदान साहब को उस भेंट का भला क्या स्मरण होगा ? पर मैं तो किसी से एक बार मिल कर, उसे कभी भूलता नहीं। तब से दस वर्ष तक पचासों बार हम मिल चुके हैं। कभी किसी पुस्तकालय में, पुस्तकों की भीड़ में से इन्हें बाहर निकाल कर इनसे मुलाकात की, कभी किसी पोस्टमैन के हाथों इन्हें बुला भेजा और रजिस्टर्ड बुकपोस्ट या पार्सल के परिधान में सजे आप हमारे कालिज या घर पधारे, कभी अचानक किसी पत्र-पत्रिका के पन्नों के झुरमुट से इन्हें झांकते हुए देखा, और कभी आकाशवाणी करते हुए सुना।

इस रूप में जब कभी डाक्टर मदान से मिलने का अवसर मुझे मिला है, उन्हें स्पष्ट, सुगम, समृद्ध और सौम्य ही पाया है। उनकी बातचीत में न तो उलझन ही मिलेगी, न उस में दुराव ही पाया जायेगा। याचक के सामने जैसे एक परम उदार वैभव-सम्पन्न दाता अपना कोश खोल कर रख देता है, वैसे ही आप भी पाठक के सामने अपनी सम्पूर्ण चिन्तनराशि अनावृत्त करके उपस्थित करते हैं। आपकी रचनाओं में न तो कौतुहल-भरी क्षणिक मानसिक गुदगुदी पैदा करने वाला मदारीपन मिलेगा, न मस्तिष्क को भूलभुलैयों में भटकान वाला गोरखधंधापन। न आतंकित करने वाला भारीभरकम पंडिताऊपन, और न फक से हवा में उड़ जाने वाला हल्कापन, न ऐसा छिछिलापन कि जिसमें घुटनों तक भी मन डूब ही न सके। आलोचक मदान आतंकित नहीं करता, प्रभावित करता है। वह गुरुगम्भीर ज्ञानगौरव-गुमानी बन कर नहीं आता, प्रौढ़, सुबोध पथप्रदर्शक और सफर का स्नेहशील साथी बन कर आता है। उसकी बात को पाठक का हृदय पहचानता है, उसका मस्तिष्क उसे जमने और पनपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये जगत् देता है। उसकी बात उसी रूप में समझ में बैठती है, जिस रूप में वह उसे कहता है। क्योंकि जो वह कहता है, उसे वह खूब समझता है, और जिसे वह खूब समझता है, उसे वह खूब कहता है। मैं समझता हूँ कि आलोचक की यही सामर्थ्य उसे सच्चा आलोचक बनाती है।

"सुगम और शास्त्रीय संगीत" इस बात का छपा हुआ फैसला है कि डाक्टर मदान बहुत गहरे में भी डुबकी मार कर तलहटी से ऐसी विचार मणियां खोज लाते हैं, जो साहित्य के स्वरूप की शोभा बढ़ाती हैं और कूल की तरंगों में खड़े होकर, 'गहरे पानी पैठ' से दामन बचाने वाले पुलिनविहारियों पर अंजलियों से विनोदभरी जल-बौछार भी करते हैं—उन्हें परिहासभरी चुटकियों से गुदगुदा भी देते हैं।

प्रकाशक द्वारा एक पुस्तक के रूप में परिचय कराये जाने के दस वर्ष बाद मदान साहब से सन् १९५२ की फरवरी-मार्च में मेरा साक्षात् परिचय हुआ। इसी वर्ष अपने पन्द्रह-सोलह वर्ष के पत्रकार के प्रिय पेशे, अनिश्चित घुमक्कड़ जीवन, नये व्यवसायों और नगरों की तलाश में भटकती ज़िन्दगी के फूल सिला कर, सनातन धर्म कालिज, अम्बाला कैण्ट में, मैं हिन्दी प्राध्यापक नियुक्त होकर आया था। डाक्टर इन्द्रनाथ मदान पंजाब-विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के रीडर तथा अध्यक्ष के रूप में हिन्दी एम०ए० के शिक्षण की सम्भावनाओं तथा सुविधा-असुविधाओं पर रिपोर्ट प्रस्तुत करने पहुंचे थे।

बड़े ध्यानपूर्वक पुस्तकालय का निरीक्षण करते रहे। प्राध्यापकों की योग्यता, अनुभव, साहित्य-सृजन, रुचियों-अरुचियों पर बातें चलती रहीं, सुझाव दिये जाते रहे, हास्य-विनोद होता रहा। उन्हीं दिनों मेरी प्रथम समीक्षा-पुस्तक "हिन्दी नाटककार" प्रकाशित हो चुकी थी। उन्होंने अपनी पुस्तकें भी अलमारी में देखीं, नाटककार के भी पृष्ठ उलट-पलट कर इधर उधर से दो चार पंक्तियां पढ़ी। ३०–३५ मिनट के संसर्ग में मदान साहब हम सबके इतने अपने बन गये कि हमारे हृदय पर अध्यक्ष-रूप का जो आतंक जमा था, जो संकोच हमारी वाणी और व्यवहार को बाहों में बांधे था, न जाने कहां विलीन हो गया।

पहली भेंट में ही मदान साहब अध्यक्ष से अधिक एक सहृदय सहानुभूति-शील इंसान बन गये। और कुछ ही महीने बाद यह देख कर मेरे विस्मय और आनन्द की सीमा न रही कि पंजाब-विश्वविद्यालय की एम०ए० परीक्षा के पाठ्यक्रम में "नाटककार" भी छपा है। एक वर्ष बाद यही सम्मान उन्होंने मेरी दूसरी पुस्तक हिन्दी-निबंधकार को दिया। कोई परिचय नहीं, हिन्दी समीक्षकों के किसी दल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा नाम नहीं, तब भी यह सम्मान। साफ है कि मदान साहब के पास परख की कोई निष्पक्ष कसौटी है। साथ ही नवीन को प्रकाश में लाने का बड़प्पन भी। इसके बाद अनेक बार अध्यक्ष मदान से मेरी भेंट होती रही, लेकिन एक-दो बार मिलने के बाद वह अध्यक्ष न रहे, एक हितैषी मित्र बन गये। मैं उनके लिए "प्रिय नलिन" बन गया, और वह "आदरणीय बंधु"। तब से अभी तक हमारा यही रिश्ता है। मैं हूँ उनके लिए "प्रिय नलिन" और वह है मेरे लिए "आदरणीय बंधु"—यद्यपि अपनी आत्मीयता, हितचिन्ता, अकृत्रिम हार्दिक स्नेह, बेतकल्लुफ व्यवहार के कारण वह मेरे लिये "प्रिय मदान साहब" ही अधिक हैं।

मझोला कद, गेहुआं रंग, पान की लाली में लिपटे ओठ, स्फूर्ति भरी चाल, स्वस्थ शरीर, अध्ययन भरी आंखें, मज़ाकिया स्वभाव, न मन में दुराव, न बातों में छिपाव, हृदय में सब के लिये सद्भाव— यह है मदान साहब का एक आकर्षक व्यक्तित्त्व। जिस महफिल में मदान साहब जमे होंगे, कभी उदासी न फटकने पायगी। वातावरण मुस्कानों में खिला होगा, विनोदी चुटकियों से थिरकता होगा, साथी हंसी से गद्गद् होते रहेंगे, बातचीत में व्यवहार में कोई कुण्ठा नहीं, कोई दैन्यभाव नहीं। और मज़ाक ऐसी पैनी, स्वस्थ, शिष्ट और क्षिप्र कि स्त्री-पुरुष, बालक-युवक सब चमक-चमक उठेंगे।

डा० मदान अविवाहित हैं, लेकिन एकांत जीवन का पछतावा न उनकी सांसों में तड़पता है, न आंखों में छलकता या झलकता है। उमंगें और उन्मुक्त खुशियां अवश्य उनके मुख पर खेलती हैं। अभावों के प्रति लापरवाही और प्राप्ति के प्रति उल्लास उनके जीवन की विशेषता है। आशा, उल्लास, आनन्द, विश्वास, उनका जीवनदर्शन है। अतीत के आंसू उनको नहीं भिगोते, भावी के सपने उनकी नींद को नष्ट नहीं करते। वह वर्तमान के भोगी हैं। एक बार मैं उनसे पूछ बैठा, "क्या कभी अविवाहित जीवन का अभाव आपको नहीं सताता?" पुस्तकों के ढेर की ओर संकेत कर उन्होंने मुस्कराते हुए बताया, 'ये उस अभाव को पूरा कर देती हैं।"

क्षणभंगुरतावादी दार्शनिक की निष्क्रियता उनके जीवन के उल्लास को शिथिल नहीं करती। संघर्ष-पराजित निराशावादी दार्शनिक की उदासीनता उनकी आशाओं की चमक को धुमैला नहीं बनाती। वह एक सच्चे खिलाड़ी की तरह जीवन से खेले हैं; लेकिन जीवन

(शेष पृष्ठ ७८ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी कुछ लोग बाकी हैं जहां में

कमलेश्वर

किसी ने मुझे फ़ोन किया और प्रारम्भिक 'हलो-हलो नमस्कार' के बाद उधर से सवाल आया, 'भईऽऽ..... यह नयी कहानी क्या ऽऽहै ? नयाऽ तो कुछ होताऽ नहीं—होता होऽऽ तब भी उससे कुछ होताऽ नहींऽऽ.....भईऽ हमें बताओ....'

मैं थोड़ा अचकचाया, क्या जवाब दूं ? बड़े धीरज से बोला, 'आप कुछ नयी कहानियां पढ़िए, बात समझ में आ जायेगी !' और मैंने कुछ संग्रहों और कुछ विशिष्ट कहानियों के नाम उन लेखक महोदय के लिये प्रस्तुत कर दिये ।

फ़ोन रख कर डाक देखने लगा, तो एक खत मिला—'.....में.....कहानी पढ़ी । सचमुच यह नयी कहानी है । मुझे बहुत अच्छी लगी । इसमें कथ्य का नयापन भी है और फार्म का भी....' मैं खत पढ़ता गया और नीचे दस्तखत देखे—इन्द्रनाथ मदान ।

कुछ दिन बाद फिर उन्हीं लेखक महोदय का फ़ोन आया, 'भईऽऽ.....यह तुम्हारी ऽनयी कहानी नयी उमर के लोगों की है न ऽ.....हमारी उमरऽऽ..... के लोगों की तो ऽ है नहींऽऽ.....उमर तो कभीऽऽ.....हमारी भी रही है.....'

मैंने बात को बीच में ही काट दिया और पूछा, 'आपने उन संग्रहों की कहानियों को पढ़ा, जिनका मैंने ज़िक्र किया था ?'

जवाब आया, 'भईऽ...संग्रह तो मिले नहीं.....नये लेखक पुस्तकेंऽऽ देते नहींऽ....' और उन्होंने अपनी तरफ से मज़ाक किया, 'तो यह भीऽऽ.... नयी कहानी कीऽ.. एक विशेषता है ऽ.....' और आगे बोले, तुम कुछ संग्रह मेरे लिये भिजवा दोऽऽ... तो पढ़ूं.....'

और इस बात के कुछेक दिनों के बाद एक पत्र मिला, '....यहां चण्डीगढ़ में नयी पुस्तकों का अकाल है । पत्रिकाएं आ जाती हैं, कुछ तो उनसे पढ़ लेता हूँ पर बात नहीं बनती । कुछ संग्रह खरीद लिये हैं, कुछ के लिये प्रकाशकों को लिखा है ।....के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी संग्रह कहां से मिल सकते हैं ? प्रकाशक का पता लिखना' और नीचे फिर दस्तखत देखे—इन्द्रनाथ मदान।

किसी जगह एक गोष्ठी थी। राजेन्द्र यादव के शब्दों में "पुरानी कहानी के सरकारी वकील बोल रहे थे—'नयी कहानी नाम की कोई चीज़ नहीं है, यह सब दुकानदारी है ! अपना माल बेचने के तरीके हैं....यह आन्दोलन दुकानदारी का आन्दोलन है और नयी कहानी के नाम पर ये लेखक अपने माल से बाज़ार को पाट देना चाहते हैं...."

और दूसरे दिन दोपहर में, कॉफी हाउस में जब मैं एक मित्र की मेज़ पर जाकर बैठा तो एक सज्जन बोल रहे थे, 'इन नये लेखकों की सब से बड़ी कमज़ोरी यह है कि ये बहुत कम लिखते हैं...साल में दो या तीन कहानियां लिख दीं, तो समझते हैं कि बहुत लिख दिया ! पुराने लेखकों की तरह इन्हें दुकानदारी जमाना नहीं आता !....' और जब उन सज्जन ने बात खत्म की तो मेरे मित्र ने परिचय कराया, 'यह है डॉ० इन्द्रनाथ मदान।'

एक आलोचक मित्र मिले। धीरे से बोले, 'भाई यह....जी आजकल क्या लिख रहे हैं ? इधर की कहानियाँ देखीं, क्या ख्याल है ? मुझे तो एकदम बकवास लगती हैं। लगता है अब....जी चुक गये !'

और जब वही लेखक जी साथ थे, तो वही आलोचक मित्र बोले, 'भाई....जी आपकी इधर की कहानियों में एक ज़बरदस्त नया मोड़ आया है....मैं तो स्वागत करता हूँ इस विकास का। सचमुच आपने नये धरातल पर कहानियों को उठाया है। और इधर नया क्या लिख रहे हैं ?'

उन्हीं दिनों एक लम्बा खत आया, 'अपने दोस्त को समझाओ कि उनकी इधर की कहानियों में अमूर्तता बढ़ रही है, यह उनका सही रंग नहीं है। मैंने उन्हें भी इसी के साथ एक खत लिखा है और यही सब और साफ-साफ लिख दिया है।' नीचे वही दस्तखत थे—इन्द्रनाथ मदान।

एक अंग्रेज लेखक मित्र ने स्वयं ही मिलने का समय निश्चित किया था—पांच बजे, लाबोहीम में। मैं वक्त से पहुंच गया। वक्त गुज़रता गया और बिल बढ़ता गया। करीब छः बजे वे अंग्रेज मित्र पधारे। मुझ पर ही अहसान-सा करते हुए। साढ़े छः बजे मुझे कहीं और पहुंचना था इसलिये दस मिनट बाद ही मैं उनसे सादर छुट्टी मांग कर और बिल अदा करके चल दिया।

दूसरे दिन किसी से सुना कि वे कह रहे थे कि मैंने उनकी अवज्ञा की। अवज्ञा ही नहीं, यह तो अपमान था।

इसके कुछ ही दिन बाद एक सज्जन दिल्ली आये तो मैंने स्वयं उन्हें निमंत्रित किया और एक जगह मिलने की बात तय की। इतना बड़ा घपला हुआ कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें बुलाकर भी मैं मिलने नहीं मैंने पहुंच पाया। उसी दिन वे दिल्ली से लौट गये और मुलाकात भी नहीं हो सकी। मैं मन ही बहुत लज्जित था कि दो दिन बाद खत आया, 'तुम वादा करके भी नहीं मिले। मैं समय से पहुंच गया था। तुमने चण्डीगढ़ आने का वादा भी किया था, उसे तो पूरा कर रहे हो न? कब आ रहे हो, लिखना।' और दस्तखत, वही—इन्द्रनाथ मदान।

एक मित्र ग्यारह बजे कार्यालय में आये। बहुत उत्तेजित थे। कहानी के मसले को लेकर इतने उलझे हुए थे कि तीन बजे तक लगातार बहस करते रहे। मैं ऊब चुका था, पर उनकी जिज्ञासाएं और प्रश्न समाप्त ही नहीं हो रहे थे। भूख के मारे मेरा बुरा हाल था। और सिर दुखने लगा था। मैंने उनसे कहा, 'कुछ खाना-वाना खाया जाये, चलिए पास के होटल में चलते हैं।'

'होटल में बात नहीं हो सकती!' उन्होंने कहा।

'वक्त बहुत हो गया है, खाना खा लिया जाय, तब फिर बात करेंगे।'

'अरे हटाइए भी खाना-वाना... वह होता रहेगा.....' उन्होंने कहा, 'पहले यह बताइए कि नई कविता और नई कहानी की संचेतना में मौलिक भेद कहाँ है?'

'आपको कोई भेद नजर नहीं आता?' 'नहीं!'

'आप एक बार इस नज़र से प्रमुख नये कवियों को अगर एक बार फिर देख जायें तो बात बन जायेगी।' मैंने कहा।

मेरी इस बात से उन्होंने कुछ बुरा मनाया बल्कि ग़लत ही अपने को अपमानित महसूस किया। और बर्दाश्त न कर पाने के कारण बिफर उठे, 'तो क्या मैं आपसे बिना पढ़े ही बहस कर रहा हूँ? जितने नये कवि आपने नहीं पढ़े होंगे, उतने मैंने पढ़े हैं, इसी लिये बात कर रहा हूँ ....' मैंने उन्हें नाराज़ देखा, तो मजबूरन फिर बहस करने को तैयार हो गया और बोला, 'मिसाल के लिये अज्ञेय, नरेश मेहता, मुक्ति बोध, कुंवरनारायण, भारती, रघुवीर, सर्वेश्वर और ख़ास तौर से शमशेर को ही ले लीजिए.....' मैं कह ही रहा था कि उन्होंने मुझे पकड़ा, 'कौन शमशेर?'

'शमशेर बहादुर सिंह।' मैंने बताया।

'हिन्दी की बात कीजिए।' वे झल्लाकार बोले।

और न चाहते हुए भी मुझे बेसाख्ता हँसी आ गई। उन्होंने बेहद अपमानित महसूस किया। स्थिति को संभालने के लिए मैंने फिर गंभीरता से खाना खाने का प्रस्ताव रखा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'आपका मन तो खाने में रखा हुआ है।' उन्होंने हिकारत से कहा और उठ कर चले गये।

और उस बार ही, जब कॉफी हाउस में नये कहानीकारों पर चर्चा चल रही थी, तो मैं बहस के मूड में था और विस्तार से अपनी बात समझाने में लगा हुआ था। मेरे मित्र कहानी की कमजोरियों और दिशाभ्रम के बारे में बड़ी ईमानदारी से कुछ बातें कह रहे थे कि प्रस्ताव आया—

'भाई अब कुछ खाया-पिया जाये.....यह बहस तो बाद में हो लेगी।' प्रस्ताव कर्ता थे—डॉ० इन्द्रनाथ मदान।

और मैं सोचता हूँ कि ऐसे लोगों की कमी क्यों है हमारे बीच...जिससे मिला उसमें कुछ न कुछ पेचो-ख़म मिला। और अक्सर मन उदास हुआ— पर जब मदान साहब से मिला तो सचमुच—

बहुत जी खुश हुआ, 'हाली' से मिलकर,
अभी कुछ लोग बाकी हैं जहाँ में।

८ ए/५४
डब्लयू. ई. ए.
नई दिल्ली

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

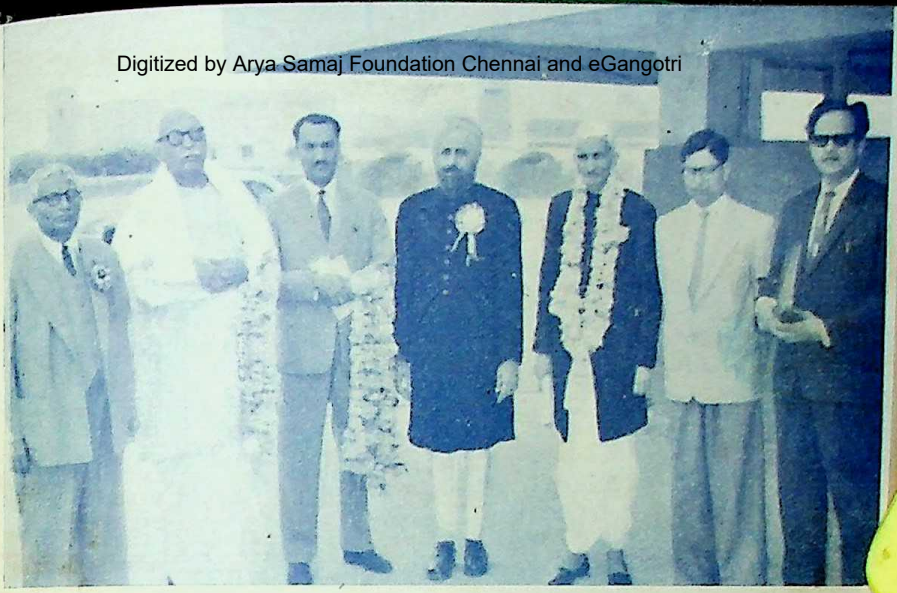

शोध गोष्ठी के अध्यक्ष श्री हरिश्चन्द्र खन्ना, निदेशक, लोक सम्पर्क विभाग, डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा आचार्य विनय मोहन विभागीय अधिकारियों के साथ

चण्डीगढ़ के विराट कवि सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण देते हुए पंजाब के कराधान मन्त्री श्री रामसरन चन्द मित्तल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० मदान : एक निर्कुण्ठ व्यक्तित्व

रञ्जन

पुराणों में 'वैकुण्ठ' शब्द का उल्लेख 'विगत–कुण्ठ' पुण्यात्माओं की पारलौकिक उपलब्धी के सम्बन्ध में जहां-तहां आया है । सोचता हूँ—मर्त्यलोक के प्रसंग में 'निर्गत-कुण्ठ' विदेहों के प्रति 'निर्कुण्ठ' शब्द का उल्लेख भी कहीं हो गया होता तो बात कहने में काफी आसानी रहती ! डॉ इन्द्रनाथ मदान के समूचे व्यक्तित्व एवं कृतित्व की अभिव्यक्ति 'निर्कुण्ठ' शब्द में हो सकती है और वह भी स्वतः स्पष्ट !

संयोग की बात है कि यह विशेषण भी अपने विशेष्य की भान्ति संस्कार-सीमाओं से—भले ही वे व्याकरण की हों या आचरण की—निर्मुक्त और निरपेक्ष है और यही संभवतः विशेष्य-विशेषण भाव की वह स्थिति है जहां शब्द ब्रह्म रूप और ब्रह्म शब्द रूप हो जाता है । पंजाब के हिन्दी-क्षेत्र में जब जब डॉ० मदान का नाम सुनने में आया तब कई-एक विभिन्न उपनामों के साथ । बात संभवतः लेपन-चौवन की रही होगी । एक मित्र जालन्धर से मिलने आए और खुशकिस्मती यह कि डॉ० इन्द्रनाथ मदान से भी ताज़ा-ताज़ा मिल कर आए थे ! मूड में थे, छूटते ही कहने लगे—"डॉक्टर मदान भी क्या आदमी हैं यार, यूनिवर्सिटी में रीडर हैं—पर बड़े ही फक्कड़ और अलमस्त जीव हैं ।" फक्कड़ या अलमस्त होना और यूनिवर्सिटी में रीडर होना परस्पर विरोधी होना कैसे है ?—यह बात तब भी समझ में नहीं आई थी । पर मित्र महोदय ने गम्भीर बन कर व्याख्या करते हुए कहा था—"आप उनके पास बैठ कर यह अनुभव ही नहीं करते कि आप किसी ऐसे 'महान्' के पास बैठे हैं जो पाण्डित्य और प्रतिभा के भार से मुँह की मुस्कान खो बैठा हो ।"

मित्र की बात सुन कर सदा मुस्कराते रहने वाले, खुशमिज़ाज डॉ० मदान की एक झलक दिमाग में कौंध गई । कुछ समय बाद पटियाला में पंजाब के सर्वप्रथम हिन्दी-लेखक-सम्मेलन का आयोजन हुआ । पंजाब के सभी गण्यमान्य लेखकों के आने की आशा था । किसी ने पूछा—'डा० मदान भी आ रहे हैं क्या ?' उत्तर में संयोजक महोदय ने कहा—'मन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मौजी हैं, आ भी सकते हैं और नहीं भी ।'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और हुआ यों कि और बहुत लोग आए पर डा० मदान के मन की मौज उन्हें इधर न ला पाई । जालन्धर के एक बहुत ही सामान्य से गोष्ठी-समारोह पर उन्हें उपस्थित देख कर, जहाँ संयोगवश मैं भी उपस्थित था, मैंने एक समीपवर्ती से पूछा—"जिन्ह लोग 'डॉ० साहिब डा० साहिब' कह रहे हैं क्या यही डॉ० इन्द्रनाथ मदान हैं !"

'जी हाँ'

'पर इतने छोटे-से आयोजन में ?'

'वह छोटे-बड़े की चिन्ता से मुक्त हैं, रमते राम जो ठहरे'—सीधा-सा उत्तर मिला ।

और आज डा० मदान से सामान्य से कुछ अधिक परिचित होकर जान पाया हूँ वह सचमुच मनमौजी हैं, अलमस्त हैं और रमते राम भी । प्रथम परिचय में ही बातचीत ऐसी कि छिपाव या संकोच के लिए कोई स्थान ही नहीं । हँसी—बिल्कुल निर्बन्ध ! चाहते हैं दूसरा भी हँसे तो ऐसे ही । एक दिन कहने लगे—"मैं 'मुक्त हास्य' को एक महान साहित्यकार की विशेषता मानता हूँ। पर मुझे यह विशेषता केवल दो व्यक्तियों में ही मिली एक प्रेमचन्द में और दूसरे आचार्य द्विवेदी में !" मैंने कहा तो नहीं लेकिन मन ही मन मान लिया—"यह विशेषता एक तीसरे व्यक्ति में भी है ।"

इस वर्ष डॉ० मदान के अभिनन्दन का समाचार एक सुखद समाचार था जिसकी चर्चा-परिचर्चा पंजाब के शिक्षा-क्षेत्रों में एवं साहित्य-क्षेत्रों में जहां-तहां मुखरित हुई । पटियाला की साहित्य मण्डली की सान्ध्य-चर्चा परिचर्चा में भी एक बार यह विषय प्रमुख हुआ तो प्रयास किया गया कि डॉ० मदान के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को उचित प्रतीकों में अभिव्यक्त किया जाए । प्रो० ज्ञान अपने वाग्वैदग्ध्य, श्री कृष्ण कुमार शर्मा अपने बेलौस चिन्तन, श्री कृष्ण कुमार खन्ना अपनी प्रगतिशीलता और श्री प्रेम प्रकाश शर्मा अपनी निर्णयात्मक सम्मति के प्रति सान्ध्यचर्चा में विशेष रूप से जागरुक थे । कई प्रतीक आए और गए । अन्ततः सर्व-सम्मति से निश्चय हुआ—'डॉ० मदान को सम्पूर्णतः अभिव्यक्त कर सकने की सामर्थ्य यदि किसी एक शब्द में है तो वह एक शब्द निश्चय ही 'निर्कुण्ठ' है ।'

निष्कर्ष इस प्रकार था—'महान व्यक्तियों को बेझिझक तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है—वैकुण्ठ, निर्कुण्ठ और निष्कुण्ठ ।

'वैकुण्ठ' वे व्यक्ति हैं, प्रत्येक प्रकार की कुण्ठा जिन्हें छोड़ कर स्वयं ही चल देती है क्योंकि उनके व्यक्तित्त्व में टिकने के लिए कोई स्थान ही उसे नहीं मिलता। किन्तु ऐसे सर्वतन्त्र स्वतन्त्र वैकुण्ठ महानुभावों के दर्शन, दुर्भाग्य मर्त्यलोक का,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रायः ही वैकुण्ठ लोक में होते हैं।

'निष्कुण्ठ' तीसरी कोटि के व्यक्ति हैं जो 'कुण्ठा-मुक्ति' के लिए पूर्ण प्रयत्नशील रहते हैं—कृतकार्य होते भी हैं किन्तु फिर भी निषेधात्मक 'निस्' का लँगड़ता 'स्' किसी न किसी रूप में 'कुण्ठाश्रित' रह ही जाता है। अब 'कम्बल' ही न छोड़े तो क्या किया जाए ? व्याकरण और आचरण के संस्कारपूर्ण मुक्ति होने ही नहीं देते।

'निर्कुण्ठ' दूसरी स्थिति के व्यक्तियों का प्रतीक है और संभवतः आदर्श भी। यहाँ कुण्ठा स्वयं घबरा कर नहीं भागती बल्कि व्यक्ति अपने बाहुबल से उसे निकालता है और निर्गमन की यह 'रेफ-ध्वजा' 'कुण्ठा' पर ऐसे लहराती है जैसे 'कालिय नाग' के फण पर नर्त्तन करते हुए नटराज श्रीकृष्ण ! शब्द व्याकरण के बन्धन से मुक्त और व्यक्ति आचरण और निराकरण से एकदम ऊपर ! मुझे लगता है सचमुच डॉ० मदान के व्यक्तित्व को मुखर करने के लिए इससे अधिक उपयुक्त शब्द और कोई नहीं।

हास और अनुप्रास की दृष्टि से सोचा जाए तो ज्ञान-कुण्ठा, परिधान-कुण्ठा और सम्मान-कुण्ठा—ये तीन प्रकार की कुण्ठाएं हैं जिनसे आज का बुद्धिजीवी मध्यवर्ग अंशतः अथवा सर्वांशतः पीड़ित है। डॉ० मदान का किन शब्दों में अभिनन्दन किया जाए जो इन तीनों प्रकार की कुण्ठाओं से मुक्त हैं। जो व्यक्ति यह कह सके —'बचपन से जब से अपने होश में हूँ, समझ से काम लेने की आदत नहीं डाली जिसका नतीजा यह निकला है कि ज़िन्दगी में जितने भी काम या सौदे किए हैं—घाटे के किए हैं'—उनके पास ज्ञान-कुण्ठा भला कैसे फटक पाएगी ?

जो व्यक्ति यह कह सके—'मेरी वेशभूषा, रहन-सहन, खान-पान व्यवहार सब साधारण हैं। मेरे पास न तो लेखक के लम्बे-लम्बे घुंघराले बाल हैं, न हीं रंगबिरंगे वस्त्र हैं, न ही बढ़िया या फटे कागज़ हैं'[1]—उसे परिधान-कुण्ठा या अन्य अनेक प्रकार की औपचारिकताओं की चिन्ता भी कहां ? प्रान्त-कुण्ठा भी इसी वर्ग में है। पिछले दिनों चण्डीगढ़ में एक उदीयमान लेखक ने मुझे कहा—'नई मान्य ताओं के प्रतिष्ठापक डॉ० मदान भी पंजाब की नई काव्य चेतना के प्रति उदासीन क्यों हैं ?' प्रश्न मुझे धुंधला लगा पर उत्तर सीधा बन पड़ा—"डॉ० मदान निर्कुण्ठ हैं, वैकुण्ठ नहीं !"

सम्मान-कुण्ठा से मुक्ति संभवतः 'वैकुण्ठ', महानुभावों के हिस्से में आई है। पर डाक्टर मदान के पास घंटों बैठ कर, उनकी रचनाएँ पढ़ कर लगा जैसे वह

---

१. 'सुगम तथा शास्त्रीय संगीत'——ले० डा० इन्द्रनाथ मदान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इस ओर से पूर्ण रूपेण मुक्त हैं । उन्हें अपने लेखों और वार्त्ताओं के सम्बन्ध में अण्डर ऐस्टिमेशन हो तो ओवर ऐस्टिमेशन तो बिल्कुल भी नहीं । एक पुस्तक की भूमिका में उन्होंने लिखा—"इन लेखों या वार्त्ताओं को आकाशवाणी ने प्रसारित किया था तब इने-गिने मित्रों तथा कुछ शत्रुओं के अतिरिक्त किसी ने भी इन्हें सुनने का कष्ट नहीं उठाया था ।" एक दूसरे स्थान पर लिखा—"मुझमें सृजनात्मक प्रतिभा का अभाव है । केवल आलोचना करता हूँ । सात-आठ पुस्तकें लिख डाली हैं, जो कम बिकती हैं । इससे मन को संतोष मिलता है कि शायद ये काम की पुस्तकें होंगी जो नहीं बिकतीं ।"

डॉ० मदान को जितनी गहराई से जाँचने की कोशिश की उतना ही लगा कि वे सम्मान की दृष्टि से भी न केवल साहित्य और साहित्यार्जन के क्षेत्र में अपितु पद-प्रतिष्ठा के क्षेत्र में भी नितान्त चिन्ता-मुक्त हैं ।

आचार्य हजारी प्रसाद जी द्विवेदी के पंजाब विश्वविद्यालय में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष पद पर आने से पहले देहली की प्रदर्शिनी में वहां के एक 'बहुश्रुत' साहित्यकार ने मेरे मित्र श्री प्रताप सिंह जी से कहा था —'सुना आपने, अब गंगा उत्तर प्रदेश से नहीं पंजाब से दूसरे प्रान्तों की ओर बहेगी ।'

चण्डीगढ़ के यूनिवर्सिटी कैम्पस में अपनी कोठी के पिछवाड़े बरामदे में हरे-भरे वृक्षों की घनी छाया में एक अनविछी खाट पर बैठ कर मुक्त हास्य बिखेरते आचार्य द्विवेदी की दिव्यमूर्ति के दर्शन कर बहुत बार सोचा है—पंजाब का सौभाग्य कि उसे ज्ञान-गंगा के उद्गमस्थान होने का गौरव मिल रहा है ।

एक दिन प्रो० अतरसिंह ने कहा—"आचार्य द्विवेदी को पंजाब में लाने का श्रेय यदि किसी एक व्यक्ति को है तो वह डॉ० मदान को ।" मैंने सुना तो आश्चर्य-चकित रह गया । धीरे-धीरे सब कुछ स्पष्ट हुआ । पंजाब का सौभाग्य—आचार्य द्विवेदी वाराणा सी के कार्यभार से मुक्त हुए । डॉ० मदान का सुझाव, उपकुलपति डॉ० जोशी की साश्चर्य सहमति और अन्ततः आचार्य द्विवेदी की स्वीकृति-प्रगति के केवल तीन ही चरण । अपनी सम्मान–समृद्धि की संभावनाओं से निश्चिन्त डॉ० मदान का भागीरथ प्रयत्न! इच्छा होती है गंगा-लहरी के साथ-साथ 'भागीरथ महिमा' का छन्दोबद्ध-स्तवन भी कोई करे किन्तु एक ओर ज्ञान-गंगा के किनारे तीर्थयात्रियों तथा गोताखोरों की भारी भीड़ और दूसरी ओर निर्कुण्ठ भागीरथ—अद्भुत संयोग है। मन की श्रद्धा को उँडेलने के लिए इतना ही काफी है—"धन्यः सुकृतिनोवयम्"

सहायक निदेशक,
हिन्दी विभाग, पटियाला

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० इन्द्रनाथ मदान: एक झांकी

गुरुदत्त शर्मा

आज जब देश में पृथकता की भावनाएँ राष्ट्रीय संकट के कारण दब गई हैं, कोई राष्ट्रीय भावनाओं को बढ़ावा दे तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपने पुनीत कर्त्तव्य की पूर्ति कर रहा है। जब प्रादेशिक भावनाओं का बोलबाला हो तो उस समय इन्हें निरुत्साहित करना बड़े साहस का काम है।

यह बात डा० इन्द्रनाथ मदान जी पर पूर्णतया चरितार्थ होती है। मई १९५९ में दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर से हिन्दी अनुसंधान गोष्ठी में विभिन्न प्रान्तों. राज्यों के विद्वान् प्राध्यापक तथा अनुसन्धानकर्ता सम्मिलित हुए थे। लगभग सब राज्यों के विद्वान् तथा शोधकर्ता परस्पर विचार-विनिमय के लिये अलग अलग भी इकट्ठे होते थे। डा० मदान जी से भी अनुरोध किया गया कि पंजाब के विद्वान् प्राध्यापकों तथा शोधकर्त्ताओं की भी अलग बैठक की जाये तथा एक राज्य-शाखा का गठन किया जाये। इस सुझाव को श्रद्धेय डा० साहिब ने मानने से यह कहकर साफ इनकार कर दिया कि मैं राज्य की अलग शाखाएँ स्थापित करने के विचार को पसन्द नहीं करता।

आज के युग में 'तोषण-नीति' का अनुसरण भी प्रायः देखा जाता है।

डा० मदान अपने विचारों को निर्भीकता पूर्वक व्यक्त करने का साहस रखते हैं। 'कोई क्या कहेगा' के भय से लोग अपने स्वतंत्र विचार अभिव्यक्त करने में बड़ा संकोच करते हैं। पिछले दिनों (दिसम्बर, १९६३) में हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री यशपाल जी की स्वर्ण जयन्ती मनाई गई। सभी वक्ताओं ने श्रद्धेय यशपाल जी के गुणानुवाद में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। डा० मदान जी ने इस मूर्धन्य साहित्यकार का सही मूल्यांकन किया। आपने गुणानुवाद को शिखर तक नहीं पहुंचाया और न ही वे किसी साहित्यिक अभाव को अभिव्यक्त करने में पूर्वाग्रह आदि से अभिभूत हुए।

पंजाब में नई शैली की आलोचना का सूत्रपात करने का श्रेय भी डा० मदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी को है। पंजाब विभाजन से पूर्व हिन्दी पढ़ना-पढ़ाना लड़कियों का काम समझा जाता था। उस समय डा० मदान ने 'आधुनिक हिन्दी साहित्य' तथा प्रेमचन्द : एक विवेचन' नामक विषयों पर ग्रन्थ रचना करके पंजाब में आलोचना-साहित्य के पथ को प्रशस्त किया।

पंजाब में हिन्दी शोध कार्य को बढ़ावा देने वाले भी आप ही हैं। विभाजन से पूर्व हिन्दी साहित्य में शोध-कार्य करने वाले व्यक्तियों की संख्या नगण्य थी। आपके अथक प्रयास एवं प्रोत्साहन के फलस्वरूप अब तक पंजाब में लगभग बीस व्यक्ति पी–एच० डी० की उपाधि से विभूषित हो चुके हैं। इस समय लगभग एक सौ व्यक्ति विभिन्न विषयों पर शोध कार्य कर रहे हैं।

किसी विषय के प्रतिपादन में आप सूत्र शैली का आश्रय लेते हैं जिससे कि विषय विशेष की अभिव्यक्ति हस्तामलकवत सहज हो जाती है।

विभाजन के बाद पंजाब विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना हुई और आप उसके कर्णधार बने। पहले हिन्दी परीक्षाएँ केवल 'प्रभाकर स्तर' तक सीमित थीं। यह विभाग आज वटवृक्ष का रूप धारण कर चुका है। आज इस विभाग में न केवल एम०ए०, पी–एच०डी० स्तर की पढ़ाई होती है, बल्कि हिन्दी जगत् के मूर्धन्य विद्वान् डा० हज़ारी प्रसाद द्विवेदी जी के [illegible] अन्य प्रांतों के छात्र भी पंजाब में हिन्दी साहित्य की शिक्षा के लिये आने लगे हैं। हिन्दी विभाग के अपूर्व प्रसार से आपकी श्लाघ्य प्रशासनिक कुशलता का परिचय मिलता है।

डा० मदान से वार्षिक समारोह के पूर्व मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। हमें समारोह की स्वागत-समिति में काम करने के लिए चंडीगढ़ भेजा गया था। डा० मदान से पूछा गया कि वे यदि किसी व्यक्ति को समारोह पर निमन्त्रित करना चाहें तो उसका नाम व पता बता देवें। आपने अपने नौकरों के नाम सबसे पहले गिने। इससे आपके वेदान्ती स्वभाव का पता चलता है। आपका 'दीन बन्धुत्व' सराहनीय है।

आजके तथा-कथित आधुनिकता ग्रस्त व्यक्तियों में शारीरिक परिश्रम के प्रति घृणा की भावना पाई जाती है। डा० मदान का बागीचा देख कर पता लगता है कि आपने यह काम नौकरों के सुपुर्द नहीं कर रखा, बल्कि वे आप स्वयं इसमें सक्रिय रुचि लेते हैं। वैसे आपने शिक्षा एवं साहित्य के उद्यान में जिन पादपों का बीजारोपण किया, वे आज वटवृक्ष का रूप धारण कर चुके हैं। सैंकड़ों छात्र आपकी छत्रच्छाया में एम.ए. एवं पी-एच. डी. की परीक्षाएं उत्तीर्ण करके हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योग दे रहे हैं। यदि आपको पंजाब के हिन्दी साहित्योद्यान का परिष्कर्ता कहूं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया जाय तो इसमें कोई अतिशयोक्ति न होगी।

विद्या के क्षेत्र में ईर्ष्या भी अपनी जगह बनाए हुए है। प्रभुता पाकर मद एवं ईर्ष्या का हो जाना स्वाभाविक है। डा० मदान को यश, धन एवं वैभव—सभी की प्राप्ति बहुत हुई है परन्तु इन प्राप्तियों के मद से आप उन्मत्त नहीं हुए। कोई भी व्यक्ति आपको छः पैसे का पत्र लिख कर आपसे आशीर्वाद प्राप्त कर सकता है। मिलने आने वालों के लिए कोठी हर समय खुली है। बड़े आदमियों की तरह मिलने के लिये कोई अन्य तारीख या समय नहीं दिया जाता, बल्कि प्रत्येक आगन्तुक का उसी समय स्वागत-सत्कार किया जाता है। किसी को निराश होकर लौटना नहीं पड़ता। वे व्यर्थ की टालमटोल में विश्वास नहीं रखते।

वित्तेषणा या पुत्रेषणा से रहित व्यक्ति भी लोकेषणा-ग्रस्त पाए जाते हैं। डा० मदान साहित्य एवं भाषा की ठोस सेवा करने में विश्वास करते हैं। वे सभाओं की अध्यक्षता एवं भाषणों आदि से दूर रहना चाहते हैं। पंजाब सरकार द्वारा किए गए सम्मान के उत्तर में भी आपने बड़ी नम्रता पूर्वक कहा कि मैं कोई बड़ा साहित्यकार नहीं, मेरे हितैषियों एवं मित्रों ने मुझे ऐसा बना दिया है।

डा० मदान व्यर्थ की औपचारिकता में विश्वास नहीं रखते। पिछले दिनों चंडीगढ़ में प्रसिद्ध साहित्यकार श्री यशपाल की जयन्ती मनाई गई। आपने श्री यशपाल के सम्मान में भाषण देते हुए अत्यधिक संबोधनों एवं विशेषणों की बौछाड़ नहीं लगाई बल्कि इतना कहा—"श्री यशपाल तथा श्रीमती प्रकाशवती"।

वे हर क्षेत्र में पल्लवग्राही ज्ञान के स्थान पर विशेषज्ञता में अधिक विश्वास रखते हैं। आपने आधुनिक हिन्दी साहित्य, नई कविता, नई कहानी तथा प्रयोगवाद आदि प्रायः अछूते विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है और इस क्षेत्र में काम करने वाले साहित्यकारों को मार्गदर्शन एवं नई दिशा प्रदान की है। भाषा विज्ञान, रस, सिद्धान्त, अलंकार तथा सैद्धांतिक आलोचना के क्षेत्र में आपने अधिक प्रयास नहीं किया।

इस प्रकार डाक्टर मदान ने हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में जो योग दिया है, उसके लिए उनमें अहम्मन्यता लेशमात्र भी नहीं है। वे अनौपचारिकता, स्पष्ट-वादिता, सहानुभूति तथा सन्तोष के गुणों से दूसरों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। हिन्दी जगत् को आपसे महान् आशाएं हैं। आशा है कि आपकी लेखनी हिन्दी के अछूते विषयों पर प्रकाश डालती रहेगी।

सहायक निदेशक,
हिन्दी विभाग, पटियाला

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० इन्द्र नाथ मदान

पुरुषोत्तम कुमार निझावन

हिन्दी के विद्वान् अध्यापक और पंजाब में हिन्दी की गतिविधि के मेरुदंड, डा० इन्द्रनाथ मदान व्यक्तित्व और कृतित्व, दोनों ही दृष्टियों से एक रोचक व्यक्ति हैं। वर्ष १९४८ में कुछ समय के लिये दिल्ली में पंजाब विश्व-विद्यालय के रिफ्यूजी कालेज अर्थात् कैम्प कालेज में मैं उनका छात्र रहा हूँ, पर यह शायद अब उनको याद नहीं होगा। उसके बाद शिमला में और तदनंतर जालन्धर में कई तरीकों से उनका साक्षात्कार हुआ होगा, पर मैं उनसे अक्सर बचता ही रहा। इसमें मेरा अपना ही कसूर है। कई बार शिमला में राकेश मेरे साथ होता और डा० साहिब घूमते हुए कहीं मिल जाते और राकेश उनके साथ बातें करने लग जाता, तो मैं कुछ दूरी पर उन दोनों से बच कर खड़ा हो जाता। जालन्धर में रेडियो कवि सम्मेलनों पर उनसे पूर्व या बाद में कई बार साहित्यिक मित्रों के साथ डा० साहिब से मुलाकात भी होती तो नमस्कार प्रति-नमस्कार के अतिरिक्त अधिक बात नहीं होती। और डा० साहिब के स्वभाव की खूबी जैसा कि अब मैं समझा हूँ यह है कि वह किसी की दूरी की भावना को जान बूझ कर तोड़ना नहीं चाहते, हालांकि उनके स्वभाव, बातचीत और उठने बैठने में न तो कुशल व्यक्ति का दिखावा, न मध्यम वर्गीय सफलता की औपचारिकता और न किसी विशिष्ट स्थिति (status) की पद सुलभ दूरी ही है। ज़रा खुले भाव से मिलने पर व्यक्ति उनकी मित्रता की पात्रता बहुत सहज ढंग से पा लेता है, इस बात का भेद मुझ पर चंडीगढ़ में भी आकर बहुत बाद में खुला।

कोई चार बरस पहले की बात है राजधानी की पब्लिक लाइब्रेरी के आडि-टोरियम में साहित्य गोष्ठी च०डीगढ़ के वार्षिक अधिवेशन का आयोजन था जिसका स्टेज संयोजन मझे सौंपा गया था। डा० द्विवेदी उसकी प्रधानता कर रहे थे और साहित्यिक एवं साहित्य प्रेमी वहां काफी संख्या में मौजूद थे। उसी आयोजन में डा० साहिब ने नई कहानी पर एक पेपर पढ़ना था। डा० साहिब की बारी आने पर मैंने डा० साहिब का नाम और विषय प्रस्तुत किये। विषय मैं ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वही बताया था जोकि प्रबन्धकों ने मुझे दिया। हालांकि मैं डा० साहिब का परिचय कोई अनुपयुक्त विशेषण लगा कर नहीं दे रहा था, तथापि डा० साहिब ने अपने स्थान से ही ऊंचे स्वर में कहा, "लेख का विषय अब यह नहीं है।" मैं थोड़ा कट सा गया। पर जब मैंने उनके बताये हुए विषय का ही परिचय देना चाहा तो तब भी उन्होंने यह कह कर मुझे रोक दिया, "अपने विषय का परिचय मैं खुद ही दे लूंगा।" मेरे लिए उनका यह व्यवहार मुझे बहुत अप्रत्याशित लगा। मैंने और कोई भी शब्द कहे बगैर स्टेज उनके लिए छोड़ दिया। पर मन ही मन में यह सोचता रहा कि शायद मुझसे कहीं कोई भूल हो गई है, वरना साधारण शिष्टाचार से अधिक तो मैं कुछ भी नहीं कह रहा था। आखिर कई बार संयोजन में ऐसी भूलें हो जाना बिल्कुल अस्वाभाविक भी नहीं होता। पर डा० साहिब ने मेरी किसी भी भूल की ओर संकेत किए बिना बड़े आराम से अपनी जो बात कहनी थी कही और फिर इत्मीनान से वहीं जाकर बैठ गए। उसके बाद अपनी बारी पर मैंने वहां एक छोटी सी कविता पढ़ी जो डा० साहिब को शायद बहुत अच्छी लगी, क्योंकि उसका एक भाव डा० साहिब की फरमाइश पर ही मुझे दो तीन बार पढ़ना पड़ा। तब मैंने मन ही मन सोचा था कि शायद डा० साहिब अपने बारे में निपट औपचारिक विशेषणों से भी बचते हैं। आज लगता है कि यह बात सत्य के बहुत निकट है।

एक और घटना का जिक्र और करना चाहता हूँ। एक दिन यूनिवर्सिटी में कोई छोटा सा आयोजन था और मैं डा० साहिब के पास ही बैठा हुआ था। मुझे कहने लगे, 'मेरी नई पुस्तक देखी।' जब मैंने "नहीं" कहा तो बोले, "मैं तुम्हें भिजवाऊंगा। उसका रिव्यू करना है, पर देखना, रिव्यू सख्त होना चाहिए, इसी लिए तो मैंने तुम्हें चुना है।" मैंने कहा, "वह क्यों", तो बोले "आजकल अच्छे रिव्यू छप जाने से पुस्तक नहीं बिकती। जिस पुस्तक का रिव्यू कड़ुवा हो, उसकी कुछ प्रतियां तो बिक ही जाती हैं", इस तर्क में युग की उन तमाम हेराफेरियों पर, जो साहित्यिक क्षेत्र में विशेष रूप से चला करती हैं, एक तीखा कटाक्ष भी था और साथ ही मेरे साथ एक चुस्त सा मज़ाक भी। मैं चुप हो रहा। खैर, मैंने जो रिव्यू किया, वह वाकई कुछ सीमा तक सख्त था। पर डा० साहिब ने उसे पढ़ कर किसी मित्र से बड़े इत्मीनान से फरमाया "हां, वैसे जो कुछ लिखा है, उसमें सच्चाई अवश्य है!" तब मुझे लगा कि मैं कृतकार्य हो गया हूँ।

यह तो हुई कुछेक मुलाकातों की बात। पर इस बीच व्यक्ति व्यक्ति के बीच जिस प्रकार का जांचना पहचानना चलता रहता है उससे मेरे मन के पटल पर उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तित्त्व का एक बहुत ही मोहक सा चित्र बन गया है ।

जब मैंने उनको पहले पहल देखा था, यानी कि विभाजन के कुछ मास बाद, तब वे अभी पूरे जवान थे, यद्यपि नौजवान न सही । हम पं० उदयशंकर भट्ट के शिष्य और बचपन से ही संस्कृत हिन्दी के माहौल में पले हुए, हमारे मन में हिन्दी के अध्यापक का सामान्य बिम्ब (Image) बिल्कुल दूसरे प्रकार का था । कारण कि आर्य-समाज के प्रचार के कारण हिन्दी के साथ हिन्दुओं के सांस्कृतिक पुनरुत्थान की बात बहुत गहरे तरीके से जुड़ी हुई थी । कुछ लोग हिन्दी पढ़ने पढ़ाने वालों को बहुत आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे और उनकी दृष्टि में उनकी पुराने ढंग की ढीली ढाली वेशभूषा उनको आर्य ऋषियों के बहुत निकट ले जाती थी । हिन्दी के अध्यापक का व्यक्तित्व बहुत हद तक निश्चित था । आज भी कुछ हद तक इसका प्रभाव मिटा नहीं है । इसलिए मध्यम आर्य वर्ग के अक्सर वे माता पिता जो अपने बच्चों के भविष्य की ओर अधिक जागरूक होते थे, हिन्दी के पठन पाठन की ओर उनको नहीं भेजते थे । डा० मदान इस दृष्टि से देखने पर बिल्कुल अपवाद लगते थे । एक सुन्दर हृष्ट पुष्ट पंजाबी जवान, जिसको देख लेने पर अध्यापक का अनुमान ज़रा भी नहीं होता, चाल ढाल, बोल चाल में चुस्त, सिर के बालों का कट अंग्रेज़ी, दाढ़ी मूंछ जिलट के ब्लेड से बनी हुई, पोशाक में कीमती नेक टाई भी और सख्त कालर के साथ अंग्रेज़ी ढंग से सिला हुआ सूट । इस पर तुर्रा यह कि हिन्दी का उच्चारण काफी हद तक पंजाबियाना । कुल मिला कर यह समझ लीजिए कि मन ने पहले पहल उनको हिन्दी का अध्यापक ही नहीं माना । यूं लगता रहा कि वे हिन्दी में किसी भूल से आ गए हैं ।

पर यह शायद भूल नहीं, हठ का परिणाम था । एक अच्छे खाते पीते, कस्वाती हिन्दू परिवार में जन्म लेकर, आपने उच्च शिक्षा लाहौर के वातावरण में पाई । चुनांचे बेशक बी. ए. (आनर्ज) में संस्कृत आफर की, लेकिन एम.ए. अंग्रेज़ी में पास की । दुनियावी दृष्टिकोण से और एक अच्छे कैरियर के चुनाव के लिए उनके पास सब कुछ था । पर एक तो ज़माना अत्यन्त बेरोज़गारी का था और दूसरे मुंशी प्रेमचन्द के कृतित्त्व और व्यक्तित्व का आकर्षण खींच रहा था । हिन्दी साहित्य क्या समूचे आधुनिक भारतीय साहित्य में ही प्रेमचन्द का उदय एक महान घटना थी, एक ऐसी घटना जिसने उगते हुए साहित्यिक मानों को नई साहित्यिक विधाओं के समेत एक नई प्रौढ़ता और स्थायित्व दिए । लेकिन पठित भारतीय वर्ग इससे प्रभावित नहीं थे । उनके आगे यह कहना कि अमुक भारतीय लखक ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो अमुक पुस्तक अमुक भारतीय भाषा में लिखी है, वह बहुत अच्छी है, और अंग्रेज़ी या यूरोपीय भाषाओं की रचनाओं के समकक्ष बैठती है, बिल्कुल कुफ्र की बात थी। लेकिन मुंशी प्रेमचन्द न केवल उपन्यास और कहानी के ही लेखक थे, बल्कि उनकी प्रखर लेखनी से हमारी सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक चेतना में क्रांतिकारी तरंगों का उदय हुआ जिसने नई पीढ़ी को एक बार झकझोर कर रख दिया। लेकिन फिर भी यह भाग्य की विडम्बना कहिए या भारतीय जन-जागरण पर एक तीव्र कटाक्ष कि कलम का वह महारथी और गोदान जैसे उपन्यास का लेखक दो जून की रोटी की समस्या से आज़ाद नहीं हो सका। ऐसी अवस्था में इस नवयुवक ने मुंशी प्रेमचन्द को अपने थीसिज के विषय के रूप में चुना। तब विश्वविद्यालयों में थीसिज़ अंग्रेज़ी में स्वीकृत होते थे। डा० मदान हिन्दी साहित्य पर रिसर्च करने वाले सब से पहले लोगों में से हैं जिन्होंने डाक्टोरेट की डिग्री को ही प्राप्त नहीं किया, एक पुनीत ध्येय को भी ध्यान में रखा। उस समय उनको शायद यह ध्यान नहीं होगा कि इस प्रकार वह कितने बड़े क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं।

तो हां, विभाजन बाद के सालों में पंजाब में डाक्टर मदान का हिन्दी को योगदान बहुत सीमा तक ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। इस समय हिन्दी एक बड़े क्रांतिकारी दौर से गुज़री। हिन्दी को एक ऐसी भाषा बनाना था जो आधुनिक युगबोध को भली प्रकार अभिव्यक्ति दे सके। यह काम उन लोगों का नहीं है जिन्होंने हिन्दी की राजनीतिक लड़ाइयां लड़ीं, बल्कि उन लोगों का है जिनके जिम्मे हिन्दी का अध्यापन कार्य था। डा० मदान पंजाब विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पहले अध्यक्ष थे और इस नाते उनके जिम्मे यूनिवर्सिटी के हिन्दी पाठ्यक्रमों का शृंखलन ही नहीं था और न थी उच्च प्रकार की अध्यापकीय परम्परा की बात अपितु पाठ्यक्रमों के लिए पुस्तकों का निर्धारण एवं चुनाव तथा हिन्दी परीक्षाओं के परचों के लिए उच्च परीक्षकों एवं परीक्षकों की नियुक्ति इत्यादि सभी कुछ था। अगर इन सब को सामूहिक रूप से देखें तो प्रांत में हिन्दी का कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं बचता, जिस पर डाक्टर मदान का या जिस का डाक्टर मदान पर प्रभाव न पड़ा हो। एक दृष्टि से देखने पर उन्हें विभाजनोत्तर काल में पंजाब में हिन्दी के लिए इतना काम करना पड़ा, जितना शायद किसी एक व्यक्ति को नहीं करना पड़ा।

लेकिन इस सारी गतिविधि के ठीक मध्य में रह कर भी डा० मदान ने अपने व्यक्तित्व की अनूठी मौलिकता को दबने नहीं दिया। उनके जीवन में अभी भी बालसुलभ चंचलता है। वे हर उस व्यक्ति से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मिल कर खुश हैं जिसके व्यवहार में बनावट की बू नहीं है। इस लिहाज से सब से ईमानदार वर्ग नौजवानों का है और डा० साहिब से मिल कर न केवल उनकी नौजवानी का परिचय मिलता है, बल्कि पास बैठे दूसरे लोग भी जवान ही महसूस करते हैं। कई बार उनके यहां हम उम्र और हमपेशा तथा वयोवृद्ध और ज्ञानवृद्ध व्यक्तियों को भी बैठे देखा है। पर उनके स्वभाव में एक ऐसी स्निग्ध अनौपचारिकता है कि वहां गम्भीर से गम्भीर मसले पर विचार विमर्श के बीच भी उन्मुक्त भाव से हंसी ठठ्ठा चलता रहता है। दरअसल विचार और कर्म में जो समानता वे दूसरों में ढूंढते हैं, उसका उदाहरण वे अपने जीवन से जुटाना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

डा० मदान की एक और खूबी यह है कि लगभग हर मसले पर उनके अपने विचार हैं और फिर उन विचारों को उसी निर्भीकता से वह व्यक्त करते हैं जिस निर्भीकता से दूसरों से सुनते हैं। मुंह पर खरी खरी कह देना और उतनी ही खरी खरी सुन भी लेना और मजा यह है कि कटुता न आने देना, उनकी बड़ी विशेषता है। इसलिये झूठे आदर से वह उतना ही कतराते हैं जितना कि झूठा आदर देने से। दिखावे से उनका कोई समझौता नहीं हो सकता। नतीजा साफ है कि अधिकांश कुंठाग्रस्त लोग उनके निकट नहीं फटक सकते, यदि एक बार आ भी गए तो जल्दी से जल्दी ही बिदक कर अलग हो जायेंगे। जो बात उनकी आत्मा सह नहीं पाती, उसके समर्थन का बोझ अधिक देर तक ढो सकना उनके बूते की बात नहीं है।

अपनी शिक्षा और स्वभाव दोनों से ही वे परम्परावादी नहीं हैं। यदि उनको किसी एक विचारधारा का पोषक कहना हो तो हम उन्हें लिबरल कह सकते हैं। सामाजिक संस्कारों से पैदा होने वाली समस्याओं पर उनके विचार बड़े उदार हैं। इसलिये नहीं कि वह उदारता उनको खुद भी सूट कर सकती है, बल्कि इसलिये कि इस में मानव विशेष की मजबूरियों और परिस्थितियों को उनके परिप्रेक्ष्य में देखने का आग्रह निहित है। अत्यंत विद्रूप की घटनाओं और अनुभवों को वे मानव सत्य मान कर अपनी समूची मानवीय संवेदना से सुन सकते हैं, पर थोथे नैतिक धरातल से दिया गया उपदेश वह एक क्षण को भी सहन नहीं कर सकते क्योंकि जीवन में बोर होना उनको पसन्द नहीं है। यहां तक कि पीछे एक स्कूटर दुर्घटना में चोटें आ जाने पर भी दोस्तों मित्रों से सहानुभूति की बातें सुनना उन्हें खलता था।

डा० मदान इस समय पचास वर्ष के हैं, पर अभी तक उन्होंने शादी नहीं की। कोई भला इसका कारण जानना चाहे,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri.

तो माकूल जवाब क्या हो ? आखिर स्वतंत्रता के नाम पर निरंकुशता के तो वे पोषक नहीं हैं। उस दिन अपनी तस्वीर खिंचवा कर देख कर कहने लगे "यदि मुझे मालूम होता कि मेरी तस्वीर इतनी अच्छी आ सकती है और मुझे अपनी तस्वीर खिंचवा रखने में हिचकिचाहट नहीं होती तो शायद मेरा ब्याह हो जाता।" यह तो अब एक मज़ाक की बात है, वरना जब समय था, डा० साहिब ने इस समस्या को इस रूप में देखा नहीं या देखना नहीं चाहा। पीछे एक साहित्यिक मित्र ने जो लगभग उनकी ही उम्र के थे और जिनका स्वास्थ्य उनकी अपेक्षा बहुत खराब था, एकाएक शादी करवा ली। समाचार मिला तो उनसे बात हुई। इस पर वे बोले "मज़ाक नहीं, सच वह बड़ा बुद्धिमान आदमी निकला है। शादी के यौन पहलू के अतिरिक्त उसका एक आध्यात्मिक पहलू भी तो है। और इस उम्र में स्त्री पुरुष का साथ जितना ज़रूरी है, उतना वह कभी नहीं होता।" यह बात उन्होंने इतनी गम्भीरता से कही कि मानो वह सदियों से विवाहित ही चले आ रहे हों और उन्होंने साथ साथ बूढ़ा होने की स्निग्धता को पूरी तरह महसूस किया हो। पर दरअसल उसमें उनका अपना अभाव भी बोलता हो ऐसा हो सकता है, लेकिन उस अभाव की तीव्रता उनके जीवन से कभी प्रकट हुई नहीं। पचास वर्ष तक की आयु तक पहुंचते पहुंचते अधिकांश चिरकुमार बहुत नीरस और पिटे हुए व्यक्ति हो जाते हैं। कइयों की तो सेहत भी जवाब दे जाती है पर डा० मदान हैं कि अलबेलेपन में नौजवानों को भी शरमा देते हैं। लगता है कि वह अतीत की बात सोचते ही नहीं, मानो उनके आगे उमंगों भरा भविष्य हो भविष्य हो।

कई बार उनके इस रवैये पर सोचा है तो लगा है कि इसमें भी बनावट नहीं है। आखिर शादी है क्या जीवन का सृजनात्मक और अभिव्यक्तिपूर्ण यापन, एक ऐसे आनन्द की अनुभूति जिसमें शारीरिक और आत्मिक दोनों ही रूपों में सामंजस्यपूर्ण विकास हो। अगर प्रवृत्ति (Instinct) की दिशा को हठ, संयम अथवा किसी योग से मोड़ा (Transmutation) जा सकता है, तो लगता है कि डा० मदान उसमें बहुत कुछ सीमा तक सफल हुए हैं। जीवन को बनाए रखने के लिये जिस सौन्दर्यानुभूति की आवश्यकता होती है, वह डाक्टर साहिब शायद अपने बंगले के लॉन में निराई, कटाई, और फूलों के पौधों की देख भाल से ही पूरा कर लेते हैं। सच, डा० मदान अपने उस छोटे से लॉन को सुव्यवस्थित रखने में उतना ही ध्यान देते हैं जितना कि कोई सफल कलाकार अपनी कलाकृति में। और उनका यह दावा ठीक ही है कि पैसे के ज़ोर के बिना चण्डीगढ़ के आधुनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगर में उनका बागीचा सर्वोत्तम है। मैं तो समझता हूँ भरपूर पैसा खर्चने वाले भी इतना सुन्दर लॉन शायद ही विकसित कर सकते हों, कारण कि वह कलाकार की आंख, वह लगन और वह आत्माभिव्यक्ति की चाह वे कहां से ले आएंगे ? ये चीज़ें तो पैसा खर्चने पर भी कभी नहीं मिल सकतीं । उनके घर जाने पर मेरा दिल तो सदा लॉन में घास पर बैठने को ही करता है, वहां बैठ कर लगता है कि मानों एक सुन्दर काव्यात्मक रचना का आनंद उठा रहा हूँ ।

डा० साहिब की दूसरी रुचि क्या व्यसन ही समझिए, उनकी पुस्तकें खरीदने, पढ़ने और संभालने की आदत है । वैसे तो उनकी यह रुचि उनके पेशे से बहुत मेल खाती है, पर डा० साहिब ने इस रुचि को अपने पेशे का दबेल नहीं बनाया । दोनों की शायद उतनी ही बराबर की हस्ती है । हो सकता है कि उनके इस व्यक्तिगत पुस्तकालय का मूल्य अधिक ही हो । डा० साहिब अकेले रहते हैं । नौकर तो है, पर नौकर इस सुरुचिपूर्ण ढंग से पुस्तकें थोड़े ही संभाल सकता है और पुस्तकों की अपनी एक बड़ी अजीब आदत होती है इधर उधर बिखरे रहने की, बेवफा औरतों की तरह दूसरों के घर रहने की या गुम हो जाने की । पर डा० साहिब के घर में उनका बड़े करीने से बड़े सलीके से अपने अपने स्थान पर टिके और पड़े रहना बड़ा स्वाभाविक लगता है। डा० साहिब ने भी उनको संभालने का बड़ा उमदा प्रबन्ध कर रखा है । किताबों को इकट्ठा करने पर तो वह यूं पैसा खर्चते हैं मानो उन्होंने प्रतिज्ञा कर रखी हो कि इंकमटैक्स में किताबों की खरीद पर जो छूट मिलती है वह हर वर्ष अवश्य ही ले लेनी है । ऐसे शौक तो कुछ सामंती घरानों में पहले भी होते थे, पर डा० साहिब उनको खरीदने के साथ साथ पढ़ते ही नहीं, उनपर मनन भी करते हैं ।

डा० साहिब की रचना का क्षेत्र मुख्यतः आलोचना है । पंजाब में डा० साहिब से पहले आलोचना का स्तर अधिकांशतः पाठ्यक्रमों की पुस्तकें लिखने तक था । युगीन साहित्य पर पत्र पत्रिकाओं में छपी टिप्पणियों पर उठने वाले बौद्धिक विवादों में भाग लेना और समसामयिक विचारबोध को आवश्यक दिशा निर्देश जुटाना आलोचक के कर्म का प्रमुख अंग है । इस सिलसिले में डा० साहिब निरन्तर बहुत सूझ बूझ के साथ डूबे रहते हैं । दरअसल वे पंजाब के एकमेव और सफल आलोचक हैं जिनकी सम्मति का समसामयिक साहित्य के विषय में सर्वत्र अच्छा सम्मान होता है । आजकल उनका प्रमुख विषय है नई संवेदनाओं से उभरने वाला साहित्य। नई कहानी और नई कविता में उनकी विशेष रुचि है । इस दिशा में इस ऊहापोह से भरे हुए युग में विभिन्न विचार दर्शनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा व्यक्तिभेद से पैदा होने वाली विभिन्न शैलियों एवं विचार सारणियों की विशेष पकड़ डा० साहिब की एक बड़ी खूबी है। दूसरे डाक्टर साहिब मूर्ति भंजक (Iconoclast) से व्यक्ति हैं। किसी भी व्यक्ति की महानता के नीचे वे दबते नहीं, अपना स्पष्ट विचार तत्काल पेश कर देते हैं। इतना ही नहीं ऐसा करने में कई बार उद्धत भी हो जाते हैं। यह उनके स्वतंत्र चिंतन की ईमानदारी की निशानी है जिसमें समझौता संभव नहीं हो सकता।

वैसे डा० साहिब हर प्रकार के उत्तम और जानदार साहित्य के समर्थक हैं और इसमें काल और स्थान के बंधन उन्हें नहीं बांधते। पीछे जब भारतीय ज्ञानपीठ वालों ने उत्तम साहित्य पर एक लाख रुपए का पुरस्कार देने की घोषणा की तो डा० साहिब की सम्मति जो थी, उससे आज के नए साहित्य के बहुत से पोषक सहमत नहीं हो सकेंगे। वे महादेवी को इस पुरस्कार के लिए उपयुक्त समझते हैं। स्पष्ट है कि आज के साहित्यिक गुट बंदी के युग में महादेवी को बहुत समर्थन प्राप्त नहीं हो सकेगा पर यह उनकी बेलाग और अपनी राय है, जो किसी भी प्रभाव में आकर शायद बंध नहीं सकेगी। अब कहां महादेवी की घोर छायावादी कविता—जो शब्द आज के युग में पिछड़ेपन का द्योतक हो चुका है—और कहां नए उठते हुए अहम् और अनुभूतिवादी अनार्किस्ट युवकों की निरंकुश नई कविता। पर डा० साहिब को जो अच्छा लगता है, अच्छा लगता है। उन्होंने कितने ही युवकों की कविताएँ टेप रिकार्ड कर रखी हैं जिन्हें वह अपने एकाकीपन में बजा कर कभी कभी आनंद लेते हैं।

इस प्रकार वे किसी स्कूल, किसी सिद्धान्त, किसी वर्ग, और किसी वाद से बंधे हुए नहीं हैं। समय की प्रगति और युग के परिवर्तन के साथ साथ वह भी आगे बढ़ रहे हैं। और ये उनके विशेष जीवट का प्रमाण है।

१० जे. बी. ३७१८/२२ डी
चंडीगढ़।

● ● ●

(पृष्ठ ६० का शेष)

से खिलवाड़ कभी नहीं करते। हार में भी खुशियों से खिल उठना और जीत में कहकहों में फूट पड़ना, यह उन का चरित्र है। इसीलिये वह अपने दोस्तों के दिली दोस्त हैं, और दुश्मनों के दिली दुश्मन हैं या नहीं, यह मैं नहीं जानता।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरुक्षेत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर मदान : एक व्यक्तिगत परिचय

वीरेन्द्र मेंहदीरत्ता

बहुत कम व्यक्ति ऐसे होते हैं जिन्हें निरन्तर मिलते रहने पर भी मिलने की इच्छा कायम रहे और हर मुलाकात के बाद महसूस हो कितना ग़ज़ब का आदमी है। डाक्टर मदान इसी प्रकार के व्यक्तियों में से हैं। उनके व्यक्तित्व की इस खूबी का कारण है—उनका सरल स्नेहमय व्यवहार, अकुण्ठित स्वस्थ प्रगतिशील दृष्टिकोण तथा मानवतावादी मूल्यों का महत्व। इसमें सन्देह नहीं कि यूनिवर्सिटी में प्राध्यापक तथा साहित्य के क्षेत्र में समालोचक के रूप में उनकी ख्याति है किन्तु एक सामान्य व्यक्ति के रूप में भी उनका कम महत्व नहीं। वे एक महान सामान्य व्यक्ति हैं : दिन-प्रतिदिन की घटनाओं में उनके सामान्य रूप की महानता के दर्शन हो सकते हैं। अपने ऊपर बड़प्पन का नकाब उन्होंने कभी नहीं डाला। अपने नौकर के साथ मज़ाक भी कर सकते हैं और विद्यार्थियों के साथ गप्पें हांकते हुए ठहाका मार हंस भी सकते हैं। स्पष्टवादिता डाक्टर मदान का सब से बड़ा गुण है किन्तु इसी कारण उनके कुछ परिचित प्रायः नाराज़ रहते हैं। मगर मैं यह समझता हूँ कि उनकी स्पष्टवादिता से एक सत्य प्रकट होता है कि हम सब ने किस हद तक 'हिपोक्रेसी' के साथ समझौता कर लिया है और कटु सत्य का सामना करने में कितने अक्षम हैं। वे अक्सर कहा भी करते हैं "आपसी व्यवहार का प्राचीन आदर्श कि सत्य इस प्रकार कहा जाए कि अप्रिय न लगे, सदा लागू नहीं हो सकता। 'सत्य प्रायः कटु होता है और कटु सत्य को सुनने और सहने की हिम्मत हम में होनी चाहिए ; यदि नहीं है तो पैदा करनी चाहिए।"

डाक्टर मदान के चण्डीगढ़ आने के बाद ही उनसे सम्पर्क बढ़ा। सब से पहला परिचय उनके प्राध्यापक-रूप का हुआ। क्योंकि रिसर्च के सिलसिले में ही उन्हें पहले-पहल मिलने का अवसर मिला था। रिसर्च के पांच छः सालों के अर्से में कई तरह की कठिनाइयां आईं किन्तु जिस उदारता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

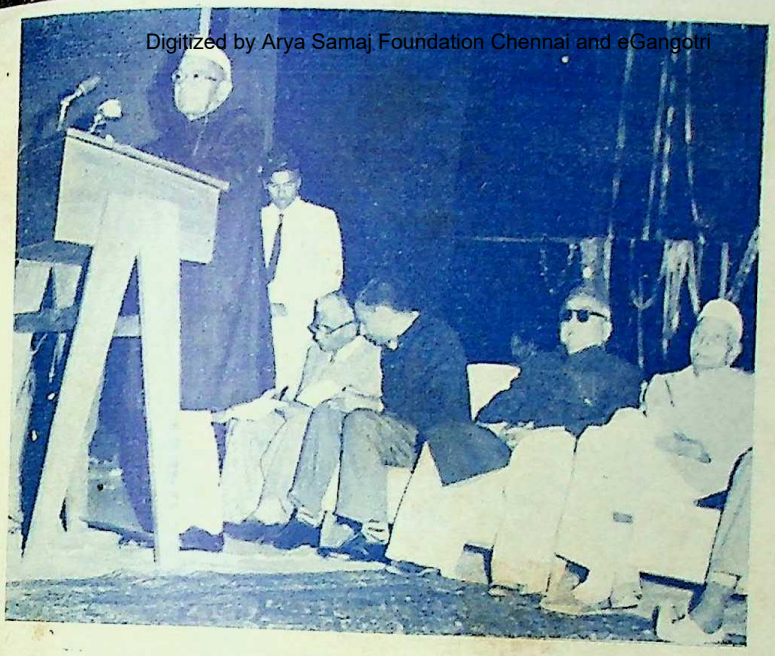

साहित्यकारों का स्वागत करते हुए डॉ० गोपीचन्द भार्गव

लेखक गोष्ठी में भाषण देते हुए भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री श्री यश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सहृदयता और सहानुभूति के साथ आपने मेरी सहायता की, अविस्मरणीय है। मैं घबराता झिझकता अपनी परेशानी सामने रखता और डाक्टर मदान उस का हल ढूंढने में एक मिनट भी न लगाते। यह कृपा उनकी सिर्फ मुझ पर ही नहीं, अपने प्रत्येक विद्यार्थी पर है।। यह उन दिनों की बात है कि जब स्कूटर के एक्सीडेण्ट के कारण बिस्तर पर लेटने और आराम करने की डाक्टर ने राय दी थी। उन्हीं दिनों राजस्थान से एक छात्रा अपना थीसिस दिखाने आ गई। डाक्टर की राय के बावजूद भी लेटे लेटे सारा थीसिस सुन लिया और संशोधित कर दिया, इस ख्याल से कि बेचारी एक बार अपने बच्चों को छोड़ कर आई है, अगर अब काम न हुआ तो दुबारा आना पड़ेगा। उन्हें अपने कष्ट की अपेक्षा दूसरों के कष्ट का अधिक ध्यान रहता है। कोई भी विद्यार्थी, किसी समय ही सहायता के लिए आ जाए, यथासम्भव उस की मदद करेंगे। प्रोफेसर-शिप के सम्बन्ध में भी उनकी अपनी ही धारणा है। एक दिन बता रहे थे, "प्रोफेसर-शिप को मैं बहुत ऊंची चीज़ समझता हूँ—और मैं उस रास्ते का एक यात्री हूँ।" यह उक्ति उनकी हीन-भावना नहीं प्रकट करती अपितु उनकी अपने प्रोफेशन के प्रति ईमानदारी की द्योतक है।

प्राध्यापक के बाद डाक्टर मदान का दूसरा महत्वपूर्ण रूप है समालोचक का। इस रूप का ध्यान करते ही मुझे वे दिन याद आते हैं जब आप भाषा विभाग के लिये आधुनिक हिन्दी कहानियों पर एक छोटा सा प्रबन्ध लिख रहे थे। उन दिनों आप डाक्टर साहब के कमरे में आधुनिक कहानीकारों के लगभग सभी प्रकाशित कहानी-संग्रह देख सकते थे; साथ ही 'कहानी' पत्रिका की पुरानी फाइलें तथा 'नई कहानियां की तब तक की छपी सारी कापियाँ। बहुचर्चित कहानीकारों की प्रत्येक रचना और बाकी के कहानीकारों की प्रत्येक प्रतिनिधि रचना पढ़ी। इधर कहानियों का अध्ययन ही चल रहा था कि स्क्रिप्ट की मांग आ गई। उन दिनों प्रायः रोज़ ही मिला करता। पूछता, "लिखना शुरू कर दिया है?" उत्तर मिलता "अभी नहीं, क्या करूँ स्पष्टता ही नहीं आई!" मैंने कहा, "इतना तो आप पढ़ चुके हैं, उसी के आधार पर लिख क्यों नहीं देते।" आप बोले "लिख तो सकता हूँ किन्तु विषय के साथ न्याय नहीं होगा और यह मुझे पसन्द नहीं।" मतलब यह कि जो कुछ भी लिखते हैं बड़ी मेहनत के साथ लिखते हैं। डट कर पढ़ते हैं। पढ़ते समय नोट्स लेते हैं—और स्पष्टता आने पर लिखना शुरू करते हैं। निष्पक्षता आप की आलोचनाओं का एक महत्वपूर्ण गुण है। मोहन राकेश इनका बड़ा प्रिय मित्र है किन्तु जिस तटस्थता तथा निष्पक्षता से उसकी कहानियों की आलोचना आपने

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

की शायद इस परिस्थिति में बहुत कम व्यक्ति कर सकते। डाक्टर मदान की समस्त आलोचना की पुस्तकों में मूल सिद्धान्त यही रहा है--स्रष्टा की मूल प्रेरणा तथा संवेदना का समझना और उसकी इस ढंग से व्याख्या करना कि पाठक को रचना के समझने में सुविधा हो। जीवन के क्षेत्र में भी वह इसी दृष्टिकोण को अपनाये हैं। कहा भी करते हैं, "हमें किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में अपना निर्णय देने की अपेक्षा उसे समझने का प्रयत्न करना चाहिए।" साथ ही अपने अंग्रेज़ी के एक प्रोफेसर द्वारा कही पंक्तियां दुहराते हैं।

"Try to understand rather than judge"

यहां रहने वाले वे लोग जो डाक्टर मदान को जालन्धर में भी जानते थे प्रायः कहा करते हैं, "जालन्धर वाले मदान साहब और चण्डीगढ़ के डाक्टर मदान में बहुत फर्क है।" मैं उनकी बात कभी समझ नहीं पाया। जब उपन्यासों में हृदय परिवर्तन को अस्वाभाविक माना जाता है तो वास्तविक जीवन में केवल स्थानान्तर से स्वभाव में परिवर्तन कैसे सम्भव है। मैं अपने मन में सोचता, सम्भवतः देखने वालों के मानसिक स्तर, परिस्थितियों तथा सम्पर्क के सन्दर्भों में अन्तर आ जाने से उनका यह विचार है। एक दिन लोगों द्वारा कही जाने वाली परिवर्तन की बात की। हैरानी के साथ बोले, "अच्छा!" और चुप हो गए। मैं मन ही मन सोचने लगा शायद गलती हो गई है, मुझे यह नहीं पूछना चाहिए था। किन्तु दूसरे ही क्षण बोले, "समझ गया, लोग क्यों ऐसा कहते हैं! वाकफीयत तो सदा ही काफी रही है मगर जालन्धर में हिन्दी विभाग का अध्यक्ष होने के नाते इक्जैमीनर-शिप आदि कुछ थोड़ों को ही दिला सकता था। सिर्फ दोस्ती तो काफी नहीं होती, योग्यता भी चाहिए! सो बाकियों की नाराज़गी के लिये यही काफी था। अब चण्डीगढ़ में यह शिकायत नहीं! और सच तो है कि मैं खुद भी ज्यादा सुखी, हूँ" रुक कर निश्चय के साथ फिर बोले, "बिल्कुल यही बात है, और कोई फर्क नहीं। सीधी साफ बात कहने की आदत तो वहां भी थी और यहां भी है! भले ही इससे कोई नाराज हो जाए!"

सिर्फ बात ही सीधी और साफ नहीं कहते, उनके व्यवहार में भी स्पष्टवादिता है। प्रशासनात्मक कार्य में उनका सारा रवैया तथ्यात्मक है। केवल यूनिवर्सिटी ही नहीं अपने घर भी वही रवैया अपनाते हैं। चीनी का राशन हो गया है प्रति व्यक्ति को एक किलो चीनी मिलती है। महीने के शुरू में जब चीनी आती है तो अपने नौकर चूनीलाल को एक किलो चीनी अलग निकाल कर दे देंगे और कहेंगे, "यह लो अपनी चीनी, जिससे न मैं तुम्हारे

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिस्से की चीनी खाऊँ और न तुम मेरे हिस्से की खाओ !" आपसी व्यवहार की स्पष्टता के साथ उन्हें दिखावा भी तनिक पसन्द नहीं । आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का गेंल ब्लेडर का आपरेशन होना था । आपरेशन होने तक रोज़ हिम्मत दिलाने हस्पताल जाते रहे और आपरेशन वाले दिन भी वहीं रहे । किन्तु यह पता चलने के बाद कि आपरेशन ठीक हो गया है कई दिनों तक अस्पताल नहीं गए और उधर देख रहा था कि बड़ी दूर दूर से लोग सिर्फ आचार्य जी का हाल पूछने आ रहे हैं । उनमें से कुछ ऐसे भी थे कि जो कि बाहर लगी Visitors not Allowed की चिट पढ़ने के बावजूद भी भीतर जाते । तब तक खड़े रहते जब तक आचार्य जी आंख खोल कर देख न लेते । इस लिये एक दिन डाक्टर मदान से उनका अस्पताल न जाने का कारण पूछा । बड़ा संक्षिप्त और सधा उत्तर मिला "इस समय उन्हें मेरी अपेक्षा आराम की अधिक आवश्यकता है ।"

जो भी व्यक्ति डाक्टर मदान के सम्पर्क में आता है उसके प्रति इनके मन में एक विचित्र ममतामय स्नेह रहता है । ममतामय इस रूप में कि अपने मित्रों का कष्ट दुःख इतना अनुभव करते हैं कि उनके लिये कुछ भी करने को तैयार हो जायेंगे ।

कहानीकार मोहन राकेश उनके घनिष्ट मित्रों में से है । उसके लिये उनके मन में एक अजीब ममतामय प्रेम है । दिल्ली में उसे घर बसा कर खुशी से गृहस्थ जीवन व्यतीत करते देख आए तो बड़े खुश थे । राकेश 'सारिका' का सम्पादक बन गया है—तसल्ली हुई, पर साथ एक चिन्ता भी थी, जाने कितने दिन टिकेगा । केवल मित्र ही नहीं, अपने किसी भी परिचित को—भले ही वह नौकर हो, चपरासी हो, टाईपिस्ट हो, सहयोगी अथवा किसी परिचित का मित्र—उसकी यथा सम्भव सहायता करेंगे । जालन्धर में एक टाईपिस्ट को टीचर्ज़ कन्शैसन पर टाइप राईटर दिला कर कितने समय तक अधिकारियों के साथ पत्र-व्यवहार के पचड़े में फंसे रहे ।

यूनिवर्सिटी के चपड़ासी के लड़के को अपनी कोठी की बाग़बानी के लिये सिर्फ इसलिये लगाए हुए हैं कि उसे बाग-बानी नहीं आती । यद्यपि कई बार कहते हैं कि कुछ भी सीखने की कोशिश नहीं करता । फिर भी उसे निरंतर समझाते रहेंगे । उसकी सीमाओं को समझ लेने के बाद उसकी मूर्खता के प्रति क्रोध की गुंजायश नहीं रहती ।

पंजाब के भाषा विभाग ने वार्षिक समारोह के अवसर पर डा० मदान की साहित्यिक सेवाओं के कारण अभि-नन्दित करने का निश्चय किया । इस अवसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर अपने निकटतम कुछ मित्रों को बुलाने के लिये पांच कार्ड दिये। उन पांच व्यक्तियों में से तीन निकटतम व्यक्ति जिन के नाम पर आपने कार्ड लिखे वे थे-- पहला नौकर चूनी लाल, दूसरा चपरासी राम भिखारी और तीसरा माली मोतीलाल। तीनों का नाम बता कर बोले "दूसरे वाकिफों को कार्ड आ ही जायेंगे, इन बेचारों को किसी ने नहीं पूछना था-- और सच्चाई तो यह है कि निकटतम तो यही लोग हैं जिन से दिन रात वास्ता पड़ता है।" यह कह कर उनकी आंखों में वर्षों से अकेलेपन दर्द के का समष्टि रूप उभरा। उसी क्षण मुझे उनके निबन्ध कहानीकार की वे पंक्तियां याद हो आई "एकाकी जीवन अनुभव का विषय है, बहस का नहीं; करनी की बात है, कथनी की नहीं। एकाकी व्यक्ति कबीर के गूंगे के समान गुड़ की मिठास तो नहीं, करेले की कड़वाहट बताने में असमर्थ है। उसकी गति घायल ही जान सकता है या उसे मीरा जानती थीं। मीरा ने तो गिरिधर को अपने हृदय का हार मान कर चिर सुहागिन की स्थिति को पा लिया था; किन्तु एकाकी जीवन में कृष्ण को राधा नहीं मिल सकती, रत्नसेन को पद्मावती अनुप्राणित नहीं कर पाती, एडवर्ड को श्रीमती सिमसन प्राप्त नहीं हो सकती। इसमें न तो उर्मिला लक्ष्मण की स्मृति के बल पर जी सकती है और न ही यशोधरा तथागत का स्मरण कर जीवित रह सकती है। एकाकी जीवन में अद्वैत की स्थिति होती है, द्वैत की नहीं; एक की कथा होती है दो की नहीं।" और यह अकेलापन है अन्तिम महत्त्वपूर्ण पक्ष डाक्टर मदान के व्यक्तिगत जीवन का, जिस के विष को शिव की तरह पान कर साहित्य साधना में वे निरत हैं।

● ● ●

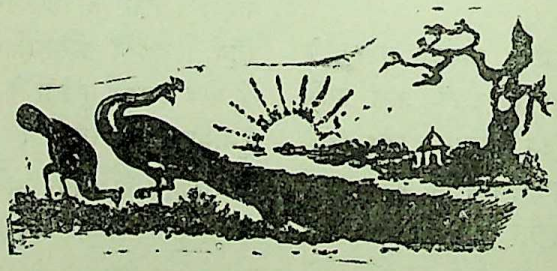

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंकल मदान

कुसुम बिदानी

मैं एक छात्रा होने के नाते डा० मदान के आलोचक रूप से प्रभावित थी, लेकिन एक व्यक्ति होने के नाते इनके वात्सल्य से अधिक प्रभावित हूँ। एक अविवाहित व्यक्ति को एक पिता के रूप में पाना अस्वाभाविक तथा असंगत जान पड़ता है। मैं आयु तथा देखने में इतनी छोटी लगती थी कि उन्हें यह सन्देह हो गया था कि मैंने बी०ए०. की परीक्षा पास भी की है या नहीं। इसी कारण शायद उनके हृदय में मेरे लिये वात्सल्य का भाव उमड़ने लगा। जब मैं स्कूली छात्राओं की तरह आलोचना रट लेती थी, तो उनकी यह धारणा और पुष्ट हो जाती थी। मेरी क्लास में मेरी एक सहपाठिनी बड़ी योग्य थी और परीक्षा में प्रथम रहती थी। जब कभी मैं कम नम्बर पाकर निराश हो जाती थी तब डा० मदान यह कह कर तसल्ली देते थे "वह आयु में तुम से बड़ी है, उसकी समझ तुम से अधिक विकसित है। तुम भी अगर उसकी आयु की होती तो उससे अधिक नम्बर पा सकती।" एक बार मैंने अपनी स्मरण शक्ति के बल पर उसे परीक्षा में पीट दिया, लेकिन डा० मदान के पेपर में मेरे अंक कम थे। इस तरह मैं खुश-खुश अपनी जीत की सूचना देने उनके कमरे में गई तो उत्साह से कहने लगे—'आज शायद तुमने महाभारत का युद्ध जीत लिया है।' मेरा व्यवहार बचकाना था और वह इससे परिचित थे।

कालिज का जीवन आज एक मधु-स्मृति बन कर सदा के लिये बीत गया है। उन दिनों की एक और घटना याद आ रही है। एक मनचले युवक ने मेरे नाम एक पत्र दिया जो मुझे विभाग में मिला। पत्र पाकर मैं बुरी तरह घबरा रही थी, मेरे पसीने छूट रहे थे। उसमें वही बातें थीं जो हर युवक के मन में किसी युवती के लिये होती हैं। उसका हस्ताक्षर रक्त से सना हुआ था। एक तरफ वह पत्र और दूसरी तरफ मेरी मां। अपनी मां से डरती थी। वह अपने मन में क्या कहेंगी जब उसे इस चिट्ठी का पता चलेगा। मेरा घर लौटना दूभर हो गया। मुझे लग रहा था कि मैंने ही कोई अपराध किया है, जब कि इसमें मेरा कोई दोष नहीं था। मैं ने वह पत्र लड़कियों को दिया और वह एक खासा मज़ाक बन गया। मेरी सहेलियां हंस रही थीं और मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रो रही थी। मेरी बड़ी बहिन मुझ से अगली क्लास में थी । वह मुझे डॉ० मदान के कमरे में ले गयी और पत्र उनको पढ़ने के लिये दे दिया। बिना पढ़े उन्होंने मुझसे पूछा—क्या तुम इस लड़के को जानती हो ? कालिज में दो हज़ार से अधिक लड़के थे और उनमें बहुत से लड़कियों का पीछा करते-करते उनको घर तक छोड़ आया करते थे । मैं भी उनमें से एक थी। जब मैंने उत्तर दिया कि मैं उससे परिचित नहीं हूँ तब उन्होंने बिना पढ़े उस पत्र को फाड़ डाला और कहा—'इस तरह के पत्रों की यही नियति होती है। इस पत्र को अपने मन से निकाल दो और निश्चिन्त होकर घर चली जाओ। डरने की बात नहीं है, घरवाले कुछ नहीं कहेंगे।' इस तरह अपने सहज स्नेह से डा० मदान ने अपने संरक्षण का हाथ मेरे सिर पर रखा।

उसके बाद मेरे छात्र-जीवन का अन्त हुआ और उनका यह हाथ मेरे लिए लंबा होता गया। वह मेरे परिवार के सलाहकार बन गए। मेरी मां के सरल स्वभाव की इनके स्पष्ट स्वभाव से संगति बैठ गयी। एक दिन अचानक मैं डाक्टर साहब के घर पहुँची तो संयोगवश वह दिन मेरा जन्म-दिवस था। इसका परिचय पाकर एकदम बड़े स्नेह से कुछ पुस्तकें मेरे हाथ में थमा दीं और आशीर्वाद दिया। आज तक अपने जन्म-दिन पर मुझ से कुछ लेने से यह कहकर इन्कार करते रहे हैं—'छोटे दिया नहीं करते लिया करते हैं।' और फिर भी वह अपने आपको आधुनिक घोषित करते हैं। इस तरह वह देना कभी नहीं भूलते और खुद लेने से सदा परहेज़ करना जानते हैं। एक बार बात-बात में मेरी मां से कहने लगे—'तुम्हारी इतनी बेटियां हैं, अगर एक मेरी बेटी कहलावे तो आपको क्या आपत्ति है ! भारतीय समाज में एक अविवाहित का चरित्र संदिग्ध प्रायः माना जाता है और मेरी मां इसे पूरी तरह जानती थीं। इसलिये मैं इनके घर में तो नहीं रह सकी, लेकिन मेरी मां ने सब को सूचित कर दिया कि कुसुम डा० मदान की बेटी है। इसकी परिणति तब हुई जब उन्होंने मेरे विवाह के अवसर पर मेरा कन्या-दान अपने हाथों से किया। मेरी विदा के समय मैंने देखा कि उनकी आंखें एक पिता के समान गीली थीं। इससे पहले आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जालंधर पधारे थे और अपने भाषण में उन्होंने कहा था कि डा० मदान सबका ऋण तुरन्त चुका देते हैं, परन्तु एक ऋण से वह मुक्त नहीं हैं। उनका संकेत पितृ-ऋण से था। उन्हें शायद यह मालूम नहीं है कि वह इस ऋण से भी मुक्त हो चुके हैं। डा० मदान 'पिता' शब्द सुनने के अभ्यस्त नहीं हैं, इसलिये वह मेरे और अनेकों के अंकल हैं। इसमें ही उनका वात्सल्य भाव बहता रहता है।

डी–१२३, कबिर मार्ग,
बानी पार्क, जयपुर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब मैंने प्रथम बार डा० साहिब के दर्शन किये

सन्तो गर्ग

अपने अनुसंधान-विषय के सम्बन्ध में डा० मदान से मिलना अनिवार्य था। एक दिन सुबह जब मैं घर से उन्हें मिलने के लिये चली तो मन में कुछ झिझक थी, झेंप थी। बस में बैठी भी इसी सोच में थी कि बाल की खाल निकालने वाले, नीर-क्षीर विवेकी आलोचक के सामने मैं किस प्रकार जाऊँगी ? ऐसे प्रतिभाशाली आलोचक के साथ बात करने का सलीका भी तो मुझे आता नहीं।

खैर बस रुकी--रिक्शा ली और उनके घर पहुंच गई। अभी रिक्शा से उतरी ही थी कि भीतर से आवाज़ आई--'अन्दर आ जाओ, बेटा !' सच, आत्मीयता की एक दृष्टि मानव के लिये कुबेर के कोष से भी अधिक मूल्यवान होती है। अपनी पुस्तकें उठा सिकुड़ती-सिमटती उनके कमरे में पहुँच गई। डा० साहिब बैठे कुछ लिख रहे थे--शायद किसी की आलोचना ही कर रहे होंगे--बड़े स्नेह से मुझे कुशल क्षेम पूछी और फिर बताने लगे कि अनुसंधान का कार्य-क्रम किस प्रकार क्रमानुसार करना चाहिए, किस प्रकार सामग्री संकलन करनी है, कहां से पुस्तकें मिल सकती हैं, और कहां कहां से आवश्यक सामग्री उपलब्ध हो सकती है.....

काम करते हुए जब कुछ थकान अनुभव होने लगी तो विषयान्तर करने के लिये अपने बागीचे में ले गये और वहां करीने से लगाए हुए रंग बिरंगे मोहक फूलों की छटा से मन को असीम शांति मिली, टेप की हुई गायक कवियों की कुछ एक रचनाएं सुना मुझे तरोताज़ा कर फिर से अनुसंधान-कार्य में संलग्न कर दिया।

मेरे मन की रुचि परखने के लिए या शायद मेरी बुद्धि-परीक्षा करने के लिए मुझे कहा गया कि मैं अपने मन पसन्द की पुस्तकें उनके निजी पुस्तकालय से छांट लूं। तभी तो आप की गणना मनोवैज्ञानिकों के अन्तर्गत की जाती है।

इस तरह डा० साहिब से सम्मति ले जब मैं घर वापिस आ रही थी तो फिर से वहीं चिंतन की धारा तीव्र गति से प्रवाहित हो मेरे मन को कुरेदने लगी--'आलोचक की पैनी दृष्टि से कभी कोई बच नहीं सकता, वे तो लेखक के दोषों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मुलम्मा चढ़ा कर दिखाता है ।' लेकिन डा० साहिब का व्यक्तित्त्व इससे पूर्णतः भिन्न है । दृष्टि तो उनकी अत्यधिक पैनी है लेकिन वह मानव के दोषों पर टीका टिप्पणी कर उसे निरुत्साहित नहीं करते बल्कि उस पर अपनी विद्वत्ता का सुनहला आवरण डाल कर लेखक के दोषों का निराकरण कर देते हैं । पारस की न्याईं लोहे को सोना बना देते हैं । अन्यथा वह मुझे उत्साहित किस प्रकार करते ।

उनस मिल कर ही जान पाई कि उनके गंभीर सौम्य व्यक्तित्त्व के पीछे उनका कोमल, स्नेहसिक्त भावुक कवि का हृदय भी निहित है । प्रकृति उन्हें हंसाती है संगीत की लय उन्हें विमोहित करती है कुशल कलाकार की तरह वह विविध रंगों के प्रयोग से चित्रकारी भी करते हैं और सुघड़-गृहिणी की भांति घर की साज-सज्जा भी करते हैं ।

आशा करती हूँ कि वह भविष्य में भी इसी तरह पथ-प्रदर्शन करते रहेंगे।

प्राध्यापक,
गवर्नमेंट कालेज, पटियाला ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

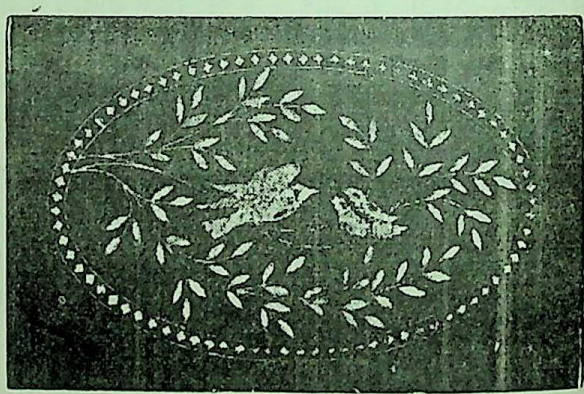

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० इन्द्रनाथ मदान : अविस्मरणीय व्यक्तित्व

अनामिका

डॉ० मदान का नाम यूं तो कई बार सुना और पढ़ा भी था। हिन्दी एम०ए० के दिनों तो उनका नाम लेखक, आलोचक होने के नाते और विभाग से सम्बद्ध होने के कारण कई बार सुनने में आया। जब डिपार्टमेंट खुला था तो पता चला कि वे जालन्धर से चंडीगढ़ आ जायेंगे। हम लोगों में उनके आने की काफ़ी उत्सुकता थी। उनके बारे में बहुत सी बातें सुनी भी थी कि वे पढ़ाने के मामले में 'डिसिप्लिन' के पक्के हैं। 'डिसिप्लिन' के खिलाफ जाने में एक अजीब मज़ा होता है, शायद मन के किसी अचेतन कोने में यह भी बात हो कि एक 'डिसिप्लिन' के आदमी को देखा तो जाए। बाद में वे नहीं आये और हमारी मित्र-मंडली उदास हो गई। दूसरे वर्ष उनके आने की प्रतीक्षा इसलिये भी थी कि हम लोगों को विशेष पत्र 'कथा-साहित्य' लेना था और उसके विशेषज्ञ हमारे विभाग में वे ही माने जाते हैं। उनकी किताबें पढ़ी थीं तो मन में उनकी एक तस्वीर बनी थी कि डॉ० साहब एक पढ़ाकू किस्म के 'बोर' आदमी होंगे, ऊपर से सख्त भी। हमसे 'सीनियर' एक लड़की उनकी शिष्या रह चुकी थी वह कभी कभी बताती थी कि वे अच्छा पढ़ाते हैं और वह यह भी कहती थी कि वे अनुशासन के ख़िलाफ नहीं चलते।

बाद में अनायास उनके दर्शन हुए तो मैंने सीधे यही प्रश्न पूछा, "डा० साहब, आप चंडीगढ़ आ रहे हैं न।" वे सहज भाव से हँस पड़े थे और बोले कि अभी तो यही ख्याल है। उसी दिन से पता चल गया था कि जिस पढ़ाकू और 'बोर' आदमी की परिकल्पना हमने की थी वह डॉ० मदान नहीं हैं। एक वर्ष आचार्य द्विवेदी का विद्यार्थी जो भी आदमी रह जाता है वह उनका प्यार पा लेता है। डॉ० मदान के बारे में भी यही सत्य है कि उन्हें अपने 'स्टूडेंट्स' बड़े अच्छे लगते हैं। यह बात वे स्वयं भी कह चुके हैं कि मेरी सम्पत्ति तो मेरे विद्यार्थी ही हैं।

डॉ० मदान पढ़ाने में जितने अच्छे हैं, हँसाने में उससे कई गुना अच्छे हैं। मुझे याद है विभाग में उनकी पहली क्लास में ही हम लोग लोट-पोट हो गये थे। इसके साथ ही मुझे उस दिन की बात भी याद आ जाती है, अभी कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीने ही हुए थे इन्हें हमारी क्लास लेते, तो एक दिन मैंने (Sir) 'सर' के सम्बोधन से उनसे एक प्रश्न पूछा था, तो उस प्रश्न के उत्तर की जगह हंसते हुए बोले--"देखो भई एक तो तुम लोग आगे ही सारा दिन सिर पर चढ़े रहते हो और ऊपर से 'सर', 'सर' (Sir) कह कर और भी दिमाग चट कर जाते हो; " तो इस बात से हमारी हँसी बंद नहीं हो रही थी। उस दिन से हमने इन्हें डा० साहिब कहना शुरू कर दिया। पढ़ाई के दिनों का यह एक साल ही जीवन की सब से कीमती स्मृति है। पढ़ने के लिए नया उत्साह और लिखने की प्रेरणा भी मुझे इसी वर्ष मिली। अब तो मैं आश्चर्य चकित रह जाती हूँ कि पहले मैं सोचती थी इतने बड़े बड़े लोगों को हम कभी मिल पायेंगे ? पर अब उनका आशीष और तारीफ़ पाकर खुशी ही होती है।

विभाग की ओर से जब भी हम 'पिकनिक' पर गये हैं, डॉ० मदान के हंसमुख और स्पष्टवादी व्यक्तित्त्व का अधिक परिचय मिला है। डॉ मदान अध्यापक, लेखक होने के साथ-साथ एक बहुत बड़े परिवार के पिता भी हैं। उनके विद्यार्थियों के इस परिवार में मैं भी हूँ। अंकल के रूप में वे अपने हर छात्र को याद रखते हैं। आज भी आप कभी भी उनके यहां छात्र-छात्राओं की भीड़ देख सकते हैं। अपने इस परिवार को वे पढ़ाते, हँसाते और खिलाते भी हैं। हम लोग शरारत ही शरारत में उनसे कई बार पार्टियां ले चुके हैं। कहने भर की देर होती है और उनका विशाल-हृदय हम लोगों को प्रसन्न करने में देर नहीं लगाता। सहज भाव से आगे आता है। उनमें व्यर्थ का दंभ और विद्वान होने का अहं नहीं है। अपने को वे बहुत अच्छी तरह पहचानते हैं, और इसके साथ ही हम सब को भी। शेखी बघारना या किसी का बुरा करना ये दो ही काम उन्हें नहीं आते। साफ कहने के बारे में आचार्य जी ने कहा भी है कि वे स्पष्टवादी हैं। मैंने देखा है अपने इस अकेलेपन में भी वे कभी अकेले नहीं रहे। वे फूलों के बेहद शौकीन हैं। उनकी रुचि परिष्कृत है, उनकी यही सुरुचि उनकी बात-चीत तथा उनके लेखन में भी झलकती है।

जब भी किसी सिलसिले में मैं उनके यहां गई हूँ, तो उनसे उत्साह ही मिला है। एक दिन मज़ाक ही मज़ाक में उन्होंने कहा था कि मेरी तो इतनी संतान हैं कि यदि आज मैं अपनी Service छोड़ कर, एक एक महीना भी सब के घर रहूँ तो मेरा शेष जीवन आसानी से बीत सकता है। और कहते थे कि मेरे लिये एक महीने की व्यवस्था तुम भी कर लेना। मुझे पूरी आशा है कि डा० मदान मेरे घर भी जरूर आयेंगे और तब हम उनकी पुरानी बातें दोहराएंगे।

मकान न० १० एफ/३१५
सैक्टर २२-ए चण्डीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर इन्द्रनाथ मदान—तनिक समीप से

पुरुषोत्तम शर्मा

पंजाब विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रविष्ट होते ही आप एक ऐसे कक्ष के सामने से निकलेंगे जिसके 'नाम पट्ट' की पीठ आपकी ओर है। यह कक्ष पंजाबी विभाग की अन्तिम तथा हिन्दी विभाग की आरम्भिक सीमा है।

यदि आप इस कक्ष के सम्मुख प्रातः नौ बजे से पूर्व पहुंचें और भाग्यवश द्वार पर टंगा हुआ पीले रंग का पर्दा उठा हुआ हो, तो आपको वहां पर एक ऐसे महानुभाव के दर्शन होंगे जो कि आधुनिक साहित्य में आई 'लघु मानव' की धारणा के जीवन्त प्रतीक हैं। धीर मन्थर गति से डोलायमान, ताम्बूल चर्चित मुखमण्डलधारी यह सज्जन यदि लेखन कार्य में व्यस्त होंगे तो आंखों पर ऐनक अवश्य होगी। यदि आंखों पर ऐनक नहीं है, तो समझ लीजिए कि एक छोटी सी थैली (जो प्रायः उनके कोट अथवा पैंट की जेब में रहती है) में से सुरती निकाल कर खाने की तैयारी में हैं। यदि ये दोनों ही बातें न हों, तो हाथ पर हाथ रखे हुए एक श्वेत वस्त्रधारी सज्जन को, जो प्रायः उनके सामने की कुर्सी पर ही बैठा करते हैं, कुछ 'डिक्टेट' करवाने में व्यस्त होंगे। 'डिक्टेट' करवाते समय यदि आवश्यकता हुई तो एक छोटी सी डिबिया से एकाध पान निकाल कर भी मुंह में डाल सकते हैं। 'नाम-पट्ट' की ओर देखने की आवश्यकता ही नहीं। समझ लीजिए, कि आपके सम्मुख विराजने वाले यह सज्जन और कोई नहीं—डा० इन्द्रनाथ मदान ही हैं।

केवल विभागीय कक्ष में ही नहीं, २२ सैक्टर से लेकर 'बस-स्टैंड' तक (यद्यपि इन दोनों स्थानों पर उन्हें कभी देखा नहीं गया) कहीं पर भी डा० मदान को पहचाना जा सकता है—उनके कतिपय व्यक्तिगत और व्यक्तिगत में में भी शारीरिक गुणों के कारण। चलेंगे, तो इस प्रकार मानों किसी भारी बोझ से दबे हों। बैठेंगे, तो इस प्रकार मानों मूर्तिमान 'विचार' हों। बोलेंगे, तो अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही मौलिक 'अन्दाज' में। किन्तु फिर भी जब वे बोलते हैं तो उनकी जिह्वा की थिरकन जैसे उनके आन्तरिक गम्भीर विचारालोड़न एवं भावनाओं के मन्थर प्रवाह का आभास देती है।

हिन्दी विभाग के केन्द्रीय ज्योतिपुंज आचार्य हज़ारी प्रसाद जी द्विवेदी की यह विशेषता है कि उनका एक पांव प्रतिपल 'विचारों की अवचेतन धारा में लगातार तरंगित होता रहता है'। मानों उनकी विचार-सरिता की तीव्रगति को प्रकट कर रहा हो। किन्तु आज जब इसी कसौटी पर मैं डा० मदान के व्यक्तित्त्व को परख कर देखता हूँ, तो आश्चर्य होता है। क्योंकि ताम्बूल राग रञ्जित उनका मुख भी प्रायः चिन्तन के क्षणों में हिलता हुआ देखा गया है—धीरे धीरे। भले ही पान मुख में न हो किन्तु प्रतीत यूं ही होगा जैसे कि वे पान खा रहे हैं। मुख का यह हिलना भी कहीं उनकी विचारधारा की धीर मन्थर गति का प्रतीक तो नहीं ?

किसी भी समय, जबकि डा० मदान अपने कक्ष में ध्यानावस्थित होकर ताम्बूल-चर्वण कर रहे हों, तो उनसे किसी भी विषय पर चर्चा की जा सकती है, सिवाय इसके कि विषय मूर्खतापूर्ण न हो। यही समय है जबकि 'यार लोग' उनके पास जाकर धीरे धीरे इस बात के लिये उन्हें सहमत कर लेते हैं कि आगामी रविवार को वे उन्हें तथा उनके अन्य बन्धुओं को चाय अथवा भोजन के लिए निमन्त्रित कर लें। उनकी स्वीकृति, जोकि अवश्य मिल जाती है, मिलते ही उन पकवानों की सूची भी तुरन्त प्रस्तुत कर दी जाती है जिन का 'भोग लगानें' में छात्र मंडल की विशेष रुचि होती है।

किन्तु, जिस समय वे अध्यापन कार्य कर रहे हों, तब अवस्था दूसरी होती है। यदि वे प्रसाद का अध्यापन कर रहे हैं तो उस समय पंत का नाम ले देना भी उनकी दृष्टि में बहुत बड़ा दोष है। और समय से पूर्व छुट्टी मांगने से गुरुतर अपराध तो उनके समीप कोई है ही नहीं ! प्रायः देखा गया है कि अध्यापन-कार्य करते समय किसी प्रकार का भी बाह्य हस्तक्षेप उनके लिए सह्य नहीं है। 'समाधि' की स्थिति में होते हैं ऐसे समय में वे।

पान, पुष्प और पुस्तकें—ये तीनों ही वस्तुएं उनके एकाकी जीवन के चिरसंगी अथवा चिर संगिनियां हैं। पान तो आठ पहर और चौसठ घड़ी उनके सान्निध्य में रहता है। पुस्तकें इससे थोड़ा कम। अपने अध्ययन कक्ष की बृहत ग्रन्थ राशि में उन्हें बैठे हुए देख कर कुछ ऐसी अनुभूति होती है, मानों कोई गृहपति अपने भरे पूरे परिवार में बैठा हुआ हो। गृह-उद्यान में आरोपित पुष्प राशि का पालन वे पितृवत करते हैं। जब कभी उमंगान्दोलित छात्र-मण्डली उनके यहां चायपान के लिए पहुंच जाती है तो उन्हें जिस चाव एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निष्ठा से वे स्वारोपित पुष्प एवं विटप के प्रकाण्ड पण्डित हैं, राशि का दर्शन करवाते हैं, उसे देख कर उनकी निष्ठा के प्रति आश्चर्य भी होता है और श्रद्धा भी ।

दूर से देखने वाला व्यक्ति यही समझेगा कि डा० मदान एक शुष्क एवं नीरस आलोचक, कठोर अध्यापक एवं वीतराग मानव हैं । किन्तु वास्तव में बात ऐसी नहीं है । किसी भी गम्भीर गोष्ठी में यदि हास्य वर्षा होने लगे और डा० मदान यथावत मौन धारण किए रहें तो समझ लीजिए कि इस वर्षा के इन बादलों को प्रेषित करने वाले देवराज 'इन्द्र' यही हैं ।

डा० मदान केवल डा० मदान हैं; अथवा एक प्रसिद्ध प्राध्यापक हैं, अथवा वे पंजाब विश्वविद्यालय से उपाधिप्राप्त हिन्दी के प्रथम डाक्टर हैं। इन बातों का उत्तर केवल मैं ही नहीं अपितु अन्य असंख्य लोग भी जानते होंगे ।

कोई व्यक्ति यदि निजी दृष्टिकोण के आधार पर उन्हें मूर्धन्य साहित्य समीक्षक मानता है तो दूसरी दृष्टि से यह भी कहा जा सकता है कि वे अच्छे निबन्धकार हैं। इन दोनों से भिन्न एक अन्य दृष्टिकोण से वे हल्के फुल्के निबन्धों के लेखक भी हैं । कुछ लोग उनके प्राध्यापक के रूप को ही सर्वोपरि मानते हैं । किन्तु एक वर्ग ऐसे लोगों का भी अवश्य होगा, जिसके मतानुसार वे 'सुगमत तथा शास्त्रीय संगीत'

परन्तु यदि तनिक गहराई में पैठा जाए तो कहना होगा कि—डा० मदान आधुनिक कविता का मूल्यांकन करने वाले व्यापारी हैं, आलोचना तथा काव्य के भयावह प्रेतों से जूझने वाले धैर्यशाली तान्त्रिक हैं, प्रेमचन्द तथा शरत के मननशील अध्येयता एवं विवेचक हैं, पड़ौसियों तक पर अपने ललित साहित्य द्वारा व्यंग्य बाण एवं चुटकले छोड़ने वाले मस्त कलाकार हैं, 'कैंची तथा गोंद' से काम लेने वाले एक सफल सम्पादक भी हैं, एक अनुभवी अध्यापक है—छात्र मनोविज्ञान के पंडित, और इसके अतिरिक्त न जाने वे और भी क्या क्या हैं ?

अध्यापक के रूप में ही नहीं अपितु समीक्षक के रूप में भी डा० मदान कलाकार के 'व्यक्तित्व का अध्ययन करने के स्थान पर उसके कृतित्व तथा उसके साहित्य की प्रधान प्रवृत्ति के अध्ययन को ही अधिक महत्व देते हैं।' यह बात दूसरी है कि कभी कभी 'मूड' में आकर महादेवी की प्रेम भावना को 'लौकिक' अज्ञेय के व्यक्तित्व को 'भ्रष्ट तथा दूसरों के व्यक्तित्व को भ्रष्ट करने की क्षमता युक्त' एवं 'ग्रन्थि' को पंत के जीवन में घटित 'वास्तविक घटना' बताने लगते हैं। किन्तु ये मान्यताएं डा० मदान के 'समीक्षक' की तो नहीं, हां उनके 'विनोदशील' अध्यापक की निजी मान्यताएं अवश्य हैं । उन्हीं की शब्दावली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में—"ये मान्यताएँ व्यक्तिगत हैं, समष्टि-गत नहीं।"

डाक्टर मदान स्पष्टतः पूर्ण यथार्थ-वादी जीव हैं। कम से कम मैं ऐसा ही समझता हूँ। उन्हें कल्पनाजीवी प्राणी कहना उनके प्रति नहीं अपितु सत्य के प्रति अन्याय है। प्रसाद के 'कंकाल', प्रेमचन्द के 'गोदान', अज्ञेय के 'शेखर' तथा 'नदी के द्वीप', अमृतलाल नागर के 'बून्द और समुद्र' तथा मोहन राकेश प्रभृति कहानी-कारों की कहानियों में यथार्थ का प्राधान्य होने के कारण, डा० मदान को उनमें पूर्ण आस्था एवं विश्वास है।

'व्यष्टि' और 'समष्टि' तथा 'मूल्य और मूल्यांकन', यही डाक्टर मदान के चिन्तन की सीमाएं हैं। किन्तु इन सीमाओं के मध्य एक अन्य सत्य की विद्यमानता भी दृष्टिगोचर होती है, वह है हास्यपूर्ण मौलिकता एवं अनूठी सूझ। ऐसी मौलिक सूझबूझ का परिचय वे तब देते हैं जबकि किसी समागम का सभापतित्व अथवा संयोजन कर रहे हों। डा० राम कुमार वर्मा का स्वागत करते हुए इन्हें प्रायः 'नवीन जाति की हिन्दी साहित्य को देन' का ध्यान आ जाया करता है और फिर वे अनुसंधुत्सुओं को भी इस ओर प्रेरित करने से नहीं चूकते। खूब जम जम कर यह घोषणा करते हैं कि आज के अनुसन्धान प्रधान युग में इससे सुन्दर अनुसन्धा-नात्मक विषय और कोई हो ही नहीं सकता।

किन्तु, यह सब होते हुए भी डाक्टर मदान एक मनुष्य हैं—सहज मानव एक मस्तमौला अध्यापक। मौज में आ जाएं तो 'कामायनी' के प्रकृति चित्रण को प्रसाद के 'विजया भवानी सेवन का परिणाम' कहने से भी नहीं चूकेंगे। उनका सहज मानव उनके सम्पूर्ण कृतित्व को आच्छा-दित किए हुए है। साहित्य समीक्षण भी वे एक सहज मानव की दृष्टि से करते हैं, गृद्ध दृष्टिशाली आचार्य की दृष्टि से नहीं। सम्भवतः यही कारण है कि उनकी स्थापनाओं एवं उद्भावनाओं में एक सहजता के दर्शन होते हैं—मानवीय सहजता के, ठीक उनके व्यक्तित्व की ही भान्ति।

हिन्दी विभाग
पंजाब विश्वविद्यालय
चन्डीगढ़-३

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब इन्होंने सुना

कौशल कुमार धौम्य

—कि भाषा विभाग की ओर से इस वर्ष डा० इन्द्रनाथ मदान को सम्मानित किया जा रहा है तो एक सज्जन तपाक से बोले "लो, तो उनका विवाह भी इसी वर्ष हो गया।" यह सुनते ही चौकन्ना हो जाना स्वाभाविक था। मैं बोलने वाले सज्जन की ओर घूमा और इतने से ही मेरा अभिप्राय भाँप कर वह बोले—"चौंकिए नहीं, सचमुच ही उनका विवाह नहीं हुआ। पिछले वर्ष इस संबंध में बात करते हुए उन्होंने कहा था कि उनकी तो सगाई ही होती है, विवाह नहीं। और आज उस समय की गई मेरी भविष्यवाणी सत्य हो गई कि मदान साहिब को शीघ्र ही भगवान वह दिन भी दिखाएगा।"

यह बात थी जो इस घोषणा के बाद पहली प्रतिक्रिया के रूप में प्रकट हुई। पास ही खड़े एक और सज्जन की बात में काफी सार प्रतीत हुआ कि मदान शायद पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में निरन्तर पंजाब की धरती पर रह कर हिन्दी साहित्य की सेवा की है। उसका सम्मान कर भाषा विभाग सही रूप में अपने उद्देश्य को पा सकेगा।

इसी कौतूहल में कि कौन किस रूप में इस घोषणा का स्वागत करता है, मैं वहां से सरक गया कुछ ऐसे व्यक्तियों से मिलने जो जो इस व्यक्ति से परिचित हैं और मुझे उनके पास से कुछ मिल सकेगा। बहुत दूर नहीं जाना पड़ा था कि पीछे से आवाज़ आई "सुना है इस बार मदान साहिब सम्मानित किए जा रहे हैं" घूम कर देखा तो आवाज़ से लगाया गया अनुमान ठीक था। पास पहुंचते हुए श्री अतर सिंह से हाथ मिलाते हुए उनकी बात की पुष्टि की और पूछा "क्यों क्या ख्याल है?" उत्तर मिला—"बुद्धिमानी की बात में और ख्याल की क्या गुंजायश।"

आगे बढ़ा तो विचार था किन्हीं साहित्यकारों से मिलूं। उन्हीं से मिलने जा रहा था। इस से पहले कि मैं उन तक पहुँच पाऊँ कि मदान साहिब की एक शिष्या से अकस्मात भेंट हो गई। अधिक परिचय न होते हुए भी उनसे पूछ बैठा कि इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारे में उसका [illegible] मैंने श्रद्धा वाणी में भरकर उन्होंने कहा—"यह तो बड़े हर्ष की बात है। आधुनिक हिन्दी आलोचना जगत् में अपनी गद्यशैली की सरलता, सरसता और विशदता के कारण मदान जी का सम्मान सर्वथा उचित है।" शिष्य-भाव की सराहना करते हुए मैं आगे बढ़ चला। जहां पर रुका वह हिन्दी विभाग के अध्यक्ष का घर था। मकान के खुले आंगन में, लान की हरियाली पर बिखरे भूरे सूखे पत्तों को निहारते हुए डा० परमानन्द जी को मैंने नमस्ते कह कर चौंका दिया। मेरी ओर देख कर कुरसी से उठते हुए बोले—"आइए, आइए, आज कैसे भूल पड़े?" साथ की खाली कुर्सी पर बैठते हुए मैंने कहा—"सुना है इस बार मदान साहिब को सम्मानित किया जा रहा है।" ऐसा कहते समय लक्ष्य यह था कि डा० साहिब यह न जान पायें कि इस बात का मुझे पहले निश्चित पता है। मैं तो उनकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया जानना चाहता था। और वह ठीक इन शब्दों में प्रकट हुई—'सुना क्यों, यह तो निश्चित है। और भई, डा० इन्द्रनाथ मदान का अभिनन्दन तो राष्ट्रभाषा हिन्दी का अभिनन्दन है, मैं तो ऐसा मानता हूँ।' समय तो ऐसा था कि चाय भी वहीं पी लेता परन्तु दस मिनट की बात चीत के बाद ही मैं वहां से उठ गया। अधिक समय वहां न बैठ पाने के लिये डा० साहिब से क्षमा मांगते हुए कहा—"आज एक विशेष काम में व्यस्त हूँ डा० साहिब, अगली बार चाय भी अवश्य पिऊँगा।"

अब मेरा लक्ष्य एक ऐसे मित्र का घर था जहां से अपने ध्येय की पूर्ति के लिए इधर-उधर भटकने की आवश्यकता न थी। यह एक ऐसा स्थान है जहां मुझे गिने-चुने मन वांछित साहित्यकार मिल सकते हैं।

चाय तैयार होने लगी थी। दो चार साथी ही आ पाए थे कि मैं धैर्य खोकर पास बैठे साथी से पूछ बैठा—'आज आपने सुन लिया है न?'

"क्या!"

"क्या! अरे मदान साहब को सम्मानित किया जा रहा है।"

"कब?"

"इसी १४–१५ मार्च को।"

"सच। तब तो ठीक ही हो रहा है। ऐसे निर्कुण्ठ व्यक्तित्व का सम्मान नितान्त उचित है।" उनकी बात सुन कर कमरे में प्रवेश करते हुए एक साथी ने पूछा—'निर्कुण्ठ! आज कौन सा निर्कुण्ठ चर्चा का विषय बना है जो निष्कुण्ठ से निर्कुण्ठ हो गया है।' पहले साथी ने व्याख्या की—'निष्कुण्ठ में शायद किंचित् कुण्ठा की संभावना बनी रहती है और मैंने समझा कि मदान जैसे व्यक्ति के लिए ऐसी संभावना वाले शब्द का प्रयोग जंचता नहीं।'

शीघ्र ही विषय बदल गया। मुझे बस पकड़ने का ध्यान हो आया।.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारा दिन काम में व्यस्त रहने के बाद सायं चाय पीने के लिए 'क्वालिटी' पहुँचा तो महफिल गर्म मिली। यह अप्रत्याशित ही था कि एक साथ बहुत से साथी यहां मिल जायेंगे। एक स्वर में सभी ने मेरा स्वागत किया। यह भी स्वाभाविक था कि मदान साहिब के सम्मानित किए जाने की बात वहां चलाता। बात सुनते ही एक साथी बोल उठे—"अरे हां, हां, कल उनके कुछ शिष्य उन से एक बहुत बड़ी पार्टी लेने का कार्यक्रम बना रहे थे।" इनकी बात की ओर ध्यान दिये बिना ही एक अन्य साथी ने कहा—"बहुत अच्छा है, पर देर से हुआ।" तो दूसरी ओर आवाज़ आई—देर से खैर देर सवेर, पर यह तो बताओ कि यह सब होता कैसे है? और वह मुस्करा दिये।

बातें और भी होती रहीं और समूचे रूप में सब ने इस बात का स्वागत किया। एक साथी यह कहते हुए उठे—"यह अभिनन्दन प्रतिवर्ष होता है, इस बार भी अच्छा है।" तो कोई भी बैठा न रह सका और शायद इन शब्दों की गहराई में जाने का प्रयास करता हुआ 'क्वालिटी' से बाहर निकल चला।

हिन्दी विभाग,
पटियाला

● ● ●

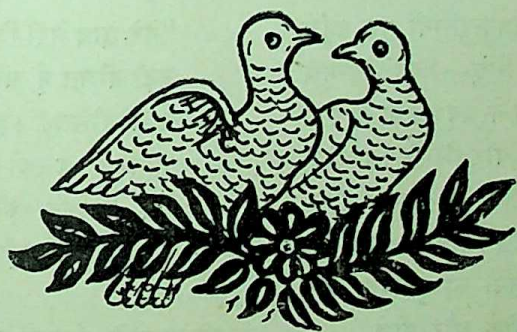

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंपित लहरें और सोन मछली

प्रेम पाल शर्मा

भुटपुटा प्रकाश ! सागर का किनारा ! तट की लहरों से सोन-मछली उछलती है—और छपाक..... छप्प ! जैसे लहरों में समा जाती है। मैं सोचता हूँ—जो व्यक्तित्व सागर सा अथाह हो—जिसकी गहनतम सतह स्वतः चिन्तन की प्रेरिका हो— दृष्टि और अनुभूति के दो पावन कूल जिस की मानवीयता के रक्षक हों—जो महामानव नहीं केवल मानव बन कर अनेकत्व में निज विराट का सत्यान्वेषक हो—वह व्यक्तित्व सर्वथा अभिनन्दनीय है, जीवन सागर के पावन-पुलिनों तक पहुंचे उस पिपासु के लिए—जिसके सन्मुख सागर के खारे पानी ने अनुभव के खारेपन को प्रकट किया हो और जिसके झिलमिल झिलमिल करते मोतियों की चमकने सौन्दर्यान्वेषिणी दृष्टि के विशालत्व का बोध कराया हो। स्मृतियों का कुहरिल जाल मुझे बुलाने लगा पीछे और पीछे .....

अपार जन-समुदाय ! चण्डीगढ़ का टैगोर थियेटर ! दुधिया ट्यूब का मद्धम प्रकाश ! घटित घटना में सोन-मछली का उछाल ! सिन्धु से गम्भीर व्यक्तित्व के अधिपति का मन्त्र मुग्ध जन-मन के आगे गुरु गर्जन :—

> **"मैं महामानव बनने के लिए अपनी मानवीयता को खोना नहीं चाहता।.....**
>
> **"मुझे गुड़ की मिठास से करेले की कड़वाहट अधिक पसन्द है।"...**
>
> **"मेरे छात्र मेरी जिन्दगी की सब से बड़ी दौलत हैं और चलने फिरने वाली दौलत है। हर साल बदलती रहती है। इनकी अक्ल और शक्ल मेरे रीतेपन को भरती और खाली करती रही है।".....**

तट की लहरों से उछलते हुए सोन-मछली ने छपाक.....छप्प की अपनी ध्वनि से इस तथ्य को इस प्रकार अभिव्यक्ति दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि —

"डॉ० इन्द्रनाथ मदान के व्यक्तित्त्व में सिन्धु का गाम्भीर्य है .....
"डॉ० इन्द्रनाथ मदान सौन्दर्यान्वेषिणी दृष्टि तथा सत्यान्वेषिणी अनुभूति के उदार अधिपति हैं ।".....

"डॉ० इन्द्रनाथ मदान अनेकत्व में एकत्व के द्रष्टा एवं पारस्परिक सामंजस्य के लिये नवीन मानदण्डों के स्रष्टा हैं ।"

●

झुटपुटा प्रकाश ! सागर का किनारा ! तट की लहरों से सोन-मछली फिर उछलती है छपाक.....छप्प ! जैसे घनी स्मृतियों का घना कुहरिल जाल फिर तन जाता है । व्यक्तित्त्व चिन्तन के सजीव तथ्य मस्तिष्क को आलोड़ित कर देते हैं । मैं एक बारगी सहम उठता हूँ । मैं सोचता हूँ :—व्यक्तित्त्व के मांगल्य का उद्गम स्थल-संस्कारों की पावन कुक्षि है । अभिरुचियां उस जीवन-दर्शन की विधायिका हैं जो सहज से अनुप्रेरित हैं और काठिन्य से अनुप्राणित ! जहाँ असफलता में खुशियां जन्मी हैं सफलता में कहकहे फूटे हैं । व्यष्टि के प्रति समष्टि का अभिनन्दन समष्टि के प्रति व्यष्टि की जागरुकता उसकी सफल परणति है । हे श्रद्धे ! हे सोन मछली ! उस गुणग्राहक के लिये मेरा मूक-वन्दन निवेदित है !

सोन मछली के फेनिल उच्छ्वास सागर के उर्मिल जल में बिखर बिखर गये, जो तन मन को भिगो भिगो गये । कँपित लहरें वाचाल हो उठीं :—विकसित अभिरुचियां उनके व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व की संदेश वाहिका शक्तियां हैं, जिन में उनकी तटस्थता, निर्लिप्तता, युग-सापेक्ष सौन्दर्य बोधता, आत्मीयता तथा गम्भीरता के दर्शन होते हैं । श्रद्धासिक्त प्राणों ने इस सत्य को ऐसे स्वीकार कर लिया कि :—

पान डॉ० इन्द्रनाथ मदान के एकाकी जीवन का चिर संगी है । जिससे उन्हें फक्कड़ाना मस्ती मिली है ।

पुष्प डॉ० इन्द्रनाथ मदान को सौन्दर्यानुभूति में सहायक प्रतीत होते हैं । बगिया को दुल्हन के समान सजाना संवारना उन्हें अत्यधिक प्रिय है ।

पुस्तकें डॉ० इन्द्रनाथ मदान के लिए तत्त्वचिन्तन की सूचक हैं । विश्वविख्यात विद्वानों की कृतियां उनके पुस्तकालय का आभूषण हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे लगा कि जीवन के प्रवाह में बहती हुई प्रेरणा की कंपित लहरें और श्रद्धा की सोन मछली इस सजीवता की द्योतक है कि :—

एक तपः मूर्ति सव्यसाची ।
(आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी) से
डॉ० इन्द्रनाथ मदान को स्नेह
और सराहना मिलती है ।
डॉ० इन्द्रनाथ मदान साधन और साधना की सजीवता से मां भारती के अभ्युत्थान के आकांक्षी हैं। नई पीढ़ी और नई परम्परा को डॉ० इन्द्रनाथ मदान से सक्रिय स्नेह मिल रहा है । वे महान् हैं और अभिनन्दनीय हैं ।

द्वारा पं० हंसराज
त्रिवैणी चौक,
पटियाला ।

● ● ●

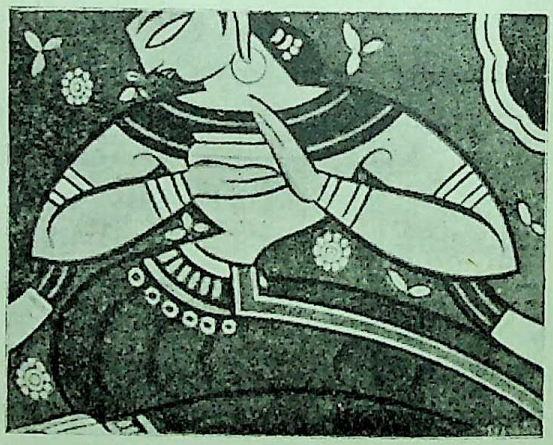

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिनन्दन के बाद

इन्द्रनाथ मदान

अभिनन्दन के बाद की बात वही कर सकता है जिसके यह साथ बीत चुका है। पंजाब सरकार ने एक साहित्यकार के रूप में जब से मेरा अभिनन्दन किया है तब से मित्र-अमित्रों ने मेरा उद्घाटन करना शुरू कर दिया है, मेरा परदा उठाना शुरू कर दिया है। मेरा अनुमान था कि इस घटना के बाद धूल बैठ जायेगी, और शोर बन्द हो जायेगा और मैं बोरियत की शांत ज़िन्दगी फिर से बसर करना शुरू कर दूंगा। बोरियत मुझे इतना परेशान नहीं करती है जितना यह मेरे मित्रों और अमित्रों को जो मुझ से अधिक संवेदनशील हैं। इन दिनों इन की संख्या दिन-पर-दिन बढ़ती ही जा रही है। मेरे मित्रों ने मुझे इस तरह खिलाना-पिलाना शुरू कर दिया है जैसे मैंने एक अरसे से अनशन कर रखा हो, मेरे गुणों का इस तरह बखान करना शुरू कर दिया है जैसे मुझमें इससे पहले एक भी गुण नहीं था, इस अवसर ने ही इनको उघाड़ा हो। एक ने कहा कि अभिनन्दन पर वक्तव्य एक ऐतिहासिक घटना थी, दूसरे का कहना है वह हिन्दी का दिन था, तीसरे का कथन है कि जो मैंने कहा उसे करके दिखा दिया और पुरस्कार हिन्दी के लिये दान कर दिया। मेरा एक छात्र मेरी ज़िन्दगी की पांचवीं घटना या मौत के बारे में सुन कर दहशत में आ गया। उसे डर लगा कि मैं कहीं मंच पर ही न गिर पड़ूँ। इस तरह की स्नेह-सराहना से जब मैं अपच का शिकार होने वाला था तो मेरे अमित्रों ने मुझे हाज़मे की गोलियां देनी शुरू कर दीं। एक को कहते सुना है कि मैंने एक मदारी का खेल किया है, दूसरे का मत है कि मैंने एक एकांकी का अभिनय किया है, तीसरे की राय है कि मैंने अपने वक्तव्य में सच ही तो बोला है कि मैं लेखक नहीं हूँ और चौथे का विचार है कि सब स्टंट था। इनके अनुसार पंजाब सरकार ने मेरा अभिनन्दन करने में भूल की है, मुझे पुरस्कार देकर गलती की है। मुझे मदारी या अभिनेता इसलिये कहा गया है कि भरी सभा में थैली सौंप कर बाद में वापस ले ली है। इस तरह राम और माया दोनों को सिद्ध कर लिया है और तालियां मुफ्त में पिटवा ली हैं। इन गोलियों से हर किसी की अपच दूर हो जाती है और मन स्वस्थ एवं संतुलित हो जाता है। इसके साथ मेरा यह संदेह भी पुष्ट हो जाता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह सराहना और निन्दा का कारण जब मेरी समझ से बाहर हो जाता है तब मैं पत्री उठा कर अपने ज्योतिषी के पास चला जाता हूँ। जहां साधारण मनोविज्ञान असफल सिद्ध होता है वहां असाधारण ज्योतिष काम आता है। मनोविज्ञान में केवल विज्ञान है जो ससीम है और ज्योतिष में चमत्कार होता है जो असीम है। मेरी पत्री के अनुसार मेरा यह मान-अपमान शनि तथा मंगल के योग का परिणाम है जो इन दिनों एक-दूसरे को आमने-सामने देख रहे हैं। शनि की चाल भी धीमी होती है। इसलिये इसका असर देर तक चलता है। अगर इस मान-अपमान से मैंने छुटकारा पाना है, स्नेह-सराहना की अपच से मुक्ति पानी है, तो मुझे अनुष्ठान करना होगा। इसमें चार सौ की लागत और एक महीना पूजा करनी पड़ेगी। इतना करने पर भी शनि और मंगल के योग का बल कम तो हो जायेगा लेकिन बिल्कुल नहीं जायेगा। यह बात सुन कर मुझे चांद की याद आ गयी जिसमें कलंक है और फिर भी वह राहु-केतु का शिकार हो जाता है। इस तरह मेरी नियति इन दिनों मंगल-शनि के योग से ग्रस्त है। अपन बारे में बेपर की सुन रहा हूँ, बेपांव की पढ़ रहा हूँ। इसकी आदत पहले से ही डाल रखी है।

[illegible] मेरे सुनने और पढ़ने में आया है कि मुझे प्रेमचन्द पर डाक्टर की उपाधि मिली है। इससे मेरी जानकारी बढ़ी है और मेरे सीमित ज्ञान में विस्तार हुआ है। अभी मेरी डाक्टरी पर प्रश्न चिह्न लगाने की नौबत नहीं पहुंची है; उसे कम्पाऊंडरी अवश्य कहा गया है: मुझे पहली बार पता चला है कि मैं एक निडर व्यक्ति हूँ, जबकि अब तक मैं बड़ों से डरता और उनकी खुशामद करता आया हूँ। लेकिन अपने से छोटों को मैंने कभी डराया नहीं है। आज पहली बार मेरे नाम के साथ बड़े-बड़े विशेषण जोड़े गए हैं——महामना, आदरणीय, माननीय आदि जबकि महान बनने या आदर पाने की मेरी चाह तक नहीं है। मुझे साहित्य-शिरोमणि की पदवी से भी विभूषित किया गया है। प्रेमचन्द को जब उपन्यास-सम्राट् कहा जाता था तो मेरी समझ में नहीं आता था कि उपन्यासकार और सम्राट् में क्या सम्बन्ध हो सकता है। यह शायद इसलिये कि भारतीय आलोचक या निन्दक के शब्द-भंडार का बन्द दरवाज़ा जब एक बार खुल जाता है तो वह बन्द होने में नहीं आता। वह खुलकर मान अपमान करने लगता है। इसके अतिरिक्त हिन्दी कोश में शायद विशेषणों की भी भरमार है। इस तरह की अतिशयोक्ति में स्वभावोक्ति है, परम्परा का भी हाथ है। यह सुनने में आया है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

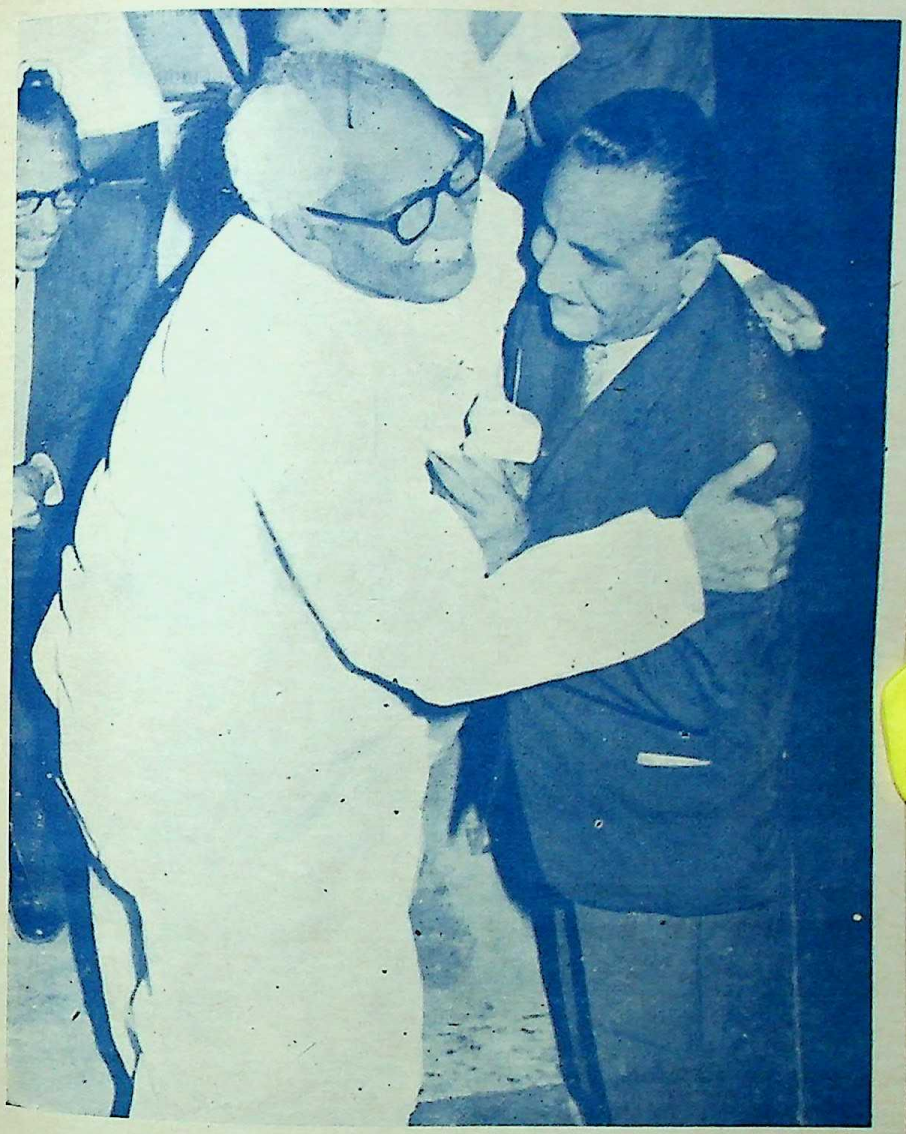

अपने सव्यसाची आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को हिन्दी के अभ्युदय के लिए ११०० रुपए की थैली भेंट करने पर स्नेह मिलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाभ
करोड़
में स
कुल
विषय
जबकि
बारे में
से कह
अधिक
है, ज

भी हु
खुद
इसलि
पसन्द
मेरी
छायाव
ठीक
नजर
छायाव
लिये
चेहरा
अलग
तीसरे
मुस्कान
के वश
कि अ
लाना
एक स्टु
पड़ा कि

मई, १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाभारत में सैनिकों की संख्या अठारह करोड़ थी और इनका नाश अठारह दिनों में सम्पन्न हुआ । उस युग में भारत की कुल कितनी आबादी होगी यह विज्ञान का विषय है । विज्ञान में केवल तथ्य होता है, जबकि काव्य में सत्य । इस तरह मेरे बारे में जो कौरवों तथा पांडवों की ओर से कहा गया है वह काव्य—सत्य के ही अधिक निकट है । इस में कवि का न्याय है, जज का इन्साफ़ नहीं ।

इस अभिनन्दन का मुझे बड़ा लाभ भी हुआ है । मुझे बहुत सी अपनी तस्वीरें खुद खिंचवानी पड़ी हैं । और बहुत सी इसलिये कि मेरी 'सरकार' को मेरी फोटो पसन्द नहीं आ रही थी । इसमें दोष तो मेरी सूरत एवं आयु का था, सरकार या छायाकार का नहीं । एक चित्र इसलिये ठीक नहीं कि चेहरे पर झुरियाँ नजर आती हैं । और इन्हें मिटाना छायाकार का काम है, दूसरा इस लिये नापसंद कि इसमें गरदन और चेहरा एक हो गए हैं और इन्हें अलग-अलग दिखाना भी उसी का काम है : तीसरे चित्र में त्रुटि यह है कि ओठों पर मुस्कान नहीं है और इसे लाना भी उसी के वश में है । और चौथे में दोष यह है कि आंखों में रोशनी नहीं है और इसे लाना भी छायाकार के अधिकार में है । एक स्टूडियो से दूसरे में इस तरह भटकना पड़ा कि मैंने अपना चित्र किसी प्रेयसी को भेजना है और इनके आधार पर मेरी किस्मत का फैसला होना है । अब मेरे पास भले-बुरे चित्रों का पूरा अलबम है जो मेरे महमानों के जी को तब तक बहला सकता है जब तक इनका खाना तैयार नहीं हो जाता । इनके मनोरंजन के लिये एक टेप भी है जिस में मेरा वक्तव्य सुरक्षित है । पहली बार जब मैंने इसे सुना तो मुझे लगा कि मैंने लिखा कुछ है और बोला कुछ और । महादेवी की ये पंक्तियां याद आने लगीं —

मैं अपने ही बेसुधपन में
लिखती हूं कुछ, कुछ लिख पाती ।

मैं तो उस समय बेसुधपन की स्थिति में नहीं था, पूरे होश में था । जब टेप को दोबारा लगाया और अपनी लिखित कापी से उसे मिलाया तो अक्षर-अक्षर वही था । इन दोनों में अन्तर केवल इतना था कि लिखित में तालियों की गूंज नहीं थी । इनकी ध्वनि ने दोनों में इतना अन्तर ला दिया । अब ध्वनि-सिद्धान्त, ध्वनि-नाटक, ध्वनि-काव्य में मेरा विश्वास गहरा हो गया है । मुझे आशा होने लगी है हिन्दी कहानी भी एक दिन अकहानी बने या न बने, ध्वनि-कहानी अवश्य बन जाएगी । इस टेप को सुन-सुन और सुना-सुना कर अब जी उकता गया है । आने-जाने वाला परिचित-अपरिचित जब इसे सुनने की फ़रमायश करता है तो मैं उस गाने वाली की तरह महसूस करने लगता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ जिससे बार-बार एक ही कविता गाने का अनुरोध किया जाए, या उस कवि की तरह अनुभव करने लगता हूँ जिसे एक ही कविता का अनेक बार पाठ करने को विवश किया जाए। अपनी ओर से कहना शुरू तो कर दिया है यह टेप रेडियो के संग्रहालय में चला गया है जहां बड़े-बड़े व्यक्तियों की आवाज़ें सुरक्षित रहती हैं। लेकिन लोग कब मानते हैं कि गाने वाली का गला खराब है या कवि की स्मरणशक्ति कमज़ोर है !

मेरा अभिनन्दन और इसके बाद मेरा उद्घाटन मेरी जिन्दगी में हर सौदे की तरह घाटे का ही सिद्ध हुआ है। मुझे लगता है कि हर घटना व्यक्ति को अधिक अकेला छोड़ जाती है, हर स्थिति उसे अधिक भ्रान्तियों का शिकार बना जाती है, हर पुरस्कार उसे अधिक रीता कर जाता है। आम लोगों की धारणा रूढ़ हो चुकी है कि मैंने हिन्दी के लिए थैली दान की है। एक तो दान किसी छोटे को दिया जाता है और हिन्दी मुझ से कहीं बड़ी है, और दूसरे मैंने यह त्याग-भाव से नहीं किया है, सहज -भाव से किया है। त्याग में मेरा विश्वास नहीं है और इसका मुझ में अभाव भी है। इस तरह की भ्रान्तियों को दूर करना किसी के बस का रोग नहीं है।

अभिनन्दन के बाद मुझे अनेक सलाहकारों से भी पाला पड़ा है जो अपनी-अपनी सलाह से मेरा विकास करना चाहते हैं। एक की धारणा है कि मुझ में ललित निबन्ध रचने की प्रतिभा है, जबकि जीवन भर मैंने एक भी ललित काम नहीं किया है, एक और का विचार है कि मुझ में कहानी लिखने की क्षमता है और वह मुझे कहानीकारों के छत्ते में फेंकना चाहता है। इस स्थिति में एक बात संतोष की भी है कि किसी ने मुझे कविता करने की सलाह नहीं दी है, हालांकि हिन्दी से सम्बन्ध रखने वाला हर व्यक्ति अपना साहित्यिक जीवन कविता से शुरु करता आया है। इसका अन्त वह पहले महाकाव्य में करता था, लेकिन आज नाटक-काव्य में करने लगा है। महान कवि कहलाने के लिये पहले महान काव्य कसौटी था, छोटी-छोटी कविताओं से महान की पंक्ति में खड़ा होना संभव नहीं था। आज का युग-बोध महाकाव्य की रचना के अनुकूल नहीं समझा जाता है। इसलिये महाकवि की पदवी पाने के लिये नाटक-काव्य की रचना होने लगी है। मुझे शक होने लगा है कि मेरे सलाहकार मुझे आलोचना से भी वंचित करना चाहते हैं। इनको शायद यह मालूम नहीं है कि दोस्तों के मजबूर करने पर मैं चुनाव में खड़ा होने वाला व्यक्ति नहीं हूँ। अगर कहानी और निबन्ध के चक्कर में पड़ कर मैंने एक बार भी आलोचना से नाता तोड़ दिया, तो वह सदा के लिये रूठ जायेगी, और मुझे जीने के लिये किसी नये भ्रम की सृष्टि करनी पड़ेगी। क्या हम सब भ्रान्तियों के बल पर नहीं जीते हैं ?

३१। सी, सैक्टर १८। बी
चण्डीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

VISVA-BHARATI

Founder-President :
Rabindranath Tagore

SANTINIKETAN,
BENGAL,
INDIA.

December 6. '39.

Dr Indranath Madan's survey of Modern Hindi Literatur is a valuable book and provides a scholarly basis for the appreciation of living currents of Hindi literature. It is a timely publication and will prove particularly useful to students of comparative literature who must make a thorough study of Hindi thought and culture of to-day.

Rabindranath Tagore

जब रही अपनी कृतियों की बात। जब सुबह उठकर शीशे में [शीशा बढ़िया है।] अपनी सूरत देखता हूं तो बनाने वाले को कोसता हूं। जब नहा-धोकर फिर शीशे की सहायता लेता हूं तो इतना बुरा नहीं लगता जितना लोग समझते हैं। यही विचार अपनी कृतियों के सम्बन्ध में है।

इन्द्रनाथ मदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन दृष्टि

मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ । मेरी वेश-भूषा, रहन-सहन, खान-पान, व्यवहार सब साधारण है, मेरी प्रतिभा भी सामान्य कोटि की है । मेरे पास न तो लेखक के लम्बे लम्बे घुंघराले बाल हैं, न ही उसकी कटी-छटी, बकरा दाढ़ी है, न ही रंग-बिरंगे वस्त्र हैं, न ही बढ़िया या फटे काग़ज़ हैं, न ही पारकर की या टूटी फूटी कलम है, न ही हरे या लाल रंग की स्याही है, न ही टेढ़ी-मेढ़ी लिपि है । मेरे पास न ही लेखक का प्रगतिशील दृष्टि-कोण है, न ही काल्पनिक या वास्तविक प्रेयसी है, न ही भाव हैं और न ही भाषा । मैं लेखक की तरह न देर में सो सकता हूँ और न ही देर में उठ सकता हूँ । मेरी नींद अनायास सुबह खुल जाती है । मैं रात को तारागण गिनने का अभ्यस्त नहीं हूँ और न ही मुझे यह व्यापार अभीष्ट है । मैं चाय पीने का आदी हूँ । कॉफी कड़वी लगती है । सिगरेट का धुआं भी नाक में चढ़ जाता है । इस प्रकार मेरे पास लेखक बनने के गुण और लक्षण नहीं हैं । मेरे जीवन में विलक्षणता का अभाव है । अपनी सीमाओं से पूरी तरह अवगत हूँ, उनसे पूरी तरह संतुष्ट हूँ । मेरे मुख पर लेखक के मुख की तरह असंतोष की रेखाओं का अभाव है, मेरी आंखों में काव्यात्मक तरलता एवं गहनता के दर्शन नहीं होते । ऐसी स्थिति में मैं लेखक बनने की कल्पना कैसे कर सकता हूँ ? यह मेरे बस का रोग नहीं है । लेखक जीवन की गहन अनुभूतियों से सम्पन्न होता है, वह घाट घाट का पानी पिये होता है, देश-देश का भ्रमण किये होता है । मेरा जीवन गहन अनुभूतियों से वंचित है । मैंने केवल नलके का पानी पिया है । अपने घर से बहुत कम निकलता हूँ । देहली के उस पार भी कहीं गया नहीं हूँ । नदी के इस पार ही खड़ा रहा हूँ, उस पार जाने का साहस ही नहीं है । नदी की धारा में डूबने का भय लगा रहता है । रंगमंच पर जाने से संकोच करता हूँ : महत्त्वाकाँक्षी की कमी है । पुरस्कार पाने या भूखों मरने से कतराता हूँ, पहाड़ पर चढ़ने या खड्ड में गिरने से घबड़ाता हूँ । इसलिये मेरे पास लिखने की सामग्री कहाँ से आ सकती है । लेखक नहीं बन सकता केवल आलोचक होने से संतोष कर लेता हूँ ।

—सुगम तथा शास्त्रीय संगीत

●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिरकाल से भक्त अपने भगवान से प्रणय–निवेदन की बात करता आया है और वे उसे सुनते भी रहे हैं। इतना ही नहीं वे दुःख में उसकी सहायता भी करते रहे हैं। कबीर के साहब, मीरा के गिरिधर गोपाल, तुलसी के राम, सूर के कृष्ण भक्त के प्रणय-निवेदन पर विश्वास करते आए हैं, परन्तु आज के आस्थाहीन युग में न तो प्रणय-निवेदन की बात कहते बनती है और न ही प्रेमी–प्रेयसी की इसमें आस्था ही है। आज न तो भगवान में इतना विश्वास है कि उससे प्रणय-निवेदन की बात की जाए और न ही मानव में इतनी आस्था है कि प्रेमी-प्रेयसी अपने मन के रहस्य को व्यक्त कर सकें। आज मन में इतनी गाँठे पड़ चुकी हैं कि उन्हें खोलने में आयु बीत जाती है और मन की बात मन में ही रह जाती है। जीवन की जटिलता ने भावों की सहजता को कुण्ठित कर रखा है और संकोच की भावना को गहरा दिया है। इसलिए आज प्रेमी तथा प्रेयसी दोनों के हृदय पर सामाजिक अंकुश लगा हुआ है, उनकी मानसिक उलझनें उन्हें प्रणय-निवेदन की बात करने से रोकती रहती हैं। इसका सीधा परिणाम यही निकलता है कि बात घुटकर मर जाती है। इसका यह कारण भी हो सकता है कि आज सभी भगवान बनना चाहते हैं, भक्त बनने के लिए प्रेमी–प्रेयसी में विनीत भाव का अभाव है। आज का युग अहं की पूजा का युग है, स्वयं की अराधना का काल है। यह अहं प्रणय–निवेदन की बात कहने में बाधा बनकर आता है। प्रेमी तथा प्रेयसी में यह होड़ लगी रहती है कि पहले कौन बात करे और इसी होड़ में अवसर हाथ से सदा के लिए निकल जाता है और दोनों हाथ मलते रह जाते हैं।

—पुगम तथा शास्त्रीय संगीत

●

कवि का कहकर पछताना तो स्वाभाविक है। यह इसलिए कि वह जो कहना चाहता है कह नहीं पाता। उसकी बात या तो अधूरी ही रह जाती है या

जन–साहित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बिगड़ जाती है । उसकी अनुभूति भाषा में ढलकर और हो जाती है । उसके पछताने का कारण उसकी विवशता है । लेकिन मेरा कहना मेरे वश में था । एक बार मैंने एक कवि से केवल इतना कह दिया, मेरे योग्य सेवा, और वह भी शिष्टाचार के नाते और इन शब्दों का परिणाम मैं तीन महीनों से भुगत रहा हूँ । और यह भी नहीं जानता कि कब तक कवि महोदय मुझे बोर करते रहेंगे । उनका कहना है कि इस महानगरी में मैं ही एक सहृदय व्यक्ति हूं जो उनकी कविता को समझ सकता है । नयी कविता के लिए मुझ जैसे नये पाठक की आवश्यकता है । उनकी कविताएं अभी छप नहीं सकी हैं। इसलिए उन्होंने मुझे अपना श्रोता बनाना उचित समझा है । उनका यह भी कहना है कि मेरे घर का वातावरण उनके कविता पाठ के लिए अनुकूल बैठता है । वह इस लिए कि यह सूना है । यहाँ शोर–गुल नहीं है । कवि महोदय नियमित रूप से शाम को चाय के वक्त पहुंच जाते हैं और लगातार एक घंटा कभी मेरे मुंह को ताकते हैं और कभी अपनी कापी को देखते हैं जो बहुत मोटी है । एक कवि का कहकर पछताना तो उचित जान पड़ता है । उसकी अनुभूति कुछ है और अभिव्यक्ति कुछ और हो जाती है । उसके पछताने का कारण असंतोष का भाव है । मेरे पछताने का कारण मात्र शिष्टाचार है जिसका पालन बार–बार मैं ने भूल–भूलकर किया है ।

—सुगम तथा शास्त्रीय संगीत

●

नयी कहानी और उसका भविष्य दो स्वतन्त्र प्रश्न हैं और दोनों ही मेरे उत्तर से बड़े हैं । अभी तो नयी कहानी का स्वरूप ही अस्पष्ट है, इसका भविष्य कितना अनिश्चित हो सकता है इसका केवल अनुमान लगाया जा सकता है । और भविष्यवाणी का क्षेत्र ज्योतिषियों का है या आचार्यों का या जिनके पास दिव्य दृष्टि है, मेरे पास न तो भृगु–संहिता है, न ही संजय के दिव्य चक्षु हैं और न ही आचार्य का विवेक है । इसलिए नयी कहानी के सम्बन्ध में कुछ कहना मेरे लिए अनाधिकार–चेष्टा होगी जो खतरे से खाली नहीं है । और ज्योतिषी भी अनेक तरह के हैं––कुछ हाथ देखते हैं, कुछ चेहरा आँकते हैं, कुछ जनम–दिन या जन्म–मास के आधार पर ज्योतिष लगाते हैं. कुछ जन्म–कुण्डली का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रय लेते हैं और कुछ चिड़ियों के द्वारा व्यक्ति के भाग्य को खोलते हैं। अन्तिम कोटिप्रायः सड़क पर बैठकर आने–जाने वालों के भविष्य का पुष्ठ सस्ते दामों में ही पढ़ देते हैं। मैं इसी कोटि का ज्योतिषी हूं जो थोड़े समय में और अधिक थोड़ी कीमत पर नयी कहानी का भविष्य बताने का प्रयास करूंगा। और यदि वह गलत भी सिद्ध हुआ तो इतना अवश्य कह सकूंगा कि जितना गुड़ डाला जाता है उतना ही मीठा हो सकता है।

–सुगम तथा शास्त्रीय संगीत

●

झूठ बोलने की कला के अनेक नाम तथा रूप हैं। इसको सिद्ध करने के लिए उन सब शक्तियों का संचय करना पड़ता है जो अन्य कलाओं को सिद्ध करने के लिए आवश्यक होती हैं। इन शक्तियों में कल्पना-शक्ति, स्मरण–शक्ति और अभिव्यंजना–शक्ति की विशेष रूप से गणना की जाती है। इनके समन्वित उपयोग से ही झूठ बोलने में कुशलता उपलब्ध होती है। किसी काम में कुशलता पाने को गीता में योग की संज्ञा दी गई है, इसलिए योगी या प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति ही झूठ बोलने का जोखम उठा सकता है। यदि वह कल्पना–शक्ति से वंचित है तो वह बात बना ही नहीं सकता, यदि उस में अभिव्यंजना शक्ति का अभाव है तो वह बात बनाकर भी कह नहीं सकता, यदि उसकी स्मरण–शक्ति क्षीण है तो उसका झूठ पकड़ा जायेगा और यदि झूठ पकढ़ा जाता है तो वह झूठ ही नहीं रह जाता। तभी तो महात्मा गांधी ने कहा था कि सत्य बोलने के लिए स्मरण–शक्ति की अपक्षा नहीं होती। सत्यवादी को यह स्मरण रखने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती कि उसने कहां, किस समय, किस व्यक्ति से क्या कहा था ? मिथ्यावादी को अपनी स्मरण–शक्ति को तलवार की धार की तरह तीक्ष्ण रखना पड़ता है। यदि वह इसे कुण्ठित कर देता है तो उसे अनेक विपन्न परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जब उसका झूठ पकड़ा जाता है। बद से बदनाम बुरा होता है। बद सफल कलाकार होता है और बदनाम वह असफल कलाकार जो एक सफल कलाकार की भांति उक्त तीनों शक्तियों का समान रूप से उपयोग नहीं कर पाता। इन शक्तियों के समन्वित उपयोग से ही कला में सिद्धि प्राप्त होती है।

–सुगम तथा शास्त्रीय संगीत

●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे मित्र का अगला प्रश्न है—विश्व साहित्य में सबसे उत्कृष्ट लेखक कौन है ? यह प्रश्न मेरे उत्तर से बड़ा है । विश्व–साहित्य इतना व्यापक एवं विशाल है कि इसे पढ़ने के लिए सौ–सौ बरस की दस ज़िन्दगियां दरकार हैं। मैं तो सौ बरस की एक ज़िन्दगी भी नहीं जीना चाहता । इसकी बजाय पचास–पचास बरस के दो जीवन बेहतर है । दस–बीस सालों में कितना पढ़ा जा सकता है । और कुछ पढ़कर भी यह कहना कितना कठिन है कि सबसे उत्कृष्ट लेखक कौन है । अपनी–अपनी जगह सभी उत्कृष्ट हो सकते हैं । इस प्रश्न का क्या उत्तर दिया जाए कि विश्व में सुंदरतम नारी कौन है । पहले तो इन सबको देखने का अवसर ही नहीं मिलेगा, और अगर कहीं सुन्दरता की परेड नियोजित भी की जाए तो इसका निश्चय कर पाना बहुत कठिन है । अगर यह पूछा जाता कि मुझे कौन–कौन से लेखक पसन्द हैं तो इसका जवाब गढ़ा जा सकता था । अगर सबका नाम लेता हूं तो पाठक समझेंगे कि मैं उन पर अपनी योग्यता की धाक जमाना चाहता हूं । कभी मुझे रोमांटिक कवि पसन्द थे, अब उतने नहीं हैं । मिर्ज़ा ग़ालिब को बार–बार पढ़ता हूं । रूस के उपन्यासकारों और फ्रांस के कहानीकारों से विशेष लगाव है । कालिदास की शकुन्तला पर मुग्ध हो जाता हूं । हार्डी के उपन्यासों को फिर पढ़ने को जी चाहता है । आज के हिन्दी कहानीकारों क प्रति अब उपेक्षा का भाव नहीं रहा । उषा प्रियम्वदा की कहानियां स्वयं पढ़ता हूं और दूसरों की पढ़ने के लिए देता हूं, चाहे वह गंगा में डाली अस्थियों की तरह लौटती नहीं है । उपन्यास कभी–कभी देखने को मिलता है । एक भारी–भरकम उपन्यास को मैंने तीन बार पढ़ा है—रोम्या रोलां का 'जांन क्रिस्तोफी'। अगर मरने के बाद केवल एक पुस्तक साथ ले जाने की अनुमति दी जाय तो मेरे लिए चयन कठिन न होगा । क्या जीवन का सागर इसमें हिलोरे लेता है ! जब आंखे दुखने लगती हैं तो मीरा और सूरदास के भजन रेडियो पर सुनता हूं ।

—सुगम तथा शास्त्रीय संगीत

●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह दैनिक डायरी का अनुशासन मेरे लिए जरूरी बन गया। इस से बेहतर तो वह स्थिति होती जब कुछ याद न रहे। इस तरह डायरी मेरे लिए वरदान की जगह अभिशाप बनने लगी। डायरी की सहायता से व्यस्तता निभाने की बजाय मेरी संकुलता गहराने लगी। मैं धीरे-धीरे अपनी सहजता खोने लगा और यन्त्र बनने लगा। इतनी निष्कपट लगन और इतने दृढ़ विश्वास से डायरी रखना बेकार सिद्ध होने लगा। असल में डायरी का पालन करना और हर पत्र का उत्तर देना महान व्यक्तियों को ही शोभा देता है आज के युग में मेरे जैसे छोटे आदमी के लिए हर वचन का पालन करना भी कठिन हो रहा है। इस कड़वे अनुभव के बाद मुझे पूरा विश्वास हो गया कि मेरी नियति लघु-मानव की है, अतिमानव की नहीं। मुझ में न तो अतिमानव की अपार शक्ति है और न ही असीम सहन-शक्ति। डायरी का रोग लगाना अति-मानव के बस की बात है। इस में डायरी का दोष नहीं, दोष मेरा था जिसने अपनी सीमाओं को पहचाना नहीं था। मुझे मालूम नहीं था कि महान मानव बनने की धुन में मैं अपनी मानवीयता से भी वंचित होने लगूंगा। मैं नहीं जानता था कि इससे मेरी व्यस्तता बढ़ जाएगी। मुझे मशीन की तरह काम करना पड़ेगा और नतीजा सिफ़र निकलेगा। अब मुझे लघु-मानव की नियति से स्नेह है। यह नयी कविता के बारे में सही हो या न हो, मेरे विषय में सौ पैसे सही है। मेरी सीमित स्मरण-शक्ति मेरे सीमित जीवन के लिए काफी है, दो-चार से आत्मीय सम्बन्ध रखना अनेकों के सतही नाते से बेहतर है। अब दैनिक डायरी धरी की धरी है और मेरा मन मेरी डायरी है। जहां जी चाहता है, वहां चला जाता हूं जिसे मिलने को मन होता है उसे मिल लेता हूं। उपचार और डायरी के बन्धन टूट चुके हैं। अपवाद दो हैं—एक पढ़ाने के लिए जब वक्त की पाबन्दी होती है और दूसरा डायरी के अनुसार जब रेडियो पर बोलना होता है।

—दैनिक डायरी की बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता पाठ करते हुए राज्य-कवि प्रो० परमानन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। भ
सुदृढ़
अभी

होता

में स
हुआ
की अ
ने अ
धन्यव
की अ

मदान
वर्ष
प्रत्येक

मई,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक समारोह : एक झलक

हरिचन्द पाराशर

भाषा विभाग का वार्षिक समारोह पंजाब राज्य की एक अपनी विशेषता है। भाषा और साहित्य के विकास और प्रगति के लिए राज्य स्तर पर जितना सुदृढ़ और सुव्यवस्थित प्रबन्ध पंजाब राज्य में है, उतना भारत के अन्य राज्यों में अभी नहीं ।

वार्षिक समारोह में स्थूल रूप से निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन होता है :—

१—हिन्दी, पंजाबी और उर्दू साहित्य के वर्ष के सर्वोत्तम साहित्यकारों का अभिनन्दन

२—वर्ष की सर्वोत्तम रचनाओं और सर्वोत्तम प्रकाशनों पर पुरस्कार

३—लेखक सम्मेलन

४—साहित्यिक गोष्ठियां

५—कवि-सम्मेलन

प्रति वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी भाषा विभाग का वार्षिक समारोह चंडीगढ़ में सम्पन्न हुआ । दिनांक १४ मार्च प्रातः टैगोर थियेटर में यह समारोह आरम्भ हुआ। भारत सरकार के मंत्री श्री हुमायूं कबिर ने समारोह के पहिले आयोजन की अध्यक्षता की । आरम्भ में राज्य के वित्त एवं भाषा मंत्री डा० गोपी चन्द भार्गव ने आयोजन की अध्यक्षता करने के लिए श्री हुमायूं कबिर का स्वागत और धन्यवाद किया और इस समारोह में भाग लेने वाले साहित्यकारों का पंजाब राज्य की ओर से स्वागत किया ।

हिन्दी, पंजाबी और उर्दू के तीन विख्यात साहित्यकारों, डा० इन्द्रनाथ मदान, श्री लाल सिंह कमला अकाली, और श्री मेला राम वफ़ा का इस वर्ष के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार होने के नाते अभिनन्दन किया गया । प्रत्येक को ११०० रुपये की राशि और एक दुशाला भेंट किया गया । तीनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यकारों ने अपने-अपने भाषाओं में भाषण दिया तथा अनुवाद किया और कुछ एक साहित्यिक सुझाव दिये । डा० मदान ने साहित्यकारों को साधना पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी । उनका यह कथन महत्त्वपूर्ण था "जब साधना थी तो साधन नहीं थे अब साधन हैं तो साधना नहीं ।" श्री कमला अकाली ने कहा कि पंजाबी पाठकों को पुस्तकें खरीदने का स्वभाव डालना चाहिए, ताकि पंजाबी साहित्य में वृद्धि हो । श्री वफ़ा ने सुझाव दिया कि उर्दू भारतीय संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, इसलिये इस ज़खीरे से लाभ उठाने के लिये सचेष्ट रहना चाहिए ।

हिन्दी के साहित्यकार डा० इन्द्रनाथ मदान ने ११०० रुपए की थैली पंजाब यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी जी को राष्ट्र-भाषा हिन्दी के विकास के लिए खर्च करने के लिए अर्पित कर दी । उनके इस उत्साह पर आयोजन का वातावरण उल्लसित हो उठा ।

हिन्दी, पंजाबी तथा उर्दू तीनों भाषाओं के राज्य कवियों को भी सम्मानित किया गया । हिन्दी के प्रथम राज्य कवि श्री देवराज दिनेश हैं और इस वर्ष के राज्य कवि प्रो० परमानन्द जी को घोषित किया गया । इसी तरह पंजाबी के प्रथम राज्य कवि श्री इन्द्रजीत तुलसी हैं और इस बार श्रीमती प्रभजोत कौर को दूसरी राज्य कवयित्री स्थापित किया गया । उर्दू के प्रथम राज्य कवि श्री मेला राम वफा हैं, और इस वर्ष श्री बालमुकन्द अर्श को दूसरा राज्य कवि का खिताब दिया गया ।

इन कवियों ने अपनी अपनी सरस और भावपूर्ण कविताओं द्वारा उपस्थित साहित्यकारों और साहित्य सेवियों को आनन्दित किया । इसके पश्चात् हिन्दी, पंजाबी तथा उर्दू की सर्वोत्तम रचनाओं और प्रकाशनों पर पुरस्कार दिये गये।

इस आयोजन में भाषा विभाग के महा-निदेशक श्री लाल सिंह जी ने अपने विभाग की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें उन्होंने विभाग की सफलताओं और गतिविधियों पर प्रकाश डाला । हिन्दी के अभिनन्दनीय साहित्यकार, कवियों और पुरस्कार विजेताओं को निदेशक, हिन्दी डा० परमानन्द जी सम्मान तथा पुरस्कार ग्रहण करने के लिए प्रस्तुत कर रहे थे, और पंजाबी साहित्यकार कवियों और पुरस्कार विजेताओं को निदेशक, पंजाबी डा० जीत सिंह जी सीतल एतदर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रस्तुत कर रहे थे । उर्दू सम्बन्धी यह कार्य भी महानिदेशक की ओर से निदेशक पंजाबी ने निभाया ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री हुमायूं कबिर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में इस बात पर हर्ष प्रकट किया कि पंजाब राज्य में भाषाओं का विकास बहुत अच्छी तरह हो रहा है और यहां हिन्दी और पंजाबी के साथ साथ उर्दू के विकास का कार्य भी किया जा रहा है। उन्होंने साहित्यकारों से अपील की कि वे साहित्य साधना में सतत लगे रहें । उनका कथन था कि साहित्य एक अनन्त प्रश्न है, उसके जितने भाग का उत्तर प्राप्त हो जाता है उतना भाग इतिहास बन जाता है, और प्रश्न चिह्न और आगे सरक जाता है । साहित्यकार उत्तर की तलाश में और आगे बढ़ते हैं और इस तरह वे साधना पथ पर अग्रसर रहते हैं।

इस आयोजन के अन्त में शिक्षा कमिश्नर तथा भाषा सचिव श्री सी० डी० कपूर जी ने श्री हुमायूं कबिर तथा अन्य सभी साहित्यकारों एवं अन्य महानुभावों का धन्यवाद किया ।

इस आयोजन के पश्चात् वहीं टैगोर थियेटर में एक पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया जिस में भाषा विभाग द्वारा संग्रहीत महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियां और पुस्तकें थीं । बहुत सी ऐसी पुस्तकें भी थीं जो भाषा विभाग द्वारा प्रकाशित की गई थीं अथवा विभाग द्वारा दी गई सहायता से गैर-सरकारी संस्थाओं आदि द्वारा प्रकाशित थीं ।

सायंकाल दूसरे अधिवेशन में लेखक सम्मेलन का आयोजन था जिसमें राज्य भर के श्रेष्ठ साहित्यकार उपस्थित थे । इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री अमरनाथ विद्यालंकार एम०पी० ने की और उद्घाटन वित्त मन्त्री डा० भार्गव ने। लेखक सम्मेलन में प्रस्तुत विषय था "भारतीय साहित्य को हिन्दी, पंजाबी और उर्दू की देन ।"

हिन्दी की देन पर श्री यश जी ने भाषण दिया उन्होंने। इस तथ्य का भली भांति उद्घाटन किया कि हिन्दी एक मध्यवर्तिनी भाषा है । इसने अपनी मध्यस्थ वाली स्थिति से चारों ओर की अन्य प्रादेशिक भाषाओं से ग्रहण भी किया और उनको बहुत कुछ दिया भी । लेन-देन की यह प्रक्रिया हिन्दी ने अनुवादों के माध्यम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

से की है। उन्होंने कहा कि हिन्दी भारत-विद्या (Indology) का द्वार है।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दक्षिणी भाषाओं के साथ भी अब हिन्दी अनुवाद के माध्यम से लेन-देन कर रही है। पंजाबी साहित्यकार डा० गोपाल सिंह दर्दी ने यह विचार प्रस्तुत किया कि पंजाबी साहित्य की प्रमुख विशेषता यह है कि यह साहित्य हमें आशावादी और उत्साहवादी होना सिखाता है। पंजाब के गुरु-कवियों ने यह संदेश सारे देश को दिया है। उर्दू की देन पर भाषण देने वाले श्री गुरबचन सिंह तालिब जी ने कहा कि उर्दू के पुराने नाम हिन्दवी और रेखता हैं। उर्दू की चुस्त कलामी ने हिन्दुस्तानी को उत्तरी भारत में बोलचाल की भाषा बनने में सहायता दी है। उसकी यह विशेषता साहित्यिक क्षेत्र में कुछ सीमा तक अन्य प्रादेशिक भाषा ने भी अपनाई है।

रात्रि को २२ सैक्टर में एक खुले पण्डाल में पंजाबी कवि-दरबार हुआ जिसकी अध्यक्षता विधान परिषद के अध्यक्ष श्री कपूर सिंह ने की। इस कवि दरबार में पंजाबी के प्रसिद्ध कवियों ने भाग लिया। शिव कुमार बटालवी, नन्दलाल नूरपुरी, इन्द्रजीत तुलसी, करतार सिंह बलग्गन और गुरदेव सिंह मान आदि कवियों की कविताओं ने श्रोताओं का मनोरंजन किया। श्रोतागण भारी संख्या में जमा थे।

दूसरे दिन १५ मार्च को दिन के समय हिन्दी और पंजाबी लेखक गोष्ठियों का कार्यक्रम था, और रात्रि को हिन्दी कवि सम्मेलन था। हिन्दी लेखक गोष्ठी प्रातः ९ से १२ बजे तक थी। इस गोष्ठी में तीन शोध-पत्र पढ़े गये और गोष्ठी की अध्यक्षता लोक सम्पर्क विभाग के निदेशक श्री एच०सी० खन्ना जी ने की। डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने शोध-पत्र कालिदास और लालित्य विधान में सौन्दर्य–शास्त्र की कई महत्त्वपूर्ण उद्भावनाओं का उद्घाटन किया। डा० विनय मोहन ने अपने शोध-पत्र में पंजाब में व्यवहृत खड़ी बोली के स्वरूप का विश्लेषण किया, और प्रो० बलराज ने अपने शोधपत्र में महाकवि तुलसी के दार्शनिक रूप का विश्लेषण किया।

निदेशक हिन्दी डा० परमानन्द जी ने अपने प्रेरणादायक भाषण में साहित्यकारों को प्रेरणा दी कि वह साहित्यिक आदर्शों और कर्त्तव्यों को ध्यान में रख कर आज के युग के अनुकूल साहित्य सर्जन करें जिससे राष्ट्रभारती की समृद्धि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो। उन्होंने कहा कि समूचे हिन्दी साहित्य में पंजाब का योगदान प्रत्येक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है और आज भी पंजाब में हिन्दी के लिये अनुकूल वातावरण है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री खन्ना जी ने यह सुझाव दिया कि इस प्रकार की गोष्ठियों में एक ही विषय पर अधिक से अधिक लेखकों को अपने विचार व्यक्त करने का अवसर दिया जाना चाहिए, ताकि प्रस्तुत विषय का अनुसन्धान अधिक व्यवस्थित रूप से सम्पन्न हो सके। उन्होंने कहा कि आज का लेखक समाज से या तो विरक्त है या समाज के प्रति अनुत्तरदायी है। यही कारण है कि आज का साहित्य युग का पथ-प्रदर्शन नहीं कर पा रहा।

दोपहर बाद पंजाबी लेखक गोष्ठी हुई। इसकी अध्यक्षता पंजाब यूनिवर्सिटी के पंजाबी विभाग के अध्यक्ष डा० सुरेन्द्र सिंह कोहली ने की। इसमें भी तीन शोध-पत्र थे। डा० हरचरण सिंह ने पंजाब में नाटक के आरम्भ पर अपना शोध-पत्र पढ़ा, प्रो० सन्त सिंह सेखों ने गुरुनानक की वाणी की बिम्बावली का विश्लेषण किया तथा प्रो० किशन सिंह ने 'आलोचना' नामक अपना शोध-पत्र पढ़ा।

रात्रि को २२ सैक्टर में एक खुले पण्डाल में हिन्दी कवि सम्मेलन हुआ। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता पंजाब के कराधान एवं राजधानी मन्त्री श्री रामसरण चन्द मित्तल ने की।

हिन्दी विभाग के निदेशक डा० परमानन्द जी ने अपने भाषण में इस रहस्य का उद्घाटन किया कि पंजाब में हिन्दी कविता की एक अटूट परम्परा रही है और उन्होंने हर्ष प्रकट किया कि इस संकट काल में भी पंजाब के हिन्दी कवियों ने अपनी वीर रस की ओजपूर्ण-कविताओं से राष्ट्र भारती की सेवा की है। उन्होंने कहा कि हिन्दी पंजाब की ही भाषा है, यहां के हिन्दी कवियों में पंजाब की सुगन्ध और मिठास है।

इस कवि सम्मेलन में पंजाब के प्रसिद्ध हिन्दी कवि सम्मिलित थे। राज्य कवि श्री देवराज दिनेश और राज्य कवि श्री परमानन्द शर्मा के अतिरिक्त श्री त्रिलोकीनाथ रंजन, श्री उदय भानु हंस, श्री ओमप्रकाश आनन्द, श्री सत्य दत्त शर्मा, श्री कृष्ण कुमार खन्ना, श्री सत्यनन्द बंसल, श्री कृष्ण कुमार शर्मा, श्री रजनीश कुमार आदि कवियों ने अपनी मनोहर और सरस कविताओं से श्रोताओं को आनन्दित किया।

लहराते हुए जन-समुद्र की कोई आठ-दस हज़ार तरंगों में हिलोर लात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हुए पंजाब के प्रसिद्ध कवि श्री रंजन ने कवि सम्मेलन का आरंभ किया, और मंच-संचालन का कार्य बड़ी सफलता से निभाया। कवियों को श्रोताओं के साथ परिचित करवाने का उनका ढंग ऐसा कलात्मक था कि वह एक दो वाक्यों में ही श्रोताओं को आने वाले कवि के प्रति सहृदयता पूर्ण तैयार कर लेते थे, और आने वाले कवि को इतना उत्साह दे देते थे कि मानों सभी श्रोता उनकी ही कविता सुनने के लिए पधारे हैं। दत्तचित्त और शान्त वातावरण बनाये रखने में इस संचालन ने बहुत योगदान दिया।

अध्यक्षीय भाषण में माननीय मंत्री ने हिन्दी काव्य और हिन्दी कवियों की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजन किसी भी भाषा के विकास के लिये नितान्त आवश्यक होते हैं। हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा है। इसके विकास और इसे लोक-प्रिय बनाने के लिये पंजाब सरकार हिन्दी विभाग के माध्यम से एक महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है।

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

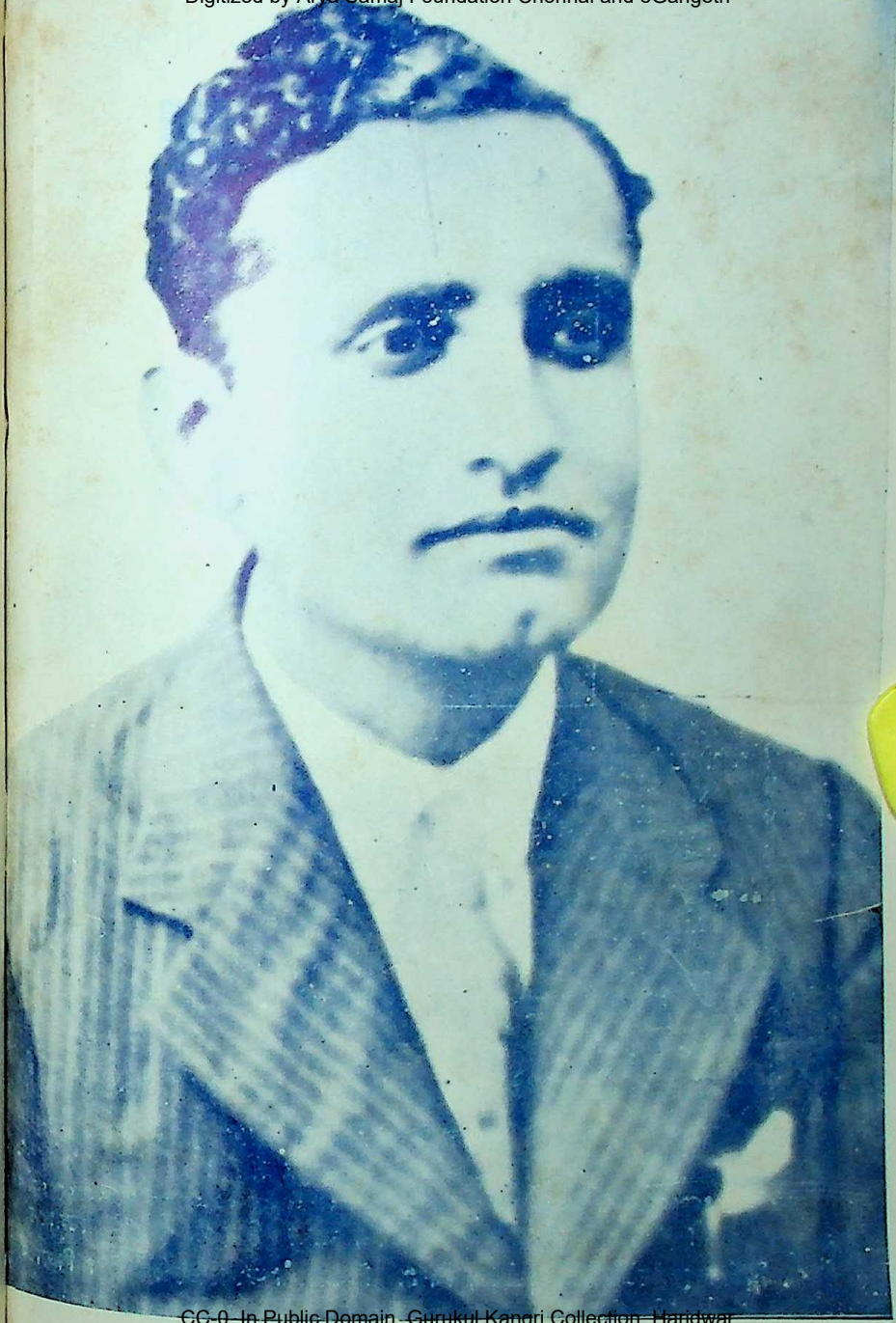

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

[illegible] एम० ए० के विद्यार्थी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी विभाग, पंजाब के दो अनूठे मासिक प्रकाशन

स ट्र सि न्धु

ज न सा हि त्य

शोधपूर्ण एवं आलोचनात्मक साहित्यिक प्रबंधों का एक बोधक संचयन।

व्यंग्य-विनोद एवं सृजनात्मक सरस साहित्य का एक रोचक संकलन।

दोनों पत्रिकाएँ डी० पी० आई०, पंजाब, डायरैक्टर पंचायत, पंजाब तथा संचालक, लोक शिक्षण, मध्यप्रदेश, द्वारा पंजाब के सभी स्कूलों, कालेजों लायब्रेरियों एवं पंचायतों तथा मध्य प्रदेश के स्कूलों, कालेजों एवं लायब्रेरियों के लिए स्वीकृत हैं।

बढ़िया काग़ज़, सुन्दर छपाई, आकर्षक गैट-अप

प्रत्येक का :—

वार्षिक ६ रुपये **एक प्रति ५० नये पैसे**

आज ही निदेशक, हिन्दी विभाग, पंजाब, पटियाला को मनीआर्डर भेजकर ग्राहक बनिए।

श्री लाल सिंह, डायरैक्टर जनरल, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला द्वारा प्रिंटिंग एण्ड स्टेशनरी डिपार्टमैंट, पंजाब, पटियाला से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

मुद्रक—डा० परमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

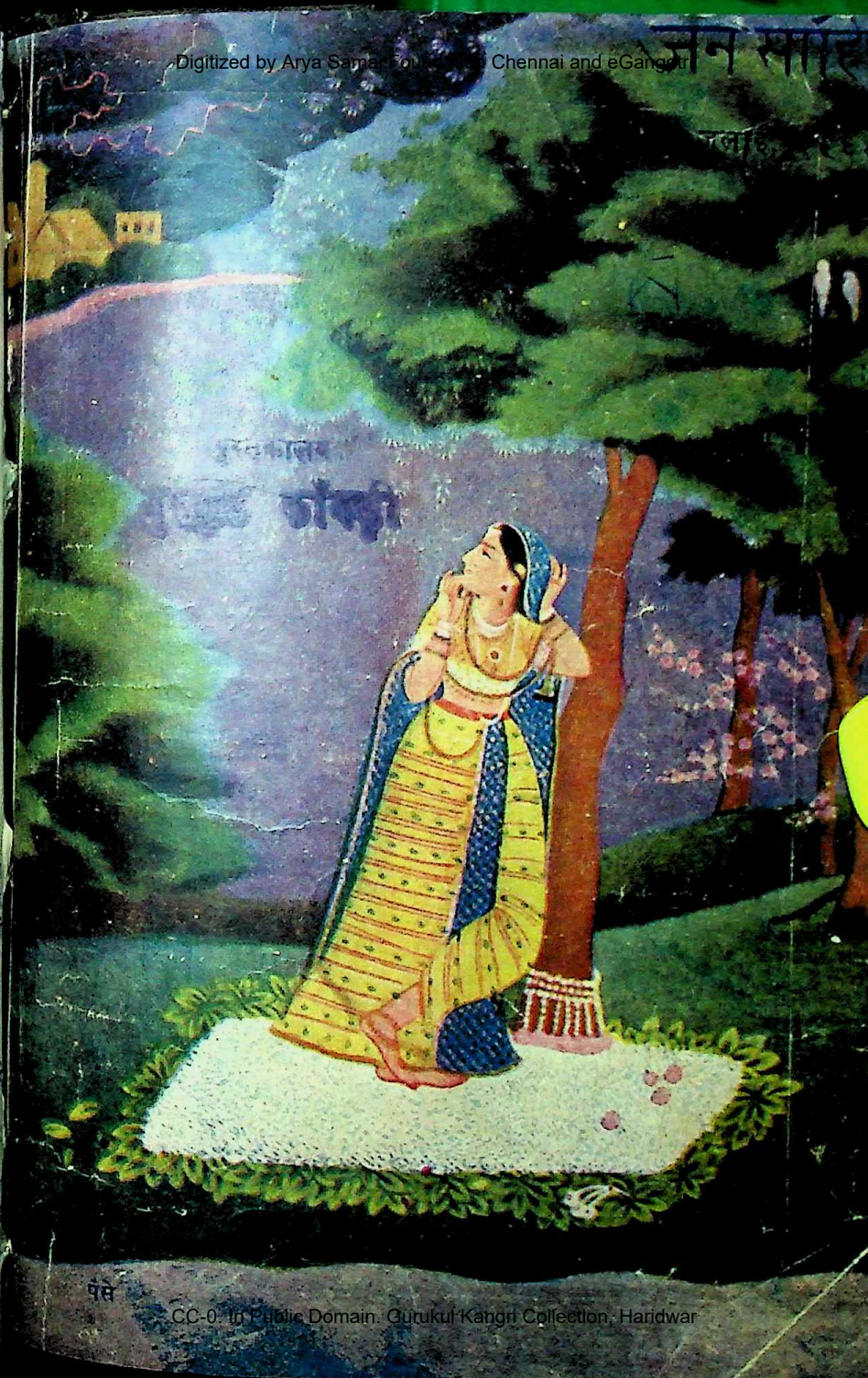

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालयों को आत्मनिर्भर बनाना जरूरी है । सरकार को तो केवल उन्हीं लोगों को पढ़ाना लिखाना चाहिए जिनकी सेवाओं की उसे जरूरत हो। ज्ञान की अन्य शाखाओं के लिए ग़ैर-सरकारी संस्थाओं को प्रोत्साहन मिलना चाहिए । शिक्षा का माध्यम फ़ौरन और किसी भी कीमत पर बदल देना चाहिए ताकि प्रादेशिक भाषाओं को उचित स्थान मिल सके। शिक्षा के लिए माध्यम परिवर्तन से होने वाली गड़बड़ी को कुछ दिनों तक सहन किया जा सकता है लेकिन विदेशी माध्यम के कारण प्रतिदिन बढ़ते हुए क्षय और अराजकता को सहन नहीं किया जाना चाहिए..... रसायनविदों, इंजीनियरों और दूसरे विशेषज्ञों द्वारा प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम से अर्जित ज्ञान सामान्य जनता की धरोहर होगा और नक़ल के बदले असल काम हो सकेगा .....।

—महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदेही

(मासिक—प्रकाशन जुलाई, १९६४)

वर्ष ३ अंक ७

शिखा बुझ गई	डा० जीत सिंह सीतल, निदेशक पंजाबी विभाग, पटियाला	
१. मसीहा चल बसा	उदय भानु हंस, ज्योतिपुरा हिसार	१
२. डा० रघुवीर–एक संस्मरण	डा० हरिदत्त भट्ट, दून स्कूल, देहरादून	३
३. बुझते सूर्य के जलते विश्वास	योगेन्द्र बख्शी, गवर्नमेंट कालेज, हिसार	६
४. सुखरास (एकांकी)	आई०सी० नन्दा, डब्ल्यू १/१५ ईस्ट पटेल रोड, नई देहली	७
५. हे पूर्ण पुरुष !	चन्द्र शेखर, हिन्दी विभाग, लायलपुर खालसा कालेज, जालन्धर	१९
६. यह वादा, यह मुसीबत (हास्य-व्यंग्य लेख)	डा० जयनाथ नलिन, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरुक्षेत्र	२१
७. पूर्व और पश्चिम (कहानी)	रौशन पटियालवी, सेक्टर १९–सी० टी० स्ट्रीट ११ जे० सी० २, चंडीगढ़।	२६
८. जिसने हमें ज्योति दिखाई	जगदीश प्रसाद अग्रवाल, कालेज आफ ऐजूकेशन, कुरुक्षेत्र	३३
९. सिन्दूर की होली (एकांकी)	केशव शर्मा, आनन्द लॉज, जाखू, शिमला।	३८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०. जवाहर अमर है !	सन्तोष कौशल, आर्य कालेज, पानीपत	४५
११. भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली का विकास	हरिचन्द पाराशर, हिन्दी विभाग, पटियाला	४६
१२. ओ नर-नाहर, वीर जवाहर !	नन्दकिशोर रजनीश, लटूरपुरा, पटियाला	५५
१३. पंजाब का महान क्रान्तिकारी श्री करतारसिंह सराबा	सत्यपाल गुप्त, हिन्दी विभाग, पटियाला	५६
१४. एक और युग लो बीत गया	राजेन्द्र नीरज, ६२ शिवाजी पार्क, यमुनानगर (अम्बाला)	५९
१५. व्यक्तित्व निर्माण के कारक	सत्यपाल शर्मा, हिन्दी विभाग, पटियाला	६०
१६. दांव	अनु० पी. एल. चावला, हिन्दी विभाग पटियाला	६६
१७. पुस्तक समीक्षा		७३

सम्पादक—डा० परमानन्द

परामर्श समिति

* श्री कृष्ण मधोक (सहायक निदेशक, अनुवाद)

*श्री त्रिलोकी नाथ 'रञ्जन', (सहायक निदेशक, कोश)

*श्री ओम्प्रकाश भारद्वाज, (सहायक निदेशक, विकास)

* श्री गुरुदत्त शर्मा (सहायक निदेशक, अनुवाद)

* श्री हरिचन्द पाराशर (सहायक निदेशक, अनुवाद)

हिन्दी विभाग, पंजाब, पटियाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मंत्री सचिवालय

नई दिल्ली—११

जून, १९६४

हमारे प्रिय नेता और प्रधान मन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू के निधन पर आपने जो संवेदना और शोक-सन्देश भेजा है उसके लिये प्रधान मन्त्री जी आपको धन्यवाद देते हैं। हमारा नेतृत्व और मार्ग-प्रदर्शन करने के लिये उनका विशाल व्यक्तित्व अब हमारे बीच में नहीं है, किन्तु उनका कार्य और उनकी प्रेरणा मौजूद हैं। जो कार्य उन्होंने हमारे सामने रखे थे, उनमें हम सब को जुट जाना है और उनको ऐसे जारी रखना है जैसे वे चाहते थे।

आपका सन्देश श्रीमती इन्दिरा गांधी और परिवार के अन्य सदस्यों को पहुंचा दिया गया है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रावली सं० ३९–हि /६४

राष्ट्रपति सचिवालय,
राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली—४
जून, १९६४
ज्येष्ठ, १८८६ (शक)

प्रिय महोदय,

श्री जवाहर लाल नेहरू के निधन पर आपने सम्वेदनात्मक-सन्देश भेज कर उनके प्रति जिन भावों को व्यक्त किया है, उनके लिए राष्ट्रपति जी आपको धन्यवाद देते हैं।

भवदीय,
ह० .....
अवर सचिव

श्री परमानन्द,
निदेशक, हिन्दी विभाग, पंजाब,
पटियाला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिखा बुझ गई

(विश्व ज्योति श्री जवाहर लाल नेहरू के दुःखद स्वर्गारोहण पर

●

डा० जीत सिंह "सीतल"

आज एक महान जाज्वल्यमान
शिखा बुझ गई है
आज भारत के गगन की
पूर्णिमा
अमावस में परिवर्तित हो गई है।
आज भारत के आंगन को
घोर अंधकार ने
आच्छादित कर लिया है।
आज सुहृदयता की
ज्योति विलुप्त हो गई है।
आज शोकाभिभूत पृथ्वी
उष्ण वायु के रूप में
दुःख विह्वलता के
निश्वास छोड़ रही है।
और शोकातुर तारकों के नेत्र
अश्रुओं से पूरित हैं
शोकाकुल रजनी विलाप करती
करती सो गई है।
आज उसके लाखों नेत्रों
के अश्रु
पंखुड़ियों को सजल कर रहे हैं।

आज कलियों के घूंघट
उनके लिए शव वस्त्र
बन गए हैं।
आज कांटे समय के
शवयान के लिए कील बने हुए हैं।
आज भारत की महान विभूति
इसकी उन्नति की गाथा
सुनाती सुनाती सो गई है।
तथा सभी श्रोताओं को
चिर निद्रा से चैतन्य कर गई है।
आज झूमता लहराता
पवन के झोंकों से
अठखेलियां करता
गुलाब का फूल
मुरझा गया है
पीत पड़ गया है।
आज इसके अश्रुओं की रक्तिमा से
भारत की ओढ़नी
रक्तिम हो गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज अगम्य के रहस्यों का
उद्घाटन करती
सरस्वती मौन हो गई है ।
सभी रहस्यों को
अनंतता की विस्मृति में
छुई मुई करने के लिए--
आज पुष्पों ने अपनी पंखुड़ियां
नोच नोच कर
बिखेर दी हैं,
कांटों की कलियों को
कुसुमित करने के लिए--
आज गुलाब ने अपनी
सारी ही ललोई को
कुसुंभ के पीत कुसुम को
दे दी है ताकि वह
देश-प्रेम की रक्ताभ
बन सके--
आज शरद ऋतु का सूर्य
देश भक्ति की सायं को
अपनी रक्ताभ रश्मियों में
स्नापित कर उसे
उषा के रंग में
आप्लावित कर रहा है ।
ताकि सूर्योदय होते ही
सारा संसार
नव प्रभात का रूप धारण
कर सके
तथा चन्द्रमा प्रातः होते ही
उसे
अपनी ज्योत्स्ना की
रूपहली रश्मियों की झालर
पहना सके।
उसकी मांग को
सदा सुहागिन के टीके से
अलंकृत कर सके ।
आज मध्याह्न में ही
सूर्यास्त हो गया
धरती पर कालरात्रि ने
अपना आंचल बिछा दिया है
तथा गगन में दिन में ही,
उसकी शोकाग्नि
चन्द्रमा के रूप में
प्रकट हो आई है ।
आकाश से लाखों करोड़ों तारे
उत्व ओस करम
मध्याह्न में ही बरसाने
लग पड़े हैं।
सम्भवतः धरती के पुष्प दल
दग्ध हो जाते यदि
काले मेघों की छतरी
आकाश में न खुल जाती
आज भारत उद्यान का रक्त गुलाब
पीत पड़ गया है
अपनी रसासिक्त सुगन्धि को
स्वर्ग की दिशाओं में
बिखेरने के लिये ।
आज निस्सन्देह शोकदग्ध शिशिर के
उष्ण झंझों ने
इस रक्त गुलाब के एक एक दल को
बिखेर दिया है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु वह स्वयं उसके पराग से
आसिक्त हो गया है
वह चिर वसंत के
पूर्वानिल में परिवर्तित हो गया है
आज धरती का हृदय स्तब्ध हो गया है
उसका स्पन्दन बंद हो गया है
उसके श्वास रुक गए हैं।

आकाश के दोनों नेत्र
अंधकार ग्रस्त हो गए
दिवा तथा रात्रि न जानें कहां
लुप्त हो गई हैं।

समय को अपनी गति
विस्मृत हो गई है
प्रलय से भी पहले प्रलय आ गई है।

आज परम पावन गंगा
पवित्र सरस्वती की भांति
त्रिवेणी संगम में प्रवेश करके
कहीं लुप्त हो गई है।

या पुनः वह
कहीं बलवती प्रकृति के
शिव की जटाओं में
प्रत्यागमन कर गई है

गंगा और यमुना सी पवित्र
असंख्य नदियों को
जन्म प्रदान करने के लिए
ताकि देश काल की धरती सदा
शस्य श्यामला तथा सुहावनी
बनी रहे।

सुख और शान्ति के
समृद्धि और आनन्द के
पक्षी
इस कुसुमाकर में नित्य चहचहाते रहे
कलोलें करते रहे।

यह रक्त गुलाब
अपनी लालिमा
सुन्दर सुहावने उपवन को देकर
स्वयं इसकी धूलि में मिल कर
धूलि बन गया
पुनः असंख्य लाल गुलाब की कलियां
बन बनकर इस सदा कुसुमित
वाटिका को देख देख कर
मुस्कानें बिखेरने के लिए
इनके रक्ताभ ओष्ठों से
अमर गाथा गाने के लिए--
आज हिमालय सम उच्च
दुग्ध सम श्वेत पक्षों वाला
हिमालय से भी उच्चतर
आकाश की अनंतता में
लुप्त हो गया।

विनम्रता के अदृश्य पक्षी पर
अपनी छाया प्रक्षिप्त करने के लिए
ताकि वह अजेय साम्राज्य का
अधिपति बन सके।

मधुर संगीत के गीत
निकालने वाली
अंगुलि आज
हृदय विदारक स्वरों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकालती
तारों को स्पर्श करती
सो गई है
लाजवंती की कोमल पत्तियों की तरह
जीवन वीणा का सदा स्वर
निकालते रहने के लिए
उस टहनी की तरह
जिस पर से
समय का पक्षी अभी अभी
उड़ कर गया है
और वह सदा कांपने के लिए
रह गई हो ।
आज राधा से अठखेलियां करने वाली
बांसुरी के
पांचों नेत्र मौन हो गए हैं
कृष्ण प्रीत के नीले पड़ गए अधरों से
अभी अभी पृथक होकर
सदा थहराते रहने के लिए
सदा फड़फड़ाते रहने के लिए
आपज संसार को गौतम बुद्ध की भान्ति
सदा शान्ति प्रदान करने वाला
स्वयं सदा के लिए शान्त हो गया
इस लोक के बाद उस लोक में भी
शान्ति का साम्राज्य
स्थापित करने के लिए
आज उद्दीप्त दीप शिखा तथा
सब को जागृत रखने वाली
उसकी ज्योति
आज इस प्रकाशपिंड में लुप्त हो गई है
पुनः कभी न मिलने के लिए ।

आज स्वाति की बूंद स्वयं
अमर जीवन की सीप में
जाकर सो गई है
कभी भी न जागने के लिए
आज मोती के लाल ने
अपना मूल्य सीता की भान्ति
अग्नि में प्रवेश करके
बढ़ा लिया है ।
कुन्दन बन कर
जाज्वल्यमान होने के लिए
आज भारत के भाग्य का सूर्य
दिन रहते ही डूब गया
अमरत्व के गगन में जाकर
फिर फिर प्रदीप्त होने के लिए
देव लोक को आलोकित
करने के लिए
आज भारत सागर को ही
रत्नमणियों से पूरित जहाज ने
अपने आप में विलीन कर लिया है
उसका हृदय क्षीण हो गया
उसकी गहनता लुप्त हो गई
शोक रजनी के नूपुरों में
सांत्वना के लिये लोट लोट जा रही है
आज काल रूपी नाग
अमावस के दीए का
श्वास रूपी तेल
पूर्णरूपेण चाट गया है ।
दीए की दग्ध हृदया
बुझी बत्ती निराश हुई
दीए के नीचे से झांक रही है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असंख्य तारे अभाएं बन,
उसे आकाश गंगा में,
स्नान करवा रहे थे ।
वह बुझी बत्ती अमर ज्योति बन
चुकी थी
अब समय स्थान तथा कारण
के त्रिमुखी नाग की फुंकार
वहां तक
नहीं पहुंच सकती
काल का आंचल इसे
नहीं बुझा सकता
यह शिखा बुझी है
पुनः प्रदीप्त होने के लिये
मंद हुई है
पुनः उद्दीप्त होने के लिये
यह अमर ज्योति, प्रलय पर्यन्त
ड्योढ़ी के दीए की भान्ति
इस ओर और उस पार
प्रकाश करती रहेगी
जहां अधकंप श्वान
के भौंकने का शब्द
कहीं दूर भी
सुनाई नहीं देगा ।

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भाषा का सवाल सिर्फ दक्षिण भारत का ही नहीं, वह सारे भारत का भी सवाल है। हमारी बड़ी-बड़ी दस-बारह भाषाएँ हैं, जिन्हें हम दो परिवारों में विभाजित कर सकते हैं : (१) संस्कृत की लड़कियां, और (२) दक्षिण भारत की भाषाएँ, जैसे तमिल, तेलुगु आदि। ये दोनों परिवार एक दूसरे से बहुत फर्क रखने पर भी, काफी संबंध भी रखते हैं। हमारी नीति है कि कोई भी भाषा दबाई नहीं जाए, न उनके खिलाफ हमारी भाषा खड़ी की जाए। मेरा दृढ़ मत है कि कोई भी शख्स अपनी मातृ-भाषा के द्वारा ही तरक्की कर सकता है। हमारा ध्येय पुरानी भाषाओं को जोरों से चलाना है और उन्हीं के द्वारा शिक्षा आदि भी चलानी चाहिए। लेकिन देशभर को बांधने के लिए, भारत के भिन्न-भिन्न हिस्से एक दूसरे से संबंधित रहें, इसके लिए हिन्दी की जरूरत है.....।"

—जवाहरलाल नेहरू

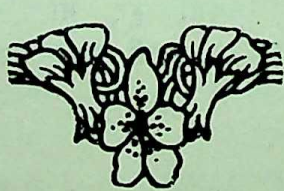

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० रघुवीर : एक संस्मरण

डा० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'

१९५४ की बात है। नागपुर गया हुआ था। डा० रघुवीर उन दिनों वहीं रहते थे। भाषा-विज्ञान में कुछ रुचि सी थी। इसलिये उनसे मिलने की प्रबल इच्छा हुई, परन्तु वहां अपना कोई परिचित न था। नागपुर पहली बार गया था इसलिये नगर का भी कुछ विशेष अता-पता मालूम न था। खैर, पूछताछ की। उनकी संस्था का पता लगाया और एक दिन साढ़े चार बजे वहां पहुंच गया। बाहर बरामदे में एक व्यक्ति धोती और बनियान पहने तन्मयता से कुछ लिख रहा था। मेज़ पर ढेर सारी किताबें थीं। मैंने उस व्यक्ति के ध्यान में खलल डालते हुए अंग्रेज़ी में कहा कि मैं डा० रघुवीर से मिलना चाहता हूँ, कृपया उनका ठिकाना बता दें। उस व्यक्ति ने संकेत किया कि बैठ जाओ। मुझे कुछ जल्दी-सी थी, या मेरी उतावली कहिए—मैंने फिर दुहराया कि आपका बड़ा आभार मानूंगा यदि आप जल्दी ही बता दें। उस व्यक्ति ने मेज पर धीरे से पैन रखा और मेरी तरफ देखते हुए कहा—मैं ही रघुवीर हूँ, कहिए आप कहां से आए। मैं पानी-पानी हो गया एक तो लेखन-कार्य में बाधा डाली, दूसरे कुछ जल्दी भी मचाई थी। उस, व्यक्ति की सादगी को देखकर मैं हैरान हो गया। इतना बड़ा विद्वान्, प्रकांड भाषा-शास्त्री और इस प्रकार ऐसी वेशभूषा में। संभल कर सकुचाते हुए मैंने नमस्कार किया। उनके मुखसे पहला वाक्य निकला—'आप हिन्दी तो जानते ही होंगे, यदि हिन्दी में ही बात करें तो बहुत अच्छा होगा। मेरा अपना सिद्धान्त सा है कि किसी भारतीय से विदेशी भाषा में बातचीत नहीं करता। मैं कट-सा गया, अपनी गलती महसूस की, मैंने क्षमा मांगी तो उन्होंने कहा—कोई बात नहीं। आप-जैसे नव-युवकों को तो उत्तर-दक्षिण की कई भाषाएं सीखनी चाहिए—और इसके लिए संस्कृत का ज्ञान बहुत आवश्यक है। मैं तो चाहता हूँ कि हर व्यक्ति थोड़ा-बहुत संस्कृत बोले। संस्कृत की बात सुन कर मैं फिर संस्कृत में ही बात करने लगा तब तो वे बहुत ही प्रसन्न हुए। अनेक बातें हुई। इसी बीच उन्होंने अपनी छोटी लड़की बुलाई और उससे कहा—भट्ट जी संस्कृत के विद्वान्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, इन्हें वही 'नील सागरे भास्करे' गीत [illegible] सुना । फिर तो—

'नील सागरे याति भास्करे
ब्रुहि मीन में कियज्जलम्'

की मधुर-रसधारा बह चली । गीत में ऐसा माधुर्य, ऐसा सौन्दर्य ऐसा कुछ चमत्कार-सा था कि मैं मंत्रमुग्ध हो गया । वे स्वयं भी गुनगुना रहे थे । संस्कृतमय वातावरण बन गया । उन्होंने बताया कि यह 'हरा समन्दर गोपी चन्दर

बोल मेरी मछली कितना पानी' का अनुवाद है और अभी कुछ दिन पहले इसका गीत-नाट्य प्रस्तुत किया गया । इसी बीच चाय का दौर भी चला । डाक्टर साहब ने सभी से परिचय कराया । स्वयं साथ चल कर पूरी संस्था में घुमाया । वहां संस्कृत पढ़ने के लिए विदेशों से आए अनेक छात्र थे, उनसे भी मिलवाया । घूम-फिर कर कुछ देर फिर बैठे तो हिन्दी के बारे में बात चली । उन्होंने कहा सरकार न जाने क्यों जान-बूझ कर हिन्दी की उपेक्षा कर रही है, लेकिन यह धांधली चलेगी नहीं। कोई भी एड़ी-चोटी का जोर लगाए, तब भी अंग्रेज़ी टिक नहीं सकती । आज अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये जो अंग्रेज़ी के हिमायती बन बैठे हैं, नई पीढ़ी उनका पर्दाफोश करेगी और तब इन राष्ट्र-विरोधी तत्त्वों का भंडाफोड़ होगा ।

मैंने कहा—आप ठीक कह रहे हैं, मेरा अपना अनुभव है । जैसे ही स्वा- [illegible] स्कूलों के जितने अंग्रेज़ी और विदेशी अध्यापक थे, उन्होंने ज़ोर-शोर से हिन्दी पढ़नी शुरू की किन्तु दो-चार महीने में ही जब उन्हें सरकार के रंग-ढंग मालूम हुए तो सबने एकदम हिन्दी पढ़नी छोड़ दी । उन्हें वास्तविकता का ज्ञान हो गया, भाषा के बारे में ढुलमुल नीति का परिचय मिल गया था ।

डाक्टर साहब ने बड़े मनोयोग से मेरी बात सुन कर कहा—ठीक है, पर इसमें जनता का भी दोष है । कुछ लोग, खास तौर से तथा-कथित पढ़े-लिखे लोग, अपने व्यवहार में, पत्राचार में, खांमखां अंग्रेज़ी का प्रयोग करते हैं । घरों में 'डैडी, ममी, आंटी', का रिवाज जोर-शोर से चल रहा है । यह सब नहीं होना चाहिए । हिन्दी भाषी प्रदेशों में भी हिन्दी को कोई प्रश्रय न मिला, यह भी दुर्भाग्य ही समझिए । लोग ज़रा ज़ोर लगाएं तो सब कुछ हो सकता है । दुकानों के साइन बोर्ड हिन्दी में लगवाएं । आज भी हिन्दुस्तान के किसी शहर में चले जाइए तो लगता है कि हम कहीं विदेश में हैं । यह हमारी दासता की निशानी है, इसे मिटाना ही होगा ।

कितने सुलझे विचार थे उनके ? मैं विस्मित हो गया उनकी स्पष्टता से, एक अपरिचित २१-२२ साल के लड़के से, वे इस प्रकार घुलमिल कर बात कर रहे थे । कितना ऊंचा था उनका व्यक्तित्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कितना उदार था उनका हृदय ? हिमालय की तरह, जिसे अपनी ऊंचाई की कुछ भी खबर नहीं। परिवार के सभी व्यक्ति संस्कृत में पारंगत। मुझे न-जाने कितनी प्रसन्नता हुई उस दिन, कैसी प्रेरणा मिली। उस संध्या को कभी न भुला पाऊंगा जीवन में। और न डाक्टर साहब का वह रूप, भारतीयता और भारतीय भाषाओं का जीता-जागता रूप।

बातों-ही-बातों में एक घंटा हो गया था। उन्हें अगले दिन जब्बलपुर जाना था। इसलिये उन्होंने कहा कल तो मैं बाहर जा रहा हूँ। आप यहीं आ जाइए, होटल में टिकना ठीक नहीं। निःसंकोच यहां चले आइए। मैं दो दिन बाद लौट आऊंगा, फिर जम कर बातें होंगी। मैंने निवेदन किया—बस कल ही तक मैं यहां हूँ। परसों सुबह की गाड़ी से चला जाऊंगा। इस पर फिर उन्होंने ज़ोर दिया—अच्छा कल तो ज़रूर आइए, एक बार फिर देख लीजिए संस्था को। मैं नमस्कार करके चलने लगा तो कुछ दूर तक वे साथ-साथ आए। मैं गद्गद् हो गया उनके सौजन्य से, सारल्य से और आत्मीयता से।

● ● ●

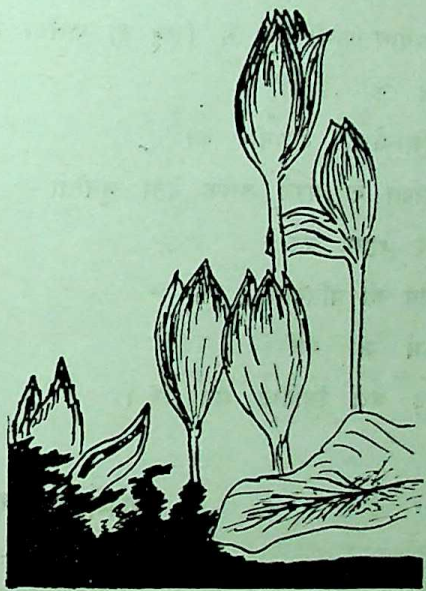

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुझते सूर्य के जलते विश्वास

समय टूटा उमर टूटी रह गये विश्वास
स्वप्नद्रष्टा सो गया
कुछ स्वप्न बाकी थे
जिन्हें सन्दल-चिता ने अमर कर डाला।

विश्व-विश्रुत-विभा
चल छः मील गीले दृग-पलक पर--
बुझ गई या जल गई ?

"कर्म को आवाज़ दो
विश्वास फूंको सूर्य में (तब ही जलेगा वह)
तप को जियो"
रिक्त-घेरा रौशनी का
रिक्ति के मरने तलक देता चुनौती
हर अमा का
दान को प्रतिदान दें हम
कर्म जी कर
बढ़ चलें निर्दिष्ट मग पर।

योगेन्द्र बख्शी

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखरास

आई० सी० नन्दा

(क्लाक पर पांच बजते हैं, शीला परदा उठाती है।)

शीला--इन नौकरों ने बहुत तंग किया है। दो बजे से गया हुआ है, अब पांच बजने को हैं, और अभी तक वापिस नहीं लौटा।

सरजू--(आता हुआ, जूते की आवाज़) मैं तो दौड़ता हुआ आया हूँ, जी।

शीला-तू ज़रा जल्दी नहीं आ मर सकता था, उनके आने का समय हो गया है, चाय कब तैयार होगी ?

सरजू--अभी लो जी, आज एक ज़रूरी बात थी, हम नौकर लोगों ने रात को साढ़े नौ बजे एक मीटिंग बुलाई है।

शीला--क्यों ? तुम्हारा काम कौन करेगा ?

सरजू--काम करके जाऊंगा, खाना खिला कर और रसोई संभाल कर जाऊंगा।

शीला--तो तुम्हें वहां क्या करना है ?

सरजू--पहले मीटिंग होगी, फिर जलूस निकलेगा।

शीला--(डांट कर) अरे, जलूस कौन सा, उठ अंगीठी जला।

सरजू--अभी लो जी (जाता है।)

शीला--मीटिंग होगी, जलूस निकलेगा नौकरों ने कैसा उधम मचा रखा है, मरते भी नहीं, भूखों मरते आते हैं और पेट भर खाना मिलता है तो कितनी बातें करते हैं, कितनी चरबी बढ़ गयी है।

किशन--(आता है) सरजू, चाय लगा जल्दी।

सरजू--(रसोई से) अभी लो जी।

शीला--बेटा आज जल्दी आ गया क्या ?

किशन--हमारे सुपरिन्टेंडेंट की पेंशन होने वाली थी, उसको एक वर्ष की मोहलत मिल गयी है, हम सब ने आध घंटा पहले कलम छोड़ दी है।

शीला--आपको कैसे खुशी ?

किशन--हमारी तरक्की एक वर्ष पीछे पड़ गयी। बीबी, पिता जी अभी नहीं आये।

शीला--आते ही होंगे, पता नहीं क्या करके आयेंगे।

किशन--क्यों, क्या बात है ?

शीला--तुझे पता ही है, उनके स्वभाव का,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो बात दिल में है उसे जबान पर ही लेकर बैठ जाते हैं। कल कहते हैं पहले ही पैंशन करवा लेनी है, आज अर्जी लिख कर ले गय हैं।

किशन--पैंशन क्यों? अभी तो उनकी सरविस के पांच छः साल और रहते हैं। लोग तो पाखंड करते हैं किस्म किस्म के ताकि उन्हें और सुमुहलत मिल जाये, पिता जी उलटे ही पहले पैंशन करवाना चाहते हैं।

शीला--उनकी तबीयत कुछ अजीब ही हो गयी है। जब से डाक्टर ने वहम डाला है कि ब्लड प्रेशर बढ़ गया है, उनके दिमाग में और भी गरमी चढ़ गयी है, हर बात पर लड़ने को तैयार हो जाते हैं। बात बात पर गर्म हो जाते हैं।

किशन--बहुत तकलीफ है तो दो महीने की छुट्टी ले लें और घर पर आराम करें, यह नहीं कि नौकरी ही छोड़ दें।

शीला--फिर तुम भी समझाओ।

किशन--मैं, मेरी तोबा, मैं उनसे बात करने का साहस नहीं कर सकता। वह बहुत जल्द घबरा जाते हैं।

शीला--परन्तु मैं भी क्या करूँ किशन। मेरी कौन सी सुनते हैं अपनी ही हांकते हैं।

किशन--अगर उन्होंने सचमुच पैंशन के लिये अर्ज़ी दे दी तो ताऊजी से सलाह करनी पड़ेगी। पिता जी तो हानि और लाभ का कुछ ख्याल ही नहीं करते।

शीला--मैंने उनसे बात की थी, एक बार.....

किशन --फिर ?

शीला--वह तो सुन कर हंस दिये कि यह तो खबतियों वाली बात है। कोई ऐसा भी करता है। योंही डराता है।

किशन--ठीक है बीबी जी। ताऊ जी ने भी तो अब दूसरी बार मोहलत ली है।

शीला--वही समझा सकते हैं।

किशन--समझावें भी और अर्ज़ी भी वापस लौटा लायें, वरना हमारा तो समझो....बस...

रामशरण--(आता है, आते ही) सरजू, चाय तैयार है ?

सरजू--(रसोई से) अभी लाया जी, अंगीठी जलने वाली है।

राम--जल्दी जल्दी, शुक्र है (ठहर कर) शीला जी बधाई हो।

शीला--क्या हुआ है, क्या कर आये हैं।

राम--बताता हूँ पहले बधाई दो।

शीला--बधाई काहे की ? बताइए न ज़रा।

राम--ज़रा जल्दी से (काहे की शीला तू भी यह पूछ रही है, जानती नहीं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीला--मैं क्या जानू भला ?

राम--बधाई दो शीला आज़ादी की, खुशी की, सुख की, चैन की, छुट्टी कर आया हूँ आज ।

किशन--(घबरा कर) पिता जी ।

शीला--सच ?

रामशरण--सचमुच, खरी खरी सुनाई, खूब खुल करके, जी भर कर दिल का गुबार निकाला अब दफ्तर नहीं जाऊंगा, किसी के माथे नहीं लगूंगा ।

किशन--गज़ब कर दिया आपने ।

रामशरण--चुप रह किशन, रंग में भंग मत डाल, तू नहीं समझता । सालों तक मैंने हर तरह की मुसीबत झेली है, सबर का घूंट कर पी गया हूँ, आखिर में मेरे सुख का समय आया है । आज मैं एक आज़ाद इन्सान हूँ । खुश इंसान हूँ । सुखी इन्सान हूँ । ओ सरजू, जल्दी लाओ, जल्दी करो ।

सरजू--(रसोई में से) अभी लो जी । पानी रखने लगा हूँ ।

शीला--परन्तु आप किसी से सलाह तो कर लेते ।

राम--आपको सब मालूम है ।

किशन--ताऊ जी के साथ बात करने में क्या हर्ज़ था ?

राम--उनके साथ मेरे विचार नहीं मिले । आप समय पर सब लोग समझ जायेंगे ।

किशन--बीबी जी मैं चलता हूँ ।

शीला--किधर ?

किशन--ताऊ जी की तरफ ।

रामशरण--खबरदार किशन--किसी को मेरे काम में दखल देने की कोई ज़रूरत नहीं । अब मैं आज़ाद हूँ, आज़ाद ! समझे ।

किशन--पिता जी आपको पता नहीं, आप क्या कर लेते हैं ।

रामशरण--किसी से मत कोई सलाह मशवरा करो । किसी को बुलाने की कोई ज़रूरत नहीं । मैंने फैसला कर लिया है ।

शीला--देखो जी, गुस्सा मत करो । धैर्य से काम लो । आखिर गृहस्थ का सारा बोझ आपके सर पर ही है । आपके सर पर बहुत ज़िम्मेदारी है ।

रामशरण --(शीला थोड़ा चिढ़ा कर) हमारे घर में कोई बच्चा तो है नहीं, हां किशन की बात अलग है । (सांस लेकर) परन्तु मुझे आप पर पूरी आशा है ? आपने मेरे साथ जीवन व्यतीत किया है । मेरे सुख दुख की साथी बनो ।

शीला--मैं आपके साथ हूँ परन्तु आप यह तो ज़रा सोचें कि किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ? किशन तो अब सियाना है। सब कुछ समझता है।

रामशरण--आप सब सयाने हैं, परन्तु मेरी तबीयत को कौन समझता है, मेरे सुख दुख का किसे खयाल है ?

शीला--आप ज़रा विचार करें। आखिर पांच छः सौ रुपया महीना आता था, आयी लक्ष्मी को कौन धक्का देता है।

रामशरण--हाय अफसोस शीला....ये लक्ष्मी नहीं डायन है आपको तो दौलत मिल जायेगी। परन्तु मुझे यह डायन चट कर जायेगी। मैंने अपने लिये जो फैसला किया, सो ठीक है।

शीला--देखो जी, किशन की शादी भी होगी।

रामशरण --मैं कब कहता हूँ नहीं होगी अगर कहो तो कल ही कर देवें।

शीला--आखिर पराई लड़की को लाओगे तो किशन के दो सौ रुपए से उसका खर्च कैसे चलेगा ?

रामशरण--मेरी पैंशन भी तो ढाई तीन सौ के करीब आयेगी। फिर फंड भी तो मिलेगा।

शीला--आप तो अजीब बातें करते हैं। आप तो नौकरी छोड़ बैठे हैं। उसको अच्छे घर का नाता कैसे मिलेगा। इस समय तो परमात्मा की कृपा है। खाते पीते अच्छा हैं, लोगों में कुछ इज्जत भी है।

रामशरण--हमने कौनसा इन्कार कर दिया है। परन्तु समय भी तो देखना होता है।

शीला--हर कोई अपना घर चाहता है। छोटा मोटा अपना मकान होना चाहिए।

रामशरण--मकान जब चाहो बनवा लो शीला। परन्तु महलों के सपने लेने की ज़रूरत नहीं।

शीला--आप मेरी बात नहीं समझे। आप आजकल नौकरी पर हैं। हर एक को आपसे काम पड़ता है। आपका काम करने वाले आगे पीछे हैं। पैंशन हो गयी तो फिर यह बात नहीं होगी।

रामशरण--(क्रोध से) शीला, मैं सच कहता हूँ। तुझे अपना मकान बनाने, लड़का ब्याहने और अपनी पोजीशन की लालसा है। परन्तु मेरे सुख चैन का कोई ख्याल नहीं। बुरा न मानना, मैंने खरी खरी कह दी है।

शीला--आपके मन में जो आया, आपने कह दिया, मैं आपकी ज़बान तो पकड़ नहीं सकती। परन्तु अपने दिल से पूछो तो मेरी बात ठीक ही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामशरण—दिल से पूछे बिना कुछ नहीं कहा। इसीलिये आपको बुरा लगा है। सच हमेशा कड़वा लगता है।

शीला—क्षमा करना मैं कहना नहीं चाहती थी परन्तु बात बात में बात आ ही गयी। इस समय आप अपने सुख चैन की खातिर बाकी सारे परिवार के लिये कांटे बो रहे हैं।

रामशरण—शीला बस इस बात पर मेरा दिल टूट जाता है। कहावत है कि बकरी तो जान से गयी परन्तु खाने वाले को मजा नहीं आया। क्या मैंने कम तकलीफें झेली हैं आपके आराम के लिये। कई साल हो गये हैं मुझे सख्ती सहते हुए। जब बदअसूली और बेइन्साफी को देखता हूँ, तो मेरा खून खौल पड़ता है और रोम, रोम पुकार कर कहता है कि मैं उन बेईमानों को खरी खरी सुनाऊँ और अपने दिल को ठंडा करूँ। परन्तु आपका ख्याल आ जाता है और आपकी खातिर हर तरह की बातें सुनी हैं। सहन की हैं और कड़वा घूंट करके पी गया हूँ। अब हद हो चुकी है। कोई अच्छा मनाये या बुरा। कम से कम हम को चार दिन दुनिया में जो जीना है वह तो सुख से जिया जाये ?

शीला—हाय मैं अपने दिल की बात आपको किस तरह समझाऊं। आप सब कुछ गलत समझ रहे हैं। मेरा बस चलता तो दिल को चीर कर आपके सामने रख देती। फिर आप देखते कि इसमें क्या है।

रामशरण—मुझे भी यह तकलीफ है। मैं कहता कुछ हूँ और समझते कुछ हैं। काश, मैं अपना दिल आपके सामने खोल कर रख सकता, ताकि आप खुद देख लेते।

(रामलुभाई आती है और जोर से दरवाजा खटखटाती है)

रामलुभाई—शीला रानी !

शीला—आओ बहन जी।

रामशरण—ओहो आ गयी हो मेरी भौजाई, रामलुभाई। आओ, आओ।

रामलुभाई—किशन से पता चला है कि भैया ने नौकरी छोड़ दी है। मैं तो सुन कर दंग रह गयी। मेरे शरीर में से शीला सांस ऐसे गायब हो गया जैसे बैलून से फूंक।

रामशरण—भौजाई, दीखती तो आप भी ठीक बैलून की तरह ही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामलुभाई--लो भुर्ता हो गया, बहन की चुटकियां ।

रामशरण--मज़ाक ! भौजाई, आपको तो किसी सन्त महात्मा की आशीश लगी है । आपने सेवा की और उसने प्रसन्न होकर वचन दिया, बीबी बढ़ो फूलो (हंसी)

शीला--बहन जी, इनकी बातों का बुरा मत मानियेगा । देवर और भाभी का मखौल तो चला आया है ।

रामलुभाई --मैं तो दौड़ी आयी हूँ कि शीला से पूछूं तो सही ।

रामशरण--धन्य हो भौजाई, पंचों में प्रधान आपको तो सब का फिक्र है ।

शीला--लो बहन जी, अब भी आप कौन से आराम से बैठते हैं । कभी इधर कभी उधर ।

रामलुभाई--क्या करूँ शरीर भारी होने के कारण कुछ काम नहीं कर सकती । फिर भी ज़रूरत के समय आने जाने से नहीं चूकती ।

रामशरण --अच्छा तो शायद इधर उधर घूमने से ही आपका शरीर भारी हो रहा है ।

रामलुभाई--शीला, मेरी भी सुध मारी गयी है । आयी थी कुछ बातचीत करने और लग गयी इधर उधर की हांकने । [illegible] जरा पूछो आज क्या करके आये हैं ।

रामलुभाई--हां, भैया आज क्या किया है ?

रामशरण--भौजाई, तुम इस झगड़े में मत आओ । मैंने जो कुछ करना था, कर दिया है ।

रामलुभाई--फिर भी, बताओ न ।

रामशरण --मैं दुखी था । अपने सुख का रास्ता निकाल लिया है । बस अब आपको इससे क्या है ?

रामलुभाई–हमें इससे क्यों नहीं ? अगर हम आपको ठीक रास्ते पर नहीं लायेंगे तो और कौन लायेगा। नौकरी छोड़ दी क्या ? आती लक्ष्मी को कौन धक्के देता है।

रामशरण--भौजाई, तुम्हें कैसे समझाऊं, शीला नहीं समझती, किशन नहीं समझता, सब अपनी अपनी हांकते हैं, मेरी कोई भी नहीं सुनता ।

रामलुभाई--भैया, मैं सब कुछ जानती हूँ, तू मेरा कहना मान और किशन की शादी कर दे । इसके लिए बहुत सुन्दर लड़की लाऊंगी ।

रामशरण–देखो भौजाई, हम जो कुछ करेंगे, तुम्हारी मरज़ी के बिना नहीं करेंगे ।

शीला--बहन जी, आपने ही करना है सब कुछ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामशरण—अच्छा अच्छा यह किशन वाला सब काम आपके सुपुर्द किया हमने ।

रामलुभाई—एक लड़की मेरी नज़र में है, बहुत सुन्दर है, चांद जैसा मुखड़ा है ।

रामशरण—आजकल सभी सुन्दर हैं । कौन बुरी है, सिनेमा स्टार बनी हुई हैं ।

रामलभाई—ज़माने की हवा ही ऐसी है भैया ।

रामशरण — माफ करना भौजाई, मेकअप में तो लड़कियां बहुओं को भी मात करती हैं । अब बताओ क्या आपकी उम्र है, लिपस्टिक आदि लगाने की ?

रामलुभाई—सब लगाती हैं भैया, अब मैं इतना फैशन न करूं तो बड़ी दिखाई दूं ।

रामशरण—तो अब क्या लगती है तू भौजाई ? बिलकुल स्वांग न ?

रामलुभाई—अगर कोई और कहता तो उसकी खबर लेती, परन्तु तुझे क्या कहूँ .....

रामशरण—भौजाई, मैं ठीक ठीक कहता हूँ । क्या यह गलत है ?

रामलुभाई—अगर कहते हो तो कहलाओगे भी आखिर । हम भी तो कहस कते हैं । परन्तु माफ करो, मैं आपको कुछ नहीं कहती भैया । तुम्हारा भैया ही तुम से बात करेगा ।

रामशरण —मैं उनसे बात कर लूंगा ।

रामलुभाई—अच्छा तुम ही उनसे बात कर लेना । वह आपको कहे और तुम उनको । हमने इस में क्या करना है ।

शीला—बहन जी, जब तक भाई साहब इनसे बात नहीं करेंगे । यह हमारी कब सुनने वाले हैं ।

रामलुभाई—वह बात करें, अच्छी तरह करेंगे । वह आ ही रहे होंगे । मुझे कहते थे कि तुम चलो मैं पीछे पीछे आता हूँ ।

रामशरण —अच्छा तो आप उनके लिये मैदान साफ करने आयी हो ? आप सब ने मिल कर मेरे खिलाफ़ षड़यन्त्र रचाया है ।

शीला—आपको ऐसे ख्याल क्यों आया ? हम आप के साथ हैं । खिलाफ क्यों होंगे । क्या हमारा दिमाग ठीक नहीं ?

रामशरण—साफ साफ़ दिखाई देता है कि आपने मेरे खिलाफ षड़यन्त्र रचा है ।

शीला—कैसा ?

रामलुभाई—भैया, क्या कह रहे हैं आप ? क्या हम आपकी बुराई में खुश हैं । किशन को देखो, शीला को देखो, हमारी तरफ देखो । आपके भैया हैं सब से बड़े आपके हितैषी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर तुम होंगे तो सारी बात
के लिये ही कहेंगे ।

सरजू--चाय लाऊं जी ।

रामशरण--(डांट कर) पांच सात मिनिट के बाद आना ।

रामलुभाई--लो आ गये हैं भैया । इनकी बात तो ज़रा ध्यान से सुनना । (किशन आता है ।) क्यों किशन आप नहीं आए, क्या घर पर नहीं थे ।

किशन--घर पर ही थे ।

शीला--क्या कहा उन्होंने ?

किशन--मेरी बात सुन कर सर झुका लिया, और सोचने लगे, फिर तैयार होकर मेरे साथ चल पड़े ।

रामलुभाई--भला यह कैसे रह सकते हैं ?

किशन--रास्ते में किसी व्यक्ति से बातें करने लग गये और मेरे पीछे पीछे आते ही होंगे ।

शीला--तुझ से कोई बात नहीं की ।

किशन--केवल इतनी बात की थी कि बहुत बुरा हुआ । जल्दी में गलत क़दम उठाया है ।

रामशरण--गज़ब हो गया, सबने एक ही बात पकड़ी हुई है ।

(बूटों की चाप, सुखदयाल का प्रवेश)

रामलुभाई--आ गये जी आ गये ।

शीला--शुक्र है, भाई साहब आप भी आ गये ।

रामशरण--किशन मैंने मना किया था कि उनको तकलीफ़ मत दो । बैठो भाई साहब ।

सुखदयाल --हूँ ।

रामशरण --मैंने इस नालायक को मना भी किया था कि आपको तकलीफ़ न दे ।

सुखदयाल--यह मैं क्या सुन रहा हूँ राम शरण ? यह ठीक है कि तूने नौकरी से जवाब दे दिया है ?

रामशरण --जी ठीक, बिल्कुल ठीक । मैं अब पैंशन का हक़दार हो चुका हूँ ।

सुखदयाल--तुम्हारी तबीयत से अच्छी तरह परिचित हूँ । तूने जो कुछ किया है, ठीक नहीं है । सोलह आने गलत किया ।

राम--भ्राता जी, यह तो अपनी अपनी राय है । अपना अपना खयाल है ।

सुखदयाल--ज़रूर है । परन्तु अपने अपने विचार में भी कोई विशेषता होनी चाहिए ।

किशन--ताऊ जी, हमारे सुपरिंटेंडेन्ट को एक साल की और मोहलत मिल गयी है । उसने बहुत कोशिश की थी ।

सुखदयाल--समझदार आदमी है । अपने लाभ हानि को समझता है ।

रामशरण --भ्राता जी, एक व्यक्ति को जो लाभ दिखाई दे सकता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे के लिये वही हानि है। जिसको आप हानि समझते हैं यह तो अपनी नज़र है।

सुखदयाल—रामशरण, तुम जो भी बात करते हो, सब संसार से अलग। मैंने सारी उमर ऐसा व्यक्ति नहीं देखा जो अपनी बनी बनाई नौकरी को लात मार दे।

शीला और किशन—यही बात तो हम कहते हैं।

रामशरण—भ्राता जी, आप ठीक फरमाते हैं, जो और लोग करते हैं, वह अपने ख्याल से करते हैं। उनका ख्याल मेरे लिये कोई खुदाई हुक्म नहीं, कि मुझे अपने ख्याल के अनुसार जीने का कोई हक़ नहीं है?

सुखदयाल—कौन कहता है हक़ नहीं, ज़रूर है, परन्तु यह ख्याली फिलासफी अमली जीवन में फेल हो जायगी। हक़ तो किशन का भी है और शीला का भी।

रामशरण—परन्तु मैं इनके अधिकार को कब टालता हूँ? क्या मैंने इनकी सेवा के लिए सम्भव कोशिश नहीं की?

शीला—की है ज़रूर की है।

किशन—पर पिता जी अब जो कुछ करके आये हैं, उसका हमारी हालत पर बहुत असर पड़ेगा, क्या आपने यह सोचा है?

रामशरण—किशन, तू बच्चा है, तू नहीं समझ सकता इन बातों को।

सुखदयाल—ठीक कहता है, कोई इनके अधिकार का ख्याल किया है। तेरे इस निर्णय से हजारों रुपयों की रकम पर पानी फिर गया है।

किशन—यही तो मैं सोचता हूँ।

रामशरण—किशन, क्या खाक सोचते हो तुम! हाय रुपया, हाय रुपया। किस चीज़ की कमी है तुम्हें?

सुखदयाल—बुरा न मानना, तुम से तो किशन ने ही समझ की बात की है।

रामशरण—हद हो गई है, भ्राता जी, मैं सारी उम्र बेगार काटता रहा हूँ। सारी उम्र बोझ उठाया है, परन्तु अब थक गया हूँ। क्या मैं सुख की सांस भी न लूं, चार दिन।

सुखदयाल—तूने तो जीवन को समाप्त कर दिया है। बेकार आदमी का भी कोई जीवन है। तुम्हें वक्त काटना मुश्किल हो जायगा। तेरी सेहत खराब हो जायेगी। बेकार मक्खियां मारोगे।

शीला—भाई साहब ठीक कहते हैं। बिना काम के व्यक्ति ठीक नहीं रह सकता।

रामलुभाई—सचमुच भइया, निकम्मा और बेकार बैठा ऊँघता रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामशरण —क्योंकि ? मैं बेकार रहना बुरा लगता है ? ये क्या तमाशा है ?

सुखदयाल—तमाशा तो रामशरण तूने आप ही बना छोड़ा है । नौकरी न हुई मज़ाक हुआ । पता नहीं तू किस संसार में रहता है । तुम्हें खाक पता नहीं कि संसार किधर जा रहा है ।

रामशरण —संसार नर्क में जाता है, भ्राता जी तो जायें मैं नहीं जाना चाहता । यह मेरे दिल की आवाज़ है, मैं इसको नहीं दबा सकता, मुझे अपने मन के सुख से मतलब है । कोई मरने नहीं लगा । यूं ही बेकार बातें मत कीजिये भाई साहब ।

सुखदयाल—कृपा करके सुबह जाकर अपनी अरज़ी वापिस ले लेना ।

रामशरण—माफी चाहता हूँ भाई साहब, यह कभी न होगा ।

शीला—मान भी लिया करो जी, किसी की बात ।

रामशरण—चुप जी, चुप रहो ।

किशन—ठीक तो कहते हैं ताऊ जी । आप अर्जी वापिस लो पिता जी ।

रामशरण —मैं किसी से बंधा हुआ नहीं, मैं दो साल से इन्तज़ार कर रहा था इस दिन की ।

सुखदयाल—यह मैं जानता हूँ, परन्तु मुझे यकीन नहीं था कि तू सचमुच ऐसी हिमाकत करेगा । देखो अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ा न चलाओ ।

रामशरण —जो कुछ करना था कर लिया, आप इसमें दखल मत दीजिये ।

रामलुभाई—भैया, ऐसी जिद्द नहीं करनी चाहिए ।

शीला—यही तो बुरी बात है । कोई बात अगर मुंह से निकल जाए तो छोड़ने का नाम नहीं लेते ।

सुखदयाल—बातें पागलों जैसी करता है । और फिर कहता है कि दखल न दो ।

रामशरण —जो मरज़ी है करो, लेकिन यह सब मुझ पर ज़ुल्म है ।

सुखदयाल—अफसोस है रामशरण । क्या मैं ज़ुल्म कर रहा हूँ । जिसने कई लोगों का एहसान तुम्हारे लिये उठाया, कई लोगों की खुशामद की, बगार काटी.....

रामशरण—आपने सब कुछ किया, ठीक है, लेकिन अब मैं मजबूर हूँ ।

सुखदयाल—गज़ब है खुदा का, जो तुझे कौन सी मजबूरी आ गयी है । मैं समझ नहीं पा रहा ।

रामशरण—अपने अपने विचारों की मजबूरी है । आप नहीं समझ सकते और न ही समझ सकेंगे । मेरे लिये यह ज़िन्दगी और मौत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सवाल है । सच मानिये, मुझे मेरे हाल पर ही रहने दीजिये। वास्ता है खुदा का.....

सुखदयाल—गज़ब हो गया, उल्टा चोर कोतवाल को डांटे..... नौकरी छोड़ कर बाकी लोगों का खाना खराब करने लगा है। इनको पूछा है, तुझे तो पैसे की ज़रूरत नहीं इनको तो है।

किशन—पिता जी !

शीला—जी ठीक कहते हैं। ठंडे दिल से बात पर विचार करो। फिर बाद में कुछ करना।

रामशरण —किशन, शीला चुप रहो। मैंने जिस बवाल को गले से उतारना चाहा उसे फिर आप मुझ पर डालना चाहते हैं। अब नौकरी खत्म है, बस ।

सुखदयाल—अगर मेरी नहीं कोई बात सुननी पसन्द; तो इनकी तो सुनों। क्या इनकी तकलीफ़ भी तुझ पर कुछ असर नहीं करती ?

रामशरण —भ्राता जी, गुस्ताखी मुआफ। मैंने आपकी बहुत बातें सुनी। **लेकिन** यह मेरा निजी मामला है, **आप** इन बेवकूफों को मत बहकाइये। मेरे पीछे इन्हें मत लगाइये। इनको मत उकसाइए।

शीला—जी, भाई साहब हमारी ही भलाई सोचते हैं। इनका कहना मानिये।

किशन—पिता जी, आप जोश में न मालूम क्या कर बैठते हैं ?

रामलुभाई—भैया आप मेरी बात तो मान लेते हो, कल जाकर अरज़ी वापस ले लेना।

रामशरण —भाभी, कोई और सेवा हो तो बताओ।

रामलुभाई—शीला रानी, तू भी कुछ कह, चुपचाप क्यों खड़ी है।

शीला—हाय, मैं क्या करूँ मेरी तक़दीर बहन जी.....

(रोती है।)

किशन—पिता जी, पिता जी, मान भी जाइए।

सुखदयाल—तू इनका दिल तोड़ कर अपना दिल सुखी करना चाहता है। तेरा दिल है कि पत्थर।

(शीला की हिचकियां)

रामशरण —सब पाखंड है, फरेब है। अपने अपने मतलब के लिये सब कुछ हो रहा है। मेरा किसी को खयाल नहीं।

मैं घर क्या आया हूँ, मुझे तो चारों तरफ से घेर लिया गया है। बाहर निकलने को कोई रास्ता नहीं।

सुखदयाल—(व्यंग्य से) दो—तारा ले लो और मन्दिर में बैठ जाओ।

रामशरण—(हैरानी से) मन्दिर में (रुक कर) अहाहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहाहा ! मंदिर से कहीं दूर, एक दम दूर, जहां न कोई जा सके और न ही कोई फिर अपनी शकल दिखाए .....

"मतलब की यह दुनिया सारी,
जितनी मीठी उतनी खारी
झूठा सारा जगत पसारा,
ढूंढ रे मन कोई और सहारा"

सुख के लिये नौकरी छोड़ी, अब घर भी छोड़ो, यहां तो जिन्दगी एकदम अन्धेर है, शीला मेरी जीवन संगिनी तुझ से कुछ और आशा थी, अच्छा खुश रहो !

शीला--(सांस लेते हुए) ऐसे न कहो पतिदेव । मुझे छोड़ कर न जाना । मैं नहीं जाने दूंगी । मैं आपकी साथिन हूँ । हर हाल में, जैसे चाहो करो । जैसे चाहो करो । मैं आपके साथ हूँ मैं नहीं जाने दूंगी ।

रामशरण --(खुशी से थरथरी आवाज़ में) शीला, शीला.....

शीला--मुझे माफ करो, पतिदेव मैं आपके साथ हूँ । मेरा कौन सा ठिकाना है ।

रामशरण --मेरे साथ मेरी शीला मेरे साथ (खुशी से नाचता हुआ) मेरी शीला मेरे साथ । वाह वाह वाह, ओ सरजू, चाय लाओ जल्दी ।

सरजू--(बाहर से) अभी लाया जी एक मिनट में ।

रामशरण--अरे ओ पाजी आधे मिनट में, जल्दी करो ।

सरजू--आया जी, अभी आया जी ।

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे पूर्ण पुरुष !

चन्द्रशेखर

हे पूर्ण पुरुष !
हे सद्यसनातन कला पूर्ण !
हे मनु पुत्र !
तुम पूर्ण हुए
युग पूर्ण हुआ
मन्वंतर बदला ।

हे महाफणी !
हे शेषनाग !
फण फण पर तेरे
जो टिकी धरा
वह आज डोलती डगमग डगमग
तुम शांत हुए
भूकंप उठा
तुम महामौन में लीन हुए
जग महाशोक में लीन हुआ ।

हे मृत्युंजय !
हे नील कण्ठ !
संक्रमणों के विषपेता !
ओ सहज समन्वय के प्रतीक !
तूने विषधर भी गले लगाए
और जटा में गंग संजोई ।

ओ असंभवों के महापुंज !
ओ नृसिंह की मानव प्रतिमा !
विषम विरोधों के उत्तर !
तुम खंभ फाड़ कर जब निकले
पशुता का वक्ष विदीर्ण हुआ
तूने !
प्रह्लादों को हृदय लगाया
मानवता की शिला धरी ।

ओ ! --
कल्कि के करुणावतार !
ओ पूत ऋचाओं के गाता !
ओ महाशांति के देवदूत !
हे विदेह !
हे दिव्य देह !
हे परम पुरोधा !
इस महायज्ञ में निजको ही
तूने है तिल तिल होम दिया
हे कर्म योगि !
हे स्थित प्रज्ञ !
हे स्थित धी !
निष्काम भाव से तूने ही
जीवन को भोगा और जिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे विश्व मित्र !
हे नर पुंगव !
सारी वसुधा को रहा मानता
तू सदैव अपना कुटुम्ब
मानवमूल्यों के राज परीक्षत !
संस्कृति के शिल्पी !
विशद दृष्टियों के दाता !
तूने जो दिए मानदंड
युग युग तक वे
जीवन को देंगे परिभाषा ।

हे यतिराज !
हे भीष्म व्रतधारी !
निस्पृह भाव से आयु भर
प्राणों के अक्षत चंदन से
तू रहा पूजता
आदर्शों की पूत पादुका ।

ओ तपी भरत !
यह कैसा तप ?
कैसी पूजा ?
यह ध्यान लीन तुम कैसे हो ?
यह सहज समाधि कैसी है ?
जो चिर अटूट,
जो चिर अभंग ।
पूजा का थाल सजा वैसा
है चरण पादुका वैसी ही
पर सूना नंदीग्राम खड़ा,
वह राज हंस तो चला गया
पिंजरा रह गया यहीं पड़ा

ओ अयोध्या के अक्षयवट !
तू अविनाशी
तू सदा अजर
तेरी गरिमा के बिरवे की
हैं जड़ें रसातल तक पहुची ।

ओ विराट !
तू--
भारत की समग्रता का प्रतीक,
यह भारत, तेरा ही,
बन चुका आज पर्याय एक ।

तुम आज
इतिहास को हुए समर्पित
धन्य हो गया इतिहास,
तुम संस्कृति को हुए विसर्जित
संस्कृति ही धन्य हो गई ।
महाशून्य के ओ पंथी !
तेरे निर्वाण दिवस पर हम
लो ! तर्पण का व्रत लेते हैं,
आंसू के अर्घ्य लिए आंखें
यह पिण्डदान अब करती हैं ।

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह वादा : यह मुसीबत

डा० जयनाथ 'नलिन'

आज दफ्तर से दो ढाई बजे लौटा तो मेरी श्रीमती जी चमक उठीं। पुतलियों से प्यार की चाँदनी छिटकाते और ओठों से शहद की धार बहाते हुए एकदम फुदक कर बोलीं, "अरे आज इत्ती जल्दी! कित्ते अच्छे हो तुम—दफ्तर की झंझट में भी अपना वादा न भूले। याद है न? हमारे विवाह की वर्षगांठ पर तुमने एक मनपसन्द उपहार देने को कहा था।"

लेकिन वह तो.....।" बैठते हुए मैंने कहा।

"रह कित्ते दिन गये। और कल सबेरे मेरी जीजी के यहां फंकशन भी है। उसमें जाने के लिये एक बढ़िया सी साड़ी।" श्रीमती जी ने हमें मात करने के लिये शह दी तो हमने भी तुरन्त नई चाल चली "कौन-सी जीजी?"

"कित्ते चालाक हैं—जैसे कुछ जानते ही नहीं।" इस एक वाक्य में श्रीमती जी का साड़ी हड़पने का अपना भोलापन, और उन्हें टरकाने की मेरी चालाकी प्रकट कर दी। फिर समझाते हुए बोली, "वही तो एक जीजी हैं— तोषी बहन जी। दस बीस हों तो न जाने तुम्हारा क्या हाल होता।"

"अच्छा! वही— वह तोषी बहन जी? तुम्हारी मौसी के फूफा की भतीजी की ददिया सास के सोतेले लड़के के चचिया साले की सगी लड़की!" मैंने रिश्तों का हिसाब लगा कर तोषी बहन जी से निकटतम रिश्ता तलाश करने का प्रयत्न किया तो श्रीमती जी एकदम तुनक पड़ी, "क्या दुनिया भर का बहीखाता ले बैठे? किसी की मान-मर्यादा मिट्टी में मिल जाय, तुम्हें बगलें बजाने और मज़ाक उड़ाने से मतलब। हमें समाज में रहना है। नगर भर की कुलीन लेडीज़ वहां आयेंगी। वे क्या कहेंगी? यही न कि इनके मियां जी पर मौके के लिये एक बढ़िया साड़ी भी न जुड़ी। मैं क्या किसी से कम हूँ, जो तुम्हारी नाक नीची कराऊं। घण्टा आध घण्टा कमर सीधी कर लो। बाजार चलेंगे फंकशन का फंकशन—उपहार का उपहार।"

"भई, मैं मना तो नहीं करता। लेकिन जल्दी तो इसलिये चला आया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक–दो कविता की रिहर्सल कर लूं — वह एकदम चमक उठीं। तुरन्त एक कविगोष्ठी में जाना है।" मैंने कहा।

"यह सब बहानेबाजी। वादा करके यों मुकर जाना! जनाब, बड़ा मुश्किल है वादा निभाना!" उसने व्यंग्य किया।

"वादा करके मुकर जाना मर्दों का कौल नहीं। अगर वचन का मोल न जाना तो रजपूती क्या!

"तो करो वादा—दो वचन। रखो हाथ पर हाथ।" कह कर उसने तपाक से हाथ बढ़ाया।

"वादा तो कर चुका—वचन तो पहले ही दे चुका।" कहते हुए मैंने उसके हाथ पर हाथ रखा।

"क्या? एक बार फिर।" कहते हुए उसने हाथ दबाया!

"यही कि कविगोष्ठी में अवश्य....।" बात पूरी भी न हुई थी कि वह रोशीले मान से बोली, "जाओ, तुम्हें कौन रोक सकता है? दस बजे तक वहां गप्पें मारते रहना—यहां पड़ा-पड़ा खाना ठण्डा होता रहे, मैं आंखें फाड़ फाड़ कर श्रीमान् जी की बाट देखती रहूँ।"

"तुम तो बेबात ही परेशान होने लगती हो। घण्टे डेढ़ घण्टे का प्रोग्राम—छै बजे घर! अपना तो यह असूल है, 'चिराग जले मरद मानस घर भले।", मैंने माननी श्रीमती जी की हल्की–सी खुशामद की।

फुर्ती से बोली, "तब तो मज़े में साड़ी खरीदी जा सकती है। नौ बजे तक चाहो तो पांच सौ साड़ियां.....। मैं तैयार रहूँगी। आते ही बाजार चलेंगे। बोलो, मंजूर?"

"मंजूर। सोलहा आने मंजूर।" मैंने हथियार डाल दिये। उसने वह शानदार चाल चली कि अपना मोहरा तलाश करते ही रह गये। वह शह और वह मात! बुरे फँसे। लाजवाब! श्रीमती जी के बुद्धि कौशल, मौक़े की पकड़ और विरोधी को पछाड़ने की प्रतिभा को देख कर मैंने आज से यह मानना छोड़ दिया कि औरतों में अक्ल का घाटा है।

एक वादे के भूत से पीछा छुड़ाया तो दूसरे वादे के भूत ने आ दबाया। कई बार जी में आया कि न जाऊँ! पर वादा जो कर चका था। खैर बैठते दिल को धीरज बंधाने के लिये "रघुकुल रीत सदा चली आई" और "जय हनुमान ज्ञान गुन सागर" वाली चौपाइयां गुन-गुनाते हुए कविताएं तलाश करने लगा। घबराहट में अकसर चीज़ें गुम हो जाया करती हैं —यही हाल यहां। कभी श्रीमती जी की लापरवाही पर झुंझलाता तो कभी नौकर की नालायकी पर गुस्सा आता! भला, आप ही बताइये, यह इनका काम है या मेरा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचानक एक चिट हाथ लगी ! बिल्कुल कविता का स्टाइल था लिखने का :

एक पाजामा ।
कुर्ते चार ।
दो बनियान ।
कमीज़ें तीन ।
फ़ाइन रेशम की सलवार ।
और ब्रैकट में पांचों रंगीन ।
बुद्धा धोबी ।
तीन दिसम्बर ।
उन्नीस सौ तेंतालीस,
टोटल——एक रुपया पांच आने ।

अगर १९६४ कहीं उन्नीस सौ तेंतालीस होता, तो श्रीमती जी द्वारा रचित इस धोबी-काव्य को बेधड़क होकर मैं अपना बना लेता । बड़े बड़े कवियों की हेकड़ी तोड़ने के लिये यह काफी था । इसमें लक्षणा-व्यंजना उछल उछल पड़ती—नये प्रयोगों पर आलोचक और श्रोता हक्के बक्के और भौंचक्के होकर ताकते रह जाते ।

कुर्ता, पाजामा, कमीज़, बनियान, सलवार, लुंगी, लँगोटिया सभी के आकार नाम, लिंग भिन्न हैं ; लेकिन हैं सब कपड़े ही । यानी सभी शरीरों में एक ही चेतन संत्ता है । एक ही आत्मा सब में है । वही ब्रह्म सृष्टि के कण कण में समाया है—देखने में भिन्न भासता है । एक पाजामा ही जामा है—— चोला है, यानी शरीर है । चार कुर्ते——धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चार पदार्थ हैं, तीन कमीज़ें ही सत रज तम तीन गुण हैं और दो बनियान ही राग-विराग हैं, जिनसे आत्मा ढकी है । पांच सलवार ही पांच इन्द्रियां हैं और इनके रंग ही रूप, रस, गंध, स्पर्श, शब्द आदि इनके मायावी विषय हैं । बुद्धा धोबी यानी गुरु इनको निर्मल करता है । या धोबी ही भगवान हैं, जब कृपा करें तभी ये मल या विकार रहित हों । और जब तक एक रुपया पांच आने यानी धन यानी माया गुरु के अर्पित नहीं करोगे, तुम्हारा उद्धार न होगा । इसके सिवा धोबी की नज़रों में सब कपड़े बराबर हैं ——इस लिये इंसान-इंसान में ऊंच-नीच की भावना क्यों ? सभी साथ रहते हैं, तब क्या विभिन्न राष्ट्र, धर्म, जातियां साथ नहीं रह सकतीं ? इसमें कोएग्जिस्टेंस का दिव्य संदेश छिपा है ।

पर जिन दिनों गोष्ठी में कविता सुनानी थी, उन दिनों कविजन या तो भरी सभा में अंगारे बरसाते, क्रान्ति मचाते और भूकम्प लाया करते थे, या अपनी प्रेयसी के हृदय-पाषाण से टकरा कर लहु लुहान हुआ करते, हज़ार फटकार खा कर भी प्रेम की हेकड़ी भरे जाया करते और प्रेमिका के चबूतरे पर प्राण दे देने की धमकी दिया करते थे ।

कोई ऐसी ही कविता खोज रहा था । एक-दो टूटी-फूटी कविताएं भी याद आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही थीं । उन्हींपर गुनगुनाते-गाते हुए रिहर्सल कर रहा था । एक पंक्ति में भैरव राग तो दूसरी में श्याम कल्याण रंगत दिखाने लगता । कभी राग केदार जमता तो उसे धकेल झट राग गुर्जरी आ डटता । कभी राग नट कलावादी करता तो कभी राग धना श्री उछल कूद मचाता । मतलब--पक्के, कच्चे, अधपके, बिचौलिया, सभी प्रकार की राग-रागनियों में धक्कमधक्का मची थी ।

इसी बीच अचानक श्रीमती जी ने आकर टाइपराइटर की तड़ा तड़प शब्दों की झड़ी लगा दी, "देखते नहीं--पौने पाँच । साढ़े चार गोष्ठी और साड़ी भी आज ही । बाहर दफ्तर का आदमी ।"

बाहर आया । मालूम हुआ, मैनेजर साहब ने बुलाया है । दफ्तर पहुंचा तो मैनेजर ने बताया कि बस दुर्घटना की जो खबर छपी है, उसके बारे में इंक्वायरी आई है । कल जवाब भिजवाना है । बहुत देर तक पूछताछ करते रहे । फोरमैन को बुलाया । प्रेस कापियां मंगाई, पर कुछ नतीजा न निकला ।

काफी देर हो गई तो मैनेजर घड़ी देखते हुए बोले, "कल तलाश कर लेंगे । चलो कंसल साहब को बधाई दे आयें । उनकी बहन की शादी है ।"

"अरे मैं तो भूल ही गया था । बेचारे कितना अनुरोध कर गये थे।" कहते हुए हम दोनों दफ्तर से बाहर आ गये । तांगा किया और कंसल साहब की तरफ चल दिये । रास्ते में हमने तांगे वाले से पूछा "मालूम है मच्छीहट्टा में भाई गण्डासिंह के कटरे में मटरामल की गली । एक शादी पर जाना है ।"

"क्यों नहीं रायसाब । और शादी वाला घर ?-- मील भर से रोशनी और लाउडस्पीकर .....।" घोड़ा दौड़ाते हुए उसने अपनी जानकारी जतलाई ।

बहुत देर तक टेढ़ी तिरछी तंग चक्कर दार गलियों में चक्कर काटने के बाद रंगबिरंगी रोशनी दिखाई दी । मोड़ मुड़े तो सामने शादी वाला घर । बड़ी फुर्ती से तांगे वाले ने घोड़ा दौड़ा कर मकान के पास ला खड़ा किया और बोला, "रायसाब ! ऐन मौके पर पहुंच गये ।"

वह पैसे लेकर चलता बना और हम तेज़ी से शामयाने के नीचे सजी कुर्सियों पर जा जमे । जान में जान आई । अनेक परिचितों ने मुसकरा कर आंखों-आंखो में अभिवादन किया । बारात आ चुकी थी । रस्में की जा रही थीं । लैमन-सोडा चाय-- काफी, बिस्कुट-पेस्ट्री, काजू-मिसरी सिग्रेट-पानों का दौर चल रहा था ।

रस्में पूरी होती जा रही थीं । बधाई देखकर लोग खिसकते जा रहे थे । मैंने घड़ी देकर चलने का संकेत करते हुए मैनेजर साहब से कहा, "बधाई देते चलें । शायद वह भीतर हैं । और किसी से जान पहचान है नहीं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां-हां।" वह बेर मैनेजर साहब के पास बैठे हुए एक सज्जन से प्रार्थना की, "अगर आपको कष्ट न हो तो ज़रा कंसल साहब को बुला दीजिये।"

"कौन कंसल साहब ?" उन्होंने आश्चर्य से पूछा।

"वही। कंसल साहब जिनकी बहन की शादी है।" मैं जानकारी की मुस्कान बिखराते हुए बोला।

"यह तो मेहरा साहब की लड़की की शादी है।—वह हैं मेहरा साहब।" उन्होंने सामने की तरफ संकेत किया। इतने ही में मेहरा साहब सब लोगों की बधाइयां स्वीकार करते हुए, उन्हें धन्यवाद देते और कृतज्ञता प्रकट करते हुए हाथ जोड़े हमारी तरफ आते दिखायी दिये। हमने तुरन्त खड़े होकर उन्हें इस पावन सुखद अवसर पर हार्दिक बधाई दी और नव-दम्पति के लिये बार-बार शुभकामनाएं कीं। वह मुस्कराते हुए आगे निकल गये। हम भी मुस्कराते हुए एक दूसरे का मुंह ताकते हुए पंडाल से बाहर हो गये। गली से निकल कर दोनों ने खूब कहकहा लगाया। और अपने अपने घर का रास्ता पकड़ा।

ताँगा तेज़ी से दौड़ा जा रहा था। तांगे के पहियों पर लिपट कर रास्ता सिमटता चला आ रहा था। रास्ते के अंतिम छोर पर बंधा घर पास खिचा आ रहा था। और आंखों में कभी गोष्ठी के संयोजक, कभी श्रीमती जी, कभी कंसल साहब घुसे आ रहे थे। कानों में घोड़ों की टापों के साथ अनेक शिकायत उपालम्भ और रोशीले शब्द गूंज रहे थे। तीन-तीन वादे और एक भी न निभाया जा सका! रह गई धरी रजपूती। सचमुच, ज़रा मुश्किल है—वादा निभाना!

● ● ●

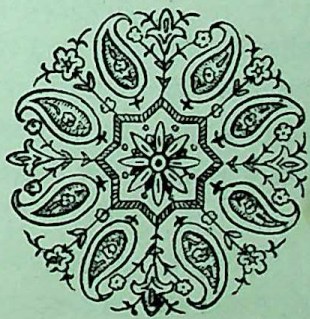

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

पूर्व और पश्चिम

रौशन पटियालवी

पूनम की रात । चांद अपनी शीतल स्निग्ध किरणों से भूमि पर सुख-शांति की वर्षा कर रहा था । वातावरण में अजीब खुमारी थी । ज्ञान शंकर ने गायत्री के गले में बाहें डाल कर, धीरे धीरे उसकी काली घुंघराली लटों को सहलाते हुए कहा--"गायत्री ! अब हमें विवश होकर तुमसे बिछुड़ना पड़ रहा है । आख़िर यह घड़ी भी आ ही पहुंची ।"

गायत्री ने मदभरी आंखों से ज्ञानशंकर को निहारते हुए कहा ।"यह तो बहुत खुशी की बात है । आप उच्च शिक्षा प्राप्त करने जा रहे हैं । सफल होकर लौटेंगे तो इससे घर की मान-मर्यादा ही बढ़ेगी ।"

ज्ञानशंकर ने उसके कपोलों को प्रेम से थपथपाते हुए कहा :"यह तो ठीक है परन्तु तुम से दूर रह कर पढ़ाई में मेरा मन कैसे लगेगा ? तुम्हारी याद मुझे हरदम सताती रहेगी ।"

गायत्री ने ज्ञानशंकर को ऐसी दृष्टि से देखा मानो उसके दिल की सच्चाई की थाह पाने का प्रयास कर रही हो । और कुछ प्रतीक्षा करने के पश्चात् बोली--"जी ! यह सब तो मेरा दिल रखने की बातें हैं । जहाज़ पर पांव रखते ही सब कुछ भूल जाएगा । और फिर इंग्लैंड पहुंच कर तो आपके दिल बहलाव का अच्छा खासा प्रबन्ध हो जायगा । उस समय कहां बेचारी मैं और कहां मेरी याद !"

ज्ञानशंकर ने उसकी आंखों में आंखें डाल कर कहा, "वाह ! यह भी खूब कही। तुम्हारी मदभरी आंखों का नशा उतरना इतना आसान है क्या ? तुम्हें मैं केवल प्यार ही नहीं करता, दिल से चाहता हूँ। तुम मेरे दिल में हो, तुम मेरी आंखों में हो । ऐसा लगता है कि प्रकृति की सारी सुन्दरता प्रभु ने तुम्हारे शरीर में ही भर दी है । मैंने तो बहुत बहाने किए, टालमटोल की, परन्तु पिता जी हैं कि अपने निश्चय से टस से मस नहीं होते । उन्हें केवल एक ही धुन सवार है कि मैं विलायत जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करके वापिस लौटूं और किसी उच्च पद पर नियुक्त हो कर परिवार की साख बढ़ाऊं । किसी के दिल की उन्हें क्या खबर ।"

गायत्री ने मानों उन्हें झुठलाते हुए कहा "अजी यह सब दिखावे की बातें हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंख ओझल पहाड़ ओझल। मुह देखे की मुहब्बत सबको होती है। कुछ दिन बीतने दो। आप मुझे स्वप्न में भी याद नहीं करेंगे ?"

ज्ञानशंकर ने उसकी बात को काटते हुए कहा, "खैर जो कुछ होगा, देखा जाएगा। वहम का इलाज तो लुक़मान के पास भी नहीं था। एक बात सुन लो। मैं अपने आपको भूल जाऊं तो भूल जाऊं परन्तु तुम्हें नहीं भूल सकता। मुहब्बत भूलने वाली चीज़ है क्या ? अब सब प्रकार के सन्देह को दिल से निकाल कर प्रसन्न चित्त से मुझे विदा कर दो। तभी यह नाव किनारे लग सकेगी, नहीं तो बीच भंवर में पड़ कर हिचकोले खाती फिरती रहेगी।"

गायत्री ने ज्ञान के मुह पर हाथ रखते हुए कहा : "आप ऐसी अशुभ बातें क्यों करते हैं। डूबें आपके दुश्मन। मैं तो सच्चे दिल से आपकी सफलता चाहती हूँ। जिस प्रकार उमंगों भरे दिल से जुदा हो रहे हो, उसी प्रकार वापस आकर प्रेम अमृत पिलाना और मुझे अपने दिल से न भुलाना। याद रखना।"

"अच्छा तो आज्ञा है न।"

गायत्री इसका कोई उत्तर न दे सकी। उसके अश्रुपूर्ण नेत्र एक बार ऊपर उठ कर न जाने क्या कह गये। ज्ञानशंकर ने प्रेम के वशीभूत होकर गायत्री को अपने बाहुओं में भर लिया और वह भी आत्मविभोर होकर प्रेम में डूब गई।

× × ×

ज्ञानशंकर डा० दयाशंकर का लड़का था। वह उस वर्ष एम०बी०बी०एस० की परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ था। डा० दयाशंकर लगभग तीस वर्ष की सरकारी नौकरी के पश्चात् रिटायर हुए थे। नौकरी के दौरान वह सिविल सर्जन व चीफ मैडीकल अधिकारी जैसे उच्च पदों पर कार्य करते रहे और सरकार ने कई बार उनकी वफादाराना सेवाओं के कारण वेतन में वृद्धि करके और उन्हें करनल व नाइट आदि के खिताब देकर सम्मानित किया था।

डा० दयाशंकर का अधिकारियों से मेलजोल और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे इस लिये उनका विचार था कि यदि ज्ञानशंकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर ले तो वह बहुत ऊंचे पद पर नियुक्त हो सकता है। इसी लिए वह उसे इंग्लैंड भेजने पर बल दे रहे थे।

गायत्री सौंदर्य की साकार प्रतिमा थी, उसका गदराया शरीर, सुकोमल देह, उत्फुल कमल सदृश बदन। घनकुन्तक केश, अरुण कपोल एवं अधर, यहां तक कि शरीर का अंग प्रत्यंग दिल को मोह लेने वाला था, मानो गायत्री सुन्दरता की ज्योति थी और ज्ञानशंकर उस पर लट्टू पतंगा, वह चांद थी तो ज्ञान चकोर। वह एक सुन्दर पुष्प थी तो ज्ञान उसको चाहन वाला भ्रमर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय एकसी नहीं रहती। आखिर विदाई की घड़ी आ पहुंची। ज्ञानशंकर जल्दी से स्टेशन पर पहुंचने के लिए तैयार हुआ। माता जी के चरण स्पर्श किए। उनका आशीर्वाद लिया। अब केवल गायत्री से मिलना शेष था। वह धड़कते हुए दिल के साथ उसके कमरे की ओर बढ़ा।

गायत्री मूर्तिवत खड़ी थी। उसका हृदय भी स्वयं ही उछलने लगा। ज्ञान कमरे में पहुँचा तो गायत्री उसके चरण छूने के लिये बढ़ी परन्तु ज्ञान ने उसके शरीर को अपने हाथों पर थाम कर उसे अपने वक्ष से लगा लिया। गायत्री कुछ बोल न सकी। ज्ञान से लिपट कर और उसके कन्धे पर सिर रख कर अश्रुधारा बहाती रही।

ज्ञानशंकर ने उसके कपोलों को प्रेम से थपथपाते हुए कहा! "तो जाऊं न।" गायत्री मानो निद्रा से जागी हो। परन्तु इच्छा होने पर भी शब्द उसके मुख से न निकल सके।

ज्ञान ने अपनी इच्छा के विरुद्ध अपने शरीर को गायत्री से पृथक् कर भरे हुए दिल से कहा : "अच्छा तो गायत्री! "देखना भूल न जाना।"

गायत्री झरोखे से मोटर की ओर उस समय तक देखती रही जब तक कि वह आंखों से ओझल न हो गई। ज्ञान शंकर के चले जाने के बाद गायत्री को एक एक क्षण बितानी कठिन हो गया। उसे अब मालूम हुआ कि प्रेम क्या वस्तु है। ज्ञान के घर में होते हुए और सदैव आंखों के सामने रहने से उसे अत्यन्त सन्तोष होता था परन्तु अब उसकी अनुपस्थिति में वह बहुत व्याकुल रहने लग गयी थी। उसके हृदय में प्रेम का समुद्र ठाठें मार रहा था और वह उस पति प्रेम रूपी नौका में बिहार कर रही थी। जिसका कर्णधार ज्ञानशंकर था, परन्तु अब गायत्री प्रतिदिन डाकिए की प्रतीक्षा करने लगी। उसे अपने घर की ओर आते देख कर उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगता। उसे आशा होती कि आज ज्ञानशंकर का पत्र आएगा। परन्तु जिस समय डाकिया उसके मकान के आगे से गुज़र जाता तो उसका दिल बैठ जाता।

एक दिन वह रोज़ की तरह ही डाकिए की प्रतीक्षा में गली की ओर देख रही थी कि डाकिए ने एक बन्द लिफाफा उसके ससुर ला० दयाशंकर को दिया। वह भागी हुई दरवाजे की ओर आई परन्तु लज्जा ने उसके पांव बांध दिए। लाला दयाशंकर लिफ़ाफ़ा खोल कर पढ़ने लगे। इसी लिफ़ाफ़े में एक और बन्द लिफ़ाफ़ा गायत्री के नाम भी था। वह लाला दयाशंकर ने गायत्री के पास भेज दिया। पत्र पाते ही वह उसे खोल कर बड़ी उत्सुकता से पढ़ने लगी। लिखा था :—

"प्यारी गायत्री! मैं सकुशल यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँच गया हूँ और कालेज के छात्रावास में दाख़िल हो गया हूँ परन्तु मन नहीं लगता। कालेज में जब अध्यापक महोदय लैक्चर देते हैं तो मैं दीवारों की ओर ताकता रहता हूँ, पुस्तक सामने खुली पड़ी रहती है परन्तु चित्त एकाग्र करना संभव नहीं होता और इसी प्रकार रात्रि को बिस्तर पर लेटता हूँ। सोने की कोशिश करता हूँ परन्तु नींद मुझ से दूर भाग जाती है। अगर कभी कभार आंख लगी भी है तो स्वप्न देखने लगता हूँ। ऐसा दृश्य देखता हूँ कि तुम मुझे बुला रही हो। उठ कर आखें मलता हूँ तो देखता हूँ कि यह वास्तविकता नहीं। आशा है तुम पत्र का उत्तर दोगी..... शेष फिर : तुम्हारा ज्ञान !"

गायत्री ने पत्र पढ़ा एक बार नहीं कई बार परन्तु दिल की प्यास नहीं बुझी।

× × ×

मिस्टर विलियम मौजी स्वभाव का युवक था। इसलिये उसे ज्ञानशंकर की रोनी सूरत एक आंख नहीं भाती थी। वह प्रायः ज्ञानशंकर से उसके दुख का कारण पूछा करता था, परन्तु ज्ञान चुप ही रहता था, कि कहीं उपहास का पात्र न बन जाए।

विलियम ने जब सीधी तरह काम निकलते न देखा तो ज्ञानशंकर की तबीयत बहलाने के लिये अधिक समय उसके साथ रहने लगा। वह संध्या के समय ज्ञानशंकर के कमरे में पहुंच जाता और उसे हाईड पार्क की ओर ले जाता। धीरे धीरे उसका दिल बहलने लगा। बहुत से आदमियों से उसकी जान पहचान हो गई। वह अपना समय सैर तमाशों में बिताने लगा। विलियम ज्ञान को इंग्लैंड के शिष्टाचार से परिचित करवाने लगा और उसे नृत्य में भी अपने साथ ले जाने लगा, जहां मिस रोज़ प्रति दिन उसके साथ नृत्य में सम्मिलित होने लगीं और कुछ दिन में ही ज्ञान उसके रूप लावण्य पर पूर्णतया मोहित हो गया। मानो पतंगा दीपशिखा पर बेताबी से लपका या सुन्दर पुष्प की रंगीन पंखुड़ियों पर भ्रमर मोहित हो गया। एक अद्भुत आकर्षण था जो दोनों को एक दूसरे के समीप खींच रहा था। एक दबी हुई ज्वाला थी जो दोनों ओर पूरी तीव्रता से भड़क उठी थी। और गायत्री जो ज्ञान की आंखों से पहले ही दूर थी अब दिल से भी दूर जा रही थी। मानो पश्चिम की चकाचौंध पूर्व की सादगी पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो।

ज्ञान अब दिन रात मिस रोज़ के साथ ही रहने लगा। संध्या के समय वे इकट्ठे ही सैर करते और फिर क्लब में पहुंच कर कभी ताश खेलते और कभी कैरम, कभी शैंपयन पीते कभी व्हिसकी और जब इनसे मन ऊब जाता तो नृत्य कक्ष में जाकर नृत्य में तल्लीन हो जाते।

ज्ञान ने अब घर को पत्र डालना भी छोड़ दिया। प्रतीक्षा निराशा में परिवर्तित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गई । गायत्री की आशाओं पर पानी फिर गया । आशा की जिस शृंखला से उसका मन बंधा हुआ था वह टूट गई । एक वर्ष तक पत्र न मिलने से उसके मस्तिक में तरह तरह के विचार उठने लगे । कभी सोचती वह भूल तो नहीं गए और कभी अपने दिल को ढारस देने लगती....नहीं नहीं वे बचन-बद्ध हैं । पढ़ाई में संलग्न होने के कारण पत्र लिखने के लिये समय नहीं मिला होगा । क्या वे किसी कारण मुझ से रुष्ट तो नहीं हो गए । परन्तु मैंने तो उनको नाराज़ करने की भूल कर भी कोई बात नहीं की.....

धीरे धीरे वह दुनिया की रंगीनियों और दिलचस्पियों से विरक्त सी होने लगी, बाल बिखरे हैं तो बिखरे ही सही, मांग टेढ़ी है तो टेढ़ी ही सही, कंघी चोटी नहीं की तो न सही । आख़िर यह सब कुछ किस के लिये करे । कोई उसके बनाव शृंगार को देखने वाला भी हो । मीठी मीठी बातें करके उसके घुंघराले लम्बे केसों को संवारने वाला भी हो ।

अब उसका केवल एक ही कार्य रह गया था और वह था अपने पति के सम्बन्ध में विचार करना । इसी प्रकार एक वर्ष और बीत गया .....और फिर मृत प्राय आकांक्षाओं में मानो नया जीवन आ गया अर्थात् बहुत प्रतीक्षा के पश्चात् ज्ञानशंकर का पत्र आया । माता-पिता खुशी से फूले न समाते थे । गायत्री की प्रसन्नता का तो ठिकान न था । उसकी आशाओं की फुलवाड़ी जो महक उठी थी ।

दयाशंकर ने लिफ़ाफ़ा खोल कर पढ़ा। उसमें लिखा था--"पूज्य पिता जी, कई कारणों से मैं पत्र न लिख सका था जिसके लिये मैं क्षमा चाहता हूँ । मैं परसों लखनऊ पहुँचूंगा । बाकी बातें सेवा में उपस्थित होकर बताऊंगा।" गायत्री खुश थी, प्रसन्न थी कि इतने समय पश्चात् उनसे मिलन होगा । इसके साथ ही उसके दिल में यह विचार उत्पन्न होता कि कहीं उनमें कोई परिवर्तन तो नहीं हुआ होगा। क्या विलायत से वापिस आने पर वे मुझे पसन्द करेंगे । अब वे अवश्य ही पश्चिमी फैशन के रंग में रंगे हुए होंगे । मुझे तो उनके सामने जाते हुए भी लज्जा आएगी। इसी प्रकार विचार करते करते गायत्री ने दो दिन व्यतीत कर दिये ।

आज चिरकाल के बाद गायत्री ने बड़े चाव से स्नान किया । वस्त्र बदले। बनाव शृंगार किया और उमंगों भरे दिल से पति की प्रतीक्षा में बैठ गई ।

परन्तु उसके मन को चैन कहां । वह बार बार कमरे के झरोखे से बाहर झांकती । साधारण सी आहट पर उसे अपने पति के आने का आभास होता । काफ़ी प्रतीक्षा के पश्चात ज्ञानशंकर एक अंग्रेज़ नवयुवती के साथ घर पहुंचे । गायत्री ने उन्हें किवाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को ओट से देखने लगी। यह नवयुवती कौन होगी। शायद उनकी कोई सहपाठिन है या महमान है या फिर भारत की यात्रा पर आई विदेशी युवति आदि आदि।

वह अपने कमरे में इस प्रतीक्षा में बैठी रही कि ज्ञानशंकर माता-पिता और दूसरें निकट-सम्बन्धियों से मिलने के पश्चात् सीधे उसके पास आएंगे और फिर वह उनसे जी भर कर बातें करेगी। परन्तु यह आशा आशा ही रही। वास्तविकता में परिवर्तित नहीं हुई।

जब ज्ञानशंकर ने दयाशंकर को मिस रोज़ से विवाह करने का हाल बताया तो उन्हें बहुत दुख हुआ परन्तु अब चारा क्या था ? और कोई एक कारणों से उन्होंने उसे कुछ भी कहना उचित न समझा।

लाला दयाशंकर की एक और कोठी नगर से बाहिर थी। ज्ञानशंकर मिस रोज़ के साथ इसी कोठी में रहने लगा।

साधारण से प्रयत्नों से ही ज्ञानशंकर लखनऊ के एक बहुत बड़े हस्पताल का इंचार्ज बन गया। अब वह पूर्णतया पाश्चात्य सभ्यता में रंग चुका था। उसका रहन-सहन और पहनावा, खान-पान सब पाश्चात्य समाज के अनुकूल ही बन गया था। कुछ दिनों में ही ज्ञानशंकर और उसकी नवविवाहिता पत्नी का परिचय पास पड़ोस के उच्चाधिकारियों से हो गया और उनका आपस में आना जाना हो गया।

मिस्टर कर्ज़न लखनऊ सब-डिवीज़न के रेज़ीडैंट इंजीनियर थे। उनका बंगला ज्ञानशंकर के बंगले के बिल्कुल समीप ही था। वह अभी अविवाहित ही थे। ज्ञानशंकर के यहां वे अक्सर आने लग गए और घंटों बातचीत चलती रहती। कहने का तात्पर्य उनका अधिक समय ज्ञानशंकर की कोठी में ही कटता।

एक दिन ज्ञानशंकर एक डिनर में सम्मिलित होने के लिये गए। वह अपनी धर्मपत्नी को भी साथ ही ले जाना चाहते थे परन्तु अस्वस्थ होने के कारण वह उनके साथ न जा सकीं और ज्ञानशंकर को विवश हो कर अकेले ही जाना पड़ा। वह निश्चित समय पर डिनर के लिये पहुँच गए परन्तु दुर्भाग्यवश किसी मृत्यु के कारण डिनर स्थगित हो गया। इसलिए सभी आमंत्रित अतिथि अपने अपने घरों को वापस लौटे। ज्ञानशंकर जब लौट कर अपनी कोठी के दरवाज़े पर पहुंचे तो उसने देखा कि बिजली के प्रकाश से कमरा जगमगा रहा है। उसे यह देख कर कुछ आश्चर्य हुआ। क्योंकि वह जाते समय बत्ती बुझा गया था। उसे संदेह हुआ कि कहीं उसकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य ज्यादा न बिगड़ गया हो जिसके कारण उसने नौकर को डा० के पास भेजा हो।

इसी उधेड़बुन में दरवाज़ा खुलवाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के स्थान पर उसने पर्दे में से झांक कर देखा। अन्दर का दृश्य देख कर उसके पांव तले की ज़मीन फिसलने लग गई। उसे लगा कि वह पृथ्वी में धंसता चला जा रहा है। उसका शरीर पानी पानी हुआ जा रहा था। ओंठ फड़क उठे। आंखें क्रोध से लाल लाल हुई जा रही थीं। उन्होंने क्या देखा। विश्वासघात का सजीव चित्र! उसकी पत्नी मिस रोज़ उनके परम मित्र कर्ज़न से प्रेम व्यापार में तल्लीन थीं। उसने देखा परन्तु उसे विश्वास न हुआ। फिर देखा। वही चित्र फिर आंखों में उभरा। उसके माथे पर बल पड़ गए। योतरियां चढ़ गईं। उसकी मुठियां प्रहार से शीशों को चकनाचूर करना ही चाहती थीं परन्तु अचानक उसे एक झटका लगा। उसका क्रोध एकदम शांत हो गया। उसके पांव एकदम शहर वाले मकान की ओर लौट चले जहां गायत्री उसकी याद में बैठी अपना जीवन बिता रही थी।

अंधेरी रात में बियाबान सड़कें उसकी पदचापों से जाग गई थीं। वह आगे ही आगे बढ़ता गया। इधर मकान में गायत्री अभी भी जाग रही थी, मानो किसी की प्रतीक्षा में बैठी हो। उसे स्वप्न आ रहा था। ज्ञानशंकर मिस रोज़ से रूठ कर उसके पास आया है। उससे प्रेम निवेदन कर रहा है। वह कह रहा है गायत्री मुझे क्षमा कर दो। मुझे पश्चिम की तड़क-भड़क ने भुला दिया था। आज मेरी आंखें खुल गई हैं। मैं तुम से क्षमा मांगने आया हूँ। क्षमा कर दोगी न?

तभी किवाड़ पर किसी ने दस्तक दी। गायत्री हड़बड़ा कर उठी। इतनी रात गए कौन उसका किवाड़ खड़खड़ा सकता है। भयातुर वह किवाड़ की ओर बढ़ी। शीशे से झांक कर देखा। उसे लगा ज्ञानशंकर बाहर खड़ा किवाड़ खोलने के लिये उससे आग्रह कर रहा है। उसे विश्वास न आता था। स्वप्न है या वास्तविकता? उसने एक बार आंखें मल कर देखा उसी प्रकार जैसे ज्ञानशंकर अभी अभी मिस रोज़ को छोड़ कर आया था। सचमुच ज्ञानशंकर की आवाज़ उसके कान में पड़ी! "गायत्री, ज़रा किवाड़ खोलो।"

उसने धीरे से किवाड़ खोला तो ज्ञानशंकर को सामने पाकर वह हतप्रभ हो गई। उसे अब भी इस वास्तविकता में संदेह लग रहा था। जब उसे पूर्ण आभास हुआ तो वह ज्ञान के पांव छूने के विचार से नीचे की ओर झुकी परन्तु ज्ञान ने उसे बाहों में थाम लिया और बाहुपाश में जकड़ लिया। दोनों के नेत्रों से अविरल अश्रुधारा बह रही थी। गायत्री आज फूली न समाती थी। उसका छिना हुआ सुहाग उसे फिर से मिल गया था। पूर्व की सभ्यता पश्चिम की तड़क-भड़क पर विजय पा गई थी।

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri 76222

एक जीव-वैज्ञानिक लेख

जिसने हमें ज्योति दिखाई

जगदीश प्रसाद अग्रवाल

रविशशि उड्गन हमारे लिये प्रकाश के स्रोत । यदि हैं प्रभाकर की किरणों में प्रखरता होती हैं तो उसी से प्रकाश लेने वाले सुधाकर की रश्मियां शीतल और सुन्दर होती हैं। मरू भूमि की प्रखर दोपहर के प्रकाश और पूर्णिमा की रात्रि के धीमे प्रकाश में बड़ा अन्तर होता है। निर्जीव वस्तुओं में बहुतेरे ऐसे पदार्थ हैं जैसे रेडियम, यूरेनियम, थोरियम तथा अन्य विकीर्णशील तत्त्व, फासफोरस, बेरियम कार्बोनेट, बेरियम सल्फेट, कैल्सीयम सल्फाईड आदि जिनसे प्रकाश की रेखाएं निकलती हैं । क्वारटजस् (Quartz) के टुकड़े जब एक दूसरे से टकराते हैं तो उनसे चमक पैदा होती है। अबरक (Mica) की चादरों को चीरने पर चमक के दर्शन होते हैं । चकमाक (flent) की चमक से तो हम सब परिचित हैं ही --

'ज्यों तिलमाहीं तैल है ज्यों चकमक में आग'--हीरों में प्रकाश होता है । कई बार खांड के डलों को भी चमकते हुए देखा गया है । कई ऐसे रासायनिक घोल हैं जिनमें से यदि ओज़ोन (ozone) गुजारा जाय तो रोशनी की तीखी किरणें उत्पन्न होती हैं। घड़ी के डायल पर जीन्क सल्फाईड (zinc sulphide) या बोरियम सल्फाईड चमक उत्पन्न करता है । चमकने वाले रोगन होते हैं । कई गैसों को जैसे नीओन (Neon) आरगोन (Argon) नाइट्रोजन (Nitrogen) आदि को वायु रहित (vacuum) नलियों में पहुंचा कर यदि विद्युतीय उत्तेजना प्रदान की जाये तो यह गैस चमचमाते रंगबरंगे रंगों की हमारी आंखों के सम्मुख होली खेलती है। पारे या सोडियम के वाष्प (बुखारात) (vapours) के दीप की दीप्ति तो अब प्रयोगशालाओं में आम देखी जा सकती है। कर्णातीत ध्वनि (supersonic sound) की लहरें यदि किसी चीज से टकराती हैं तो प्रकाश उत्पन्न करती हैं। कई बार चमकदार मांस और चमकदार मानवीय मूत्र के बारे में भी सुना गया है ! किन्तु इन सब के इलावा बहुत से ऐसे जन्तु और पादप भी हैं जो तमसिन्धु में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोक बनाकर जीवन अर्पित कर रहे हैं तथा विश्व का तम दूर करने के लिये संसार के कल्याण हित शमा बन कर अहर्निश जलते रहते हैं। शायद मनुष्य को अन्धेरे से उजाले की ओर लाने के लिए।

प्रकाश एक प्रकार की उर्जा है और साधारणतया प्रकाश के साथ गर्मी का उत्पादन आवश्यक है किन्तु कितनी अद्भुत बात है कि जन्तुओं का यह प्रकाश ठंडा होता है इसके साथ किसी प्रकार की उर्जा (Energy) का उत्पादन नहीं होता। इन सुलगते हुए शोलों को बेशक आप अपनी मुट्ठी में बन्द कर लीजिये क्या मजाल कि आपके हाथ में जरा भी तपिश आ जाये। जन्तुओं में प्रकाश का प्रवाह अविरल नहीं होता और न हीं उनके प्रकाश की लौ स्थिर होती है। उनकी चमक और चौंध तो आपसे आंखमिचौनी खेलती है। उनकी लौ टिमटिमाती है। कभी क्षण भर के लिए कभी कुछ और देर के लिये। कई जन्तुओं में केवल उनके प्रजनन काल में इस दीप्ति के दर्शन होते हैं। जन्तुओं में यह ज्वलंत आभा किसी विशेष तापमान पर आती है जो कि हर जन्तुओं के लिये अलग होता है। आकसीजन की उपस्थिति में एक प्रोटीन ल्यूसीफिरीन (Luciferin) पर ल्यूसीफिरेज़ (Luciferase) की प्रतिक्रिया-स्वरूप इस प्रकाश का सर्जन होता है। जन्तुओं के शरीर से उत्पन्न इस प्रकाश में एक्स किरणों (X-rays) का प्रभाव नहीं होता और इस प्रकाश की किरणें लकड़ी, कागज, चमड़ा और मांस को पार नहीं कर सकतीं। फोटोग्राफी की प्लेट को प्रभावित करने के लिये भी इस प्रकाश की काफी मात्रा में आवश्यकता होती है।

जीव जन्तुओं में आग की रंगीन और सुखकर लपट ने यदि कहीं आश्चर्य चकित मनुष्य को प्रकृति के इस स्तुत्य कार्य की सराहना को प्रेरित किया तो कहीं इस असाधारण खेल ने उसे असाधारण भ्रम के गड्ढे में धकेल दिया। जंगलों में गीली लकड़ी या पानी के आसपास मरी हुई मछलियों के सड़ने से रासायनिक प्रतिक्रिया के कारण उत्पन्न हुई अग्नि उसे भूत प्रेतों और पिशाचों का अभिशाप स्वरूप दिखाई देने लगी। गर्मी की गरम रात को दलदली जमीन में पौधों और पत्तों के गलन सड़न से निकली हुई मिथेन (Methane) गैस के कारण दलदल से उठने वाले आग के छल्लों में उसे किसी छलिया की छवि के दर्शन होने लगे। उसे क्या पता कि अनेक ऐसे पौधे भी हैं जिनके पत्तों से रोशनी फूटती है और अनेक ऐसी तितलियाँ भी हैं जिनके पंखों से प्रकाश की रेखाएं फिसलती हैं। यह बात दूसरी है कि हमारी आंखें उस रोशनी को देख पाती हैं अथवा नहीं।

मनुष्य ने प्रकृति के इन जगमगाते दीपों से खूब लाभ उठाया है। दक्षिणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीका में स्त्रियां कुछ गुबरैले (Beetles) का उपयोग अपने केशों में गूंद कर चमचमाते हुए हीरों की भांति करती हैं। कई बार लोग इन नन्हें कीटों को साफ बोतल में भर कर उससे लालटेन का काम लेते हैं। कुछ ऐसे जन्तुओं को शरीर पर रगड़ने से कृत्रिम और अस्थाई चमक पैदा की जाती है। चमकने वाले जन्तुओं के पिंड को मछली पकड़ने वाले अपने कांटे पर लगा कर गहरे समुद्र की मछलियों को पकड़ने के लिये प्रलोभन के रूप में प्रयोग करते हैं। कुछ लोग १/२ प्रतिशत अगर जैली (Agar jelly) में सागरीय जल मिला कर दो प्रतिशत पेपटोन (peptone), एक प्रतिशत गिलेसरीन (glycerine) और कुछ पिसा हुआ चूना मिला कर एक शीशे की नाली में भर लेते हैं। कुछ समय बाद इनमें चमकने वाले बकटिरिया आ जाते हैं। इस नली में यदि शुद्ध वायु नियमित रूप से मिलती रहे तो इस लैम्प से निरंतर शीतल हरी लपट फूटती रहती है। जापान में लोग जुगनुओं को बेचने के लिये ही पालते हैं। वहां कीयोटो (Kyoto) के निकट बीवा झील (Biwa lake) पर एक वार्षिक उत्सव होता है जैसे हमारे यहां वन महोत्सव। इस ज्योतिपर्व पर बहुतेरे नर-नारी जुगनुओं से जड़ी चादरों को ओड़े, चमकने वाले जन्तुओं की लालटेन हाथ में लिये समारोह में सम्मिलित होने के लिये आते हैं। झील के पानी की छाती पर बिछी छोटे छोटे दानो (Noctiluca: Protozoa) की विस्तृत चादर, जिनके आधसार (Cytoplasm) में सभा में प्रकाश कण बरबस बाहर निकलने को एक दूसरे से होड़ लगाते हैं अपने पल्लों से नीर के मुख को ढांप लेती है। झील के आस पास के वृक्षों पर जुगनु तथा दूसरे चमकने वाले जन्तुओं के झुंडों के झुंड इस प्रकार टिमटिमाते हैं जैसे वृक्षों की टहनियों और पत्तों पर चिपके छोटे-छोटे रंग बिरंगे बल्ब जलते और बुझते हों। कल्पना कीजिये उस दृश्य की जबकि उत्सव के अन्त में असंख्य चमकने वाले जन्तुओं को आकाश में एक साथ छोड़ा जाता है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारत में शान्ति-दूत कबूतरों को।

अपनी चमक से कुछ जन्तु दीप और शलभ की तरह अपने शिकार को मोहित कर लेते हैं। और उन्हें आसानी से अपने जाल में फंसा लेते हैं। तीव्र प्रकाश का आकस्मिक चौंधा कभी कभी शिकारी शत्तु को इतना भयभीत कर देता है जितना कि वर्षा ऋतु में आकाशीय विद्युत की अचानक कौंध एक बच्चे को। सागर की गहराइयों में घूमती हुई ऐंगलर मछली अपने शरीर के अगले भाग में एक चुंधिया देने वाली टार्च लिये फिरती है। ज्योंही किसी जन्तु का मन उस टार्च की रोशनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर फिसला कि मछली उसे हजम कर [illegible] पैरों पर [illegible] होते हैं। यह तेज पुंज जाती है। यही नहीं जन्तुओं की यह धमक कई बार शत्रु के आकर्षण का कारण होती है जिससे कई कीड़े स्निोफोरस् (Ctenophores) जैली फिश (Jelly-fish) और प्रजीवा (Dinoflageltas) आदि शत्रु को टरखा जाते हैं। रोशनी के कारण यह जन्तु अन्धेरे में आपस में एक दूसरे की ठीक ठीक पहचान कर लेते हैं जिससे उनके सामाजिक संगठन में कोई बाधा नहीं आती। समुद्री कीड़ों, गुबरेलो और जुगनू में प्रकाश की भीनी रेखाओं से प्रेमिका को बांध लिया जाता है और उदधि-निवासी अपने चमचमाते शरीर का दीपक संजोए सागर के अन्धकारमय निचले तले पर हर रात दीवाली मनाते रहते हैं।

कई जन्तु दूसरों का प्रकाश चुरा कर अस्थाई और पराये प्रकाश पर भी काफी घमंड करते हैं। भोजन के रूप में जुगनु खाने वाले चमगादड़ों के दांत फुलझड़ियों की तरह चमकते होते हैं। निशाचर बाज (Night hawk) की चोंच पर चमक पुती हुई होती है। कई पक्षी अपनी चोंच और पंखों को चमकने वाले बेकटीरिया से रगड़ कर अपनी उधारी ज्योत्स्ना की बड़ी शेखी मारते हैं। पानी में चलने वाली बत्तखें (water fowls) नन्हें चमकीले एककोषीय जीवों को चुन कर उनके लिये प्रकाश की लाट भी होती है और शृंगार का आभूषण भी।

चमकने वाले जन्तुओं में सर्वप्रथम गणना बेकटीरिया की होती है। यह जीवाणु इतने सूक्ष्मदर्शी होते हैं कि एक क्यूबिक मिलीमीटर में करीब डेढ़ अरब जीवाणु समा जाते हैं। एक जीवाणु को देख कर इनमें चमक का पता नहीं लगाया जा सकता। इनमें चमक का भान तभी होता है जब बहुत बड़ी संख्या में हों। इन चमकने वाले बकटिराओं की अनेक जातियां जोहड़, तालाब, नदी और समुद्र के जल में पाई जाती हैं। इन बेकटरियाओं को कृत्रिम रूप से यदि किसी दूसरे जन्तु के शरीर में प्रवेश करा दिया जाये तो उस जन्तु के शरीर में चमक पैदा हो जाती है। कुछ जन्तुओं जैसे रेतीले पिस्सू (sand flees) के शरीर पर यह जीवाणु स्थायी रूप से रह कर चिंगारी सी चमकते हैं। कई बार मेंढ़क, कच्छुए और कई जन्तुओं में इन जोवाणुओं की छूत के कारण चमचमाहट देखी गई है। फ़फून्द (Fungi) की कई जातियां प्रकाश सर्जन करती हैं और जिस भी वस्तु को यह लग जाती है वही रोशनी उगलना आरम्भ कर देती है। एक कोषीय जन्तुओं के बीसों प्रति निधि प्रकाश की हल्की हल्की मुस्कान बिखेरते हैं। इंगलैंड के तट के साथ सागर में इनके नये नमूने देखने को मिलते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उधर से कोई [illegible] नहीं हीरे मोती उसे चारों ओर से घेर कर एक अनुपम दृश्य उत्पन्न करते हैं। स्पंजों में एक दो सदस्य चांदनी बिछाते हैं। प्रकृति ने चमकती हुई सिकता की सर्वाधिक मात्रा सीलन्ट्रटा (Coelentrata) समुदाय पर फैंकी है। बहुत से जन्तुओं के, जैसे जुगनु, ब्रिटलस्टार, टीनोफोर, क्रस्टोशिया आदि, अण्डे और बच्चों में भी भड़कीलापन होता है।

वास्तव में आस्थिकाओं (vertebrats) और अनस्थिकाओं (Invertebrats) में प्रकाश उत्पन्न करने वाले जन्तुओं की या आसमान से उड़ कर आए सितारों की इनकी बड़ी सूची है कि उन सब के इस लेख में नाम लिखने भी सम्भव नहीं हैं। जैली फिश (Jelly fish), कोरल (coral) टीनोफोर (ctenophore), समुद्री कलम (sea-pen), केंचुए तथा इसके अनेक सम्बन्धी ! झींगा मच्छी (Prawn), कान खिजूरे सीपी, घोघे आदि (Nudi branchs) स्टार फिश (star fish) ब्रिटल स्टार (Brittle star), उत्पादक (springtails) मछली, गुबरैल, पाइरोसोमा (Pyrosoma), एसीडियनज् (Acidians) आदि कितने जन्तु हैं जो संक्षेप में संसार को देदीप्यमान करने की चेष्टा में लीन हैं। जन्तुओं में प्रकाश की उत्पत्ति वैसे तो स्नायुसंस्थान (Nervous system) के अधीन होती है किन्तु विद्युतीय उद्दीपन तथा कुछेक हारमोन जैसे एडरीनेलीन (Adrenalin) की सहायता से भी प्रकाश का सर्जन होता है। जब प्रकाश उत्पन्न करने वाली मछली के शरीर में एडरीनेलीन का इन्जेक्शन दिया जाता है तो इसके शरीर में प्रवेश करते ही द्रव्य के साथ साथ प्रकाश की ज्योति फैलती चली जाती है। कौन नहीं जानता कि जब संध्या प्रकृति की आंख मूंदना चाहती है और शर्वरी अपना पल्ला फैलाना आरम्भ करती है तब परवाने और जुगनू को देख कर प्रकृति की इस मुक्त देन का सुलभता से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। महाकवि इकबाल के शब्दों में ही --

परवाना इक पतंगा,
जुगनू भी इक पतंगा
इक रोशनी का तालब,
इक रोशनी सरापा।

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्दूर की होली

प्रो० केशव शर्मा

पहला दृश्य

स्थान.....शिविर .।

(समय.....प्रभात ।

(मुल जन-कोलाहल जिस में 'मेवाड़ नरेश की जय' 'महाराणा प्रताप की जय' सामूहिक घोष निरन्तर सुनाई दे रहा है ।

कोलाहल शनैः शनैः शून्य में विलीन । मन्त्र मुग्ध कर देने वाले वीररसपूर्ण संगीत के साथ वीणा और सहवाद्य मृदंग की ध्वनि । मृदंग और वीणा की ध्वनि इस सारे दृश्य में कहीं अतिमन्द कहीं कुछ तीव्र रूप में होती रहती है । शिविर में, शक्ति सिंह राजपूती वीर वेष में घूम रहा है। आकृति में वीरता और यौवन का अपूर्व समन्वय है । गीत को ध्यान से सुनता है ।)

गीत

विजय के बीजमन्त्र गाओ।
कि प्रतिपद बढ़ते ही जाओ ।
घोर निराशामयी निशा गई ।
मधुर मधुमयी उषा आ गई ।।
साहस-सरिता में सुस्नान कर ।
बलि होते जाओ ।।
विजय के बीजमन्त्र गाओ ।.....
कमल-लोचना स्वर्णिम-केशा ।
किरण-तन्तुपट-सुन्दर वेषा ।।
कहती है मेरे समान ही ।
सेनानी ? बढ़ते जाओ ।।
विजय के बीजमन्त्र गाओ ।.....
कल-कलरव-संकलित नूपुरा ।
सूर्यमुखी तमध्वंसिनी पुरा ।।
तेजस दे रही प्रेरणा ।
अरि को दूर भगाओ ।।
विजय के बीजमन्त्र गाओ ।.....

(गीत समाप्त । शान्ता का प्रवेश) ।

शान्ता—सुना आपने कितना ओज भरा गीत था यह ।

शक्तिसिंह—(व्यंगभरी हंसी के साथ) हां सुना, विजय के बीजमन्त्र को, किन्तु अब नहीं सुना जाता । शान्ता, लाओ दो मुझे मेरी तलवार । आज चिरकाल के उपरान्त समय मिला है । बहुत दिनों से जलती हुई अपमान की ज्वाला को आज उसके घने रुधिर से शान्त कर दूंगा ।

शान्ता—नहीं यह उचित नहीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति—क्यों ?

शान्ता—क्या आप उस सूअर के शिकार वाली घटना को भूल नहीं सकते ?

शक्ति—(क्रोध से लाल) नहीं, कदापि नहीं, क्योंकि धनुष से फेंका हुआ तीर कभी वापिस नहीं लौटता, इसी प्रकार व्यंग्योक्ति के तीखे तीर के घावों की उपेक्षा करना भी इतना सरल नहीं ।

शान्ता—बड़े भाई की इस महान पराजय से क्या आप प्रसन्न होंगे ?

शक्तिसिंह—अवश्य, क्योंकि मेरे हृदय में अपमान की भयंकर ज्वाला प्रतिक्षण प्रचण्ड हो रही है ।

शान्ता—क्या आप अपनी मातृभूमि की परतन्त्रता गौरव समझते हैं ?

शक्तिसिंह—मेरी जन्मभूमि, वह मुझे न्याय न दिला सकी । मेरे हाथों मरे सूअर को महाराणा ने अपनी शूरता का बल कहा ।

शान्ता—प्रत्येक बात पर शान्त होकर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए । मेवाड़ के ही नहीं सारे भारत के असंख्य जन आप पर धर्मद्रोह और देशद्रोह का कलंक लगाएंगे । आने वाली-पीढ़ियां इस कलंक से कलुषित आपके इतिहास को पढ़ कर उस पर थू थू करेंगी ।

क्या यह अपमान भाई की अपमानजनक बातों से कम होगा और भाई भी फिर बड़े । परिवारों में तो ऐसी कहासुनी प्रायः प्रतिदिन ही होती रहती है ।

शान्ता—(शक्तिसिंह की कमर में खड़ग बांधती हुई) आपका अपने बड़े भाई के विरोध में तलवार उठाना.....।

शक्तिसिंह—तुम क्षत्राणी होने पर भी वास्तव में अबला ही हो शान्ता । अपमान की भयंकर ज्वाला क्षत्रियों के हृदयों को इसी प्रकार जलाती रहती है जिस प्रकार आग स्नेह-सिक्त वार्ता को, जब तक उसका प्रतिकार न हो । पर तुम क्या जानो इस बात को । आज मैं अवश्यमेव प्रतिकार-सुधा का पान करूँगा ।

शान्ता—प्रतिकार, प्रतिकार का यह प्रकार सर्वदा अनुचित है, आयुक्त है । "आग कभी आग से शान्त नहीं होती" प्रतिकार स्नेह से होगा, प्रेम से होगा । कलह, मिथ्या राजद्रोह से और आवेश से यह कदापि सम्भव नहीं । देश पर विपत्ति के काले बादल छाए हैं । भारत के सभी क्षत्रियों को मुगल साम्राज्य ने परतन्त्रता की कठोर शृंखलाओं में जकड़ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना क्षति-दोष बना लिया है। यह है वास्तव में अपमान, प्रतिकार करना चाहते हो तो इस महान कलंक का प्रतिकार करो अपने भाई का साथ दो भारत मां की रक्षा में ।

शक्तिसिंह—क्षत्रिय अपनी आन बान पर मर मिटते हैं । मैं भी क्षत्रिय हूँ । मेरा निर्णय, मेरा विचार सर्वथा अपरिवर्तनीय है । पर यदि मैं बदला न ले सका तो मेरा नाम राजस्थान के इतिहास में कायरों की श्रेणी में लिखा जायगा । शान्ता मुझे जाने दो मैं बदला लूंगा । मैं शक्तावतों की सन्तान हूँ । मुझ में शक्तावतों का रक्त है । मेरा रुधिर खौल रहा है, मुझे विवश कर रहा है प्रतिकार के लिये ।

शान्ता—(कमर में बन्धी तलवार पकड़ कर आंखों में आंसू) (शक्तिसिंह की ओर छलछलाती हुई आंखों से) कुछ तो सोचो भारत मां कठोर बन्धन में पड़ी है । यह आघात उसे असह्य होगा और फिर सिन्दूर की होली ।

शक्तिसिंह—तुम ललना हो लालित्य । भावुकता यह तुम्हारे स्वाभाविक धर्म है, किन्तु क्षत्रिय वीरों की वीरता इतनी मृदु नहीं जो तुम्हारी भावुकता से पिघल जाये । हटो मुझे जाने दो ।

(शक्तिसिंह का प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

स्थान.....वन का एक भाग ।

समय.....अपराह्न ।

(मार्ग में एक निर्मल स्रोत वह रहा है । महाराणा प्रताप थके मांदे उसके किनारे पर विश्राम करने बैठे हैं । कमर में तलवार, प्रभावशाली शरीर । अंग-प्रत्यंग से वीरता की किरणें फूट रही हैं । अकस्मात पीछे से वेगपूर्वक घोड़ा दौड़ाते हुए शक्तिसिंह का आगमन)

प्रताप—(तलवार की मूठ पर हाथ रखते हुए) शक्ति ? मेवाड़ के बाईस सहस्र वीर नवयुवकों के रुधिर का पान कर भी तुम्हारे खड्ग की पिपासा शान्त नहीं हुई ?

शक्तिसिंह—(प्रताप की चरणधूलि लेकर) दादा ! ऐसा न कहो । सचमुच यह व्यंग्य परम असह्य है । आपका पीछा करने वाले युवकों के रक्त से मेरे खड़ग की पिपासा का शमन हो गया है ।

प्रताप—(विचित्र मुद्रा में) मेरा पीछा, यवन मेरा पीछा कर रहे थे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्तिसिंह—हाँ दादा, जिस समय आपके अत्यन्त प्रखर भाले के प्रहार से सलीम का हाथी बिगड़ कर उसे युद्ध क्षेत्र से दूर ले गया था, तभी यवन दस्यु आप पर टूट पड़े थे। आत्म रक्षा के लिये जैसे ही आप वहां से समय पाकर बच निकले, सलीम ने आपको देख लिया। उसी समय उसने आपके पीछे यवन-सैनिक भेज दिये थे। सौभाग्यवश मैंने उन्हें देख लिया और समय देख मौत के घाट उतार दिया।

प्रताप—(भीगे नयनों से) तुमने मुझे ऋणी बना लिया शक्ति ?

शक्तिसिंह—नहीं दादा, मैंने कुछ नहीं किया यह केवल भ्रातृ स्नेह है। इसी ने सब कुछ करवाया है।

प्रताप—मैं इसका प्रतिकार किस प्रकार करूँ।

शक्तिसिंह—(भीगे लोचनों से लड़खड़ाती हुई वाणी में) मेरे पिछले अपराधों को क्षमा कर दीजिए।

प्रताप—(शक्तिसिंह को छाती से लगाते हुए) प्यारे शक्ति ?

शक्तिसिंह—आज मैं आपकी वीरता से बहुत प्रभावित हुआ हूँ, दादा ! आपने शत्रुओं के दान्त खट्टे कर दिये।

प्रताप—शक्ति! हमें पता था कि हमारे पास अच्छे शस्त्र नहीं हैं। हमें इसका भी पूर्ण परिचय था कि शत्रु संख्या में हमसे कहीं अधिक है, परन्तु फिर भी हमारे पास मर मिटने की वे असीम अभिलाषाएं थीं, दृढ़ता के वे अमोघ अस्त्र थे जिन पर भारत के वीरों को महान अभिमान है।

शक्तिसिंह—दादा ! आपने आज रण क्षेत्र में शत्रुओं को बता दिया कि जब सिसौदिया तलवार संभालता है तो कैसा भयंकर तूफान मचाता है।

प्रताप—शक्ति ! यह केवल भगवान एकलिंग और महामाया की ही कृपा है। यह देश का और देश की लाज का प्रश्न था, किन्तु जब तूफान उठता है तो शान्ति से विलीन नहीं होता। भारत में क्षत्रियों की फूट का ज्वारभाटा उमड़ रहा है जिसका परिणाम यह होगा कि आने वाली पीढ़ियां परतन्त्रता के रौरव नरक में सड़ेंगी। और इधर यह सिन्दूर की होली !

पट-परिवर्तन

तीसरा दृश्य

स्थान.....शिविर।

समय.....सन्ध्या।

(मुगल सेनापति के वेश में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सलीम पुत्र सुन्दर मुख पर चैरा है, पास में शक्तिसिंह खड़ा है)

सलीम--शक्तिसिंह, तुम कहां चले गये थे, इतनी देर क्यों हुई ?

शक्तिसिंह--शत्रुओं की दुर्दशा देखने ।

सलीम--तुम्हारा घोड़ा कहां है ।

शक्तिसिंह--युद्ध में मारा गया ।

सलीम--और तलवार ।

शक्तिसिंह--रण क्षेत्र में टूट गई ।

सलीम--शक्तिसिंह, तुम जानते हो कि सच्चे क्षत्री जान जाने पर भी झूठ नहीं बोलते ।

शक्तिसिंह--क्यों नहीं, सच्चे क्षत्रियों की यही पहिचान है ।

सलीम--तुम जो कुछ भी कह रहे हो वह मेरी आंखों में धूल झोंकना है, पर मैं इतना सीधा नहीं हूँ ।

शक्तिसिंह--आपको यदि मेरे विषय में कुछ सन्देह है तो आप पूछताछ कर सकते हैं ।

सलीम--(क्रोध से लाल होकर) और यदि यह सब झूठ निकला तो तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दिया जायगा ।

शक्तिसिंह--कानून का रास्ता आपके लिये हमेशा खुला है ।

सलीम--शक्तिसिंह, मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ, मुझे तुम्हारे बारे में कोई गलतफहमी नहीं हो सकती, फिर भी आज की घटना मुझे मालूम है, तुम सच सच कह दो, मैं मुगल हूँ तुम से वायदा करता हूँ कि मेरी तरफ से तुम्हें कोई डर न होगा ।

शक्तिसिंह--मेवाड़ की ओर वापिस लौटते हुए मेरे भाई का घोड़ा चेतक मर गया था । मैंने उन्हें अपना घोड़ा दे दिया और उनका पीछा करने वाले मुगलों के साथ लड़ते हुए मेरी तलवार टूट गई।

सलीम--(चेतावनी देते हुए) गद्दारों की सज़ा मौत है ।

शक्तिसिंह--जिसे आप गद्दारी कहते हैं वह मेरे लिये परम देश भक्ति है।

सलीम--खैर, मैं तुम से वादा कर चुका हूँ कि मुझ से तुम्हें कोई नुकसान न होगा । छावनी छोड़ कर सुबह से पहिले यहां से दूर निकल जाओ।

शक्तिसिंह--(स्वगत) सिन्दूर की होली

(शक्ति का प्रस्थान)

पट-परिवर्तन

चौथा दृश्य

स्थान.....शक्तिसिंह का भवन

समय.....आधी रात ।

(शान्ता की अवस्था अनुमानतः २२ वर्ष की है । उसके मुंह पर ओज है, प्रभाव है, कान्ति तथा लावण्य है । आसमानी रंग की साड़ी में लिपटा उसका गोरा मुख नीलगगन में चांद सा लग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है। अपनी सहेली कान्ता के साथ वह भवन के प्रकोष्ठ की खिड़की के पास उदास किसी चिन्ता में डूबी है)

शान्ता ——(अचानक ध्यान टूटता है) कान्ता अनर्थ हो गया, दम घुट रहा है ।

कान्ता——राजकुमारी ? आज न जाने आपको क्या हो गया है आप सुबह से खोई खोई सी उदास बैठी हो ।

शान्ता——यह देखा, हल्दीघाटी में पड़े मेवाड़ के असंख्य वीर घायलों की आह कराह यहां स्पष्ट सुनाई दे रही है ।

कान्ता——इतनी दूर यहां घायलों की आहें, कहां आप । यह क्या कर रही हैं ?

शान्ता——नहीं कान्ता मैं ठीक कह रही हूँ ठीक बिलकुल ठीक, उन बिचारी असंख्य नारियों की आज क्या दशा होगी जिन्होंने बड़े उत्साह से अपने पुरुषों को रण क्षेत्र में भेजा था और अब विधवा, पुत्रहीन और भ्रातृहीन हो गई होंगी । उनके पुरुष रण में वीर गति पाकर उनसे दूर बहुत दूर उस पार अनन्त काल के लिये सो गये होंगे ।

कान्ता——राजकुमारी, ज़रा अपने को सम्भालो ।

शान्ता——(एक ठण्डी आह भरती हुई) न जाने कितने घरों के दीपक आज समय से पहिले ही बुझ गये । न जाने अरावली पर्वतमाला के उन छोटे बड़े राज भवनों की कितनी सुन्दरियों का सिन्दूर पुंछ गया होगा, चूड़ियां टूट गई होंगी और अब वे अपने पतियों के साथ चिता में भस्म होने जा रही होंगी ।

कान्ता——(बात टालती हुई) राजकुमारी ! यह सती प्रथा क्या बुरी नहीं है ? एक जीवित शरीर का एक मृत के साथ स्वाहा हो जाना तो प्रत्येक दृष्टि से हानिकर ही है ।

शान्ता——नहीं, तुम सत्य से बहुत दूर हो। केवल चर्म चक्षुओं से मानव के गम्भीर हृदय का ज्ञान प्राप्त करना कठिन है ही नहीं असम्भव भी है । वियोग की ज्वाला चिता की ज्वाला से सौ गुना अधिक जलाने वाली है ।

कान्ता——राजकुमारी, घोड़े के टापों की आवाज़ आ रही है ।

(दरवाज़े पर खट-खट)

शान्ता——दरवाजा खोल दो ।

कान्ता——जो आज्ञा (दरवाज़ा खोलती है) (शक्तिसिंह का प्रवेश)

शक्तिसिंह——शान्ता ! (आलिंगन करते हुए) तुम जीत गई और मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हार गया। मैंने प्रतिकार कर लिया।

शान्ता—आप कितने अच्छे हो, मुझे पहिले ही प्रतिकार का पता लग गया था। केवल महाराणा और आप ही वापिस लौटे न युद्ध क्षेत्र से। संसार के समस्त समर केवल सिंदूर की होली हैं और कुछ नहीं। युद्धों से किसी भी समस्या का समाधान न आज तक हुआ और न होगा।

शक्तिसिंह—सचमुच शान्ता! युद्ध केवल सिन्दूर की होली के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, कुछ नहीं।

● ● ●

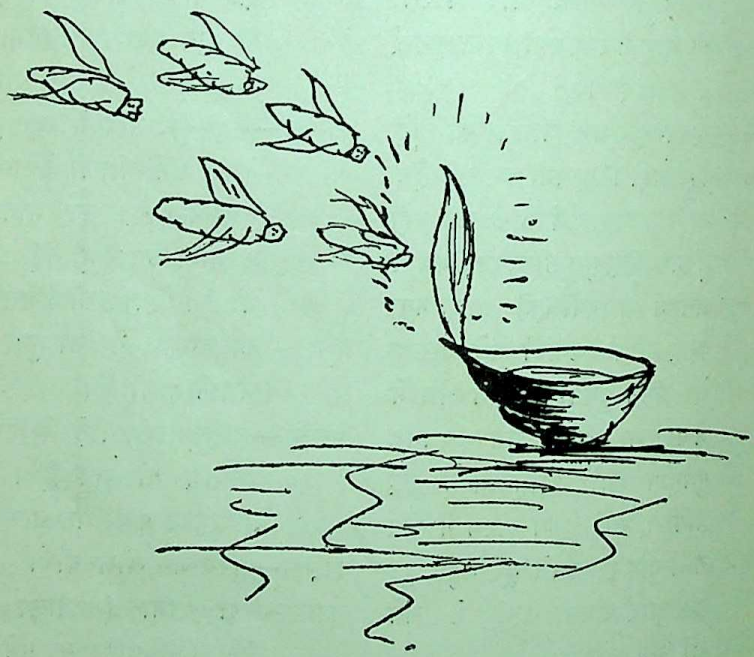

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाहर अमर है !

देश का नायक जवाहर अमर है ।
शान्ति का गायक जवाहर अमर है ।
वह जगा था सौ बसन्तों की मधुर मुस्कान लेकर
वह उगा था शान्ति-समता का नया सम्मान लेकर
वह बढ़ा था त्याग, तप संघर्ष औ' बलिदान लेकर
रुक गया लेकिन हमें "आज़ाद हिन्दुस्तान" देकर
देश-निर्माता जवाहर अमर है ।
जन-परित्राता जवाहर अमर है ।
चाहता था वह—मनुजता शान्ति सुख के गीत गाए
कामना थी——युद्ध का संकट यहां से बीत जाए
यत्न था——इन्सान इस दारिद्रय से बस जीत जाए
स्वर्ग हो जाय धरा, समृद्धि का संगीत छाए
स्वप्न-द्रष्टा वह जवाहर अमर है.।
शान्ति-स्रष्टा वह जवाहर अमर है ।
प्रगतिशील, स्वतन्त्र भारत उस तपस्वी की निशानी
गा रहा गुण आज उसके विश्व का हर एक प्राणी
जब तलक ऊंचा हिमालय और गंगा में रवानी
तब तलक ज़िन्दा रहेगी यह जवाहर की कहानी
विश्व का प्यारा जवाहर अमर है ।
देश-ध्रुव तारा जवाहर अमर है ।

प्रो. संतोष कौशल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में आधुनिक शिक्षा-प्रणाली का विकास

हरिचन्द पाराशर

भारत में आधुनिक शिक्षा-प्रणाली का आरंभ अंग्रेज़ी राज्य के आरंभ से माना जाता है। इंग्लैंड की शिक्षा सम्बन्धी नीतियों की प्रतिक्रिया भारत मे होती रही। यूं कहा जा सकता है कि कारण इंग्लैंड में था, और कार्य भारत में। कारण और कार्य की यह असंगति हमारी शिक्षा प्रणाली के दोषों का कारण बनी।

विक्टोरिया युग के अंग्रेज़ी विद्वानों का यह मत था कि उनकी भाषा, साहित्य और उनकी शिक्षा-प्रविधियां ही विश्व भर में सर्वोत्तम हैं, इसलिये भारत को भी वही भाषा और शिक्षा–प्रविधियां अपना लेनी चाहिएं। इसके साथ ही इस युग के भारतीय मनीषियों की आंखें भी पश्चिमीय प्रकाश के प्रथम परिचय से चुंधियाई हुई थीं, वे भी यही मानते थे, कि भारत को इंग्लैंड की भाषा-शिक्षा प्रविधियों को अपना लेना चाहिए। जिन भारतीयों ने अंग्रेज़ी भाषा-शिक्षा ग्रहण कर ली, उन्हें झट से सरकारी नौकरी मिल गई। इस प्रलोभन ने लड़खड़ाती चाल से चल रही देशी शिक्षा प्रणाली पर कुठाराघात किया, और परिणामतः अंग्रेज़ी शिक्षा प्रणाली स्थापित हो गई।

भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना तो सन् १६०० ई० में ही हो गई थी, परन्तु ईस्ट इंडिया कम्पनी ने एक शताब्दी तक भारत में शिक्षा को अपनी ज़िम्मेदारी नहीं समझा। सन् १६९८ के चार्टर एक्ट में सर्वप्रथम यह अपेक्षित किया गया था कि ईस्ट इंडिया कम्पनी अपने गैरिजनों में पादरियों और स्कूलों की नियुक्ति और स्थापना करे। सन् १६९८ के चार्टर एक्ट की यह मिश्नरी धारा बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे भारत में ईसाई धर्म का प्रचार और अंग्रेज़ी भाषा की शिक्षा का सजातीय सम्बन्ध बना दिया गया। परन्तु इस धारा का तात्कालिक तात्पर्य केवल इतना ही था कि ईस्ट इंडिया कम्पनी के गैरिज़ों में काम करने वाले योरपीय नौकरों के एंग्लो-इंडियन बच्चों को ईसाई धर्म और अंग्रेज़ी शिक्षा दी जाये, और इसी तरह उन गैरिज़नों में काम करने वाले भारतीय कर्मचारियों को भी ईसाईयत और अंग्रेज़ीयत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की शिक्षा दी जाए। इस उद्देश्य से चार्टर-स्कूलों की स्थापना की गई।

सन् १७६५ ई० में, जब ईस्ट इंडिया कम्पनी व्यापारिक कम्पनी के अतिरिक्त एक राजनीतिक सत्ता बन गई, तो कम्पनी ने शिक्षा सम्बन्धी अपने कार्यक्रम में और भी विस्तार किया। फलस्वरूप कम्पनी की तरफ से कलकत्ता, मद्रास और बनारस में संस्कृत कालेज की स्थापना हुई। कलकत्ता मद्रास को प्रथम वर्ष उन्नतीस हज़ार रुपये की ग्रांट दी गई जोकि इतना लगान देने वाली ज़मीन के रूप में 'मद्रसा महाल' के रूप में थी, और बनारस संस्कृत कॉलज को चौदह हज़ार रुपये की। यह दोनों संस्थाएं शिक्षा-नीति के पूर्वीय वर्ग (Orientalist School) का आरंभ थीं। इस वर्ग का यह विचार था कि ईस्ट इंडिया कम्पनी को हिन्दू और मुसलमान शासकों के पदचिन्हों पर चल कर क्लासीकल शिक्षा का प्रचार करना चाहिए, और भारतीयों को अंग्रज़ी शिक्षा देने की शीघ्रता नहीं करनी चाहिए।

सन् १७६५ तक ईस्ट इंडिया कम्पनी मिश्नरियों को धर्म प्रचार की खुली छूट देती रही, परन्तु जब कम्पनी राजनीतिक सत्ता बन गई, उसने धर्म प्रचार की खुली छूट पर पाबन्दियां लगानी चाहीं। जैसे-जैसे कम्पनी का राज्य विस्तृत होता गया, कम्पनी यह अनुभव करती गई कि वह अपने राज्य में स्वयं को धर्म निरापेक्ष रखे।

सन् १७९३ और १८१३ के दौरान कम्पनी और मिश्नरियों के आपसी सम्बन्ध द्वेषपूर्ण रहे क्योंकि कम्पनी अपने राज्य में मिश्नरियों के धर्म प्रचार पर पाबन्दियां लगाती थी। मिश्नरियों ने इंग्लैंड में इस मनोरथ का आंदोलन करवाया। **चार्लस ग्रांट** इस आंदोलन में प्रमुख नेता थे। ग्रांट ने भारतीय समाज के पतन को अतिशयोक्ति पूर्वक ढंग में व्यक्त किया। ग्रांट के अनुसार इस पतन के दो कारण थे, अज्ञान, और समुचित धर्म का अभाव। इस लिए ग्रांट ने सुझाव दिया कि पहले भारतीयों को शिक्षा दो और फिर ईसाई बनाओ। विस्तृत कार्यक्रम में ग्रांट के सुझावों में कुछेक अच्छी बातें भी थीं, जैसे कि उसने सुझाव दिया था कि भारतीयों के अन्धविश्वासों के तिमिर को दूर करने के लिये उन्हें भौतिक विज्ञान की शिक्षा दी जाए और कृषि एवं उद्योग के सुधार के लिये उन्हें यांत्रिक आविष्कारों का प्रयोग सिखाया जाये। ग्रांट का यह विचार था कि भारतीयों को शिक्षा देना इंग्लैंड का नैतिक कर्त्तव्य है। इससे शासक और शासित में समझौते और समन्वय की भावना का विकास होगा। यह एक आश्चर्य की बात है कि सन् १७९२ ई० में ही ग्रांट ने भारतीय शिक्षा प्रणाली का जो दृष्टिकोण दिया, वही चालीस पाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद बैंटिक ने [illegible] को ही भारत की आधुनिक शिक्षा प्रणाली का प्रवर्तक माना जाता है। इन्होंने ही यह स्पष्ट सुझाव दिया था कि कम्पनी को चाहिये कि वह राज्यभाषा के रूप में अंग्रेज़ी का खुले आम प्रचार और प्रसार करे। यह भी इन्हीं का सुझाव था कि शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी को बनाया जाए।

चार्लस ग्रांट कम्पनी का डायरेक्टर रह चुका था, उसे स्वयं भारत का प्रत्यक्ष अनुभव था, वह उन दिनों पार्लिमेंट का मेम्बर था। इसलिये उसकी बातों का महत्त्व प्राप्त हुआ, और सन् १८१३ के चार्टर में शिक्षा सम्बन्धी सुधारों के लिए कुछेक धाराएं बनाई गईं।

इधर सन् १८०६ और १८१३ के दौरान भारत का गवर्नर जनरल लार्ड मिंटो था, वह स्वयं भारतीय संस्कृति का प्रशंसक था। उसका विचार था कि प्राच्य साहित्य का संरक्षण पाश्चात्य राष्ट्रों के लिये भी लाभदायक होगा। ६ मार्च सन् १८११ के अपने मिनट में उसने भारतीय संस्कृति और देशी शिक्षा प्रणाली के प्रोत्साहन की सिफारिश की।

ऐसी परस्पर विरोधी परिस्थितियों में सन् १८१३ में चार्टर एक्ट संशोधन के लिए प्रस्तुत किया गया। उस समय शिक्षा नीति से सम्बन्धित निम्नलिखित समस्याएं सामने आईं :—

(१) क्या मिशनरियों को भारत में कम्पनी के राज्य में धर्म और भाषा के प्रचार की आज्ञा दी जाए ?

(२) क्या कम्पनी को भारतीयों को शिक्षित करने की ज़िम्मेदारी देनी चाहिए। यदि देनी चाहिए तो कम्पनी द्वारा व्यवस्थित की जाने वाली शिक्षा सम्बन्धी गतिविधियां क्या हों।

चूंकि उन दिनों इंग्लैंड में भी 'शिक्षा' को राज्य की ज़िम्मेदारी नहीं समझा जाता था, इसलिये साधारणतया कम्पनी के डायरैक्टरों ने इन बातों का विरोध किया। परिणामतः सन् १८१३ के चार्टर एक्ट की ४३वीं धारा में यह उपबन्धित हुआ :—

> गवर्नर जनरल इन-कौंसिल के लिए यह विधिपूर्वक होगा कि वह कम्पनी के इलाक़ों से घटित लगानों और मुनाफ़ों आदि में से मिलिट्री, सिविल और वाणिज्यिक स्थापनाओं के खर्चों की अदायगी, तथा ऋणों के व्याज के भुगतान के बाद जो फाल्तू रक़म बचे, उस में से प्रतिवर्ष कम से कम एक लाख रुपये की राशि भारतीय साहित्य के नवीकरण और सुधार एवं भारत के विद्वानों के प्रोत्साहन के लिए, तथा भारत में कम्पनी के इलाक़ों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के निवासियों और विद्वानों को शिक्षा देने के लिए इसके बाद इस में उपबन्धित ढंग में खर्च करवाए।

इस धारा में प्राच्य और पाश्चात्य दोनों वर्गों को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न किया गया। इस धारा की महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि कम्पनी ने एक लाख रुपये की राशि को खर्च करने का साधन अपने नियंत्रण में रखना था, अर्थात् शिक्षा के लिये मिशनरियों को प्रोत्साहन देने की बजाय धर्मनिरपेक्ष और सनातनी ढंग में कार्यक्रम चलाया जाना था, वह कार्यक्रम कम्पनी के नियंत्रण में रहना था, इससे '**राज्य शिक्षा प्रणाली**' की नींव पड़ी। परन्तु चार्टर एक्ट की इस धारा में उन ढंगों और साधनों के बारे में विधान नहीं किया गया था जिनके अनुसार एक लाख रुपये की रक़म खर्च की जानी थी। इसलिये १८१३ के बाद इस दिशा में वितर्क और विवाद आरंभ हुए। कम्पनी के आगे सरकारी शिक्षा नीति का कोई दृष्टांत नहीं था, इंग्लैंड में भी उन दिनों सरकारी शिक्षा विभाग नहीं था, इसलिये '**बनाओ-मिटाओ**' (Trial and error) के प्रयोग चलने लगे। १७ जुलाई सन् १८२३ को गवर्नर जनरल-इन-कौंसिल ने बंगाल के लिये 'जनरल कमेटी आफ पब्लिक इन्सट्रक्शन' की नियुक्ति की। इस कमेटी में अधिकांश वही लोग सम्मिलित किए गए जो संस्कृत और अरबी के प्रशंसक थे, इसलिये लार्ड मिंटो वाला प्राच्य दृष्टिकोण कार्यान्वित होने लगा। इस कमेटी ने सन् १८२३ से १८३३ के दौरान संस्कृत और अरबी की पुस्तकों के प्रकाशन कार्य को बड़े पैमाने पर हाथ में लिया, और क्लासिकल विद्वानों को अंग्रेज़ी से क्लासिकल भाषाओं में अनुवाद के लिये नियुक्त किया। इस कमेटी ने कलकत्ते में एक संस्कृत कालेज की स्थापना की सिफ़ारिश की थी। परन्तु राजा राम मोहन राय ने अपने ज्ञापक दिनांक ११ दिसम्बर, १८२३ में इसका घोर विरोध किया। राजा साहिब अंग्रेज़ी शिक्षा के समर्थक थे, ताकि भारतीयों में जागृति आए। इस कमेटी के कुछ सदस्य भी अंग्रेजी के पक्षपाती थे। कमेटी के प्रधान लार्ड मैकाले थे, और वह गवर्नर-जनरल की अगज़ैक्टिव कौंसिल के लॉ-मैम्बर भी थे, वह स्वयं अंग्रेज़ी के पक्षपाती थे। प्राच्य और पाश्चात्य वर्ग का जब यह विवाद अगज़ैक्टिव कौंसिल में पेश हुआ तब लार्ड मैकाले ने अपना प्रसिद्ध मिनट २ फरवरी १८३५ को लिखा। मैकाले के निम्न-लिखित शब्द उसके दृष्टिकोण के परिचायक हैं :—

"a single shelf of a good European library was worth the whole native literature of India and Arabia."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां तक इस कमीटी का प्रश्न था, शक्तिसंगत प्रोत्साहन दिया जाता था। कि संस्कृत और अरबी को धर्म और कानून की भाषा के रूप में पढ़ना चाहिए, मैकाले ने सुझाव दिया कि हिन्दू और मुसलमान कानून को अंग्रेज़ी में संहिताबद्ध कर देना चाहिए। संस्कृत और अरबी भाषा सीखने में समय गंवाने का कोई लाभ नहीं। ७ मार्च सन् १८३५ को लार्ड मैकाले के मिनट को लार्ड विलियम बैंटिक ने स्वीकार कर लिया। तदनुसार यह घोषित हो गया कि कमेटी के सुपुर्द जितनी रक़म की जाए, वह सारी की सारी अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से अंग्रेज़ी साहित्य और विज्ञान का प्रचार करने में खर्च की जाए। आगे के लिए संस्कृत और अरबी की पुस्तकों के प्रकाशन में सरकारी रक़म नष्ट न की जाए। सन् १८४२ में कमेटी के स्थान पर 'कौंसिल ऑफ एजुकेशन' बना दी गई।

बम्बई में पेशवा राज सन् १८१८ में समाप्त हुआ था। पेशवा राज में प्रति-वर्ष पांच लाख रुपये ब्राह्मणों को शिक्षार्थ दिया जाता था। परन्तु अब इस रक़म को बहुत कम कर दिया गया। सन् १८२१ में पूना संस्कृत कॉलेज की स्थापना की गई। बम्बई में गवर्नर अलफिन्सटन के शासन-काल में शिक्षा-नीति में समन्वय की भावना अधिक रही है। वहां संस्कृत, अंग्रेज़ी और मराठी आदि आधुनिक भाषाओं को अंग्रेज़ी को विचार-सामग्री का साधन मात्र समझा जाता था। कैंडी रिपोर्ट के निम्नलिखित शब्द महत्त्वपूर्ण हैं :—

"In a word, knowledge must be drawn from the stores of English, the vernaculars must be employed as the media of communicating it and Sanskrit must be largely used to improve the vernaculars and make them suitable for the purpose."

बम्बई में विवाद संस्कृत और अंग्रेज़ी में नहीं था, बल्कि मराठी और अंग्रेज़ी में था। सन् १८४३ में सर अरिस्कन पैरी 'बोर्ड ऑफ एजुकेशन, के प्रधान बने। उन्होंने सुझाव दिया कि बम्बई को बंगाल का अनुसरण करके अंग्रेज़ी को ही शिक्षा के माध्यम के रूप में अपना लेना चाहिए। परन्तु करनल जर्विस और जगन्नाथ शंकरसेट ने इसका विरोध किया। परिणाम यह हुआ कि कॉलेज शिक्षा के लिये अंग्रेज़ी को माध्यम बनाया गया, और सैकेंडरी शिक्षा में प्रादेशिक भाषा को।

मद्रास प्रैज़िडैन्सी की शिक्षा सम्बन्धी स्थिति भिन्न थी। यह प्रदेश निर्धन था। लोगों में देशी शिक्षा के लिये उत्साह नहीं था। मद्रास के लैफ्टीनैंट गवर्नर थामसन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशी शिक्षा के समर्थक थे। उसके विचार में—

(१) देशी पाठशालाओं की शिक्षा की राष्ट्रीय प्रणाली में सम्मिलित कर लिया जाना चाहिए ;

(२) शिक्षा संबंधी एक स्थानीय उपकर लगाया जाना चाहिए ।

जहां तक पंजाब का प्रश्न है, पंजाब प्रांत १८४९ में कम्पनी राज्य में सम्मिलित किया गया था। १८५४ से पहले पंजाब में सरकारी शिक्षा संस्था एक ही थी, वह अमृतसर में थी, और उसमें हिन्दी, संस्कृत, अरबी, फारसी और गुरमुखी के विभाग थे ।

सन् १८५४ तक शिक्षा-नीति की एक महत्त्वपूर्ण समस्या यह थी कि सरकार द्वारा शिक्षा का प्रबन्ध किसी एक वर्ग विशेष के लिये होना चाहिए, अथवा समग्र जनता के लिये । प्रारंभ में दृष्टिकोण यह रहा था कि सरकार केवल उन वर्गों की शिक्षा का ही प्रबन्ध करे, जिनको राज्य-परिवर्तन से हानि हुई है । इस नीति के अनुसार बम्बई में ब्राह्मणों को, उत्तर-प्रदेश में सामान्य हिन्दुओं को, और बंगाल में मुसलमानों के उच्च वर्गों की शिक्षा का प्रबन्ध किया गया था। इसे ही 'Downward Filteration Theory' कहा गया है । क्योंकि कुछेक प्रभावशाली लोगों को शिक्षित करके शिक्षा आम जनता तक पहुंच जाती है। इस सिद्धांत के प्रवर्तकों का यह भी विचार था कि यदि थोड़े से लोगों को अंग्रेज़ी के माध्यम से अच्छी शिक्षा दे दी जायेगी तो वे थोड़े से शिक्षित लोग आम जनाता को स्वयं शिक्षित कर देंगे । इन थोड़े से अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे लोगों ने प्रादेशिक भाषाओं के साहित्य की रचना की, और इन्हीं के कारण भारत का आधुनिक प्रेस संगठित हुआ ।

सन् १८५३ में कम्पनी का चार्टर एक्ट का नवीकरण के लिये प्रस्तुत किया गया । उस समय एक सिलेक्ट कमेटी ने भारत की शिक्षा नीति का सर्वांगीण सर्वेक्षण किया । उस सर्वेक्षण रिपोर्ट के आधार पर शिक्षा का एक विस्तृत विवरण-पत्र बनाया गया । उस समय बोर्ड ऑफ कण्ट्रोल का प्रधान चार्लस वुड था, इसलिए उस विवरण-पत्र का नाम वुडज़-डेसपेच (वुड-शिक्षा-विवरण पत्र) रखा गया । इसमें एक सौ अनुच्छेद हैं, और शिक्षा सम्बन्धी कई समस्याओं को विस्तारपूर्वक वर्णित किया गया है। इस डेसपेच के अनुसार वृत्तानवी भारत के प्रत्येक प्रांत में एक शिक्षा विभाग नियत किया गया, और कलकत्ता, बम्बई, मद्रास की यूनिवर्सिटियां स्थापित की गईं । इस डेसपेच की एक महत्त्वपूर्ण सिफारिश यह थी कि भारत की प्रादेशिक भाषाओं को सम्पन्न बनाया जाए और शिक्षा में उनका प्रचलन किया जाए। परन्तु इस सिफारिश पर बहुत समय तक कार्यान्विति के लिये ध्यान नहीं गया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार इसके पश्चात् सिफारिश यह की गई थी कि 'सहायता-अनुदान' का प्रचलन करके सरकार शिक्षा के क्षेत्र से धीरे धीरे स्वयं को हटा लेगी। वर्ग-शिक्षा के स्थान पर डेसपेच ने सार्वजनिक शिक्षा की सिफ़ारिश की थी। परन्तु यह मनोरथ भी अधूरा रहा।

इसके पश्चात् शिक्षा-नीति से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ सन् १८८३ की इंडियन एजुकेशन कमिशन की रिपोर्ट है। सन् १८९६ में भारतीय शिक्षा सेवा की स्थापना हुई। यह अखिल भारतीय सेवा थी, और इसकी नियुक्ति इंग्लैंड में सेक्रेट्री ऑफ स्टेट फार इंडिया द्वारा की जाती थी। इसके पश्चात् कालेज, सैकेण्ड्री और प्राइमरी शिक्षा का पृथक्-पृथक् विकास होने लगा, और उनकी समस्याओं का समाधान भी पृथक् किया जाने लगा। लार्ड कर्ज़न ने यूनिवर्सिटी शिक्षा को अधिक महत्त्व दिया, और उसके शासन काल में सन् १९०२ में इंडियन एजुकेशन कमिशन की स्थापना हुई। उसकी रिपोर्ट के आधार पर इंडियन यूनवर्सिटी एक्ट में संशोधन हुए, और १९०४ के एक्ट अधिनियमित हुआ। लार्ड कर्ज़न ने प्राइमरी शिक्षा के विस्तार के लिये भी अधिक वित्तीय सहायता दी थी। सन् १९०६ में बड़ोदा रियास्त में वहां के शासक ने प्राइमरी शिक्षा को अनिवार्य बना दिया। गोखले ने राष्ट्रीय चेतना के लिये यह आवश्यक समझा कि वृत्तानवी भारत में भी प्राइमरी शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाये। १९ मार्च, १९१० को इम्पीरियल लैजिस्लेटिव कौंसिल में उसने अनिवार्य प्राइमरी शिक्षा के लिये बिल रखा था। इस बिल का आधार इंग्लैंड का अनिवार्य शिक्षा अधिनियम १८७०, और १८७६ तथा आइरिश एजुकेशन एक्ट १८९२ था। भले ही गोखले का बिल पास नहीं हुआ, परन्तु सरकार ने प्राइमरी शिक्षा को 'लोकशिक्षा' का महत्त्व दिया, और सन् १९११–१२ में जब जार्ज पंचम भारत पधारे, तो पचास लाख रुपये की आवर्ती ग्रांट 'लोक शिक्षा' के लिए स्वीकृत कर गए। तदनुसार २१ फरवरी सन् १९१३ को सरकार ने प्राइमरी शिक्षा के विस्तार के लिये एक सरकारी प्रस्ताव पास हुआ। सन् १९१८ में पटेल एक्ट के नाम से बम्बई लैजिस्लेटिव कौंसिल में म्युन्सिपल इलाकों के लिये अनिवार्य प्राइमरी शिक्षा का अधिनियम पास हुआ।

प्रादेशिक भाषाओं का भाग्य भी इंडियन यूनिवर्सिटी एक्ट, १९०४ के बाद बदलने लगा। प्रादेशिक भाषाओं के प्रति आदर का भाव बढ़ने लगा। मद्रास यूनिवर्सिटी में प्रादेशिक भाषा क्लासीकल भाषा के स्थान पर विकल्प रूप में थी। इस सम्बन्ध में कलकत्ता यूनिवर्सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमिशन के निम्नलिखित शब्द महत्वपूर्ण हैं :—

"We are emphatically of opinion that there is something unsound in a system of education which leaves a young man at the conclusion of his course unable to speak or write his own mother-tongue fluently and correctly."

कांग्रेस के विकास के साथ साथ अखिल भारतीय 'राष्ट्रीय शिक्षा' की धारणा का भी विकास हुआ। श्रीमती बेसेन्ट ने राष्ट्रीय शिक्षा के सम्बन्ध में लिखा है:—

National Education must meet the national temperament at every point and develop the national character. India is not to become a lesser—nor ever a greater—England, but to evolve into a mightier India."

सन् १९२० में महात्मा गांधी के निर्देशानुसार नागपुर कांग्रेस ने विदेशी ढंग की सरकारी शिक्षा का बहिष्कार करने सम्बन्धी एक प्रस्ताव पास किया। मौलाना शौकत अली और मौलाना मुहम्मद अली ने भी महात्मा गांधी की विचारधारा को लाभदायक बताया। जब महात्मा गांधी और अली भाई अलीगढ़ गए, तो अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों ने उनकी विचारधारा के साथ सहमत होकर असहयोग आंदोलन में भाग लिया। परिणामस्वरूप अलीगढ़ में जामिया मिल्लिया इस्लामिया की स्थापना हुई। यह संस्था राष्ट्रीय शिक्षा की प्रथम संस्था थी। इसके पश्चात् ६ मई, १९२२ को रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 'विश्वभारती' की स्थापना की। स्थापना के समय इसके निम्नलिखित उद्देश्य थे :—

(१) पूर्व की विभिन्न संस्कृतियों को एक दूसरे के निकट लाना ;

(२) पश्चिम के विज्ञान को यथेष्ट रूप से ग्रहण करना; और

(३) पूर्व और पश्चिम का समन्वय करना, जिससे विश्व मनुष्य की कल्पना चरितार्थ हो सके।

सन् १९३५ के विधान के बाद जब कांग्रेस मन्त्रिमण्डल सात प्रांतों में बन गए तो शिक्षा नीति के बारे में उनके सामने एक भयंकर समस्या यह थी कि एक ओर तो सार्वजनिक अनिवार्य शिक्षा का प्रचलन किए जाने की प्रबल मांग थी, और इसे कार्यान्वित करने के लिये भारी राशि की जरूरत थी जोकि नए टैक्स लगा कर ही पूरी की जा सकती थी। दूसरी ओर महात्मा गांधी के निर्देश में शराब बन्दी की जानी अपेक्षित थी। इस से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारी कोश में आमदनी के कम होने का भय था। आर्थिक दृष्टि से या तो शराब-बन्दी की जा सकती थी, या अनिवार्य शिक्षा का प्रचलन किया जा सकता था। दोनों का किया जाना असम्भव था। ऐसे संकटकाल में महात्मा गांधी ने 'बेसिक शिक्षा' की धारणा प्रस्तुत की, जिसका मनोरथ शिक्षा को 'आत्म-निर्भर' बनाना था। बेसिक शिक्षा की पहली कान्फ्रेंस २२–२३ अक्तूबर, १९३७ में वार्धा में हुई। दो मास के पश्चात् डॉ० ज़ाकिर हुसेन कमेटी ने एक विस्तृत रिपोर्ट पेश की। सन् १९४६ में कांग्रेस मंत्रिमंडल के पुनः पद-ग्रहण के दौरान बेसिक शिक्षा को नया प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। यह कहा जा सकता है कि सन् १९४७ तक बेसिक शिक्षा का प्रयोग काल समाप्त हुआ और यह निश्चित हो गया कि बेसिक शिक्षा को ही भारत की 'राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली' के रूप में ग्रहण किया जा सकता है।

यही 'बेसिक शिक्षा' आज भारत की राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली है। इसका उद्देश्य है कि शिक्षा को आत्मनिर्भर बनाया जाए, और शिक्षा का पाठ्यक्रम और प्रविधि इस प्रकार के हों, कि उनसे विद्यार्थी के समूचे व्यक्तित्व का विकास हो और परिणामतः 'मानव-प्रतिष्ठा' की भावना सार्वजनिक हो।

● ● ●

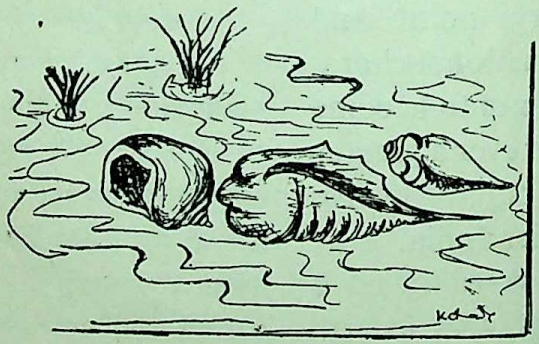

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ नर-नाहर, वीर जवाहर !

ओ ! नर-नाहर, वीर जवाहर, जन-मन के अविनाशी ।
छोड़ धरा पर चला गया तू–तम से भरी उदासी ।
बुझा नेह का दीप, अधजली सूख गई है बाती ।
हाय ! छीन कर काल ले गया दुनिया भर की थाती ।
लुटा सत्य का नेह, अहिंसा बिलख-बिलख कर रोती
नजर नहीं आता भारत मां की आंखों का मोती ।
फटा धरा का वक्ष, आंख से गगन बहाता पानी ।
रोता फिरे बुढ़ापा, बचपन, बेबस लगे जवानी ।
उठा सिन्धु में ज्वार, उदार हिमालय अकुलाया है ।
चन्दा, सूरज और सितारों का मन भर आया है ।
विश्व शोक सन्तप्त, उदासी दिशा–दिशा पर छाई ।
सत्य–अहिंसा का ध्वज–वाहक पड़ता नहीं दिखाई ।
स्वतन्त्रता के देव, देश की विजय पताका थामे––
तुम कांटों पर चले, देश–हित जलते रहे व्यथा में ।
ओ ! सागर–गम्भीर, अचल हिम–गिरि से वीर महान् ।
ढूंढ कहां से लायें तुम-सा पथदर्शक–इन्सान ।
पंचशील का घोष जगत को तुमने स्वयं सुनाया ।
युद्ध–ज्वाल में जल जाने से सारा विश्व बचाया ।
स्वतन्त्रता सेना के नायक, भारत-भाग्य विधाता ।
कोई नजर नहीं आता है आज जगत का त्राता ।
जाओ ! प्यारे नेता लेकर आंसू भरी विदाई ।
दुनिया चरणों में श्रद्धा के फूल चढ़ाने आई ।
जाओ ! भारत माता की आंखों के जगमग तारे ।
बापू के अनुगामी, दुखी जनों के अटल सहारे ।
याद रहेगा जन्म तुम्हारा और तुम्हारा मरना ।
मानवता के लिये धरा पर जन्म दुबारा धरना ।
आंखों में आंसू रोते हैं, पीर हृदय में होती ।
सदा-सदा के लिये बुझ गई हाय ! शान्ति की ज्योति ।

नन्दकिशोर
'रजनीश'

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब का महान् क्रान्तिकारी

करतार सिंह सराबा

सतपाल गुप्त

भारत की स्वतंत्रता का आन्दोलन जहां शान्तिमय उपायों द्वारा चलाया गया , वहां क्रांतिकारी वीरों का त्याग भी महत्त्वपूर्ण है । जहां देश ने राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी के नेतृत्त्व में सत्याग्रह और असहयोग के आंदोलनों द्वारा विदेशी सरकार को भारत छोड़ने पर विवश किया, वहां देश के क्रान्तिकारी वीरों ने अपने प्राणों का बलिदान देकर अंग्रेज़ सरकार को भारत छोड़ने के लिये मजबूर किर दिया । इन महानुभावों का बलिदान सदा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का एक सुनहरी पृष्ठ रहेगा तथा भारत कभी अपने इन सपूतों को भूल नहीं सकता । जहां बंगाल ने देश को श्री रास बिहारी बोस जैसे क्रान्तिकारी वीर नता दिये वहां वीर प्रसूता भूमि पंजाब ने भी क्रान्तिकारी आंदोलन में कोई कम महत्त्वपूर्ण योग नहीं दिया । पंजाब के वीरों ने हंसते हंसते जो यातनायें सहीं, उनके रोमांचकारी वर्णनों को पढ़ कर मन दहल जाता है । हमारे लिये बड़े गर्व का विषय है कि उन महापुरुषों के बलिदानों के फलस्वरूप मिली स्वतंत्रता का आनन्द आज हम उठा रहे हैं । पंजाब के क्रान्तिकारियों का इतिहास बहुत लम्बा है और यदि उन सब के सम्बन्ध में लिखा जाए तो एक बृहद् पुस्तक तैयार हो सकती है । मैंने इस लेख में पंजाब के एक ऐसे उत्साही वीर क्रान्तिकारी का उल्लेख किया है जिसके साहस, वीरता, उत्साह देश की स्वतन्त्रता के लिये कार्य करने की लगन के सामने विदेशी सरकार ने भी पराजय स्वीकार कर ली तथा जिस संसार का बड़े से बड़ा प्रलोभन भी अपने पथ से विचलित न कर सका । इस वीर हुतात्मा ने फांसी के तखते तक पहुंच कर भी साहस और वीरता को न छोड़ा और भारत मां की जय का घोष करता हुआ यह वीर फांसी पर झूल कर अपने को अमर कर गया ।

श्री करतार सिंह का जन्म सन् १८९६ में सराभा (जिला लुध्याना) में श्री मंगल सिंह के घर हुआ । जब आप बहुत छोटे ही थे कि पिता जी का स्वर्गवास हो गया । आप बचपन से ही खेलने कूदने में बहुत रुचि रखते थे तथा निडरता आप में कूट कूट कर भरी हुई थी । आप दसवीं की परीक्षा पास करने के लिए उड़ीसा चले गए । वहाँ पर ही वह कालिज में दाखिल हो गए । इन्हीं दिनों में आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय में देश-प्रेम की ज्वाला भड़क उठी तथा क्रान्तिकारी विचारों ने आपके हृदय पर गहरा प्रभाव डाला। आपने अमरीका जाने का विचार अपने घर वालों को प्रकट किया तथा कुछ समय अमरीका में रह कर आपके आत्म-अभिमान को गहरा आघात लगा जब आपने देखा कि भारतवासी वहां कुली के नाम से पुकारे जाते हैं। आपको स्वतंत्र देश और परतन्त्र देश के वासियों में अन्तर का भी यहाँ पता लगा तथा आपने कुछ करने का व्रत लिया। वहाँ आपने मजदूरों का संगठन प्रारम्भ किया तथा उन्हें स्वतंत्रता का अर्थ समझाया। इन्हीं दिनों अमरीका में लाला हरदयाल जी एम.ए. तथा देश भक्त भगवान सिंह आदि ने गदर पार्टी बना कर भारत की स्वतंत्रता का कार्य प्रारम्भ किया हुआ था। आप भी इनके साथ मिल कर इस महान कार्य में जुट गए तथा जब १९१४ में कामा गाटा मारू जहाज भारत के लिये चला तो इसी में बैठ कर आप भारत आना चाहते थे किन्तु जहाज को अंग्रेजों के कठोर व्यवहार के कारण वापिस होना पड़ा। आप जापान में पहुंच कर वहाँ के भारतीयों में विद्रोह भावना उत्पन्न करने के लिये कार्य करने लगे। कुछ समय के बाद आप अंग्रेजों की आंखों में धूल डाल कर अपने देश वापिस पहुंच गए और पंजाब पहुंच कर आपने पूरी लगन से कार्य करना प्रारम्भ किया आपने देश के अन्य भागों के क्रान्तिकारी आन्दोलन से अपना सम्बन्ध स्थापित किया। पंजाब में विद्रोह की भावना धीरे-धीरे उग्र रूप धारण करने लगी। श्री रास बिहारी बोस ने सारी स्थिति का अनुमान लगाने के लिये प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री शचीन्द्र नाथ सान्याल को पंजाब भेजा जिन्होंने क्रान्ति की योजना श्री करतार सिंह तथा अन्य नेताओं के साथ मिल कर तैयार की। आपने योजना के अनुसार सैनिक छावनियों में सिपाहियों को अपनी ओर करने तथा धन के अभाव को पूरा करने के लिए डाके तक डालने प्रारम्भ किये। आप उन दिनों इतना कार्य करते थे कि प्रतिदिन तीस-तीस चालीस-चालीस मील साइकल पर गांवों में जाकर विद्रोह का प्रचार करते थे। आपकी सब से बड़ी विशेषता यह थी कि जितना आप कार्य अधिक करते थे उतना ही आपका उत्साह और क्षमता बढ़ती थी। एक बार पुलिस आपको बन्दी बनाने के लिए एक गांव में पहुँची। जब आपको पुलिस के आने का पता चला तो आप स्वयं पुलिस के सामने चले गए किन्तु पुलिस उनको पहचान न सकी इसलिये आप गिरफ्तारी से बच गए।

२१ फरवरी, १९१५ को आपने विद्रोह कराने की पूरी योजना बना रखी थी तथा लाहौर छावनी में बारूद के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान पर आपने आक्रमण करना था किन्तु कुछ देशद्रोहियों द्वारा भेद बता देने से यह योजना सफल न हुई। जब 'गदर' नामक समाचार पत्र निकाला गया तो उसके सम्पादकीय विभाग में आपने भी योग दिया। आप स्वयं इस पत्र को हैण्ड प्रेस पर प्रकाशित करते थे। जहां भी विद्रोह संबंधी कोई सभा होती तो आप सब से पहले वहां पहुंचते।

अन्त में जब गिरफ्तारियों का चक्र पूरे वेग से चला तो आपको भी पकड़ने में पुलिस सफल हो गई तथा आपने बड़े साहस से जेल की काल कोठरी में जाना स्वीकार किया। जेल में भी आपने विद्रोह की योजना बनाई तथा सब कैदियों को बाहिर करवाने के लिये लोहा काटने के यंत्र तैयार कर लिये किन्तु पुलिस को इस योजना का पता लग गया और आपके पास से यह यंत्र निकल आए। सारे कैदियों को बेड़ियां पहना दी गईं तथा तरह तरह की यातनाएं दी गईं। आपके विरुद्ध जेल से भागने तथा विद्रोह करने के अपराधों में डेढ़ वर्ष तक मुकद्दमा चला। चूंकि आप यह नहीं चाहते थे कि आपके कारण आपके अन्य साथियों को कष्ट सहन करना पड़े इसलिये आपने अपना अपराध हंसी खुशी स्वीकार कर लिया। आपकी इस निडरता को देख कर मैजिस्ट्रेट आश्चर्य-चकित रह गया। उसने आपको प्रलोभन देने की तथा डराने की बहुत कोशिश की किन्तु आपने अपना मार्ग न छोड़ा। जब जज ने यातनाओं का भय दिलाया तो आपने कहा कि मृत्यु दण्ड से अधिक आपके पास क्या है। मैं इसके लिए भी सदा तैयार हूँ। अन्त में आपको फाँसी का दण्ड मिला जिसे सुनकर आप बिल्कुल भी नहीं डरे बल्कि ललकार कर कहा कि मैं फाँसी को वरदान समझता हूँ ताकि मैं फिर जन्म लेकर अपने देश की सेवा के योग्य हो सकूं। आश्चर्य की बात यह है कि जब फाँसी से एक दिन पहले आप का वजन किया गया तो पहले से १० पाऊंड अधिक निकला। जिस समय फाँसी से पूर्व लोग आपके अन्तिम दर्शनों के लिए आए तो आपने यही कहा कि मैं अपने देश के लिए भेंट चढ़ रहा हूं तथा मुझे विद्रोही के नाम से याद करना। आपने मृत्यु के समय अपने दादा से बहुत सुन्दर शब्दों में कहा कि लोग बीमार रह रह कर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं मेरा अहोभाग्य है कि मैं देश सेवा करते हुए देश के कुछ काम आ रहा हूँ।

अन्त में १९१९ के नवम्बर मास में आपके मुकद्दमे का निर्णय कर दिया गया तथा आपको मृत्यु दण्ड दिया गया। यह वीर युवक भारत माता की जय कहते कहते फाँसी के रस्से को चूम गया और सदा के लिये अपना नाम अमर कर गया और भारत माता की बेड़ियां काटने के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन गया।

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक और युग लो बीत गया !

एक और युग लो बीत गया !
वह युग--
जिसका इतिहास रहा--
संघर्षमय,
क्रांतिमय,
शांतिमय,
ले सांसों का मीत गया !
वह अविरल गति से बहने वाली--
खुशियों की धारा,
जिसने धरणि का था--
ज़र्रा-ज़र्रा संवारा
आज सूख गई
या हम से रूठ गई ।
ओठों का हर गीत गया !
क्या कहें आज ?
क्या बजे साज़ ?
काल
हाँ, क्रूरकाल
ले गया छीन
वह युगपुरुष
कि जिसने बन सुमन
कण-कण महकाया ;
वह जिसने बादल बन
सब पर अमृत बरसाया;
वह,
जो कभी नहीं था घबराया;
वह जिसे प्रकाशपुञ्ज मान
लाखों दीपक--
उससे रोशनी पाते थे
आज काल,
हाँ महाकाल
ले गया छीन ।
भावों का सागर रीत गया !
एक और युग लो बीत गया !!

राजेन्द्र 'नीरज'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तित्व निर्माण के कारक

सत्य पाल शीह

साधारण लोगों तथा कुछ पढ़े-लिखे व्यक्तियों के मन में यह विचार जड़ पकड़ चुका है कि यातनाओं की भट्टी में जलने के पश्चात् ही मानव कुंदन बनता है। परन्तु इसमें उनका कोई दोष नहीं है। वे इस बात से अनभिज्ञ हैं कि शब्दों में सच्चाई को छिपाने की अथाह शक्ति होती है। इसलिये तो वे धार्मिक उन्माद से इस निराधार कथन का समर्थन करते हैं। वे अपने विचार को ठीक प्रमाणित करने के लिये सैंकड़ों ऐसे व्यक्तियों का उदाहरण देते नहीं थकते, जिन्होंने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कांटेदार पथों पर चल कर अपने ध्येय को प्राप्त किया था। इनमें मुंशी प्रेम चंद, मिरज़ा गालिब और मिलटन जैसे सुप्रसिद्ध लेखक; इब्राहीम लिकन, लैनिन, स्टालिन जैसे अनुभवी राजनीतिज्ञ; और बाबर तथा औरंगज़ेब जैसे ख्याति प्राप्त सेनापति भी शामिल हैं।

दलील यह दी जाती है कि 'अग्नि-परीक्षा' इन महान् विभूतियों को धैर्यवान, संतोषी तथा विवेकशील बना देती है, जिस के वरदान स्वरूप वे संकट का सामना अपूर्व साहस से करते हैं। विपदों से झूझते रहने के कारण अनुपम पौरुष उनकी पैतृक सम्पत्ति बन जाता है, जिसकी बदौलत वे तूफानों से टकराते हुए भी नहीं घबराते। एक के पश्चात् दूसरी विपत्ति भी उनके साहस को कम नहीं कर पाती। संकटों की भट्टी में पैदा हुई आशा, साहस और अचल संकल्प उन्हें कांटों भरे रास्ते से बिना लड़खड़ाए और बिना पथभ्रष्ट हुए अपनी मंज़िल तक पहुंचा देते हैं। वे तारे बन कर तारामण्डल में चमकते हैं और उनके कारनामों को सुन कर संसार दांतो तले अंगुली दबा कर रह जाता है।

परन्तु वास्तविक जीवन में क्या होता है? उपरिलिखित बातों के बिल्कुल उल्ट। वास्तव में यदि इस धारणा का आलोचनात्मक अध्ययन किया जाए, तो यह धारणा ताश के महल की भांति गिर जाएगी। शायद, उक्त धारणा का बड़े से बड़ा समर्थक भी इस सीमा तक जाने के लिये तैयार नहीं होगा कि अति विरोधी परिस्थितियों में मानव अपने व्यक्तित्व का ठीक तथा पूर्ण विकास कर सकता है। यदि मानव को जन्मकाल से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही मानव समाज के सम्पर्क में न आने दिया जाए, तो वह उन मानवीय गुणों को नहीं प्राप्त कर सकता, जो केवल मानव के भाग्य में आते हैं। मानव सम्पर्क में न आया हुआ व्यक्ति मानव की भांति नहीं, अपितु पशुओं की भान्ति चारों पंजों पर चलेगा, पशुओं की तरह ही खाएगा और उनकी तरह ही चीखेगा। उसे समाज के रीति-रिवाजों, लेन-देन तथा शिष्टाचार किसी भी बात का तो पता नहीं होगा। सच तो यह है कि उसमें कुछ भी तो मानवीय नहीं होगा।

इतनी दूर जाने की भी आवश्यकता नहीं। विपरीत परिस्थितियों में मानव अपने साधारण गुणों का विकास भी नहीं कर सकता। यह कैसे हो सकता है कि कोई संगीतकार अपनी संगीतमयी रुचि का विकास संगीत विपरीत परिस्थितियों में कर सके। मानव विकास के सिद्धान्तों के अनुसार विकास के लिये अनुकूल वातावरण का होना नितान्त आवश्यक है। कोई भी वक्ता अलंकारित भाषण देने की अपनी शक्ति का विकास नहीं कर सकता, यदि उसके बोलने में बार-बार बाधा डाली जाए या उसे भाषण देने का अवसर ही न दिया जाए। इस उदाहरण में उसके बोलने में बार बार बाधा डालना या बोलने का समय ही न देना उसके लिए विपरीत परिस्थितियां पैदा करना है। और बोलते समय उसे बढ़ावा देना और प्रायः भाषण करने के अवसर प्रदान करना उसके लिए अनुकूल वातावरण पैदा करना है। गुलाब का फूल अन्धेरे या आकाश में नहीं पैदा होता। उसे अपनी प्रकृति के अनुसार विकास करने के लिए आवश्यक धूप, वायु, खाद और उपयुक्त भूमि की आवश्यकता है। इसमें से किसी एक का न मिलना या कम मिलने का परिणाम होगा उसका अधूरा विकास।

मानव विकास के लिये विपरीत परिस्थितियों की नहीं, अपितु अनुकूल परिस्थितियों की आवश्यकता है। विपरीत परिस्थितियां मानव विकास का नहीं, मानव नाश का कारण हैं। अनुकूल परिस्थितियां उस माली की भान्ति मानव विकास की सहायक हैं, जो पौधे के आस-पास के फालतू पौधों को साफ करता रहता है और उसके निरंतर ध्यान के फलस्वरूप पौधा इतना बढ़िया बन जाता है, जितना कि वह उसके स्नेही ध्यान के बिना न बन पाता। उस व्यक्ति से कला या साहित्य जैसी कोमल कला के कृतियों की आशा करना निराधार है, जिसे अपना पेट भरने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना पड़ता है। यहां तक कि एक मार्क्स को भी एंजलस का सहारा लेना पड़ता है। कला, काव्य या संगीत की कोमल रचनाओं के लिए फ़ुरसत का होना अनिवार्य शर्त है।

प्रश्न पैदा होता है कि यह 'लाल'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपत्तियों पर काबू कैसे पाते हैं ? जब पिता और शिक्षकों का सदा घृणा करते रहने या डांट डपट करने रहने से मानव संकट मार्ग में बाधा डालते हैं, तो ये प्रतिभाशाली व्यक्ति उनकी ललकार का स्वागत करते हैं और बार बार की ठोकरें खाने की बजाए अनुकूल वातावरण में विकसित हुई इच्छाशक्ति के बल पर अपने मार्ग के कांटों को उखाड़ फैंकते हैं।

इच्छाशक्ति के विकास के लिए, जिसे चरित्र का प्रत्यक्ष रूप या गतिशील दिशा कहा जाता है, प्रवृत्तियों तथा संवेगों का आत्म भाव या प्रभावी स्थिर-भाव (Master Sentiment) के चारों ओर संगठन होना आवश्यक है। आत्म भाव के चारों ओर संवेगों की जितनी दृढ़ व्यवस्था होगी, इच्छा शक्ति उतनी ही दृढ़ होगी। यह संगठन प्रेम, सहानुभूति, मान्यता, सुरक्षा, स्वतंत्रता तथा प्रशिक्षण, आदि कई बातों पर निर्भर करता है। इनमें से किसी एक के न होने का अभिप्राय होगा, मानव को प्रतिकूल परिस्थितियों में धकेलना। परन्तु क्या विपरीत परिस्थितियों में वह अपने व्यक्तित्व का पूरा विकास कर सकता है ? कदाचित् नहीं। उसका विकास अधूरा होगा; कहीं कोई न कोई कमी रह जाएगी। सुरक्षा की, जो नित्यचर्या से पैदा होती है, कमी उसके व्यक्तित्व के भावी विकास में बाधा डालेगी, क्योंकि ऐसा मानव तो अपने भविष्य की चिन्ता में ही डूबा रहेगा। मान्यता के न मिलने या माता-

रहने या डांट डपट करने रहने से मानव अपनी जन्म जात प्रवृत्तियों का सही अनुमान नहीं कर पाता। प्रो० सेमुअल कोनिंग के शब्दों में "वह वास्तव में क्या है, इसका उसे पता नहीं चलता।"

प्रतिभाशाली व्यक्ति असम्भव को सम्भव में इसलिये बदल देते हैं क्योंकि उनके व्यक्तित्व का संगठन बहुत दृढ़ होता है। जब यह कहा जाता है कि विपरीत परिस्थितियों ने बाबर को अनुभवी सेनापति बनाया, तब इसका यह अभिप्राय होता है कि बालावस्था में बाबर ने उज़बेक, मंगोल, तुरक, आदि विभिन्न शत्रुओं से जो युद्ध लड़े, उन्होंने उसे अद्वितीय सैनिक तथा सेनापति बना दिया। परन्तु इसका सेहरा विपरीत हालात के नहीं, अपितु उसके अनुभव और प्रशिक्षण के सिर बन्धता है।

निस्सन्देह यह अनुभव विपरीत तथा अनुकूल दोनों ही स्थितियों में प्राप्त हो सकता है। परन्तु क्या विपरीप परिस्थितियों में इन प्रतिभाशाली व्यक्तियों की प्रतिभा का पूर्ण विकास हो सका या क्या वे अनुकूल परिस्थितियों में अपनी प्रतिभा का विकास नहीं कर सकते थे ? आंकड़ों की अनुपस्थिति में इन प्रश्नों का निश्चित उत्तर देना सम्भव नहीं है। परन्तु विकास के सिद्धान्तों का ध्यान करते हुए यह कहना गलत नहीं होगा कि जिन शिखरों पर वे पहुंच पाए,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुकूल परिस्थितियों में वे उनसे नहीं ऊंचा उठ सकते थे। विजय ने समुद्र गुप्त तथा नैपोलियन बोनापार्ट के सदा कदम चूमे (बोनापार्ट को कम से कम उसके प्रारम्भिक जीवन में पराजय का मुंह नहीं देखना पड़ा), इस पर भी वे चोटी के महायोद्धाओं में से हैं। संगीत सम्राट् तानसेन अक्बर की शरण में रहा करते थे। उन्हें संसार की सभी सुख-सुविधाएं उपलब्ध थीं। सम्राट जहांगीर स्वयं उच्च कोटि के कलाकार थे। निस्संदेह उनकी चित्रकला का विकास राजसी ठाठ-बाठ में हुआ था। इंजीनियर सम्राट्, शाहजहां के पास यदि इतना धन न होता, तो वे इतने ऊंचे तथा शानदार गगनचुम्बी भवन न खड़े कर पाते। सच तो यह है कि अनुकूल परिस्थितियों में विकसित हुए प्रतिभाशाली व्यक्तियों की कोई कमी नहीं। हां, इतिहास के पन्नों को उलट कर देखने का कष्ट अवश्य करना पड़ेगा।

वास्तव में किसी मानव की अजेय सहनशीलता एक के पश्चात् दूसरी मुसीबत का सामना करने का परिणाम नहीं होती। यह तो आरम्भ में प्राप्त हुई सफलताओं द्वारा बढ़े साहस का प्रताप है, बाबर को अपने आरम्भिक जीवन में प्राप्त हुई सफलताओं ने, चाहे वे अल्पकाल के लिये ही थीं, उसे बार-बार अपने भाग्य का चमत्कार देखने की प्रेरणा दी। यदि वह पराजित ही होता रहता, तो यह सम्भव था कि वह विपरीत परिस्थितियों के अथाह भार के नीचे दब कर दम तोड़ बैठता। हमें सम्राट् औरंगज़ेब का उदाहरण नहीं भूलना चाहिए, जो निस्सन्देह एक महान् योद्धा था। परन्तु दक्षिण के युद्धों ने उस की कमर तोड़ कर रख दी। एक के पश्चात् दूसरी योजना की असफलता ने मुहम्मद तुगलक को निराश, निरुत्साही, संगदिल तथा हताश बना दिया; और बादिनी के शब्दों में प्रजा ने तब सुख का सांस लिया, जब "बादशाह ने प्रजा से छुट्टी पाई और प्रजा ने बादशाह से।"

कई बार यह दलील दी जाती है कि विपरीत परिस्थितियां वास्तव में वरदान सिद्ध होती हैं। वे मानव में तूफानों से झूझने के लिये पौरुष पैदा करती हैं। जीवन के किसी एक क्षेत्र में संकट का सफलतापूर्वक सामना करने पर मानव किसी दूसरे क्षेत्र में संकट का सामना कर सकता है। इस विचार का आधार है प्रशिक्षण संक्रामण (Transfer of training) का सिद्धान्त, जो आजकल लगभग रद्द हो चुका है। इस संसार में ऐसे व्यक्तियों की कमी नहीं, जो हंसते-हंसते शूलि पर तो चढ़ सकते हैं, परन्तु प्रेमिका की त्योरियां उनका दिल तोड़ देती हैं। यह आवश्यक नहीं है कि सफल सेनापति भावुकता के क्षेत्र में भी सफल होगा।

इतना ही कह देना पर्याप्त नहीं है कि लाल गोदाड़ियों में पलते हैं। यदि वे सचमुच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपरीत परिस्थितियों में ही पलते हैं। रख देगी [illegible] पूंजीपतियों का भी तो काम के थोड़े घण्टे, कम से कम उजरत, बृद्धावस्था तथा अंगहीन हो जाने पर गुज़ारा-भत्ता, विश्राम तथा फुरसत, आदि सामाजिक विधियों को समाप्त कर देना ही उचित है। हमें विद्वानों से आधुनिक सुविधाएं वैसे ही खींच लेनी चाहिएं, जैसे हम फिसलने से बचने के लिये गार को दूर करते हैं या पौधे के विकास में बाधा डालने वाले फालतु पौधों को बाहिर निकाल फैंकते हैं। परन्तु यह दकियानूसी कदम होगा।

सच बात तो यह है कि ऐसे कथन धनवान लोग निर्धनों के मन बहलावे के लिए घड़ते हैं। ऐसा करना बुरे परिणाम के लिये अच्छे शब्दों का प्रयोग करना है। यह कथन निर्धनों को नशे में मस्त रखने वाली ऐसी मदिरा है, जो उन्हें अनुकूल परिस्थितियों के सही महत्त्व का ठीक अनुमान ही नहीं लगाने देती। बीसवीं शताब्दी अनैक्सागोरे या गलेलियो का युग नहीं है, जब वैज्ञानिक छोटे-मोटे उपकरणों से काम चला लेते थे। आज के वैज्ञानिक कीमती प्रयोगशालाओं के अतिरिक्त सहायकों की सेनाओं के बिना अनुसंधान का काम नहीं कर सकते। उपकरणों का ठीक-ठीक प्रयोग सीखने के लिये उन्हें वर्षों तक प्रशिक्षण प्राप्त करना पड़ता है। परन्तु यह जानकारी तो पूंजीपतियों की जड़ों को खोखला करके नहीं है। निर्धन भी तो अपनी दीन दशा को सहनशील बनाने के लिये झूठे औचित्य का आश्रय लेते हैं और अपने भाग्य को कोसते रहते हैं।

हां, यह आवश्यक नहीं है कि एक मानव के लिए जो परिस्थितियां अनुकूल हों, वही दूसरे मानव के लिये भी अनुकूल होंगी। दूसरे शब्दों में विभिन्न मानव अपने स्वभाव, प्रेम, अनुभव, प्रशिक्षण, आदि के अनुसार वातावरण से प्रभावित होते हैं। सभी मानव महाकवि टेगोर या वर्डसवरथ की भान्ति प्रकृति से आनंदित नहीं हो सकते और न ही सभी व्यक्तियों को एक जैसा बनाना ही बांछित है। बुनियादी आवश्यकता तो लोगों को ऐसे अवसर प्रदान करना है, जिन में वे अपनी जन्मजात प्रवृत्तियों का ऐसा विकास कर सकें, जो सारी मानवता के कल्याण में सहायक हो सके। इसके लिये शिक्षा तथा फुरसत, आदि कुछ न्यूनतम सुविधाओं का होना अत्यावश्यक है, जिनके बिना व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो सकता। फुरसत के समय ही मानव सचाई, सुन्दरता तथा अच्छाई जैसे मानवीय गुणों की खोज कर सकता है। सच पूछिए, तो इन गुणों का पाना ही मानव को पशुजगत तथा वनस्पति जगत से जुदा करता है। परन्तु फुरसत इतनी अधिक नहीं होनी चाहिए कि हम यह सोचने पर विवश हो जाएं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि काम किसे कहते हैं, कुशलता क्या है, कर्तव्य से अधिक बढ़ जाना मानव के पतन का कारण बन सकता है। यकीन मानिए कोई भी व्यक्ति अंगीठी के पास बैठे उस फ्रांसीसी सम्राट् की कहानी पसंद नहीं करेगा, जो नौकर की अनुपस्थिति में अपनी कुर्सी से नहीं उठा था और धीरे-धीरे जल कर राख हो गया था।

यह अच्छा नहीं लगता कि हम विपरीत परिस्थितियों की पूजा करते फिरें। लार्ड रसल के शब्दों में "वैरागियों का शूरवीरता से सामना करना तब ही प्रशंसनीय है, जब हम विवश हों। चाहे विपत्तियों का शूरवीरता से सामना करना अच्छी बात है, परन्तु यदि उस व्यक्ति पर विपत्तियां आएं ही न, तो यह और भी अच्छी बात है।" जान-बूझ कर संकटों में पड़ना अच्छी बात नहीं है। लार्ड रसल के शब्दों में "हम ऐसे मानव की प्रशंसा न्यायपूर्वक कर सकते हैं, जो पश्चाताप किए बिना लम्बी तथा दुखदायी बीमारी काटता है, परन्तु यह और भी अच्छा होगा, यदि वह बीमार ही न पड़े। हम किसी युद्ध में उच्च कारण के लिये खेत रहे सैनिक की ठीक तौर पर प्रशंसा कर सकते हैं, परन्तु यह और भी अच्छा हो, यदि वह शहीद ही न हो। वैरागियों ने सहनशीलता की इतनी प्रशंसा की है कि निर्दयता भी वरदान दीखने लगी है।" आज आवश्यकता मानव जीवन को सुखमय बनाने की है, विपरीत परिस्थितियों का राग आलापने की नहीं।

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दी बैट कहानी से अनूदित"

दांव

मू० ले० एटन चेखव

बात एक शीतकालीन रात्रि कीहै। बूढ़ा बैंकर अपने पढ़ने के कमर में विचारों में खोया इधर से उधर टहल रहा था। १५ वर्ष पूर्व हुई एक पार्टी का स्मरण उसे बार बार हो रहा था, एक घटना थी जो उसके मस्तिष्क को कचोट रही थी। पार्टी में बहुत से चतुर लोग सम्मिलित हुए थे। रोचक वार्तालाप चलती रही थी। इधर-उधर के न जाने कितने विषयों पर टीका टिप्पणी होती रही थी। परन्तु सब से अधिक महत्त्वपूर्ण विषय यदि कोई था--तो वह था--मृत्यु दण्ड-अच्छा है या बुरा। जोरदार बहस चल रही थी। अतिथियों ने जिनमें अधिकतया पत्रकार तथा दूसरे विद्वान् लोग थे बहुधा मृत्युदण्ड का विरोध ही किया। उनके विचार में मृत्युदण्ड मानवता के सर्वथा विपरीत तथा मनुष्य की बर्बर प्रवृत्ति का परिचायक था। कुछ अन्य लोगों के अनुसार मृत्युदण्ड को आजीवन कारावास में बदल देना ही अधिक युक्ति युक्त था।

बहस चल रही थी। घर के स्वामी (मेजवान) ने कहा--इस विषय में मेरा आप से मत भेद है। यदि आप ध्यान से देखें तो आप मुझमे पूर्णतः सहमत होंग कि मृत्युदण्ड एकदम धार्मिक एवं मानवीय है। फांसी एक क्षण में मनुष्य को जीवन मुक्त कर देती है--किन्तु आजीवन कारावास मनुष्य को घुला घुला कर मारता है। आप ही बताइए दोनों में से कौन अच्छा है; जो एकदम से प्राण ले ले, अथवा वह जो तिल तिल जलाकर मारे।

एक दूसरे व्यक्ति ने उत्तर दिया, "दोनों का लक्ष्य एक है--मारना--इस लिये दोनों एक से हैं। सरकार कभी ईश्वर की समता नहीं कर सकती। यदि वह किसी को प्राण दे नहीं सकती तो उसे किसी से प्राण लेने का भी कोई अधिकार नहीं है। जो चीज़ हम किसी दूसरे को दे नहीं सकते उसे हमें किसी से लेने का क्या हक़ है।"

सभी कुछ न कुछ बोल रहे थे--चुप बैठा था केवल एक २५ वर्षीय वकील।

"आपकी क्या राय है, वकील साहब!" किसी ने पूछा। "दोनों ही निन्दनीय हैं" वह बोला--"परन्तु मुझे यदि दोनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में से एक को चुनना पड़े तो मैं आजीवन कारावास चुनूंगा। जीवित न रहने से क्या यह अच्छा नहीं है।"

गृह स्वामी सहसा अत्यन्त उत्तेजित हो गया तथा मेज पर जोर से मुट्ठी मारता हुआ बोला, "यह झूठ है, सफेद झूठ, मैं दो लाख रुपये की शर्त लगाने को प्रस्तुत हूँ यदि तुम अन्धेरी कोठरी में पांच वर्ष भी रह सको।"

वकील भी एकदम क्रोध से लाल हो गया, बोला, "यदि ऐसा है तो मैं पन्द्रह वर्ष तक एक कैदी की भांति अन्धेरी कोठरी में रहूँगा।"

बैंकर का क्रोध तो पहले ही चरम सीमा को पहुंच गया था—बोला, "१५ ! मंजूर ! " फिर अन्य अतिथियों की ओर देख कर बोला, "महोदय मैं दो लाख की शर्त लगाता हूँ।

और इस प्रकार वह दांव लग गया।

बैंकर (गृहस्वामी) उस समय जवान था। अपार धनराशि के मद में चूर था। वह इस शर्त पर बहुत प्रसन्न हुआ। खाने के समय उसने वकील को फिर छेड़ा, "अपने आपको सम्भालो नौजवान, अभी भी समय है। मेरे लिये दो लाख रुपयों का कोई महत्त्व नहीं! ; पर तुम अपनी जवानी को श्रेष्ठ १५ वर्ष क्यों गंवा रहे हो ? तुम्हारे लिये जीवन मृत्यु के समान है। मुझे तुम पर दया आती है।"

परन्तु नौजवान वकील अपने शब्दों पर दृढ़ रहा।

और आज.....वही बैंकर अपनी उस समय की मूर्खता पर चिन्तित था। वह अपनी मूर्खता पर पश्चात्ताप कर रहा था। "क्यों उसने वह दांव लगाया ? उसे क्या मिला ? वकील के जीवन के पन्द्रह वर्ष जाते हैं और मेरे दो लाख। परन्तु क्या लोगों को इससे तसल्ली हो जायेगी कि आजीवन कारावास मृत्युदण्ड से अच्छा है ? या नहीं ! नहीं ! यह सब बकवास है। मैंने बहुत भूल की है।" वह सहसा बोल उठा।

केवल क्षणिक आवेश में उसने कितनी बड़ी गलती की थी। पन्द्रह वर्ष पूर्व की गई वकील से शर्तें आज भी उसे भली भांति याद थीं। अनायास ही उस समय की गई शर्तें एक एक करके उसके सामने आने लगीं। उसे याद आई पहली शर्त–जिसके अनुसार वकील को एक कैदी का जीवन व्यतीत करना था। वह कैदखाना स्वयं बैंकर के घर के बाग की ओर का एक भाग था। अन्य शर्तों के अनुसार वकील किसी से भी नहीं मिल सकता था, वह कोई भी पत्र-पत्रिका नहीं पढ़ सकता था और न ही किसी से पत्र व्यवहार कर सकता था। सुविधा के रूप में उसे केवल बजाने को वाद्य यन्त्र, पढ़ने को पुस्तकें तथा पीने को शराब तथा तम्बाकू मिल सकता था। बाह्य–जगत से उसका सम्बन्ध केवल एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिड़की द्वारा था और वह शराब, तम्बाकू, पुस्तकें या कोई वाद्य-यन्त्र एक चिट लिख कर केवल इस खिड़की से ही मांग सकता था। बोलने की आज्ञा न थी। सारांश यह कि सूक्ष्म से सूक्ष्म शर्त भी शर्त नामे में लिखी गई थी ?। यदि वकील ने उस शर्त नामे के विरुद्ध कोई भी काम किया—या अवधि से केवल पांच मिनट पहले ही कारावास से निकलने की चेष्टा की तो दो लाख रुपयों पर उसका कोई भी अधिकार नहीं होगा।

और बैंकर की आंखों के आगे कैदी का विगत १५ वर्षों का जीवन घूम गया।

वकील द्वारा लिखित छोटे छोटे नोटों से अनुमान लगाया गया —कि एक ही जगह, चुपचाप बैठे रहने का अभ्यास न होने के कारण प्रथम वर्ष उसे बहुत कष्ट हुआ। इस वर्ष न उसने शराब पी और न ही तम्बाकू। वह दिन रात पियानो बजाता रहता। उसने लिखा था, "शराब इच्छाओं को जन्म देती है तथा बिना साथी के शराब पीना दुःखदायी होता है। तम्बाकू के धुएं से कमरे का वातावरण धुंधला तथा दूषित हो जाता है।" पहले वर्ष उसे उपन्यास, कहानी आदि हल्की पुस्तकें ही भेजी गईं।

दूसरे वर्ष पियानो एक दम बन्द हो गया और कैदी ने केवल उच्च-साहित्य की मांग की। पांचवें साल फिर पियानो बजने लगा, और गायन भी सुनाई दिया। इस वर्ष कैदी ने शराब भी मांगी। उस पर ध्यान रखने वालों के कथनानुसार कैदी ने इस वर्ष खूब खाया, खूब पिया। वह पलंग पर लेटा रहता। बार बार जुम्हाइयां लेता तथा क्रोधित मुद्रा में अपने आप कुछ बोलता रहता। पुस्तकें पढ़ना उसने छोड़ दिया कभी कभी रात्रि में उठ कर अनायास ही वह कुछ लिखने लगता और बहुत देर तक लिखता रहता—फिर भोर होते ही सब कुछ फाड़ कर फैंक देता। कई बार वह रोता हुआ भी देखा गया।

छठे वर्ष के छः मास पश्चात् वह बड़ी तत्परता से भाषाओं, दर्शन शास्त्र तथा इतिहास का अध्ययन करने लगा। उसकी पढ़ने की भूख इतनी बढ़ गई कि बैंकर उसकी किताबों की मांग बड़ी कठिनता से पूरी कर पाता। चार साल तक इसी प्रकार चलता रहा। लगभग छः सौ पुस्तकें उसके कहने पर खरीदी गईं। उस समय जब उसकी पढ़ने की लग्न बढ़ती ही जा रही थी—उसने बैंकर को लिखा :—

"मेरे प्यारे जेलर, मैं आपको यह पंक्तियां छः भाषाओं में लिख रहा हूँ। इन्हें भाषा विज्ञान विशेषज्ञों को दिखाएं और उनकी सम्मति लें। और यदि मेरी लिपि में कोई गलती न हो तो अपने बाग में एक बार बन्दूक चला कर मुझे इसका संकेत दें कि मेरा प्रयत्न व्यर्थ नहीं गया। संसार के महापुरुषों ने समय-समय पर भिन्न भिन्न भाषाओं में अपने ज्ञान की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमर ज्योति दिखलाई है। इस साहित्य के पढ़ने से जो अपार प्रसन्नता मुझे मिली है। काश! तुम वह देख सकते। मुझे इस साहित्य से स्वर्गिक आनन्द मिला है।"

कैदी द्वारा लिखित पंक्तियों का एक-एक शब्द ठीक था! अतः उसकी प्रसन्नता के लिये बाग में दो बार बन्दूक चलाई गई। कैदी कितना प्रसन्न हुआ होगा केवल सोचने की बात है।

समय बीतता रहा। दसवें वर्ष कैदी एक मूर्तिवत् मेज के सामने बैठा रहता और न्यू टैस्टामेंट पढ़ता रहता। फिर उसने धर्म और इतिहास पढ़ना प्रारम्भ किया। अन्तिम दो वर्षों में कैदी ने आशा से अधिक पढ़ा। वह कभी प्राकृतिक विज्ञान मांगता, कभी शेक्सपीयर तथा कभी बायरन की रचनाएँ।

"और कल उसका अन्तिम दिन है" बैंकर की विचारधारा दौड़ रही थी। वह घोर तिव्रता में ग्रस्त था।" कल बारह बजे वह स्वतंत्र होगा। शर्त के अनुसार मुझे दो लाख रुपये उसे देने ही पड़ेंगे। मैं कंगाल हो जाऊंगा--कहीं का नहीं रहूँगा।"

पन्द्रह वर्ष पूर्व बैंकर के पास अपार धन था। परन्तु आज उसकी स्थिति डांवाडोल थी। वह बूढ़ा हो गया था सट्टेबाजी ने उसका सर्वनाश कर दिया था। कहना कठिन था--कि उसकी धन सम्पत्ति अधिक थी या ऋण।

बूढ़ा बैंकर सहसा उत्तेजित हो उठा। वह घबरा गया। स्वयं ही बड़बड़ाने लगा। "ओह, कैसा अमंगलकारी दिन था वह जब मैंने यह दांव फेंका था। वह वकील मर क्यों नहीं गया। दो लाख देकर मैं भिखमंगा हो जाऊंगा। दीवालिया हो जाऊंगा। वह धनवान बन कर विवाह करेगा। और मौज उड़ायगा। मैं पैसे-पैसे को तरसूंगा। वह मुझे चिड़ायेगा। "श्रीमान जी, ऐसा सुखमय जीवन देने के लिये मैं आपका अत्यन्त आभारी हूँ। आइये मैं आपकी तन-मन से सहायता करूँ। नहीं! नहीं! यह मुझ से सहा नहीं जायगा। दीवालिया होने से तो अच्छा है कि–इसकी मृत्यु ही हो जाय। इसे मरना ही होगा।"

घड़ी ने टन टन करके तीन बजाये। घर का प्रत्येक प्राणी प्रगाढ़निद्रा में सोया था। पौधों पर जमी हुई बर्फ के गिरने से हल्के से कोलाहल के अतिरिक्त पूर्ण शांति छाई हुई थी। बिना किसी आहट किये उसने सेफ से कैदी के कमरे की ताली निकाली--जो पन्द्रह साल से बन्द था। ओवरकोट पहन कर वह बाहर निकला।

बाग में घुप्प अन्धेरा था– हल्की हल्की वर्षा हो रही थी। कड़ाके की सर्दी थी। ठण्डी हवा बदन को चीरती सी चल रही थी। पेड़-पौधे भी सर्दी से कांपते से लगते थे। अन्धकार इतना था कि पूरी चेष्टा करने पर भी बैंकर कुछ नहीं देख पा रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाग के बीच में पहुंच कर उसने चौकीदार की आवाज़ दी परन्तु कोई उत्तर नहीं मिला। वर्षा से बचने के लिये चौकीदार कहीं रसोई घर या किसी अन्य अन्य स्थान पर जाकर सो गया था।

"यदि मैं सफल हुआ तो सर्वप्रथम चौकीदार पर ही आरोप लगाया जायेगा।" बैंकर ने सोचा।

हाथों से टटोल कर वह कैदी के कमरे के पास पहुंचा। बाहर कोई न था किसी का खाली बिस्तर था और साथ ही अंगीठी में दहकती आग से कमरे में मन्द मन्द प्रकाश हो रहा था। कैदी के दरवाजे पर ताले की मुहरें ज्यों की त्यों पड़ी थीं। वह कमरे की ओर बढ़ा और खिड़की से भीतर झांकने लगा।

लैम्प के मन्द प्रकाश में कैदी मेज़ के पास बैठा हुआ था। बैंकर केवल उसकी पीठ, उसके लम्बे लम्बे बाल तथा उसके हाथ ही देख सका। फर्श पर, कुर्सियों पर चारों ओर पुस्तकें ही पुस्तकें बिखरी पड़ी थीं।

पांच मिनट तक वह देखता रहा—पर कैदी हिला भी नहीं। १५ वर्ष के कारावास ने उसे बिना हिले हुए बैठे रहने का अभ्यासी बना दिया था। बैंकर ने खिड़की को खटखटाया पर कैदी उसी प्रकार बैठा रहा। बैंकर ने धीरे ताले की मुहर तोड़ी और ताली लगा दी। जंग लगे ताले के खुलने की एक तेज़ आवाज़ हुई और साथ ही १५ वर्ष से बन्द दरवाजा चरमराता हुआ सा खुल गया। बैंकर ने सोचा, कैदी चीख़ उठेगा। परन्तु तीन मिनट तक प्रतीक्षा करने पर भी कैदी की दशा में कोई परिवर्तन न देख उसने कमरे में प्रवेश किया।

मेज़ के पास बैठा हुआ मनुष्य केवल अस्थि पिञ्जर मात्र था। मानो चमड़ा उस पर मढ़ दिया गया हो। लम्बे-लम्बे घुंघराले बाल किसी स्त्री जैसे, लम्बी दाढ़ी, मटमैला मिट्टी जैसा चेहरा, पिचके गाल तथा पीठ लम्बी किन्तु पतली थी। सिर को सहारा दिये हुए हाथ सूख कर कांटा हो गया था। बाल सफेद हो चुके थे। कोई भी उसे देख कर चालीस वर्षीय नौजवान नहीं कह सकता था। सामने मेज़ पर एक कागज़ पड़ा था—जिस पर छोटे छोटे शब्दों में कुछ लिखा था।

"पाज़ी कहीं का", बैंकर ने सोचा। कैसी मीठी नींद सो रहा है। अवश्य लाखों के स्वप्न ले रहा होगा। मुझे केवल इसे उठा कर बिस्तर पर सुलाना तथा तकिये से इसका मुख बन्द करना होगा। फिर कोई चतुर से चतुर विशेषज्ञ भी उसकी मृत्यु का अनुमान नहीं लगा सकता। किन्तु पहले देख तो लूं—कि कागज़ पर इसने क्या ऊलजलूल लिखा है।"

उसने कागज़ मेज़ से उठाया और पढ़ने लगा। लिखा था—कल रात्रि के बारह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजे मैं स्वतन्त्र हूँगा। मैं फिर से [illegible] से मिल सकूंगा। परन्तु इस कमरे से बाहर सूर्य का प्रकाश देखने से पूर्व मैं तुम्हें कुछ बताना चाहूँगा। अपनी पवित्र आत्मा तथा ईश्वर को साक्षी रख कर मैं कहता हूँ कि मुझे स्वतन्त्रता से, जीवन से, स्वास्थ्य से और सांसारिक सुख देने वाली तुम्हारी प्रत्येक वस्तु से हार्दिक घृणा है।"

"पन्द्रह वर्ष तक मैंने धैर्यपूर्वक सांसारिक जीवन का गम्भीर अध्ययन किया है। मैं मानता हूँ कि मैंने न किसी मनुष्य को देखा है और न ही विस्तृत भू-भाग को। किन्तु तुम्हारी भेजी पुस्तकों से मैंने सुगन्धित शराब पी, जंगलों में बर्बर तथा क्रूर जीवन का शिकार किया। स्त्रियों से प्रेम किया और सुन्दर स्त्रियों ने, जिनका तुम्हारे कवि, नख-शिख वर्णन करते हैं, बादलों की भांति रात को स्वप्नों में मेरा पीछा किया। मेरे कानो में मधुर कहानियां सुनाईं—जिनके खुमार ने मुझे शराब सा नशा मिला। तुम्हारी पुस्तकों द्वारा ही मैंने अलबुर्ज तथा मौंट ब्लाक पर चढ़ कर सूर्यदेव के चढ़ने तथा ढलने के वे सुनहरी दृश्य देखे—जब उसकी लाली आकाश में रंग बिरंगे छींटे बिछा देती है। वहां से मैंने जंगलों, पहाड़ों, नदियों तथा शहरों का भ्रमण किया। मधुर संगीत से मेरे कान गूंजते रहे और मैं उन सुन्दर उड़ने वाले देवदूतों को छू सका जो मुझे ईश्वर के विषय में बताते आते थे। तुम्हारी पुस्तकों द्वारा मैं बहुत गहराई तक हो आया हूँ, जादू के खेल किये हैं, शहरों को नष्ट-भ्रष्ट किया है, नवीन धर्म का प्रचार तथा सारे देश को अपने अधीन किया है।"

"तुम्हारी पुस्तकों से मुझे ज्ञान मिला। मनुष्य द्वारा सदियों से संचित ज्ञान मेरे मस्तिष्क में एक ढ़ेले की भांति समाया हुआ है। मैं जानता हूँ कि मैं तुम सबसे चतुर हूँ।

"और.....और मैं तुम्हारी पुस्तकों से घृणा करता हूँ। सांसारिक बुद्धि और ऐश्वर्य से घृणा करता हूँ। यह सब कुछ भी नहीं केवल मृग मरीचिका है। तुम चाहे कितना भी बुद्धिमान, सुन्दर तथा अहंकारी बन जाओ—मौत से नहीं बच सकते। वह एक चूहे की भांति तुम्हें दबोच लेगी।" और तुम्हारा साहित्य, इतिहास तथा अमर साहित्यकार इस भूमण्डल के साथ ही एक दम नष्ट हो जायेंगे।"

"तुम पागल हो, कुपथ पर अग्रसर हो। तुम असत्य को सत्य तथा असुन्दर को सुन्दर मान रहे हो। सेब तथा नाशपाती के स्थान पर वृक्षों पर मेंढक तथा छिपकलियां लगते देख कर तुम अचंभित रह जाओगे। तुममें क्षमता नहीं कि गुलाब में सुगंध की अपेक्षा दुर्गन्ध पाकर तुम चकित न हो जाओ। बस इसी कारण मैं तुम्हारी बुद्धि पर चकित हूँ। तुम स्वर्ग से नाता जोड़ते हो मुझे कोई इच्छा नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मैं तुम्हें समझूं। तुम्हारे विषय में कोई विचार करूँ।"

तुम्हारी प्रत्येक वस्तु से जिस पर तुम्हारा जीवन निर्भर है ––मुझे घृणा है। प्रमाण स्वरूप वे दो लाख रुपये जिन्हें तुम स्वर्ग तुल्य मानते हो, मैं छोड़ देता हूँ। मुझे इससे घृणा है। उन रुपयों पर मेरा अधिकार न रहे––इसलिये मैं कारावास की अवधि समाप्त होने से पांच मिनट पूर्व ही यह कोठरी छोड़ दूंगा और इस प्रकार शर्त तोड़ दूंगा।"

सब पढ़ कर बैंकर ने कागज़ मेज पर रख दिया। उस ने उस महान व्यक्ति का ललाट चूमा–तथा जार जार रोने लगा और फिर रोता हुआ कमरे से बाहर निकल गया। सट्टे में हार कर भी कभी उसे अपने से इतनी खुशी नहीं हुई थी––जितनी इस समय हो रही थी। घर पहुंच कर वह बिस्तर पर लेट गया। परन्तु मानसिक हलचल तथा अश्रु-प्रवाह के कारण वह बहुत समय तक जागता रहा।

दूसरी प्रातः चौकीदार भागता हुआ उसके पास आया और बोला कारावास वाला आदमी खिड़की से निकल कर बाग में आ गया था तथा बाग के द्वार तक पहुंच कर अदृश्य हो गया। बैंकर ने सुना और फिर स्वयं देखने उस कोठरी तक गया। अपनी जान बचाने तथा अफवाहों से बचने के लिये वे कागज़, वह अपने साथ ले आया और अच्छी तरह सेफ में उन्हें बन्द करके रख दिया।

अनु० पी० एल० चावला

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक समीक्षा

स्वामित्व-विसर्जन

लेखक--श्री भोलानाथ सिंह

प्रकाशक--अखिल भारत सर्वसेवा-संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी ।

मूल्य--पैंतीस नये पैसे ।

ज़मीन व जायदाद का स्वामित्व प्रायः मानव को मानवता से गिरा देता है। शोषक एवं शोषित का भेद मिटाने के लिए, सर्वोदय समाज की स्थापना के लिए इस स्वामित्व का विसर्जन करना होगा ।

'स्वामित्व विसर्जन' इसी भाव को लिए एक छोटा सा नाटक है । नाटक की भाषा सरल एवं रोचक है । हमारे गांवों में यदि इस प्रकार के नाटकों का अभिनय कराया जाए, तब इनकी उपयोगिता बढ़ सकती है।

●

चम्बल के बेहड़ों में बागियों का आत्म-समर्पण

लेखक--श्रीकृष्ण दत्त भट्ट

प्रकाशक--अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी ।

पृष्ठ संख्या--४०४ ।

मूल्य--ढाई रुपया ।

डाकुओं के आतंक से ग्रसित चम्बल घाटी सरकार के लिये भी एक समस्या बनी थी। मध्यप्रदेश के डिप्टी इन्सपैक्टर जनरल पुलिस ने सरकार को यह सुझाव दिया कि हिंसा को हिंसा से मिटाने का प्रयोग तो हम कर चुके, ज़रुरत है अहिंसा प्रयोग की । विभिन्न संघ की बैठकें हुई । मेजर जनरल यदुनाथ सिंह भी इस विषय में रुचि ले रहे थे कि इस भयंकर आतंक के इलाकों में श्री विनोबा भावे जाएं व आत्मबल से वहां वैर-विरोध की भावना को दूर करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री विनोबा भावे ने मई-जून ६० में इस क्षेत्र का दौरा किया। इस प्रेम-अभियान के फल-स्वरूप उन बीस-बागियों ने बाबा के चरणों में आत्म-समर्पण कर दिया जिन्हें पकड़ने के प्रयत्न में सरकार को लाखों रुपये व्यय करना पड़ा।

लेखक ने अपनी डायरी के पन्नों में अंकित इस पद-यात्रा का आंखों देखा वर्णन प्रस्तुत पुस्तक में दिया है। इसमें बहुत सी रोचक एवं चमत्कारपूर्ण घटनाएं हैं, करुणा व प्रेम का सन्देश है, त्याग एवं विश्वास की भावना को जगाने की प्रेरणा है। बागियों के आत्म-समर्पण के हृदय-स्पर्शी चित्र हैं व संत भावे तथा मेजर जनरल यदुनाथ सिंह के आकर्षक चित्र हैं।

पुस्तक के कलेवर के विषय में दो शब्द और कहने हैं जिसे लेखक ने स्वयं द्रौपदी के चीर की तरह बढ़ा माना है। लेखक यदि पद-यात्रा के दौरान सभी घटनाओं को देने का लोभ संवरण कर लेता तो पुस्तक का रूप अधिक आकर्षक होता। बहुत सी बातें बार बार दोहरा दी गई हैं।

पुस्तक के अन्त में लेखक ने 'आइए, कुछ सोचें', के अन्तर्गत 'लोग बागी बनते क्यों हैं' में कुछ बागियों की आत्मकथाएं दी हैं। विम्टर ह्यूगो की 'ला मिज़रेबल्स' के खण्ड १ अध्याय दो में जीन वेलगीन के हृदय परिवर्तन का सारांश दिया है। पुस्तक में शृंखलाबद्धता का अभाव है।

--सुभद्रा त्यागी

●

राजसिंह

मूल लेखक--बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ।

प्रकाशक--हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, पो० बक्स नं० ७० वाराणसी--१

मूल्य--एक रुपया ।

बंगाली से अनूदित बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखित "राज सिंह उपन्यास हमारे जातीय जीवन की, जो उस समय आत्यन्तिक पराभव के गर्त में निमज्जित था, गरिमामय झांकी प्रस्तुत करता है। इसका सम्बन्ध हमारे कालिमामय इतिहास के उस काल से है जब अपने धर्मोन्माद औरंगज़ेब रूपी राहु हमारे धर्म और जातीय बल का ग्रसन कर रहा था और जनता निराश तथा संत्रस्त थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय शौर्य की [illegible] रूप धारण करके वैभवशाली मुगल साम्राज्य को भस्मीभूत कर देते हैं, इसका पूर्व रूप इस उपन्यास में ऊर्जस्विन् ढंग से चित्रित किया गया है क्योंकि वर्तमान में ही भविष्य की संभावनाएं निहित होती हैं।

बड़े बड़े राजपूत नरेशों, मन्सबदारों और सूबेदारों के अभिमान को मिट्टी में मिलाने वाले आलमगीर की चहेती पत्नी उदयपुरी बेगम, जिसका भ्रूभंग मृत्यु का सूचक था, जिसकी कृपा कटाक्ष अतीन्द्रिय आनंद और वैभवपूर्ण जीवन के लिये मनोहारी निमंत्रण समझा जाता था, एक नगण्य सी राजपूताने की रियास्त रूप-नगर की राज कुमारी चंचल से अपना हुक्का भरवाने की प्रतिज्ञा करती है; परन्तु "निर्बल के बल राम" की उक्ति के अनुसार तथा घटनाओं के वात्याचक्र की लपेट में आकर वन्दिनी बनाये जाने पर उदयपुरी बेगम को स्वयं ही राजकुमारी का हुक्का भरना पड़ता है--यही इस उपन्यास की मुख्य घटना है। साहित्यिक रस से ओतप्रोत इस ऐतिहासिक रोमांस में इतिहास और काव्य, सत्य और कल्पना तथा आदर्श और यथार्थ का अपूर्व संतुलित सम्मिश्रण दृष्टिगोचर होता है।

फ्रैंच उपन्यास सम्राट् एलेग्जैंड्र ड्यूमा तथा अंग्रेजी उपन्यासकार स्काट के लम्बे तथा उकताने वाले नीरस विवरणों, जो कृतियों की कलेवर वृद्धि के लिये ही लिखे गये प्रतीत होते हैं, से विविक्त इस उपन्यास में एक अवर्णनीय मोहकता और जिज्ञासोत्तेजक शक्ति है जिसमें पुस्तक के अंत तक उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहती है। कारण-कार्य श्रृंखला में बद्ध घटनाओं का ताना बाना जिसमें एक भी सूत्र बिखरा हुआ प्रतीत नहीं होता, उपन्यास के सामूहिक प्रभाव को द्विगुणित कर देता है। 'स्वर्णमुक्तामयी प्रतिमा" चंचला कुमारी का अल्हड़पन, चंचला के समान अपनी प्रखर दीप्ति से आंखों को चुंधियाने वाला लावण्य, मृत्युजय साहस, अविचलित आस्था, अडिग आत्मविश्वास तथा रहस्योद्घाटक विवेक, राजसिंह का राणा कुलोचित शौर्य, निष्कंप निश्चय, स्फूर्तिदायक नेतृत्व और अनुपम औदार्य, मुबारक का स्वार्थ तथा उच्चाकांक्षाओं से प्रेरित रूप लिप्सु तथा आत्मदाहक प्रेम; ज़ैबुन्निसा की पंकिल विलासिता और ऐन्द्रियक कामुकता, मणिकलाल और निर्मल कुमारी का प्रत्युत्पन्नमतित्व उनके चातुर्यपूर्ण तथा साहसिक हथकण्डे उनकी कठिन से कठिन परिस्थितिमें भी हंसते हंसते हथेली पर सिर रख कर अविचल भाव से कार्य पूर्ति की क्षमता सभी मन को बांधे रखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीधे सादे, चुटीले, व्यंग्यात्मक, गंभीर, अलंकृत, अलंकारहीन, तीखे, मृदु, कटु, निरर्थक शब्दाडम्बर से विरहित, सामारसिकता युक्त, कथानक को गति प्रदान करने वाले, परिस्थिति तथा पात्रानुकूल कथोपकथनों की छटा भी इस उपन्यास में दर्शनीय है। वीर, शृंगार, हास्य तथा अद्भुत रसों के अपूर्व मिश्रण से संयुक्त बंकिम बाबू की यह अमर कृति साहित्य के लिये एक अपूर्व देन है।

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी का यह स्तुत्य प्रयास है कि उन्होंने इतने थोड़े मूल्य में हिन्दी भाषाभाषी संसार के लिए ऐसी सुन्दर कृति प्रस्तुत की है। आशा है कि वे अन्य भाषाओं के सुन्दर पुष्पों का चयन करके राष्ट्रभाषा की श्री वृद्धि के अभिनन्दनीय कार्य की इस पुनीत परम्परा का सतत विस्तार करते रहेंगे।

--(बलराज प्रो०)

रणभेरी

प्रकाशक--लोक-सम्पर्क विभाग, चण्डीगढ़
सम्पादक--श्री मदनमोहन गोस्वामी
मूल्य--राष्ट्रहित आत्मोत्सर्ग
पृष्ठ संख्या--दो सौ चौवन

'रणभेरी' पंजाब के लोक-सम्पर्क विभाग का प्रकाशन है जो अपने क्षेत्र में सर्वथा अद्वितीय और अभिनन्दनीय है। इतनी भारी संख्या में कविताओं के संचयन संयोजन और सुरुचिपूर्ण मुद्रण के लिए सम्पादक श्री मदन मोहन गोस्वामी ने जो परिश्रम किया है उसकी छाप रणभेरी के प्रत्येक पृष्ठ पर है। ऐसे उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए लोक-सम्पर्क विभाग के निदेशक श्री हरिश्चन्द्र खन्ना और सम्पादक श्री गोस्वामी बधाई के पात्र हैं।

'रणभेरी' के अभिनन्दन का सबसे बड़ा कारण यह है कि यह एक दिशा-निदेशक प्रकाशन है। पिछले दिनों चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि में जो कुछ रचनाएं संग्रहाकार या फुटकर रूप में सामने आई उनका महत्त्व जन-समुदाय को उत्तेजित करने की दृष्टि से भले ही कुछ रहा हो किन्तु स्थायी साहित्य या वास्तविक काव्य-रचना की दृष्टि से इस ओर काफी ह्रास हुआ है। स्वभावतः देशभक्ति एक ऐसा भाव प्रवाह है जिसके वेग की लपेट में अनेक अकवियों का काव्य-क्षेत्र में कूद पड़ना और कई एक कवियों का बौखला जाना साधारण सी बात थी। श्री बालकृष्ण राव जैसे प्रांजल आलोचकों को ऐसी रचनाओं में "अकविता" की गंध आई और "चना जोर गर्म" की गूंज भी सुनाई दे गई। किन्तु फिर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपवाद रूप [illegible] इन दिनों हुआ है और मुझे यह लिखते हुए हर्ष का अनुभव होता है कि अंशत या सर्वांशतः ऐसी रचनाएं यदि कहीं उपलब्ध हैं तो वह "रणभेरी" के इन पृष्ठों में ही है। एक सौ बीस कविताओं के इस विशाल संग्रह में सर्वश्री नीरज, भगवत शरण चतुर्वेदी, आनन्द मिश्र, पुरुषोत्तम कुमार, ब्रजेन्द्र अवस्थी, रजनीश आदि की रचनाएं सचमुच ओज और स्फूर्ति की दृष्टि से प्रेरक रचनाएं हैं।

जैसा कि मैंने पहले कहा "रणभेरी" अपने ढंग का अद्वितीय संग्रह है जो न केवल कला अपितु कलेवर की दृष्टि से भी विशाल है। विशाल कलेवर में कुछ न कुछ "अवांछित" स्थान पाले तो आश्चर्य नहीं क्योंकि वह कमी "रणभेरी" की नहीं प्रत्युत उस बौखलाहट की है जो इन दिनों कवियों—अकवियों के साथ-साथ कला-पारखियों तक में भी व्यापक रही। इस संग्रह में संकलित कुछ कविताएँ भाषा की दृष्टि से और कुछ भाव की दृष्टि से पर्याप्त अशक्त हैं। कुछ रचनाओं में पृष्ठ-विस्तार अधिक है कथ्य कुछ विशेष नहीं। विशेषतः छन्दमुक्त रचनाएं तो छन्द के साथ-साथ अनतिविस्तार से भी मुक्त हो गई हैं। कई एक अमहत्व पूर्ण रचनाएँ ब्लाक आदि के विशेष संयोजन द्वारा विशिष्ट हो गई हैं। यद्यपि ये नितान्त सामान्य है। वस्तुतः महत्त्व प्रतिष्ठा काव्योत्कर्ष के अनुसार होनी चाहिए।

श्री बशीर अहमद मयूख की रचना चलती भाषा का बढ़िया उदाहरण है। जिन उर्दू लेखकों ने उर्दू की मूल प्रवृत्ति को बनाए रखने की कोशिश की वे सफल रहे किन्तु कई एक—हिन्दी में उर्दू या उर्दू में हिन्दी का मिश्रण करते करते उखड़ी उखड़ी भाषा का नमूना दे गए हैं। पंजाबी कवि इन्द्रजीत सिंह, तुलसी की रचना में भावोत्तेजना तो है किन्तु चौक चांदनी की चौखट, हिमगिरियों के अंग अंग, शीश हथेली रखके निकलो जैसे अशक्त प्रयोग और वाक्यों की अपांगता इस बात की सूचक है कि किसी दूसरी भाषा में कविता लिखना गद्य-लिखने की अपेक्षा अधिक भाषाधिकार की अपेक्षा रखता है। आशा है दूसरे संस्करण में सुयोग्य संपादक जहां तहां जैसे तैसे आ जुड़ी अनावश्यक कविताओं का परिहार और सामान्य कविताओं का परिष्कार भी कर पाएंगे ताकि 'रणभेरी' के प्रेरक स्वर में ओजस्विता का निरविरुद्ध घोष सतंत बना रहे, किसी हीनता के कारण उसके नैरन्तर्य में व्याघात न आने पाए।

पुस्तक की छपाई-सफाई सभी दृष्टियों से प्रशंसनीय है। समूचे तौर पर 'रणभेरी' एक स्पृहणीय प्रकाशन है।

—रञ्जन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकों एवं पाठकों से विशेष निवेदन

- रचना सफेद काग़ज़ पर एक ओर टाइप किये सुवाच्य अक्षरों में लिखी होनी चाहिए तथा सामग्री यथासम्भव सरल और सुबोध होनी चाहिए।
- अनुवाद या लिप्यन्तर भेजते समय मूल लेखक की अनुमति भेजना न भूलें।
- रचना की प्राप्ति सूचना प्रायः १५ दिन में भेज दी जाती है। अस्वीकृत रचनाएं लौटाने एवं उनकी सूचना भेजने का नियम नहीं है। लेखक के आग्रह पर विशेष परिस्थितियों में उसकी रचना उसे लौटाई जा सकती है।
- सामग्री के संशोधन एवं प्रकाशन के विषय में सम्पादक का निर्णय अन्तिम होगा, परन्तु लेखक के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
- रचना के आरम्भ और अन्त में अपना पूरा पता और नाम लिखना न भूलें।
- रचना मौलिक एवं अप्रकाशित होनी चाहिए।
- 'जन साहित्य' एवं 'सप्तसिन्धु' की एक प्रति का मूल्य क्रमशः ५० नए पैसे और वार्षिक चन्दा ६ रुपए है।
- ये पत्रिकाएँ डी०पी०आई० पंजाब एवं मध्यप्रदेश द्वारा पञ्जाब एवं मध्यप्रदेश के सभी स्कूलों, कालेजों तथा लाइब्रेरियों के लिए स्वीकृत हैं।
- 'सप्तसिन्धु' पत्रिका में शोधविषयक लेख छपते हैं और दूसरी पत्रिका 'जनसाहित्य' में सृजनात्मक साहित्य छपता है।
- ये पत्रिकाएँ आपकी अपनी हैं, इनके सुधार के लिए अपने अमूल्य सुझाव भेजते रहें।
- पत्रिकाओं से सम्बन्धित प्रत्येक प्रकार का पत्र-व्यवहार निदेशक, हिन्दी विभाग, पञ्जाब, पटियाला से करें न कि किसी व्यक्तिगत नाम से।
- वार्षिक चन्दा मनीआर्डर द्वारा भेजकर आज ही ग्राहक बनें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस परमाणु युग में उच्च शिक्षा का सबसे अधिक महत्त्व है। चाहे देश की आर्थिक उन्नति की बात हो, सामाजिक विकास का प्रश्न हो या राष्ट्रीय-रक्षा का सवाल हो--सभी क्षेत्रों में विकास और प्रगति के लिए उच्च शिक्षा आवश्यक है।

उच्च-शिक्षा के लिए हमें देश की भाषाओं में प्रचुर वैज्ञानिक साहित्य चाहिए। इस प्रकार का साहित्य समृद्ध वैज्ञानिक शब्दावली के बिना तैयार नहीं किया जा सकता। वैज्ञानिक शब्दावली ऐसी हो, जो वैज्ञानिक शिक्षा और विकास को बढ़ावा दे, उसमें रुकावट न बन जाए।

आज दुनियां में विज्ञान की प्रगति तेजी से हो रही है। आज का जीवन विज्ञान पर इतना अधिक निर्भर होता जा रहा है कि हम विज्ञान के प्रति उदासीन रह कर पिछड़ने का खतरा ही मोल ले सकते हैं। वैज्ञानिक-शिक्षा और वैज्ञानिक अनुसंधान के स्तर को ऊपर उठाने का कोई भी प्रयास हमें कल पर नहीं छोड़ना चाहिए। इसलिए आज हमारी पहली और सबसे बड़ी जरूरत एसी पुस्तकों की है जो पढ़े-लिखे लोगों के अलावा जन-साधारण को भी उनकी भाषा के माध्यम से वैज्ञानिक गतिविधियों से परिचित करा सके।

—दौलतसिंह कोठारी
अध्यक्ष
वैज्ञानिक तथा तकनीकी
शब्दावली आयोग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी विभाग, पंजाब के दो अनूठे मासिक प्रकाशन

स
प्त
सि
न्धु

ज
न
सा
हि
त्य

शोधपूर्ण एवं आलोचनात्मक साहित्यिक प्रबंधों का एक बोधक संचयन।

व्यंग्य-विनोद एवं सृजनात्मक सरस साहित्य का एक रोचक संकलन।

दोनों पत्रिकाएँ डी० पी० आई०, पंजाब, डायरैक्टर पंचायत, पंजाब, तथा संचालक, लोक शिक्षण, मध्यप्रदेश, द्वारा पंजाब के सभी स्कूलों, कालेजों, लायब्रेरियों एवं पंचायतों तथा मध्य प्रदेश के स्कूलों, कालेजों एवं लायब्रेरियों के लिए स्वीकृत हैं।

बढ़िया काग़ज़, सुन्दर छपाई, आकर्षक गैट-अप

प्रत्येक का :—

वार्षिक ६ रुपये — एक प्रति ५० नये पैसे

आज ही निदेशक, हिन्दी विभाग, पंजाब, पटियाला को मनीआर्डर भेजकर ग्राहक बनिए।

श्री लाल सिंह, डायरैक्टर जनरल, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला द्वारा प्रिंटिंग एण्ड स्टेशनरी डिपार्टमैंट, पंजाब, पटियाला से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

सम्पादक—डा० परमानन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

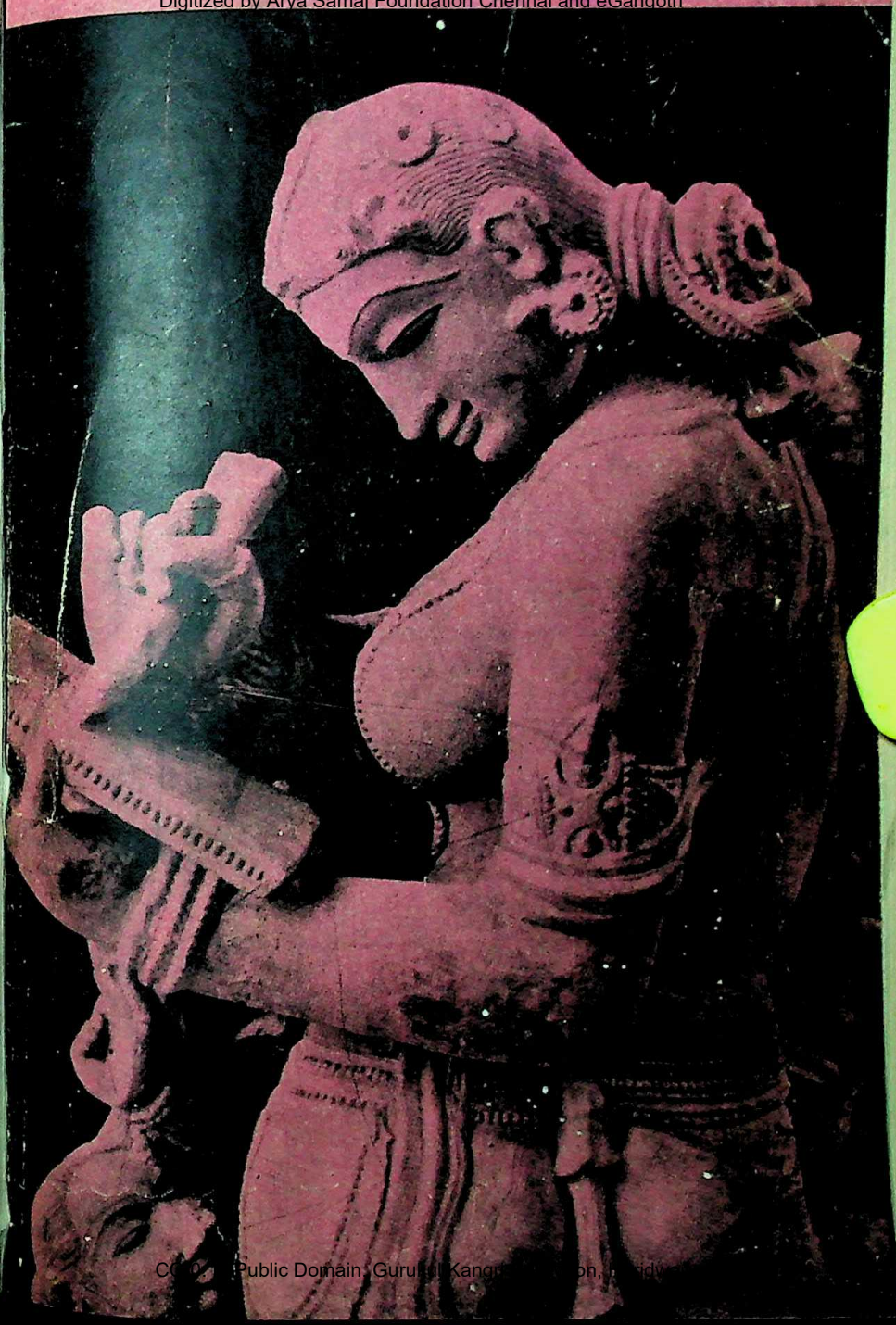

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य के अनुरागी

"श्री जवाहरलाल ने राजनीतिक संघर्ष के क्षेत्र में,
बहुधा छल और आत्म-प्रवंचना चरित्र को विकृत कर,
शुद्ध आचरण का आदर्श निबाहा है। उन्होंने कभी
सत्य से मुंह नहीं मोड़ा, चाहे उसमें कितना ही
खतरा रहा हो, न उन्होंने कभी झूठ के साथ समझौता
किया, चाहे उसमें कितनी ही सुविधा रही हो।
उनकी प्रतिभाशाली बुद्धि सर्वदा कूटनीति के उस
रास्ते से मुखर अवज्ञापूर्वक हट जाती रही है
जहां सफलता सस्ती और तुच्छ होती रही है।"

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनसाहित्य

इमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः

(मासिक प्रकाशन—सितम्बर, १९६४)

वर्ष ३ अंक ९

कविता

* ढलता सूरज..... श्री ओम् प्रकाश भारद्वाज 'सुमन' डिप्टी सैक्रेटरी, पंजाब सरकार, विकास विभाग, चण्डीगढ़ । ६

* जय भारत मां श्री सुरेश, गवर्नमेंट कालेज, लुध्याना । १८

* गीत श्रीमती सुदर्शन बाहरी, सी. आर. ए. कालेज, सोनीपत । ३३

* गीत श्रीमती शकुन्तला श्रीवास्तव, गवर्नमेंट कालेज फार वीमैन, लुध्याना । ४५

कहानी

* मन का कोना उल्लास भरा श्रीमती पुष्पा महाजन, जेल रोड, गुरदासपुर । ७

* कौन किसका प्रो. आनन्दवती कश्यप, गवर्नमेंट कालेज फार वीमैन, पटियाला । १४

* स्त्री (तेलुगु कहानी) मूल लेखक गन्धम याज्ञवल्क्य शर्मा अनु० एस. आई. शरीफ, शिक्षा-भवन शान्ति निकेतन (पश्चिमी बंगाल) ३७

* दूर एक मोड़ श्री कंवर गुलाटी, चैल क्वार्टर्ज, पटियाला । ७०

* कैदी की कलम से श्री अमर दीपक, ७१ माडल टाउन, अमृतसर । ६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख

* हमारा नया मन्त्रीमण्डल		१
* सूरदास की एक पंक्ति	श्री उदयभानु हंस, ज्योति पुरा, हिसार	२८
* कैसे कैसे मेहरबान अपने	श्री मोहन मैत्रेय, रावल बिल्डिंग, कालेज रोड, होशियारपुर ।	३४

एकांकी

* आदि पुरुष	श्री चन्द्र शेखर, लायलपुर खालसा कालेज, जालन्धर ।	१९
* गरीब घराना	श्री मोलूराम, ज्योति स्ट्रीट, पटियाला ।	४८
पुस्तक समीक्षा	श्री रञ्जन, श्री मनोहर मैत्रेय, सुश्री एस. शर्मा	८०

सम्पादक—डा० परमानन्द

परामर्श समिति

* श्री कृष्ण मधोक (सहायक निदेशक, अनुवाद)

*श्री त्रिलोकी नाथ 'रञ्जन', (सहायक निदेशक, कोश)

*श्री ओम्प्रकाश भारद्वाज, संयोजक (सहायक निदेशक, विकास)

* श्री गुरुदत्त शर्मा (सहायक निदेशक, अनुवाद)

* श्री हरिचन्द पाराशर (सहायक निदेशक, अनुवाद)

हिन्दी विभाग, पंजाब, पटियाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

लोकनायक लाजपतराय की जन्म-शती

पञ्जाब मातृभूमि भारत का मुकुट है। सृष्टि के आरम्भ में मानव-सभ्यता ने सर्वप्रथम इसी पवित्र भू-भाग पर चेतना का उच्छ्वास लिया था। सतलुज और व्यास की सुरम्य लहलहाती शस्यश्यामला धरणी के क्षितिजे को वेद की पवित्र ऋचाओं से आदि काल मे यहीं निनादित किया गया था। इसी वीर प्रसव पवित्र भूमि के वीरों ने वैदेशिक अत्याचारियों को निराकृत और पराभूत करके भारत जननी की मान-मर्यादा को अक्षुण्ण रखा था।

महान् नेता श्री लाजपतराय जी इसी वीर-भूमि की उदात्त विभूति हैं। भारत के स्वातन्त्र्य संग्राम में भारत के अनेक वीर नेताओं ने संघर्ष किया है। लोकमान्य श्री बाल गंगाधर तिलक, महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी, श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी, राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जी, लोह पुरुष सरदार पटल एवं लोक नायक श्री जवाहरलाल जी नेहरू आदि तेजस्वी नेताओं की रत्नमाला में एक भास्वर रत्न श्री लाला लाजपतराय जी भी अद्वितीय हैं। ये पंजाब की महान् विभूति थे। पंजाब का मस्तिष्क इन्हीं के वीर पराक्रमों के कारण उन्नत हुआ है। ये प्रेरणास्रोत थे।

ये केवल राजनैतिक नेता ही नहीं हो गुजरे प्रत्युत पंजाब में जो जन-जागरण किसी भी क्षेत्र में हुआ--शिक्षा, समाज सुधार, दलितोद्धार, स्त्री शिक्षा--सब में इनकी स्फूर्ति और प्रेरणा से बल मिला। ये भारत की प्राचीन संस्कृति के परम भक्त और उसके पुनः संस्थापन के लिये कृत-संकल्प महान् योधा थे। इनके समकक्ष इस युग में पंजाब ने वीर नेता उत्पन्न नहीं किया।

इनका सारा जीवन ब्रिटिश साम्राज्य के अत्याचारों की भीषण यातनाओं के सहने में व्यतीत हुआ। जिस समय साईमन कमीशन पंजाब में आया और अंग्रेजी सरकार ने उसके स्वागत के लिए सभी प्रबन्ध कर रखे थे--तो इसी वीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रंगव ने अपने सिंहनाद के द्वारा उसे तिरस्कृत किया था। चारों ओर पोलीस सशस्त्र खड़ी थी। परन्तु यह नर-केसरी अपने अनुयायियों सहित ललकारता हुआ रेलवे स्टेशन पर पहुंचा। अंग्रेज पोलीस अधिकारी के आदेश से इन पर लाठियों की वर्षा हुई परन्तु यह पंजाब का सच्चा सुपुत्र निर्भय होकर 'साईमन वापिस लौटो" के नारे लगाता हुआ आगे ही बढ़ता गया। ब्रिटिश राज्य की संगीनों ने उनके तन को छलनी कर दिया और अन्त में वे मातृ-भूमि की मान-मर्यादा की बलिवेदी पर बलिदान हो गए परन्तु ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ें हिल गईं। जिस साम्राज्य में कभी सूर्य अस्त नहीं होता था उसी का सूर्य इसी भारत भूमि में सदा के लिये अस्त हो गया। अमर शहीद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु ने इसी महान् नेता के सम्मान में अपने प्राणों की आहुति दी थी। इसी नेता की वीर-घोषणा में भारत भर की नर-नारियों का सिंहनाद था।

पञ्जाब केसरी जैसी निष्ठा, अटल विश्वास और अदम्य साहस का दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। आज भी उनकी स्मृति से हमारा हृदय उद्वेलित हो उठता है—छाती गर्व से तन जाती है और मस्तिष्क आत्म गौरव से ऊँचा उठ जाता है, ऐसा निर्भीक योधा पैदा किया था पंजाब ने! ऐसा महान् उन्नायक पाया था इस वीर भूमि ने!! धार्मिक, नैतिक और शिक्षा क्षेत्र में उनकी समानता का अन्य व्यक्ति इस युग में दृष्टिगत नहीं होता।

यह वर्ष लाला जी की जन्म-शती का है। श्री लाजपतराय स्मारक समिति ने चण्डीगढ़ के पंचायत भवन में २१ अगस्त से चार दिन का एक स्मारक शिविर लगाया था जिसका उद्घाटन पंजाब के मुख्य मन्त्री श्री कामरेड राम कृष्ण जी ने किया था। श्री अलगु राय शास्त्री आदि नेताओं ने लाला जी के विविध कार्य-कलापों पर प्रकाश डाला था। वास्तव में ही यह शिविर जनता की प्रेरणा का स्रोत सिद्ध हुआ है। हमें चाहिए कि लाला जी के पुनीत एवं वीर-कार्य कलापों से प्रेरणा, उत्साह और संबल को प्राप्त करके भारत भूमि की सेवा में तत्पर रहें।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोलीस
ता हुआ
लाठियों
वापिस
गीनों ने
ादा की
गई ।
त भूमि
राजगुरु
ता की

दूसरा
ी उठता
ाता है,
ाया था
का अन्य

समिति
शिविर
जी ने
कार्य-
णा का
लापों से
रहें ।

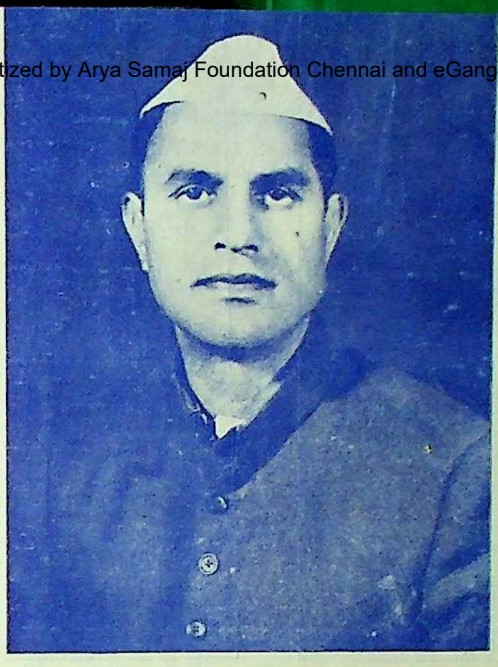

कामरेड रामकिशन

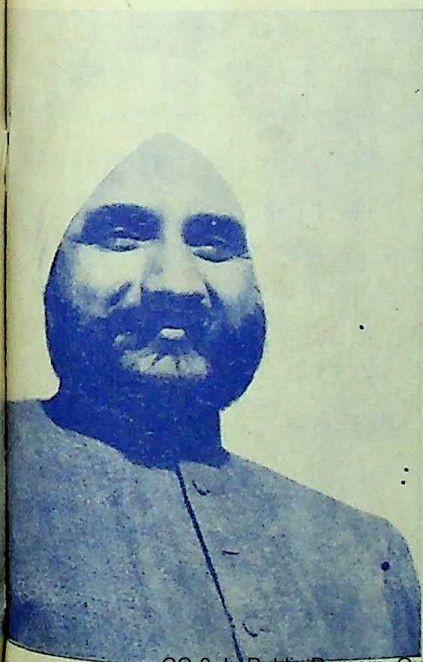

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री कपूर सिंह

मेजर हरीन्द्र सिंह

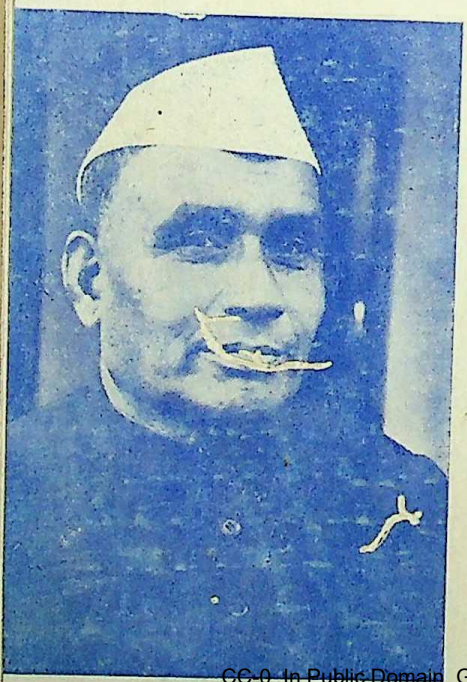

श्री सुन्दर सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा नया मन्त्री मण्डल

कामरेड रामकिशन जी

कामरेड जी का जन्म पश्चिमी पाकिस्तान के झंग ज़िला में १९१३ में हुआ। आपको लाला लाजपत राय जी की मौत के बाद स्वाधीनता-संग्राम में हिस्सा लेने के लिए १९२९ में कालिज छोड़ना पड़ा।

कामरेड रामकिशन जी कांग्रेस के ऐसे सदस्य हैं, जिन्होंने अपना सब कुछ लोगों की भलाई के लिए दे रखा है। आपने अपने बहुमूल्य जीवन के ६ वर्ष, १९३०, १९३१, १९३२ और १९४१ जेल में काटे हैं। आपको "भारत छोड़ो आन्दोलन" के दौरान नज़रबन्द कर दिया गया था। आपके पिता लाला रामचन्द जी ने भी अपने पुत्र का सोत्साह अनुकरण करते हुए दो बार जेल यात्रा की।

राष्ट्र के लिए की गई सेवाओं के फलस्वरूप आपको १९४६ में लाहौर नगरपालिका निगम का सदस्य चुना गया। आप बटवारे से पहले पंजाब प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय सचिव के रूप में भी काम कर चुके हैं।

कामरेड रामकिशन जी बटवारे के पश्चात् बस्ती गुज़ां जालन्धर में रहने लगे और आपने पंजाब विधान परिषद में उस चुनाव क्षेत्र का १९५२ से १९५७ तक प्रतिनिधित्व किया। आप अपनी सेवाओं के फलस्वरूप जालन्धर शहर के एक लोकप्रिय नेता के रूप में जनता के सामने आये और १९४८ से १९५१ तक नगरपालिका के सदस्य बने रहे। उसके बाद आप प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महा-सचिव चुने गये। आप ज़िला कांग्रेस कमेटी जालन्धर के ४ वर्षों तक अध्यक्ष भी बने रहे हैं।

आप १९५६ में पंजाब मंत्री मण्डल में उपमंत्री के रूप में भी काम कर चुके हैं।

आप १९५७ के चुनाव में रीजनल फार्मूले के विवाद के फलस्वरूप एक जन संघ के नामित व्यक्ति के पक्ष में विधान सभा की सीट हार गये थे। परन्तु अपने अविचल राजनैतिक कार्य के कारण आपने १९६२ के चुनाव में विधान सभा की इस सीट को पुनः जीत लिया।

आप अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री रामकिशन जी १९६२ में राज्य मंत्री बने । भारत पर चीनी आक्रमण के परिणाम स्वरूप, जब मंत्रीमण्डल की संख्या को कम करने का निर्णय किया गया, तो आपने मंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया ●

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरदार दरबारा सिंह जी

सरदार दरबारा सिंह जी का जन्म २ मार्च, १९१६ को हुआ और आपने खालसा कालिज, अमृतसर में शिक्षा प्राप्त की । उसके पश्चात् शीघ्र ही आप लोक सेवा में लग गए और स्वाधीनता-संग्राम के दौरान कई बार जेल यात्राएं कीं ।

आप १९४६ से १९४९ तक जालन्धर ज़िला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रह चुके हैं ।

आप १९५२ में विधान सभा के सदस्य चुने गए और इस के साथ ही सरकारी लेखा कमेटी के सदस्य भी बन गए ।

आप पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी के १९५४ से १९५८ तक महा सचिव भी बने रहे हैं ।

पंजाब और पैप्सू के विलय के पश्चात् आप चकबंदी, सहकारी समितियां, तथा राजनैतिक पीड़ितों से सम्बन्धित विभागों के ६ मास तक मंत्री बने रहे हैं । १९५८ में आपने पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष का पद संभाला ।

इस के अतिरिक्त आप विभिन्न संस्थाओं अर्थात् पंजाब को-आपरेटिव बैंक, जालन्धर, गवनमैंट नेशनल मोटर ट्रांसपोर्ट कर्मचारी संघ और पंजाब सहकारी संघ और पंजाब मोटर संघ के अध्यक्ष भी रह चुके हैं । आप पुलिस कमीशन के सदस्य भी रहे हैं । इस के साथ साथ पंजाब प्रदेश रचनात्मक कार्य (Constructive work) बर्डि के सचिव एवं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्य कारिणी समिति के सदस्य भी रहे ह ।

आप १९६२ से पंजाब मंत्री मण्डल के सदस्य हैं ●

श्री प्रबोध चन्द्र जी

श्री प्रबोध चन्द्र जी का जन्म रावलपिंडी में २४ अक्तूबर, सन् १९११ को हुआ । आप ने सन् १९३७ में एफ. सी. कालिज लाहौर से एम. ए. परीक्षा पास की । १६ वर्ष की उम्र में श्री प्रबोध चन्द्र मुलतान बम-केस में पहली बार गिरफ्तार हुए । आप भारतवर्ष में विद्यार्थी आन्दोलन के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं ।

आप १९२९ से ले कर स्वतन्त्रता प्राप्त होने तक सभी राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेते रहे हैं । आपने कुल मिला कर ७½ वर्ष जेल में व्यतीत किए । स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् आप को दो बार यूरोपीय देशों में, उन देशों की संसदीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य पद्धति का अध्ययन करने के लिए जाने का अवसर मिला।

आप सन् १९४६ में पहली बार कांग्रेस टिकट पर पंजाब विधान सभा के सदस्य चुने गए।

स्वतन्त्रता के पश्चात् सन् १९५२ में आप पहले आम चुनावों में गुरदासपुर चुनाव-क्षेत्र से पंजाब विधान सभा के सदस्य चुने गए। आप सच्चर-मंत्री-मण्डल में मुख्य संसदीय-सचिव के पद पर और उस के पश्चात् कैरों मंत्री मण्डल में मन्त्री पद पर रहे। आप १९५७ और सन् १९६२ के आम चुनावों में इसी चुनाव-क्षेत्र से फिर निर्वाचित हुए।

श्री प्रबोधचन्द्र १९६२ में पंजाब विधान-सभा के अध्यक्ष चुने गए। आपने मार्च, १९६४ में, जबकि आपने यह महसूस किया कि एक अध्यक्ष के रूप में आप की निष्पक्षता पर कुछ सदस्य आपत्ति उठा रहे हैं, त्याग-पत्र दे दिया।

आपने १९३९ में "Students Movement in India", १९४६ में "Sixty years of Congress" १९४७ मे "Rape of Rawalpindi" और १९५५ में "Pilgrims Progress" नामक पुस्तकें लिखीं हैं ●

चौधरी सुन्दर सिंह

चौधरी सुन्दर सिंह ज़िला स्यालकोट में सन् १९०६ में उत्पन्न हुए थे। उन दिनों हरिजनों में शिक्षा बहुत कम और दुर्लभ थी, परन्तु श्री सुन्दर सिंह अपने उद्यम और अध्यवसाय से इन्टर (Intermediate Standard) तक पढ़ सके। इस के पश्चात् आप अपने ज़िले में आर्य-समाज द्वारा आरम्भ किए गए हरिजन-उद्धार-कार्य मे लग गए। इस के पश्चात्, आपकी गतिविधियों का क्षेत्र विस्तृत होता गया और आप लाहौर चले गए। वहां पर आपने गांधी जी के सिद्धातों के आधार पर हरिजन-कल्याण का काम आरम्भ कर दिया।

सन् १९४५ में चौधरी सुन्दर सिंह ने लाहौर उच्च-न्यायालय की नौकरी छोड़कर राजनीति में प्रवेश किया। आपको कांग्रेस टिकट पर स्यालकोट-अमृतसर के द्विसदस्यीय देहाती निर्वाचन क्षेत्र (Double-member Rural Constituency) से चुना गया और उस के पश्चात् आप बटवारे से पहले पंजाब की संयुक्त सरकार (Coalition Government.) में संसदीय-सचिव बनाए गए। बटवारे के परिणाम-स्वरूप हुए दंगे-फसादों के दौरान आपने अपने इलाके के हरिजनों की रक्षा के लिए प्रत्येक सम्भव कदम उठाये और इस के पश्चात् आपने विस्थापित हरिजनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

के स्यालकोट से आने वाले एक बड़े पैदल जत्थे का नेतृत्व किया।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बटवारे के पश्चात् चौधरी सुन्दर सिंह गुरदासपुर में रहने लगे और आप विस्थापितों और हरिजनों की भलाई के काम में लग गए। आप राज्य-सरकार द्वारा बनाई गई अनुसूचित जाति-कल्याण-समिति (Scheduled Caste Welfare Committee) के क्रियाशील सदस्य बन गए। १९५२ के आम चुनाव में आपको गुरदसपुर ज़िले से राज्य विधान सभा के लिए चुना गया। इस ज़िले से सन् १९५७ और १९६२ के आम चुनावों में आपको फिर चुना गया। आप अप्रैल १७, १९५२ से जनवरी २३, १९५६ तक श्रम और आबकारी तथा कराधान मंत्री रहे और इस के पश्चात् आप कैरों मंत्रीमण्डल में, जो सन् १९६२ में तीसर आम चुनावों के पश्चात् बनाया गया था, उप-मंत्री, आबकारी और कराधान रहे। आपने राष्ट्रीय-आपात के कारण जनवरी, १९६३ में उप-मंत्री पद से त्याग-पत्र दे दिया। ●

मेजर हरीन्द्र सिंह

मेजर हरीन्द्र सिंह जी का जन्म २७ फरवरी, १९१७ को हुआ। आप ने एटिक्सन चीफ्स कालिज, लाहौर और खालसा कालिज, अमृतसर में शिक्षा प्राप्त की। आप अमृतसर ज़िले के राजा-सांसी के सुविख्यात और प्रसिद्ध परिवार से सम्बन्ध रखते हैं। जहां तक व्यवसाय का सम्बन्ध है आप कृषिक हैं।

मेजर हरीन्द्र सिंह जी केन्द्रीय विधान सभा के उस समय तक सदस्य बने रहे जब तक कि स्वाधीनता के पश्चात् इसे संविधान सभा के रूप में बदला नहीं गया। आप १९५४ और फिर १९६० में पंजाब विधान परिषद के सदस्य चुने गए। आप १९६२ में अमृतसर ज़िला के अजनाला चुनाव क्षेत्र से पंजाब विधान सभा के सदस्य चुने गये।

आप अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी और पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी रह चुके हैं। इस के अतिरिक्त आप ज़िला कांग्रेस कमेटी, अमृतसर के अध्यक्ष, खालसा कालिज, अमृतसर के अवैतनिक सचिव, अमृतसर सैण्ट्रल को-आपरेटिव बैंक लि० अमृतसर के निर्देशक, नवीन जनता हाई स्कूल, हरसीछीना के अध्यक्ष और पंजाब विधान मण्डल पार्टी के खंजाची भी रह चुके हैं। ●

सरदार कपूर सिंह

सरदार कपूर सिंह, अध्यक्ष, पंजाब-विधान-परिषद् सन् १८९८ में उत्पन्न हुए थे। आपने खालसा कालिज, अमृतसर से बी. ए. और ला-कालिज, लाहौर से एल. एल. बी. पास की। आपने १९२३ से १९३४ तक और फिर १९३८ से १९४० तक लुधियाना में वकालत की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४३ में आपको कानूनी व्यवसायी–अधिनियम (Legal Practitioners Act) के अधीन अनुशासनीय कार्यवाही के कारण, जो पंजाब उच्च–न्यायालय ने कांग्रेस द्वारा शुरू किए सविनय–अवज्ञा –आन्दोलन (Civil Disobedience Movement) के दौरान दोष–सिद्धि के फलस्वरूप की थी, अपना व्यवसाय स्थगित करना पड़ा।

१९३५–३७ के दौरान आप अजय–गढ़ राज्य में सेशन जज और दीवान रहे। आपको राज्य द्वारा बम्बई, झांसी और नवगोंग में राजाओं तथा प्रधान–मंत्रियों के सम्मेलन (Princes and Prime Ministers Conference) में, जो भारत–सरकार–अधिनियम, १९३५ के संघीय भाग पर विचार करने के लिए बुलाया गया था, प्रतिनिधि के रूप में भेजा गया। बाद में आप ने नौकरी से त्याग-पत्र दे कर पंजाब की क्रियाशील राजनीति में पुनः प्रवेश किया।

१९२५–४० के दौरान, जब आप वकालत करते थे, तो आप इस दौरान ज़िला–बोर्ड, लुधियाना के सदस्य रहे और पांच वर्ष की अवधि के लिए बोर्ड के उपाध्यक्ष भी रहे।

आप १९३०–३३ के दौरान लुधियाना नगरपालिका के सदस्य और एक अवधि (term) के लिए उपाध्यक्ष भी रहे।

आपने सन् १९३७ में संयुक्त–पंजाब–विधान सभा का चुनाव लड़ा और आप उसमें सफल रहे। तब आप सन् १९५२ तक लगातार विधान सभा के सदस्य बने रहे। आप १९४०–४५ के दौरान, जब कांग्रेस दल विरोधी दल था, कांग्रेस विधान–सभा–दल के महा–सचिव थे और बाद में आप कांग्रेस दल के, जबकि कांग्रेस ने सन् १९४६ में यूनियनिस्ट पार्टी (Unionist Party) के साथ मिली जुली सरकार बनाई थी, मुख्य परिचालक (Chief Whip) रहे। आप बटवारे के पश्चात्, पंजाब-विधान-सभा के अध्यक्ष चुने गए और आपने १९५२ तक काम किया। सन् १९५२ में आप पंजाब विधान परिषद के सदस्य चुने गए और इसके अध्यक्ष भी, जिस पद को आप ने तब से लगातार संभाला हुआ था।

आप ने मई, १९५८ से अगस्त, १९५८ तक इंगलैंड और महाद्वीप के अन्य देशों का लंदन में कामनवैलथ संसदीय संस्था के संसदीय कोर्स में भाग लेने के लिए और महाद्वीप के देशों में संसदीय संस्थाओं की कार्यपद्धति का अध्ययन करने के लिए दौरा किया।

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढलता सूरज सन्ध्या का सिन्दूर है !

जब तक मेरा चाँद नयन से दूर है,
दिल की ही तस्वीर मुझे मंजूर है।

(१)

लाख गगन का चाँद हंसा पूनम के दिन,
ले आया तारों की बारातें अनगिन,
हुई न हल्की पीर हृदय की पल दो पल,
मिटा न अंधेरा मुस्कान तुम्हारी बिन;
तुम से ही मन का मन्दिर भरपूर है।
दिल की ही तस्वीर मुझे मंजूर है॥

(२)

मिलती नहीं बिना डूबे गहराइयाँ
गाती हैं, रोती भी हैं शहनाइयाँ,
ऐसा भी होता है मन के मीत बिना,
आग लगाती हैं ठंडी पुरवाइयाँ;
ढलता सूरज सन्ध्या का सिन्दूर है।
दिल की ही तस्वीर मुझे मंजूर है॥

(३)

किसी किसी क्षण मौन मुखर हो जाता है,
और कभी कह कर कुछ कहा न जाता है,
प्राणों में पीड़ा नयनों में सावन घन--
लिय दिखावे को मन हंसता गाता है;
ऐसा ही कुछ दुनिया का दस्तूर है।
दिल की ही तस्वीर मुझे मंजूर है॥

ओ. प्र. भारद्वाज "सुमन"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

मन का कोना--उल्लास भरा

पुष्पा महाजन

ओह ! छः बज गये । लेटे लेटे ही सुधि ने घड़ी देखी । समीर के आगमन में केवल दो घण्टे शेष.....अब उठना ही चाहिये । उपन्यास में पेजमार्क लगाया और एक मदभरी अंगड़ाई ले कर शरीर का समस्त आलस्य झाड़ फैंका । स्फूर्त सी दर्पण के सम्मुख आई तो दृष्टि अपलक रह गई । सामने जो मूर्ति थी वह सुन्दर से सुन्दरतर होती जा रही है । उसका निखार निरन्तर वृद्धि पर है । वर्ण उसका पहले ही गौर था परन्तु अब आभा की किरणें सी छिटक रही हैं । सुडोल अंगों को किसी शिल्पी की छैनी ने और भी सुन्दर ढंग से तराश दिया है । दर्पण में मानों सुधि नहीं..... सुचिक्कन पाषाण खण्ड से बनी प्रतिमा है । किसी चमत्कार ने उसे प्राणमयी बना डाला है । कर्ण मूल तक फैले उस के नेत्र हंसे । अधरों ने उस की मुस्कान ली और सुन्दर मुख आलोक से भरपूर हो उठा । विमुग्ध सी वह बाथ रूम में जा घुसी । निकली तो साबुन की भीनी गन्ध से कमरा महक उठा ।

'शंकरी ! '

आया बगिया से मोतिया के फूलों की झोली भर कर लौट रही थी । अभी-अभी उसे मेम साहब के जूड़े के लिये वेणी बनानी है । पुकार सुनते ही तख्त पर फूल बिखरा वह भीतर पहुंची । अधेड़ आयु की शंकरी मेम साहब की आज्ञा की प्रतीक्षा में रहती । सुधि अपने रेशमी बालों की गुलझटें सुलझा रही है ।

'शंकरी मेरी साड़ी, तो निकाल दे ।'

केश छोड़ सुधि पफ से पाउडर छिड़क रही है अपनी कम्बु ग्रीवा पर । शंकरी को आज्ञा दे कर वह निश्चिंत हो गई है । पर शंकरी वैसे ही ठिठकी है । अलमारी में दो-चार साड़ियां तो हैं नहीं.....कौन सी साड़ी निकाले ?

'कौन सी साड़ी, मेम साहब ?' डरते डरते पूछती है शंकरी । अपनी भूल पर सुधि पुनः हंसी । भवों पर पेन्सिल फेरते हुए कहा—'फ़िरोज़ी रंग की ।'

साड़ी दे कर शंकरी वेणी गूंथने जा बैठी । इस घर में रहते शंकरी को पांच वर्ष हो गये । इसलिए कुछ भी पराया नहीं उस के लिये । समीर की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहली बहू को आये केवल नौ मास हुए हैं। घर में उन दोनों के अतिरिक्त वृद्धा मां है। दिन–रात बहू–बेटे की बलायें लेती है। आशीर्वाद के फूल सदा मुख से बरसते रहते हैं। बहू का प्रथम प्रसव होने वाला है और वृद्धा मां कुछ भी कर सकने में असमर्थ है। इसलिए समीर शंकरी को कांगड़े से ढूंढ कर लाया है। नीटू का जन्म उसके सामने ही हुआ। उस छोटे से परिवार में उल्लास के निर्झर कल्लोल कर उठे। मां की बूढ़ी आंखों की ज्योति बढ़ गई। समीर की खुशियों की बहार अभी अंगड़ाइयां ले रही थी कि पतझर के भीषण झोकों ने नीड़ के तिनके बिखरा दिये। धन. . . ..प्यार..... उपचार हार गये, मृत्यु जीत गई। आठ दिन के निरीह शिशु को छोड़ बहू मोह के सब नाते तोड़ गई। बूढ़ी मां के पूजा–पाठ, दान व्रत सब निरर्थक सिद्ध हुए। उनकी आस्था डोल गई। शंकरी नीटू को पालती रही, समीर जीवन की गाड़ी को ठेलता गया.....वितृष्णा और अनिच्छा लेकर। ठीक छः मास उपरान्त मां भी चल बसी तो समीर को लगा..... मृत्यु के बलिष्ट पंजे उसे कुचलने पर तुल गये हैं। किसी काम में मन नहीं लगता। ऑफिस से लौटता तो सब सूना सूना लगता। नीटू के साथ वह भी रोता। तीक्ष्ण छुरी सी स्मृति उसके घावों को कुरेदती रहती। साधारण नौकरानी थी शंकरी किन्तु समीर उपकार मानता है उसका..... वह नीटू की पालिका है।

समय का मरहम समीर के घावों को भर रहा है। एकाकीपन चुभने लगा है उसे। रात्रि को समाचार–पत्र पढ़ने बैठता तो निगाहें बरबस विवाह विज्ञापनों का विश्लेषण किया करती हैं। मन पुनः सपनों का संसार बसाने लगा है। समाचार-पत्र के उन्हीं कालमों में उसे सुधि मिली। पत्र व्यवहार हुआ और एक दिन समीर सुधि को देखने जा पहुंचा। सुधि में क्या नहीं था.....भरपूर रूप लावण्य..... आकर्षक सौकुमार्य, छलकता यौवन और एम. ए. तक की शिक्षा। इधर समीर में क्या कमी थी.....सुन्दर स्वस्थ शरीर ..... प्रभावशाली व्यक्तित्व और सब से बढ़कर उच्च शासकीय पद। समीर की रिक्तता पूर्ण हो उठी। किन्तु विवाह के पूर्व एक समस्या आई। सुधि को जब नीटू के विषय में पता लगा तो उसने स्पष्ट लिख दिया.....वह किसी भी स्थिति में एकदम मां कहलाना पसन्द नहीं करेगी। उस की सखियां अभी से उसे 'मामी' कह कर मज़ाक करने लगी हैं। यह उस के लिये असह्य है। चिन्ता में डूब गया समीर।

वेणी के बहुत थोड़े फूल रह गये हैं। शंकरी की स्मृतियों में नीटू मचल रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है.....भोला-भाला नीटू अभी अभी सोया है। शंकरी पंखा कर रही है। निःशब्द पद रखते समीर उसकी चारपाई के पास आया। कुछ क्षण मूक, स्थिर-सा देखता रहा। नेत्रों में कुछ है.....भीगे से लगते हैं।

'शंकरी! नीटू के कपड़े तैयार कर देना। कल सुबह इसे जाना है।' उसके भारी स्वर से शंकरी चौंकती है। 'कहां?' शंकरी के हाथ का पंखा थम गया है। 'दिल्ली के एक पब्लिक स्कूल में इसे दाखिल करवा दिया है।' कह कर समीर रुकता नहीं है और शंकरी..... पत्थर बनी नीटू को देखती रहती है। उन्हें नीटू के सिर पर हाथ फेरते फेरते रोने लगती है। यह फूल रहेगा होस्टल में। आज होती इसकी मां.....शंकरी क्या करे?

समीर नीटू को छोड़ कर लौटा, तब भी शंकरी रोते हुए ही मिली।

'बहुत अच्छा स्कूल है, शंकरी। नीटू को कोई कष्ट नहीं होगा।'

समीर के कथन पर शंकरी को विश्वास नहीं। पुरुष के पास नारी का दिल हो ही नहीं सकता। फिर शंकरी ने नीटू को हृदय का रक्त दे कर पाला-पोसा था। रुद्ध कण्ठ से कहा 'आपको नीटू के लिये ही मेरी आवश्यकता थी, अब मुझे छुट्टी दीजिये, साहब।'

'क्या बात करती हो, शंकरी। नई मेम साहब की देखभाल नहीं करोगी?'

सुधि आई। अपने सहज माधुर्य से ही उसने शंकरी का मन जीत लिया।

'गजरे भी बना दूं, मेम साहब?' वेणी का अन्तिम फूल पिरोया शंकरी ने।

'यह भी पूछोगी शंकरी। तेरे साहब को यह सब कितना अच्छा लगता है।'

सुधि अपने सुन्दर अधरों पर लिपस्टिक का अन्तिम स्पर्श देते हुए बोली।

शृंगार पूर्ण करके सुधि ने एक सन्तुष्ट दृष्टि दर्पण पर डाली और परे हट गई। शंकरी उसकी साड़ी तहा रही थी। भाग्य-विधाता ने उसके लिये कितना सुख अपने कोष में सुरक्षित कर रखा था।

सात बज कर पैंतीस मिनट.....गाड़ी में केवल दस मिनट और.....आठ बजे तक समीर पहुंच ही जायेगा। यह सर्विस भी कैसी है .....महीने में दो तीन बार भी टूअर बन जाता तो आठ दस दिन घर से बाहर। इन दिनों सुधि को कितना सूना लगता। वह खीझ उठती, दिन कटना दूभर हो जाता। दिन भर किताबें पढ़ा करती, शाम को क्लब चली जाती। फिर भी अभाव खटकता करता। समीर को भी नई नवेली सुधि को छोड़कर जाना अच्छा तो नहीं लगता किन्तु काम ही ऐसा ठहरा।

घड़ी की बड़ी सूई दस मिनट और आगे बढ़ गई है। सुधि बाहर आकर टहलने लगी। रजनी गन्धा की मधु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गन्ध मादकता बिखरा रही है। आज मोरे मन्दिर आवो जी..... प्रफुल्ल सी गुनगुना रही है सुधि। घर्र, घर्र..... कार रुकी। उल्लास से भरपूर उतर रहा है समीर। सुधि की दृष्टि ने स्वागत के प्रसून पति के चरणों में बिखरा दिये हैं और पति ने अन्तर्मन की डलिया में उन्हें समेट लिया।

पत्नी के सौंदर्य को तृषित नयनों से पीते हुए पति ने कहा—'मैं भी सोचूं यह किसकी महक है वातावरण में?'

'चलो आते ही बनाने लगे।' खिल उठी सुधि। उसका हाथ थाम समीर भीतर खींच लाया।

'बड़ा लम्बा टूअर रहा तुम्हारा। पीछे का ध्यान नहीं रहता। मुझे भी साथ ले जाया करो?'

'तुम्हें कहां घसीटता फिरूं। लोग मुझे ही दोष देंगे। यह कोमल कलिका धूप-गरमी में मुरझा न जायेगी।'

समीर के प्रणय की सघनता ने सुधि को विभोर कर दिया। शंकरी ने परदे के पीछे रह पूछा—'साहब, खाना लगवा दूं?'

'लगवा दे शंकरी। तब तक मैं मुंह-हाथ धो लूं।'

खाने की मेज़ पर ही दोनों ने चार दिन से एकत्रित समाचार सुना डाले। उठे तो जैसे कहने को कुछ था नहीं। चुपचाप शयन-कक्ष में आये। तब एकाएक बोला समीर—'सुधि!'

'जी।' संक्षिप्त सा कहा सुधि ने।

'बहुत अकेलापन पाती हो मेरे पीछे?'

'यह भी कहने की बात है।'

'अच्छा है मेरा प्रतीक आ जाये तुम्हारी गोद में।'

शरमा गई सुधि। आंखें तरेरीं, कहा—'जाओ', 'जाओ' कह तो दिया किन्तु एक मधुर कल्पना उस के हृतल को सिहरा गई। एक कोमल छौना उस के आगंन में थिरकने लगा। इस कलपना से ही वह भीग उठी।

टूअर से लौट कर आया है समीर। सदा की भांति सुधि बाहर नहीं आई है उसके स्वागत के लिए। आशंका से भर उठा समीर। किन्तु जब शंकरी ने हंसते हुए दरवाज़ा खोलकर कहा—'मुबारिक हो साहब! मेम साहब आराम कर रही हैं। लेडी डाक्टर अभी अन्दर हैं।'

दो ही कदमों में कमरा पार कर वह सुधि के पलंग के पास पहुंचा। लेडी डाक्टर बोलीं—'चिन्ता की बात नहीं। पहली बार सभी स्त्रियां घबरा जाती हैं।'

सुधि पीली पड़ गई थी किन्तु सौंदर्य उसका गरिमापूर्ण हो उठा था। समीर को देख उस ने तकिये में मुंह छुपा लिया, समीर एक विचित्र अधिकार से मुस्करा उठा।

शंकरी पहले भी सुधि का कम ध्यान नहीं रखती किन्तु अब उसे विशेष निर्देश मिल गये हैं। घर में सास मां सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वही थी । समीर स्वयं आठ दिन बाद लेडी डॉक्टर से परामर्श लेता । एक अजानी आशंका उसे भयांकित कर जाती है । इस के भरे हुए घाव जैसे पुनः टीसने लगे हैं । स्मृतियों के बवण्डर उसे फिर बेचैन करने लगे हैं । उसकी बेचैनी देख कभी–कभी लेडी डॉक्टर हंस पड़ती है। कहती है–'आप अपनी पत्नी के प्रति बड़ी आसक्ति रखते हैं मि. समीर । तभी शायद घबराये रहते हैं । नहीं, यह बिल्कुल साधारण बात है।' हमारे लिये तो दिन रात यही काम है । निरुत्तर रह जाता है समीर । कहे भी क्या, कैसे बताये अपने मन की दुर्बलता !

अत्यधिक लाड भरी मनुहारों से तंग आ जाती सुधि । प्यार के बन्धन उसे चुभने लगते हैं । मुक्त सांस लेने को आतुर हो जाती वह । वह सहज प्राकृतिक जीवन जीना चाहती है । मेज पर रखी कई प्रकार की शक्ति–वर्द्धक गोलियां रखी हैं । इस विषय में प्रायः उसे झूठ का आश्रय लेना पड़ता है । इधर एक परिवर्तन सा आता जा रहा है उस के स्वभाव में । उसकी चंचलता गम्भीरता का रूप ले रही है । अल्हड़पन में उत्तरदायित्व की छाया प्रभाव बढ़ा रही है । बात भी करती तो मन कहीं और रहता । आंखों की पुतलियों में एक मधुर सपना झांकता रहता ।

ऑफिस से लौटते ही समीर ने कहा–'शंकरी ! बिस्तर बांध देना ज़रा । मैं टूअर पर जा रहा हूं ।'

सुधि चाय के लिये समीर की प्रतीक्षा कर रही थी । सुन कर हैरान हुई । दो दिन पहले ही प्रसन्नता में भर समीर ने बतलाया था कि इस मास कोई टूअर नहीं और एक पूरा घण्टा उन्होंने आठ शामों का प्रोग्राम बनाने में लगा दिया था । समीर की डायरी की आठ तिथियां अभी भी इसका प्रमाण हैं । उस ने पूछा तो समीर बोला–'अर्जेन्ट टेलीग्राम है । जाना ही पड़ेगा ।'

और समय होता तो समीर अवश्य अपनी नौकरी को कोसता, अपने विभाग को जली कटी सुनाता किन्तु वह आज इतना गम्भीर है जितना सुधि ने उसे कभी नहीं देखा । उस के मुख पर रुदन जैसा भाव है । एक गहन चिन्ता ने मानों उसके नेत्रों की ज्योति खींच ली है । हे भगवान ! यह कैसा टूअर है ?

'कल भी तो जा सकते हो ।' उस ने वाणी में साहस भरा ।

'नहीं अभी जाना होगा ।' चाय का प्याला उस ने जबरन कण्ठ में उडेल लिया । खाया कुछ भी नहीं । फिर उठकर अटैची में कपड़े रखने लगा । सुधि सहायता के लिये आगे बढ़ी तो टोक दिया––'तुम आराम करो, सुधि ।'

सुधि आहत-सी एक ओर जा बैठी । पति में एसी रुक्षता उस ने कभी नहीं पाई ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयारी हो जाने पर समीर थोड़ा सा मुस्कराया। निकट आ कर, उस के रेशमी बालों को सहलाया– 'बुरा मान गईं ?'

सुधि के नयन–सीप छलक पड़े। पति के विशाल वक्ष से लग वह सिसक पड़ी।

'पगली, विदा भी नहीं करोगी चलकर।'

सामान कार में रखा जा चुका था। सुधि बाहर तक पति के साथ आई। अब वह हंस रही थी।

'शंकरी ! मेम साहब को ठीक से देखना। घबराना नहीं सुधि।'

कार चली गई। तब भी सुधि खड़ी रही। धूल के गुबार उठ कर पुनः धरती में विलीन हो गये। सुधि अब भी खड़ी है। इसकी दृष्टि उसी मार्ग पर स्थिर है जिस पर होकर समीर की कार गई है। सुधि को लगता है .....समीर झूठ बोल गया है। वह टूअर पर नहीं गया। विवश सी सुधि एक समस्या को लेकर खड़ी है। पर समस्या सुलझाने का साधन भी तो नहीं है।

'अन्दर चलिये मेम साहब।' शंकरी की अनुनय से खिंचकर वह भीतर चली गई हैं। बाहर उजाला होने पर भी भीतर अन्धेरा हो चला है। उस अन्धकार में सुधि कुछ खोज रही है।

समीर को गये तीसरा दिन है और आने की कोई सूचना नहीं। सुबह नौकर को भेज कर ऑफिस से पुछवाया तो पता चला कि समीर दौरे पर नहीं छुट्टी पर है। लो..... सुधि की आशंका सत्य निकली। उस के मन ने पहले ही इस झूठ की साक्षी दे दी थी। पति के अविश्वास पर उसका मन रो उठा। आखिर समीर गया कहां ? इतना प्रेम–भाव होते हुए भी यदि वह पति के विश्वास की स्वामिनी नहीं बन सकी तो सब व्यर्थ है। उसे अपने रक्त में कानखजूरे से सुरसुराते लगे। चारों ओर का वैभव उसे डस रहा है। वह अधीर हो उठी। समीर कैसी आग लगा गया है ? हृदय की आग अश्रु बन गई। शंकरी ने समझाया––'आप मन हल्का न करें, मेम साहब। साहब अवश्य किसी कारण से गये हैं। इस हालत में आप को बताना ठीक नहीं समझा।'

'यही तो दुःख है, शंकरी। मुझे उन्होंने विश्वास योग्य नहीं समझा।' पढ़ी लिखी सुधि रोये जा रही है। शंकरी कैसे समझाये ? 'कपड़े मेम साहब !'

बरामदे में धोबी खड़ा है। सुधि को लज्जा सी आई। आंसू पोंछे और स्वस्थ होने के लिये, कपड़े देने के बहाने अलमारी के पास गई। बाहर शंकरी मैले कपड़े छांटने लगी। 'शंकरी बिस्तर की चादरें भी दे देना।'

और वह स्वयं समीर की पेन्ट और बुशर्टों की छांट करने लगी। जेबें टटोलते एक गुलाबी कागज़ हाथ में आ गया.....तार .....उसका अन्तर धकधकाने लगा। तार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पढ़ा तो जैसे सब स्पष्ट हो गया। लिखा था...

.....नीटू बहुत बीमार..... जल्दी आओ .....

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधि के सामने सब हिल रहा था। शंकरी कपड़े लेने आ रही थी। ओह! मेम साहब पीली क्यों पड़ रही हैं? आगे बढ़ सहारा न देती तो शायद सुधि गिर पड़ती। शंकरी ने थाम कर उसे पलंग पर लटा दिया। नयन मूंदे सुधि अचल-सी पड़ी रही। उसका वक्ष तेज़ी से ऊपर-नीचे हो रहा था।

'डॉक्टर को बुलाऊं, मेम साहब।'

'नहीं शंकरी, मैं ठीक हूं।' सुधि एक दम उठ कर बैठ गई। 'मेरी गुत्थी सुलझ गई। तैयारी करो हम लोग दिल्ली जाएंगे।'

'दिल्ली.....शंकरी' के होंठ उलझ कर रह गये।

'हां! नीटू बहुत बीमार है। उन्होंने मुझे नहीं बताया। दोष उन का नहीं, मेरा है। मैंने मां कहलाने से असहमति प्रकट की तो उन्होंने नीटू को दूर कर दिया। अविश्वास के बीज मैंने स्वयं बोये और स्वयं ही इन्हें नष्ट करूंगी।'

नीटू बीमार है .....शंकरी की आंखें ही नहीं अन्तरात्मा भी रो उठी।

'रो नहीं शंकरी। मैं नीटू को मां का आंचल दूंगी। मातृत्व का गौरव मैं समझ गई हूं। उठ तैयारी कर।'

शंकरी का रोता मन खिल उठा। आज पहले दिन वह नई स्वामिनी के प्रति श्रद्धावनत हुई।

और सुधि .....,पति का विश्वास पाने जा रही है, इस स्मृति मात्र से ही उसके मन का कोना कोना उल्लसित हो उठा है। उसका सुन्दर मुख और सुन्दर लग रहा है। ● ● ●

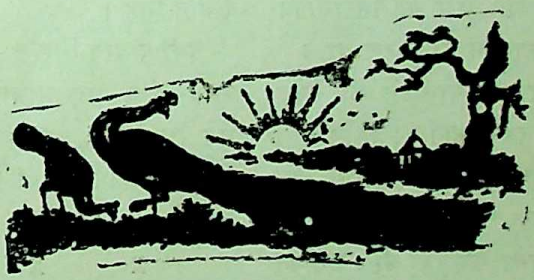

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन.....किसका ?

आनन्दवती कश्यप

(बीसवीं सदी के इस वैज्ञानिक युग में हम हर बात को तर्क की तुला पर तौलते हैं। लेकिन कभी कभी कुछ घटनायें हमारे तर्क की सीमा को लांघ जाती हैं। ऐसी ही एक सत्य घटना पर आधारित है यह कहानी)

शिमला आये हुए मुझे एक सप्ताह भी नहीं हुआ था कि ठेकेदारों का आना जाना शुरू हो गया। सभी ठेकेदार मेरा स्वभाव, मेरे शौक समझने के प्रयत्न में थे। उनकी मैत्री में सद्भावना की मात्रा कितनी थी और स्वार्थ की कितनी ? व्यावहारिक रूप में यह पता लगाना कठिन था। लेकिन इन सब लोगों के बीच में एक व्यक्ति की ओर मैं विशेष रूप से आकर्षित हो रहा था। उसका व्यक्तित्व आकर्षक हो—ऐसी बात नहीं थी। परन्तु वह सब से ही निराला था, और यह निरालापन ही मेरे आकर्षित होने का कारण था।

वह एक वृद्ध पुरुष था। उस की सफेद दाढ़ी उस के अनुभवी होने का प्रमाण थी। परन्तु चेहरे पर अभी तक झुर्रियां नहीं पड़ीं थीं और चेहरे की लाली उस के स्वास्थ्य को प्रगट कर रही थी। उस की आंखों में कुछ ऐसी शून्यता थी जो उसे समान्य व्यक्तियों से बिल्कुल ही अलग कर देती थी। ऐसा लगता था मानों उसको अपने चारों ओर के वातावरण में कोई रुचि ही न हो। उसकी खोई खोई सी आंखें मानों कुछ खोजने के लिये चारों ओर घूम जाती थीं और कुछ न पाकर फिर निराश हो कर लौट आती थीं। वह बहुत कम बोलता था परन्तु जितना बोलता था सोच समझ कर, नाप तोल कर बोलता था। उस की बातों में खुशामद के स्थान पर स्पष्टवादिता अधिक होती थी। वह एक ठेकेदार था—नाम था—दीवान सिंह।

इसी दीवान सिंह ने जब मुझे एक दिन रात्रि—भोज पर आमंत्रित किया तो मैंने शिष्टाचार वश केवल शब्दों से ही धन्यवाद नहीं दिया, बल्कि हृदय से आभार माना।

x x x

वह एक सुहावनी संध्या थी। दिन भर सूर्य चमकते रहने के कारण हवा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छ गरमी रही थी, परन्तु यह दिन ढलते ही ठंडक हो गई थी। अंधेरा बढ़ता बढ़ता नगर में प्रवेश करने का असफल प्रयास कर रहा था। सड़क, बाज़ार, होटल, क्लब और भव्य अट्टालिकाओं को बिजली के प्रकाश से जगमगाते देख यह अंधेरा हार कर मानों विवश-सा निर्धनों की बस्ती की ओर बढ़ा चला जा रहा था।

मैं दीवान सिंह के निवास पर पहुंचा। कुछ अन्य व्यक्ति भी निमंत्रित थे जो मेरे ही महकमें के थे। मुझे लगा जैसे मुझे कुछ देर हो गई हो क्योंकि वे सभी मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। खेद प्रकट करते हुए मैं सोफे की खाली जगह पर बैठ गया और उस कमरे पर एक सरसरी दृष्टि डाली। उसी कमरे में एक ओर भोजन का आयोजन किया गया था। कमरे में न कोई सजावट थी न टीप टाप। दीवार पर केवल गुरु नानक का एक चित्र था। मुझे आश्चर्य हुआ जब मैंने देखा कि मेज पर लगी सभी चीजें वैष्णव थीं। अपने जीवन के अनुभव पर टिका मेरा विश्वास कि 'सभी सिक्ख मांसाहारी होते हैं' ग़लत सिद्ध हुआ। दीवान सिंह उसका अपवाद दिखाई दे रहा था। इसका क्या कारण हो सकता है इस की ओर मेरा ध्यान नहीं था और किसी अन्य का भी संभवतया नहीं था क्योंकि भूख के मारे आंतें कुलबुला रही थीं।

[illegible] के बाद एक आगे बढ़ने लगीं, चमचे खटकने लगे पर तभी करुण स्वर में रोने की ध्वनि सुनाई पड़ी—लगा जैसे कोई स्त्री अपने पति के शव के पास बैठी विलाप कर रही हो। सभी ने अपने हाथ पीछे हटा लिये। ग्रास जिन के मुख में पहुंच चुका था उनका चलता हुआ मुंह रुक गया।

सभी की प्रश्नभरी दृष्टि दीवान सिंह पर थी और दीवान सिंह निर्विकार बैठा था; मानो इस ने यह सब सुना ही न हो।

"यह तो लीजिये" उस ने मटर पनीर की प्लेट मेरे सामने करते हुए मेरे ध्यान को उस ओर से हटाना चाहा।

मैंने उसके हाथ से प्लेट लेकर नीचे रखते हुए प्रश्न किया, "यह कौन रो रहा है?"

"मेरी विधवा बहू है, साहब। यह जब तब इसी तरह रोया करती है।"

दीवान सिंह ने लापरवाही और अनासक्ति के मिले जुले स्वर में कहा जैसे यह उस के किये कोई विशेष बात ही न हो।

दीवान सिंह की यह उदासीनता और बेरुखी अखर गई। मुझे वह पुत्रवधू के प्रति सास ससुर की कठोरता का एक सजीव प्रमाण-सा प्रतीत होने लगा। हम सभी आमंत्रित अतिथि विचित्र परिस्थिति में पड़ गये थे। भोजन सामने था, पेट खाली था पर खाना कठिन था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उस से भी कठिन था वहां से उठ कर चले जाना। एक ओर भावना थी तो दूसरी ओर शिष्टाचार। बड़ी दुविधा में पड़े थे। शायद ऐसी ही दुविधा में पड़ कर हमारे पूर्वजों ने सांप छछूंदर वाली कहावत गढ़ी होगी। मैं सोंचने लगा कितना अच्छा हुआ होता अगर आज मैं न आया होता। निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया होता। अब आ गया हूं तो क्या उठ कर नहीं जा सकता।

"क्या सोच रहे हैं आप?"

मुझे लगा जैसे दीवान सिंह ने अपनी अनुभवी आंखों से मेरे अन्तर को पढ़ लिया हो।

"ठहरिये! मैं आपको सभी कुछ बताये देता हूं।"

वह कुछ क्षणों के लिये रुका—जैसे अतीत की बिखरी हुई घटनाओं को परस्पर जोड़ रहा हो।

"खाना ठंडा हो रहा है, इसलिए संक्षेप में ही कहूंगा।"

उस ने कुर्सी से पीठ टिकाते हुए कहा।

"मैंने अपने जीवन का आरम्भ सहारनपुर में फलों की ठेकेदारी से किया था। मेरे साथ एक मित्र भी साझीदार था। नाम था—भोला राम। दो हज़ार रुपये की साझी पूंजी से हमने छोटे छोटे ठेके शुरू किए। भाग्य हमारे अनुकूल था। काम तेजी से बढ़ने लगा, और पूंजी दुगुनी, तिगुनी, चौगुनी होने लगी। हम हवाई किले बनाने लगे। लेकिन भाग्य को यह मंजूर न था। और भोले का वक्त आ गया। भोला बेचारा भोला ही था। बड़ा ही सरल और प्यार करने वाला। अपनी घोड़ी उसे बहुत पसन्द थी। थी भी अच्छी, तेज चाल, सुन्दर और स्वस्थ। पर उस में एक ऐब था। चलती थी तो अपनी मरजी से। अड़ जाती तो कितना ही मारो, पुचकारो, एक कदम भी न उठाती थी। एक दिन नजदीक के गांव से आम खरीदने जाना था। भोला उसी घोड़ी पर चढ़ कर गया। मैंने रोका भी, पर नहीं माना। होनी उसे बुला रही थी। रास्ते में जहां जंगल पड़ता था डाकुओं ने उसे घेर लिया। और मेरा विश्वास है, उस दिन वही अड़ियल घोड़ी उस की मृत्यु का कारण बन गई। उन दोनों में से कोई भी घर वापिस नहीं लौटा।"

दीवान सिंह रुका। मैंने देखा वह रूमाल से अपनी आंखें पोंछ रहा था। क्षण भर में में उस ने अपने आपको संयत कर लिया और बोला—

"उस समय मेरे पास भोला के हिस्से के नौ हज़ार रुपये थे। जिनका कोई गवाह न था। दिल में पाप आ गया और मैं ने भोला के बाप को बनावटी हिसाब दिखा कर रुपये हड़प लिये, और अमृतसर चला गया। नया शहर था, नये लोग। मेरी चोरी पकड़ने वाला कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न था। जल्दी ही मैं शहर के सज्जन पुरुषों में गिना जाने लगा। तभी मेरे सुखों को पूर्ण कर दिया मेरे पुत्र नसीम सिंह के जन्म ने। मेरे घर का आँगन उस की किलकारियों से भर गया और तिजोरियां सोने और नोटों से।"

दीवान सिंह ने दो घूंट पानी पिया, उसका गला भर आया था।

"नसीम बड़ा हुआ, इंजीनियर साहब! ऐसा होनहार, ऐसा खूबसूरत जवान था वह, कि देखने वाले देखते रह जाते। और मेरे लिये तो इस धरती पर ही स्वर्ग उतर आया था। मैंने उसे पढ़ाया लिखाया और शादी कर दी। लेकिन शादी के बाद वह बीमार रहने लगा। डाक्टर, हकीम, वैद्य, होम्योपैथ, ओझा, स्याने सभी का इलाज कराके थक गया पर उसे न ठीक होना था न हुआ। बीमारी का पता ही न लगता था। उस ने चारपाई पकड़ ली। अपनी हालत तो मैं ही समझ सकता था। रुपया पानी की तरह बहा रहा था पर मेरे बुझते चिराग में कोई तेल डालने वाला न मिलता था।

एक दिन सुना एक हकीम देहली से आये हैं। मैं दौड़ा दौड़ा हकीम साहब के घर पहुंचा—अपने बेटे की हालत बताई और उन्हें लिवा लाया बेटे को दिखाने के लिये। हकीम साहब ने एक दवाई चमचा भर पानी में घोली और उस के मुंह में डाल दी। बेहोश पड़े मरीज़ की आंखें खुलने लगी। मैं खुशी से भर गया। मुझे क्या पता था कि यह बुझते चिराग की आखिरी चमक है। वह पूरी तरह होश में है या नहीं यह जानने के लिये मैंने उस से पूछा—

"नसीम! मुझे पहचानते हो मैं कौन हूं?"

'भाई वाल" वह बोला।

मैं उसका उत्तर सुनकर चौंक उठा। "क्या कहते हो? तुम कौन हो?" मैंने परेशान होकर पूछा। 'भोला राम' उसके होठों पर मुस्कान और चेहरे पर अपूर्व शांति थी।

मैंने उसकी पत्नी की ओर इशारा करते हुए पूछा "और यह कौन है?"

"घो.....ड़ी"

"मैंने अपना सिर पीट लिया"

—कह कर दीवान सिंह सहसा चुप हो गया। एक गहरा निश्वास ले कर उस ने फिर कहा—

"अब चला गया भोला और रोती है घोड़ी। साहब! आप ही बताइये मैं किस के लिये अफ़सोस करूं?"

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्दशी

जय भारत माँ

पुण्य प्रसू संस्कृति की साध्वी चिर पावन
आर्य द्रविड़ यक्षों गंधर्वों की गंगा !
सिंधु निवासिनि जो हिम किरीटिनी शोभन,
शक्ति शील की शिव की जो तरल तरंगा !

चिर धन है जिसका चिर सुंदर का चिन्तन,
संधाता उर जिसका जन मंगल त्राता !
दाह दशानन का जिसका पर्व चिरन्तन,
स्वर स्पन्दन तन मन में वह भारत माता !

वह शस्य हरित लोहित हवि कर्म पताका !
हृदयस्थ विरज चक्र वरद धर्म धराका !

सरला, गुरु शुक्र भौम रवि शशि की भगिनी,
भूमा के अतल जलाशय की जलद छटा !
करती शुंभ निशुंभों का मर्दन कर्दन,
मां वज्रपाणि जय दुर्गा दुर्द्धर्ष घटा।

●

सुरेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि-पुरुष

चन्द्र शेखर

(प्रलय का कोलाहल, लहरों का गर्जन, बिजली और बादलों की गड़गड़ाहट, जल वर्षण के इफैक्ट काफी देर उभर कर धीरे धीरे शान्त हो जाते हैं)

मनु—ओह, यह भयंकर प्रलय, चारों ओर जल ही जल, हिमालय गले तक पानी में डूब गया है, यह चोटी एक छोटा-सा द्वीप लग रही है, और मेरी यह नौका किसी लाश की तरह लहरों की थपेड़ें खा रही है। प्रकृति का यह भयंकर कोप, ओह, यह सब क्या है? मेरा वह राज्य, वह वैभव, वह ऐश्वर्य, सब इन अजगर-सी लहरों ने निगल लिया है। सब डूब गया है, सब डूब गया है।

हे देव! इस मनु को भी क्यों नहीं डुबो दिया। क्या प्रलय का और नाटक मुझे देखना है? आज मैं कितना अकेला हूं, मैं कहां जाऊं? मैं क्या करूं? हे मंगल मय देव! मनु को मार्ग दिखाओ! मनु को मार्ग दिखाओ! मनु को मार्ग दिखाओ, प्रभु! इस काल रात्रि का अन्त करो। वरना यह अन्धकार मुझे डस जाएगा। मुझे डस जाएगा देव! मुझे डस जाएगा!!

(संगीत की निराश सी ध्वनि में दृश्यान्तर)

(सुप्रभात की मंगल ध्वनि उभरती है)

मनु —अहा! बादल हट रहे हैं, जल उतर रहा है। यह प्रकाश की किरण पूर्व में यह लाली, प्रलय की गोद में उषाकाल की मुस्कराहट? यह नए इतिहास का उषाकाल है। एक युग बदल रहा है, उस पर पर्दा गिर रहा है। और यह नया युग आरम्भ हो रहा है। सृष्टि का आज पहला प्रभात है। आज से नई सृष्टि बनेगी। नया इतिहास बनेगा। यह इतिहास मैं लिखूंगा। विश्व रचना का पहला अध्याय मैं खोलूंगा। मैं मनु हूं, मैं आज से एक नये मन्वन्तर का आरम्भ करूंगा।

सृष्टि के पहले प्रभात की ओ किरण! मनु तुम्हारा स्वागत करता है! तूने मुझे नई चेतना दी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आशा और विश्वास दिया है।
प्रलय के खंडहरों में मैं नव
निर्माण करूंगा।

वह सामने की गुफा ही अब मेरा घर है। यहीं नवनिर्माण का यज्ञ रचाऊंगा। मगर मैं अकेला हूं। शायद मेरी तरह कोई और भी बच गया हो। हो सकता है ऐसा हो सकता है। तो ठीक है। मैं यज्ञ का अन्न दूर छोड़ आया करूंगा। हो सकता है ऐसे ही वह मुझे मिल जाए।

हे मंगल उषा! आओ हम स्वयं विकास बन कर विश्व में नवजीवन का संदेश दें।

(संगीत की आशावान धुन से दृश्यान्तर)

(ओम् स्वाहा की मन्द मन्द ध्वनियां मनु के स्वर में उभरती है)

मनु -- (मंत्र की अस्पष्ट गुनगुनाहट के साथ दीर्घ स्वर में) ओम् स्वाहा। महायज्ञ की ओ पूर्णाहुति! नव रचना में मुझे सहयोग दो!

(किसी दैवी शाक्ति के प्रकट होने की ध्वनि उभरती है)

श्रद्धा --हे देव पुत्र! मैं तुम्हें ही सहयोग देने आई हूं।

मनु-- (चौंक कर) हूं। कौन? सुन्दरी तुम कौन हो?

श्रद्धा --देव पुत्र! मैं श्रद्धा हूं, गान्धार देश की राजकुमारी। पता नहीं प्रलय में कैसे बच गई? एक दिन तुम्हारा रखा यज्ञ का अन्न मिल गया, मुझे विश्वास हो गया कि मेरी तरह और भी कोई प्राणी बच गया है। बस, मैं तुम्हें ही ढूंढती यहां आ गई।

मनु -- देवी! तुम इस यज्ञ का वरदान हो, मेरी पूजा का फल हो। तुम्हारा आगमन इतिहास का आगमन है, तुम नवीन रचना की लिपि हो। इस लिपि से मैं नया इतिहास लिखूंगा। आओ, मुझे अपने सहयोग का हाथ दो।

श्रद्धा --देवपुत्र! नव रचना के महायज्ञ में तुम्हारी पूर्णाहुति मैं बनूंगी। आज से तुम अकेले नहीं हो। मैं तुम्हारे साथ हूं। मैं तुम्हारी प्रेरणा बनूंगी। इतिहास लिखने के लिए लिपि ही नहीं पन्नों की भी ज़रूरत है। वह पन्ने मैं दूंगी।

मनु--श्रद्धा! इस महाव्रत को पूरा करने के लिये आओ। हम जीवन भर एक साथ रहने का व्रत लें, इस अग्नि की साक्षी में हम एक प्राण हो जाएं।

श्रद्धा-मनु--(एक स्वर में) हे यज्ञ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

की पवित्र अग्नि ! जिस नव-निर्माण के लिये हम एक हीन का व्रत ले रहे हैं, उसे संपूर्ण करना !

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनु--श्रद्धे ! मेरी जीवन संगिनी ! लो यह आहुती डालो।

श्रद्धा-मनु--(एक स्वर में) ओम्, स्वाहा !!!

(संगीत की ध्वनि से दृश्यान्तर)

(ओम् स्वाहा की कई सम्मिलित ध्वनियां उभरती हैं)

श्रद्धा--हे प्रभु ! मेरे मनु को इन असुर पुरोहितों से बचाओ । यह दुष्ट किलात और आकुली मनु का पीछा ही नहीं छोड़ते। मनु भी मुझ से दूर दूर रहते हैं। सारा सारा दिन शिकार करते फिरते हैं । मैं कितना रोकती हूं कि इन निरीह पशुओं को मत मारो, मगर वे मेरी एक भी नहीं सुनते । इन असुर पुरोहितों के साथ मदिरा में डूबे रहते हैं.....

(बलिपशु की करुण चीत्कार उभरती है। तथा ओं स्वाहा भी)

आज यह चीत्कार फिर ! यज्ञ में मनु ने फिर पशु की बलि दी है। यह किलात आकुली ही मेरे मनु को विलासी बना रहे है। आज मैं इन दुष्टों को निकाल कर ही रहूंगी । मैं अभी आती हूं ।

(चीत्कार फिर उभरती है तथा ओं स्वाहा भी)

मत मारो ! इन निरीह वन पशुओं को मत मारो मनु !! यहां ऐसा नहीं चलेगा। बिल्कुल नहीं चलेगा। (भागने की आहट)

(किलात आकुली का अट्टहास उभरता है नशे में चूर सा)

श्रद्धा--नहीं मनु, नहीं । (चौंक कर) है, मनु यहां नहीं है ? कहां है मनु ? मेरा मनु कहां है ? दुष्टो ! कहां है मनु ?

किलात--(अट्टहास से) अब आई है मनु मनु चिल्लाती ।

आकुली--(अट्टहास से) अब मनु लौट कर नहीं आएगा।

श्रद्धा--(कड़क कर) नीचो ! तुम ने फिर पशु हत्या की । अपनी वासनाओं को यज्ञ के नाम पर .....(बात कट जाती है)

किलात--(नशीली आवाज में) तुम्हारे उपदेशों से तंग आ कर तो वह यहां से भागा है ।

श्रद्धा--क्या कहा, मनु भाग गया ! (तनिक विकल स्वर में) मुझे अकेली छोड़ कर चला गया ?

आकुली--चलो किलात हम चलें, रोने दो इसे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किलात--हां आकुली चलो मन का पीछा करें।

(अट्टहास के साथ भागने की पदचाप उभरती है)

श्रद्धा--अरे दुष्टो, मेरे मनु का पीछा मत करो, ओह, मैं भाग भी तो नहीं सकती। मेरे पास मनु की अमानत है। उसका रचा इतिहास मेरे हृदय में है, उसकी नव रचना मेरे सांसों में पल रही है। मनु तुम तो व्रत तोड़ कर भाग गए हो, इतिहास के दो अक्षर ही लिख कर चले गए हो। उस इतिहास को मैं जन्म दूंगी, वह नव रचना मेरी गोद में आंखें खोलेगी, इस रचना के बिना ओ रचनाकार मनु ! तुम अधूरे रहोगे। अपने व्रत का मैं अकेले ही पालन करूंगी।

(संगीत की धुन से दृश्यान्तर)

(बीस वर्ष का गैप देने के लिये संगीत की धुन उभरती है-- तथा महाराज मनु की जय का जन कोलाहल उभरता है)

इड़ा--सारस्वत नगर के निवासियो ! इस सभा का आयोजन महाराज मनु का अभिनन्दन करने के लिये हुआ है। आज उन्हें अपने मध्य पा कर हम गौरव पा रहे हैं। मैं महामंत्री से कामना करती हूं कि वे अभिनन्दन पत्र पढ़ें।

(तालियां उभरती हैं)

महामंत्री--सारस्वत नगर के निवासियो ! राजकुमारी इड़ा के आदेश से मैं अभिनन्दन पत्र पढ़ता हूं।

(तालियां उभरती हैं)

महाराज मनु !

आज से बीस वर्ष पूर्व आप सारस्वत नगर में वरदान बन कर आए। तब प्रलय की थपेड़ों से यह नगर उजड़ चुका था। जनता में हाहाकार फैला हुआ था, समाज के बन्धन टूट चुके थे, शासन की डोर उलझ रही थी। अर्थ व्यवस्था चर्मरा गई थी।

हे नियामक मनु !

आपने इस नगर को नियम दिए, समाज को व्यवस्था दी, चार वर्णों में समाज को नया रूप दिया। समाज के कर्त्तव्यों और अधिकारों का विधान बनाया। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चारों वर्णों में समाज के कार्य को बांट कर राज्य का कुशल संचालन किया।

(तालियां और महाराज मनु की जय, उभरती है)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे महामुनि !

आपने व्यक्ति के लिये आश्रमों की व्यवस्था की ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वान-प्रस्थ, संन्यास आश्रमों में व्यक्ति के जीवन को नया अर्थ दिया।

(तालियां एवं जय ध्वनियां उभरती हैं)

हे राज्य विधायक !

आपने हमें नया विधान दिया, विद्या, सुरक्षा, वाणिज्यव्यापार और जनसेवा की व्यवस्था की, सभ्यता का आलोक फैलाया, हे इतिहासकार ! तू ने नई रचना की.....(आवाज़ कट जाती है)

श्रद्धा--(बीच से बोल उठती है) नहीं नहीं यह झूठ है, यह सब झूठ है.....

(जन कोलाहल बढ़ता है)

(कोलाहल मन्द पड़ जाता है)

महामंत्री--शान्त, शान्त.....

श्रद्धा--यह सब झूठ है, इतिहास अभी अधूरा है। रचना अभी अपूर्ण है।

इड़ा--यह कौन शोर कर रहा है ? इसे चुप कराओ ?

श्रद्धा-- राजकुमारी ! यह शोर नहीं इतिहास बोल रहा है। शोर तो आपने फैलाया है और उसे अभिनन्दन का नाम दिया है। मगर ऐसे इतिहास नहीं दब सकता।

मनु--कौन ? श्रद्धा ! तुम !! तुम यहां कैसे ?

श्रद्धा--(व्यंग्य से) महाराज मनु ने, नियामक मनु ने, आखिर पहिचान ही लिया मुझे ! इतिहासकार मनु ! अपना इतिहास तो आप मेरे पास ही छोड़ आए थे। मगर क्या इतिहास-कार के भागने से इतिहास मिट जाता है ? चुप हो जाता है ?

इड़ा--महाराज मनु, यह श्रद्धा कौन है ?

श्रद्धा--राजकुमारी मुझसे पूछिये मैं कौन हूं। ये क्या बताएंगे। मैं स्वयं बताती हूं, मैं कौन हूं, मैं केवल श्रद्धा नहीं हूं, मैं आपके महाराज के नव निर्माण का संकल्प हूं, इनके इतिहास की लिपि हूं। महाराज मनु तो इतिहास का पहला अक्षर लिख कर भाग आए, परन्तु उस आदि अक्षर को अपने प्राणों के पन्नों पर मैंने इतिहास का रूप दिया है।

इड़ा--महाराज मनु ! यह क्या इतिहास है ? कौन सा इतिहास है ? मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा।

श्रद्धा--राजकुमारी ! तुम्हारे पास केवल बुद्धि ही बुद्धि है। मगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह इतिहास केवल बुद्धि की आंखों से नहीं पढ़ा जाएगा। उसके लिए दया, ममता और समपर्ण का व्रत चाहिए। तुम्हारे पास केवल शासन है, शक्ति है, नियम है, विधान है, व्यवस्थाएं हैं, मगर नव-निर्माण इनसे नहीं होता, इतिहास इनसे नहीं बनता।

इड़ा--देखा महाराज ! यह हमें इतिहास और निर्माण की परिभाषा सिखा रही है।

श्रद्धा--राजकुमारी, आप मुझसे बात कीजिए। महाराज मनु के पास भी मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं। सुनों, मैंने केवल परिभाषा ही नहीं व्याख्या भी करनी है। आपके महाराज ने इतिहास का केवल एक सूत्र ही लिखा है। मैं आज तक उसकी व्याख्या करती रही हूं। महाराज मनु, आप चुप क्यों हैं ? मैं वह इतिहास साथ लाई हूं, जिसकी रचना का व्रत हमनें अग्नि की साक्षी में लिया था।

मनु--कैसा इतिहास साथ लाई हो ?

श्रद्धा--कुमार मानव ! महाराज मनु को प्रणाम करो। यही तुम्हारे पिता हैं।

कुमार मानव--जब इतिहासकार अपनी लिखी लिपि को भूल जाए, तो इससे बढ़ कर इतिहास की विडम्बना क्या हो सकती है ? मां ! मैं इतिहास हूं, इतिहासकार के नाम के बिना भी संसार में स्वीकृति पाऊंगा, क्योंकि मैं विश्व की आदि रचना हूं।

मनु--(विकल स्वर में) श्रद्धे ! श्रद्धे !! तुम अब तक कहां थी मेरी प्राण ? मेरी प्रेरणा ! तुम्हारे बिना मैं सौर चक से टूटे नक्षत्र की तरह यहां आ कर गिर गया। इड़ा ने मुझे सहारा दिया और मैं ने यह निर्माण कार्य किया। मगर तुमने मुझे मेरे इतिहास से क्यों दूर रखा ? मुझे उससे क्यों काट दिया, श्रद्धे ?

श्रद्धा--प्राणनाथ ! आप इतिहास से कटे नहीं थे। बल्कि आपने इतिहास का एक सूत्र अधूरा लिख कर छोड़ दिया। और फिर बहुत पन्ने खाली छोड़ आगे लिखना आरम्भ कर दिया। मगर स्वामी ! इतिहास रुकता नहीं, उन खाली पन्नों में मैं-ने इतिहास को रूप दिया। हमने इतिहास का एक एक अध्याय लिखा है। आओ उनका संपादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करें । ताकि आज इतिहास पूरा हो जाये ।

इड़ा—तो क्या जो निर्माण हमने किया है वह अधूरा है ? वह इतिहास नहीं ?

श्रद्धा—नहीं राजकुमारी ! वह निर्माण पूर्ण इतिहास नहीं, विधान को इतिहास मानना भूल है । विधान रचने वाले को इतिहासकार कहना गलती है ।

मनु—श्रद्धे ! तो इतिहास क्या है ? मुझे जल्दी बताओ ? नहीं तो मैं पागल हो जाऊंगा श्रद्धे !

श्रद्धा—आइये ! आप मेरे पीछे आइये! मैं आपको इतिहास का रूप दिखाती हूं ।

(जन कोलाहल फिर बढ़ता है, संगीत की धुन से दृश्यान्तर)

(तूफान की ज़ोर ज़ोर की सायं सायं उभरती है)

मनु—श्रद्धे ! तूफान बढ़ता ही जा रहा है, ठंडी हवा आरे की तरह शरीर चीर रही है । इन बर्फीले पहाड़ों पर तुम मुझे कहां ले जा रही हो? (हांफ कर) अंग अंग चूर हो रहा है । मुझे से अब और नहीं चला जाता श्रद्धे !

श्रद्धा—बस, थक गए, समाजद्रष्टा ! इतिहासकार ! इतिहास देखे बिना ही लौट जाओगे ; कैलाश का यह मार्ग बड़ा कठिन है ।

मनु—कैलाश ?

श्रद्धा—(हंस कर) बड़े भोले हैं आप, कैलाश पहाड़ का ही नाम नहीं, वह इतिहास की दृष्टि है । जीवन का, समाज का आनन्द-वादी दर्शन है ।

मनु—अभी और कितनी दूर चलना है?

श्रद्धा—लो, बस हम पहुंच गए, आओ इस ओर आओ ! इधर इस ओर देखो ! वह देखो !

(सर्र की एक गहरी ध्वनि आकाश में तैर जाती है)

मनु—(चौंक कर) श्रद्धे ! यह क्या है ?

श्रद्धा—यह कर्मलोक है ।

मनु—कर्मलोक ?

श्रद्धा—हां कर्मलोक । यहां के लोग केवल कर्म में कोल्हू के बैल की तरह जुते हैं । सत् असत्, का उन्हें कोई ज्ञान नहीं । अन्धों की तरह आपस में टकराते रहते हैं । अब उस ओर देखो ।

(सर्र की वैसी ही एक और ध्वनि आकाश में तैर जाती है)

मनु—श्रद्धे ! यह कौन सा लोक है ?

श्रद्धा—यह ज्ञान लोक है, यहां के वासी ज्ञान के अंहकार से चूर हैं, वे कर्म नहीं करत, कोरे ज्ञान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से जीवन नहीं चलता, इसीलिये वे दुःखी हैं, अब इधर देखो ! इस ओर ।

(सर्र की वैसी ही एक और ध्वनि आकाश में तैर जाती है)

मनु--यह कौन सा लोक है श्रद्धे ?

श्रद्धा--यह इच्छा लोक है, यहां के निवासी ज्ञान और कर्म से रहित हैं । इच्छाओं की मृगमाया के पीछे वे जीवन भर भटकते रहते हैं ।

मनु--इन तीनों लोकों के जीवन कितने अधूरे हैं ।

श्रद्धा--आपके सारस्वत नगर का निर्माण भी तो ऐसा ही है । इसीलिये वह इतिहास नहीं ।

मनु--तो फ़िर बताती क्यों नहीं श्रद्धे ! कि इतिहास क्या है ?

श्रद्धा--(खिल खिल कर हंसती है..... हंसती ही जाती है)

(फिर तीनों सर्र सर्र की ध्वनियां जुदा जुदा उभरती है । और आकाश में एक स्वर में तैर कर विलीन हो जाती हैं)

मनु--(चौंक कर) यह क्या श्रद्धे ? यह क्या ? तुम्हारी मुस्कान से तीनों लोक एक हो गए ।

श्रद्धा--मेरी यह मुस्कराहट मिलाप की मुस्कराहट है, समन्वय की प्रतीक है । यही वह इतिहास है जिसे दिखाने के लिए मैं तुम्हें यहां लाई हूं, जब तक ज्ञान, क्रिया और इच्छा एक रूप नहीं हो जाते तब तक जीवन में सरसता कहां ? इनके मिलाप का नाम ही आनन्द है । तुम्हारे निर्माण में इसी को स्थान नहीं मिला है ।

मनु --हे मंगले ! मैं ऐसा ही निर्माण करूंगा, ऐसा ही इतिहास लिखूंगा।

श्रद्धा--ऐसा इतिहास लिखने के लिये तुम्हें इस त्रिकोण का केन्द्र बिन्दु बनना होगा ।

मनु--बनूंगा । तुम जो कहोगी मुझे सब स्वीकार है ।

(पीछे से जन कोलाहल उभरता है, शंखों और घड़ियालों तथा मृदंगों की ध्वनियां उभर कर मन्द पड़ जाती हैं)

श्रद्धा--सारस्वत प्रदेश की जनता भी तुम्हारे पीछे पीछे यहां पहुंच गई है ।

मनु--हां वह देखो ! इड़ा और कुमार मानव सबसे आगे आ रहे हैं ।

श्रद्धा--इतिहास के सम्पादन का समय अब आया है नाथ ! हमारे निर्माण का त्रिकोण बन रहा है । इड़ा, मानव और सारस्वत नगर इनके मिलाप से ही नव समाज बने गा । हे आदि पुरुष !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तभी आप समाज द्रष्टा कहलायेंगे ।

मनु ——मगर श्रद्धे ! मेरे पास वह मुस्कान कहां कि इनको एक रूप कर दूं ?

श्रद्धा——प्राणनाथ ! मैं आपकी ही मुस्कान तो हूं । अपने हृदय के ओंठ खोलिये ! मैं अपने आप खिल खिला कर आपकी मुस्कान बन जाऊंगी ।

मनु—शुभे ! कल्याणी ! तुम केवल श्रद्धा हो ! तुम केवल श्रद्धा हो ! तुम केवल श्रद्धा हो !

श्रद्धा——भावुक न बनिए । प्रजा निकट आ गई है ।

(जन कोलाहल एवं शंख आदि की ध्वनियां तथा महाराज मनु की जय फिर उभरती है)

मनु——सारस्वत नगर निवासियो । श्रद्धा ने मुझे नई दृष्टि दी है । आज तक आप अधूरे और–अपूर्ण थे, आज अपने मैं विधान को, व्यवस्था को, इतिहास का, मानव-मंगल के व्रत का रूप दूंगा । अकेला ज्ञान लंगड़ा है, अकेली क्रिया बहरी है, और अकेली इच्छा अन्धी है । इन तीनों के मिलाप से ही आनन्द की गंगा बहेगी । आज मैं इतिहास की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना का उद्घाटन करने लगा हूं । श्रद्धे! तुम्हीं यह शुभ कार्य करो ।

श्रद्धा—कुमार मानव ! आगे आओ । तुम भी राजकुमारी इड़ा ! कुमार ! अपने हाथों से इड़ा की मांग में सिन्दूर भरो । बुद्धि के माथे पर, ज्ञान के भाल पर, श्रद्धा, विश्वास का टीका लगाओ । और कर्मशील पौरुष से इड़ा का वरण करो । तभी ज्ञान, क्रिया और इच्छा का मिलन होगा । यह मंगल विवाह शुभ हो !

(जय ध्वनियां उभरती है)

(जय ध्वनियां फिर उभरती हैं । शंख घड़ियाल एवं मृदंग आदि ध्वनियां धीरे धीरे फेड हो जाती हैं । दृश्यांत की संगीत धुन उभरती है) .

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूरदास की एक पंक्ति

उदय भानु हंस

अकबर महान् का राजदरबार लगा हुआ था। मुगल साम्राज्य का वैभव दर्शनीय था। शासन गरिमा से सम्राट के उच्च अधिकारी कृतज्ञता की मूर्ति बन अपने अपने आसनों पर विराजमान थे। नवरत्नों की जगमगाहट निराली थी। प्रतिष्ठित नागरिकों तथा कुलीन सभासदों से आवेष्टित सम्राट भव्य राज सिंहासन से आवश्यक आदेश तथा निर्देशन दे रहे थे।

निवृत्त होते ही सम्राट ने कार्यभार से किंचित् श्रांति का अनुभव करते हुए एक अर्थपूर्ण दृष्टि मियां तानसेन पर डाली। संगीत के आचार्य ने संकेत समझ लिया। सम्राट कुछ मनोरंजन चाहते थे। आदाब बजा कर मियां तानसेन ने हाथों में तानपूरा उठाया और सभामण्डप के बीच उन्नत पीठिका पर बैठकर आलाप आरम्भ किया। चारों ओर स्तब्धता का शान्त वातावरण छा गया। संगीत की मधुर स्वर लहरी गूंजने लगी। आरोह और अवरोह के साथ तानसेन के कंठ से निकलती हुई रागिनी तानपूरे की झंकार के साथ समन्वित हो कर द्रुतलय में परिवर्तित होती गई। श्रोतागण मन्त्रमुग्ध और चित्रलिखित से खड़े अपनी सुधबुध भूले स्वरमाधुरी का पान कर रहे थे। किसी को शिष्टाचार और मर्यादा की रक्षा का ध्यान भी नही था। सचमुच उस समय अकबर सम्राट् का नहीं, संगीत-सम्राट् का शासन था।

कुछ देर के पश्चात् अचानक तानसेन की चंचल अंगुलियां रुक गईं। स्वर-साधना समाप्त हुई। संगीत बन्द हो गया। एक झटके के साथ सभी लोगों को होश आया। चेतना जागी। विस्मय के आनन्दमय सागर में डूब कर प्रशंसकों के मुंह से अनायास 'साधुवाद' के शब्द निकल पड़े। सम्राट् ने पुलकित होकर मुस्कराते हुए कंठहार मियां तानसेन को पुरस्कार में दिया, जिसे संगीताचार्य ने सिर झुका कर स्वीकार कर लिया।

दूसरे ही क्षण अकबर ने एक प्रश्न मियां जी से किया "आप की संगीत-कला निःसन्देह अद्भुत और अत्यन्त मोहक थी, किन्तु आप जो कुछ गा रहे थे, उसका अर्थ हमारी समझ में नहीं आया, क्योंकि स्वरालाप की लम्बी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनरावृत्ति में गीत की पंक्तियां हमें साफ सुनाई नहीं दे सकीं । आप कौन से गीत की पंक्तियां दुहरा रहे थे ?"

सम्राट तथा सभी श्रोताओं की उत्सुकता को शांत करते हुए तानसेन ने निवेदन किया–"हुजूर ! ब्रजभाषा के एक सुप्रसिद्ध कवि सूरदास हैं, उन के एक गीत की दो पंक्तियां गा रहा था––

"जसोदा बार बार यह भाखे
है ब्रज में कोऊ हितू हमारो,
जो चलत गोपालहिं राखे ?"

इसका अर्थ है "कि जब भगवान श्री कृष्ण कंस के बुलावे पर मथुरा जाने लगे, तो ममता की मारी यशोदा मां को अत्यन्त दुःख हुआ । वह प्यारे पुत्र का विरह न सहने के कारण "बार बार" अर्थात् "अनेक बार" यह कहने लगी कि सारे ब्रज में कोई हमारा ऐसा मित्र है जो बाल-कृष्ण को मथुरा जाने से रोक सके"

अकबर गीत का भाव सुन कर प्रसन्न हो उठे । बोले––"वास्तव में जितना संगीत मादक था, उतना ही गीत भी भावपूर्ण था । मां के वात्सल्य की मार्मिक अनुभूति ने सोने पर सुहागे का काम कर दिया ।"

इतना कह कर सम्राट अभी सभा को विसर्जिस करना ही चाहते थे कि प्रसिद्ध वाक्पटु बीरबल खड़े हो गए और हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगे "महाराज, निःसन्देह मियां तानसेन ने जो गीत गाया वह बड़ा ही सुन्दर था, परन्तु उन्होंने "जसोदा बार बार यह भाखे" में "बार बार" शब्द का जो "अनेक बार" अर्थ लगाया है वह ठीक नहीं है । मुझे तो यूं लगता है कि मियां जी स्वयं पक्के रागी होने के कारण एक ही शब्द को बार बार या अनेक बार दुहराने के अभ्यासी हैं, अतः उन्हें "बार बार" का अर्थ "अनेक बार" ही सूझा । मैं इस का नया अर्थ लगाता हूं ।"

बीरबल की यह बात सुनकर तानसेन ही नहीं सारे सभासद और स्वयं अकबर को भी कौतूहल हुआ कि आखिर इतने सरल साधारण शब्द का भला दूसरा अर्थ कौन सा हो सकता है ?

बीरबल ने कहना आरम्भ किया––

"यशोदा ने 'है ब्रज में कोऊ हितू हमारो.....' वाली पंक्ति बार बार अर्थात् अनेक बार नहीं दुहराई होगी । क्योंकि ऐसा तो मूर्ख या पागल मनुष्य ही कर सकता है, जो एक बात को व्यर्थ में घड़ी–घड़ी कहता फिरे । सूरदास का यह आशय कभी नहीं हो सकता । वास्तव में "बार बार" शब्द "द्वार द्वार" शब्द का बिगड़ा हुआ रूप है, जिस में 'द' अक्षर लुप्त होकर शेष 'वार' रह गया है । भाषा–विज्ञान के अनुसार कभी कभी शब्दों के प्रथम अक्षर घिस जाया करते हैं । जैसे अमावस से मावस, श्मशान से मसान आदि । यशोदा घड़ी घड़ी या बार बार नहीं बोल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही थी, अपितु "द्वार द्वार" जा कर लोगों से पूछ रही थी कि कोई उनका ऐसा हितैषी मित्र है, जो श्याम को मथुरा जाने से रोक सके ?"

बीरबल के इस तर्क–युक्त विवेचन को सुनकर सभी लोग अवाक् रह गए और अकबर ने भी उस की नवीन अभि–व्यंजना की सराहना की ।

किन्तु ठीक उसी समय जब सम्राट ने अधिवेशन को स्थगित करने का आदेश दिया––"अर्थमन्त्री" टोडरमल अपने आसन से उठ कर खड़े हो गए और सम्राट से विनय की कि दो क्षण के लिए वे उनकी प्रार्थना भी सुन लें, क्योंकि बीरबल वाला अर्थ उनकी दृष्टि में अशुद्ध है।

अकबर चकित हो कर पुनः सिंहासन पर बैठ गए तो टोडरमल ने व्यंग्य की मुद्रा में कहा––

"बीरबल जी जन्म से ब्राह्मण हैं ब्राह्मणों का धर्म है द्वार द्वार जाकर भिक्षा मांगना । इसलिए बीरबल जी को "बार बार" का अर्थ "द्वार द्वार" ही सूझ सका । परन्तु मेरा विचार है कि ब्रज के सभी नर–नारी कृष्ण के मथुरा–गमन के अवसर पर अपना घर बार छोड़ यमुना के किनारे गए हुए थे । उस विदा के अवसर पर कोई भी ब्रजवासी अपने घर पर नहीं था । फिर भला यशोदा "द्वार द्वार" जा कर किस को अपनी बात सुना रही होगी ?"

सारी सभा एकाग्रमन हो कर सांस खींचे इस विवाद को सुन रह थी । उत्सुक श्रोतागण आश्चर्य के साथ एक सर्वथा नवीन अर्थ की प्रतीक्षा कर रहे थे ।

टोडरमल बोल रहे थे––"मैं स्वीकार करता हूं कि "द्वार" शब्द घिस कर "वार" बन जाता है, परन्तु सूरदास ने गीत में दो बार उस शब्द का प्रयोग किया है, जिसमें एक शब्द का अर्थ संस्कृत भाषा के अनुसार "वारि" अर्थात् जल होता है। इस लिए "वार वार" शब्द का पूर्ण आशय होगा "जल का द्वार" अर्थात् "यमुना के घाट" पर जा कर यशोदा लोगों से अपने मन की व्यथा सुना रही थी ।"

अर्थ-मन्त्री का यह नया अर्थ सुन कर, तो सम्राट अकबर तथा अन्य लोगों के मुंह से "वाह वाह" की ध्वनियां फूट पड़ीं और बीरबल का मुंह फीका पड़ गया ।

हर्षोल्लास के कोलाहल में अकस्मात् नवरत्नों ही में से एक आवाज़ सुनाई दी । सबकी आंखें उधर को उठीं। अरबी, फारसी और संस्कृत के विद्वान् फ़ैज़ी सम्राट से संबोधित हो रहे थे । सब ने शांत हो कर सुना, फ़ैज़ी कह रहे थे—"जहांपनाह ! मित्रवर टोडरमल ने "बार बार" शब्द का जो अर्थ लगाया है–"यमुना के घाट" उस का भी एक कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। वे हमारे देश के अर्थमन्त्री हैं और इसलिये "घाट घाट" का पानी पी चुके हैं। मैं साहित्यकार हूं, काव्य का मर्म समझता हूं। मेरा अपना विचार है कि सूरदास जैसा महान् कवि बहुत सूक्ष्म-दर्शी होने के कारण "वार वार" के स्थूल अर्थ से सन्तुष्ट नहीं हो सकता। यह ठीक है कि "वार वार" शब्दों का अर्थ "जल का द्वार" ही युक्ति-युक्त है, परन्तु इस का भाव कुछ सूक्ष्म, कुछ कवित्वपूर्ण और कुछ गम्भीर होना चाहिए। यशोदा माता पुत्र-विरह से अत्यन्त व्याकुल थी। अतः न वह "द्वार-द्वार" ही फिर सकती थी और न ही "घाट घाट" घूम सकती थी। विरह से क्षीण उस निःशक्त और निराश मां से ऐसी आशा रखी भी नहीं जा सकती। क्योंकि भावावेश से भरा हृदय होने के कारण कोई भी व्यक्ति एक भी शब्द का उच्चारण नहीं कर पाता। इसलिए मैं समझता हूं कि "वार वार" शब्द का स्थूल अर्थ जो "जल का द्वार" लगाया गया है उसका भाव "यमुना का घाट" न हो कर यशोदा की "भीगी भीगी आंखें" अथवा "सजल नेत्र" हैं जो मूक भाव से ब्रजवासियों से पूछ रहे थे कि कोई है जो मां से बिछुड़ कर जाते हुए निर्मोही पुत्र को मथुरा जाने से रोक सके?"

सम्राट अकबर ने जब फ़ैज़ी की यह अद्भुत व्याख्या सुनी, तो गद्गद् हो उठे। चारों ओर से हर्ष-ध्वनियां सुनाई पड़ने लगीं। ब्रजभाषा के माधुर्य और महत्त्व को अनुभव करके रसिकजन मोहित हो गए। अकबर मन ही मन में सूरदास की काव्यचातुरी पर लट्टू हो गए।

समय पर्याप्त हो चुका था। अकबर ने सभा-विसर्जन का पुनः आदेश दिया, किन्तु उसी समय अकबर के आचार्य और प्रधान सेनापति बैरम खां के सुपुत्र सुविख्यात विद्वान् सेनापति और दानवीर कविवर रहीम खान-खाना ने सानुरोध प्रार्थना की कि केवल थोड़ी देर और रुक कर इसी विषय में उनके भी दो शब्द सुन लिए जाएं।

अकबर का कौतूहल चरम सीमा तक पहुंच गया, वह यह समझने में असमर्थ था कि स्वयं उसके देश में ऐसी भाषा का साहित्य विद्यमान है, जिसके एक कवि के एक गीत की पंक्ति के एक शब्द के इतने सुन्दर, नवीन, अद्भुत और गम्भीर अर्थ खोले जा सकते हैं।

सम्राट की अनुमति ले कर रहीम ने उत्सुक श्रोताओं की ओर मुंह कर के कहा—"श्री फ़ैज़ी ने सचमुच कवि-हृदय पाया है और एक कवि का हृदय ही कवि के हृदय की ठीक ठीक पहचान कर सकता है और उसकी थाह लेने में समर्थ हो सकता है। उनकी व्याख्या बहुत ही सूक्ष्म और कवित्वपूर्ण है। परन्तु मैं स्वयं ब्रजभाषा का कवि होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारण सूरदास के काव्य को मैं और भी अच्छी प्रकार समझ सकता हूं । श्री फ़ैज़ी के अनुसार यशोदा माता की आँखें दुखी होने के कारण सजल थीं । परन्तु मैं समझता हूं कि यह विरह वेदना की एकांगी व्याख्या है । स्नेह का मनोविश्लेषण करने पर मैं "बार बार" शब्द का सर्वथा मौलिक अर्थ निकालता हूं । ब्रजभाषा की अपनी एक विशेषता है कि उसमें "र" तथा "ल" अक्षरों में भेद नहीं होता । "होली" को "होरी" भी कहा जाता है । इस प्रकार मेरे विचार में "बार बार" शब्द वास्तव में "बाल-बाल" शब्द है, जिस का अर्थ होगा "रोम-रोम" । यशोदा के केवल भीगे लोचन ही नहीं, अपितु उसका रोम-रोम पुकार रहा था कि "ब्रज में कोई ऐसा हमारा मित्र है, जो कृष्ण को मथुरा जाने से रोक सके ।"

रहीम की इस नवीन व्याख्या को सुनते ही सभा का एक-एक व्यक्ति फड़क उठा । सम्राट ने उठ कर रहीम को गले लगा लिया और उसी आवेश में तानसेन के कंठ से यह दोहा फ़ूट निकला:--

किधौं सूर को सर लग्यो ।
किधौं सूर को पीर ।।
किधौं सूर को पद लग्यो ।
तन मन धुनत सरीर ।।

और सभा विसर्जित हो गई ।

● ● ●

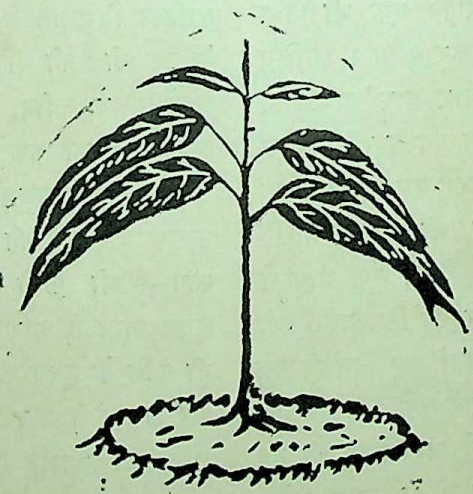

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

को रुचि है, वहां चार पैसे का लाभ तो होगा। स्वर्ग की चाकरी से नरक में अधिकार प्राप्त अच्छी। पढ़े-लिखे होने के कारण कोई न कोई पोस्ट तो वहां मिलेगी ही। अपने मेहरबान नरक में आना नहीं चाहेंगे, नहीं तो वहां के सारे ठेके, कोटे, परमिट उन्हीं के नाम कर दें।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने एक कृपालु हैं लाला घसीटा-मल ! दूसरों से उधार लेकर पुस्तकें पढ़ने का उन्हें बहुत शौक है। शहर के छोटे बड़े पोस्टरों से लेकर उर्दू 'हिन्दी' पंजाबी की सस्ती पुस्तकें तक वे चाट गए हैं। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के दिन से श्रीमान ने कसम खा रखी है कि कोई भी पुस्तक गिरह से पैसे खर्च कर नहीं खरीदनी। उनकी पंचवर्षीय योजनाओं में दिन प्रति दिन उधार ली जाने वाली पुस्तकों की वृद्धि हो रही है। रद्दी की दुकान से ले कर पुस्तकालय-कक्ष तक लाला जी के चरण चिह्नों से शोभयमान हैं। एक दिन अपने पर भी उनकी कृपा हुई। कुछ दिनों के लिये पुस्तकें लीं परन्तु आज तक वे लौटाई नहीं गईं। उनकी उपस्थिति में हम ने एक दिन मकान मालिक से शिकायत की—अलमारियों में सेंक है, बहुत सी पुस्तकें नष्ट हो गई हैं। जब लाला जी से हम ने पुस्तकों की मांग की, तो हम पर एहसान जतलाते हुए बोले—भैय्या ! तुम्हें तो पुस्तकों की कदर नहीं। तुम्हारे पास सेंक ही खाती है। शुक्र करो कि तुम्हारी पुस्तकें कदरदान के पास हैं। फिर गंगा में गई अस्थियां भी कभी लौटी हैं ? लाला जी के तर्क के सामने हम तो निरुत्तर हो गए। हम एक क्षण के लिये यह मानने को विवश हो ही गए कि लाला जी ने हमारी पुस्तकें ले जा कर हम पर नेकी की है।

हमारे एक अन्य मेहरबान हैं श्री रुलदू राम। उन्होंनें न जाने यह कैसे भ्रम हो गया है कि हमारे पास काफी धन है। उनका सत्परामर्श हमें सदा मिलता रहता है—"बेटा ! जमाना खराब है ! पैसे पास नहीं रखने चाहिएं। फालतू राशि सूद पर दे दिया करो ! "आम के आम गुठलियों के दाम" प्रबन्ध मैं कर दिया करूंगा। धीमे से यह भी कह देते हैं—"कई दिनों से मिलने की इच्छा थी चला आया ! तुम्हारी चाची दोनों तरफ का किराया दे रही थी। मैंने कहा कि रहने दो। एक तरफ का वहां से ले लेंगे। आखिर अपना बेटा जो ठहरा। तो निकालो न बेटा १० रुपये।" ऐसा सौभाग्य मास में दो तीन बार हो ही जाता है। अपने भले कृपालु से कई बार कहा कि हमारे पास पैसे कहां ? परन्तु वह क्यों मानें ?

इस दृष्टि से हम तो पूरे ब्रह्मवादी हैं ! माया का अपने पास क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम ? महात्मा कबीर द्वारा कहा महा-वाक्य "माया महाठगनी हम जानी" अपना मार्ग दर्शक है ! महात्मा जी ने माया के ये रूप माने हैं--सुत, धाम, धन तथा तिय ! परमात्मा की कृपा से सुत तो अपने हैं ही नहीं, सुता की कोई कमी नहीं (कबीर की सूची में इनका नाम नहीं) शेष के विषय में अपनी स्थिति इस प्रकार है:--

तिय मायके, सब का धन बैंक न
रैन काटें नित्य होटलन में ।

कबीर की परम्परा के ये कृपालु अपने को माया-मुक्त रखने का सदा प्रयत्न करते हैं ।

पाठकों को अपने एक अन्य परन्तु अनन्य मेहरबान का परिचय न देना उनसे अन्याय करना होगा ! इन के दर्शन नित्य प्राय होते हैं । प्रातः अखबार आता है तो वे उस पर आ झपटते हैं, तब तक नहीं छोड़ते जब तक उसका कचूमर न निकल जाए ! हमें वह अखबार-दर्शन से यह कह कर वंचित रखते हैं-भाई साहिब ! आकर पढ़ना, अब कालेज को देर हो जायेगी । परायापन इस महाशय ने कभी समझा ही नहीं ! इसी लिये हमारी साईकल का प्रयोग वह सारा दिन करते हैं । एक दिन जबकि रात भर मच्छर के आक्रमण से जागने पर, सुबह आंख लगी ही थी कि इनका शुभागमन हुआ । रात को भूल से दरवाज़ा कहीं खुला ही रह गया अतः इन्हें आने में कठिनाई न हुई । क्रोध तो हमें बहुत आया परन्तु विवश ! ही आने के कारण पर प्रकाश डालते हुए बोले—"सोचा पहले-पहल मैं ही जाकर बधाई दूं ! गवर्नमैंट सर्विस मिली है । कोई छोटी बात है क्या ? भाभी ! उठो, मुंह तो मीठा कराओ ।"

मुंह मीठा होने के नाम पर सेर भर मिठाई उन के पेट में गई ! उसी दिन इस महाशय ने एक और नेकी की ! हमारी पत्नी को परामर्श दिया--अब साईकल चलाना ठीक नहीं, भाई साहब से कहो कि स्कूटर ले लें । हमने पत्नी को बहुत समझाया, आर्थिक दृष्टि से कठिनाई बतलाई, परन्तु वह भागवान कब मानने लगी ! आर्थिक कठिनाई के विषय में वे महाशय पहले ही हमारी सहधर्मिणी को समझा गए थे कि पालिसी पर कर्ज मिल सकता है ! त्रिया हठ के सम्मुख हमें हथियार फैंकने पड़े ! स्कूटर के आगमन से अब साईकल पर इनका एकाधिकार हो गया । एक दिन हम घर पर न थे । पीछे से हमारी पत्नी से यही महाशय हमारा स्कूटर मांग ले गए । वैसे तो हमारी श्रीमती मानने वाली नहीं, उस दिन इनकी प्रशंसा से पिघल कर वह गलती कर ही बैठी ! स्कूटर पर इनके चुन्नू, मुन्नू तथा झुन्नू ने खूब सैर की । इनकी कृपा से आज स्कूटर के हार्न के सिवाय सब कुछ बजता है ! इस के महाकृपालु का हम नाम नहीं बताएंगे ।

कृपालु तो और भी हैं, फिर कभी आप से उनका परिचय कराएंगे ।

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेलुगु कहानी

स्त्री

गन्धम् याज्ञवल्क्य शर्मा

मूसलाधार वर्षा हो रही है। रात के दसबज गये हैं। क्षण भर के लिये प्रकृति, भयभीत, विह्वल स्त्री की तरह कांप रही है। दूसरे क्षण प्रतिशोध की भावना से दबी हुई स्त्री की भांति वीभत्स हो रही है। बीच–बीच में स्त्री की करुणा सी बिजली चमक रही है, उसके क्रोध की तरह मेघ गर्जन कर रहे हैं।

ठंडी हवा चल रही है, स्त्री में निहित अबोधगम्य भावना–वीचिकाओं की भांति।

राधा बच्चों को सुलाकर हाथ में लालटेन लिए सवेरे के दफतर गये हुए मुरारी की प्रतीक्षा कर रही है, बाहर ड्योढ़ी पर। राधा की दिन चर्या में से यह प्रतीक्षा भी एक है। केवल अस्सी रुपयों के लिए दिन भर एड़ी चोटी का पसीना एक कर रात के कोई दस बजे मुरारी का घर आना रोज की ही बात है।

बौछार की दो एक बूंदें राधा पर गिरी। बदलने के लिए दूसरी साड़ी भी नहीं है उस के पास! फिर भी वहीं खड़ी रह गई। उसे लग रहा है, जाने क्यों जीवन इतना नीरस हो गया है। लेकिन इसका कोई उत्तर नही। उस के संपूर्ण आशा–सौध, काल्पनिक–महल नींव से ढह तो नहीं गये?

इस तरह की भावना के सिर उठाते ही 'शंकरम्' पर राधा के मन में अनिर्वचनीय प्रतिशोध की आग धधक उठती है। बदला लेने की भावना बलवती हो उठती है। किन्तु, वह एक अशक्त स्त्री है.....।

"इस तरह क्यों खड़ी रह गई हो?" मुरारी की यह बात सुनने के पूर्व तक राधा ध्यान-मग्न खड़ी रह गई।

"आ गये तुम? हां, पूरे भीग गये हो न? लेकिन कल दफ्तर जाने के लिये दूसरे कपड़े भी तो नहीं हैं.....।"

राधा बोली!

मुरारी रुखी हंसी हंसा। वह वास्तव में हंसी नहीं, हंसने का अभिनय मात्र था। उस हंसी के पीछे जीवन के प्रति उपेक्षा, जुगुप्सा, स्वयं अपने पर अविश्वास, और कई भाव ध्वनित हो उठे।

भोजन समाप्त हुआ।

मुरारी कुर्सी पर बैठा कुछ सोचता रह गया। अपना काम–धन्धा पूरा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधा आई और पूछा—"क्या बात है, तुम्हारी गई, यों बैठे हो ?"

दीपक को घूरते हुए मुरारी बोला—"वही, 'बुज्जी' के विषय में सोच रहा हूं। शंकरम् ने आज फिर आफिस में फोन किया है.....।"

दूर पर बादल गरज उठे। "फिर किस मुंह से उस शंकरम् ने तुम्हें बुलाया है ? तुमने क्या जवाब दिया ? हम ने बता तो दिया है न, इतनी भी उसमें समझ नहीं रह गई ?" राधा गरज पड़ी। वह उग्र थी।

क्षण भर के लिए मुरारी राधा की ओर देख नहीं सका। थोड़ी देर बाद, धीरे से बोला—"राधा ! आवेश में नहीं, शांतिपूर्वक सोचो.....बुज्जी का मैं भी तो पिता हूं, देख-दिखाकर बुज्जी को दूर करना चाहने वाला राक्षस नहीं। लेकिन, एक बात सोचो, बुज्जी का भविष्य ! वह भी हमारी ही तरह आधा पेट खा, हम जैसा ही दीन-हीन, दरिद्रता पूर्ण जीवन बिताए—यह अच्छा नहीं है न ? तुम ही बताओ, पिता के रूप में मैं और मां के रूप में तुम उस की कितनी उन्नति कर सकेंगे ?

लेकिन, शंकरम् के सुपुर्द कर देंगे तो बुज्जी कुछ बन सकेगा। उस के बीद दस पीढ़ियों तक काफी होने वाली जायदाद का वारिस बन जायेगा। तिस पर हमारी आँखों के सामने हो रहेगा। अब उन्हीं शंकरम् की बात, वह तो अपना ही है; बड़ा ही सहृदयी; हमारे बच्चे को हम से दूर नहीं करेगा—क्यों ?" मुरारी ने राधा की दृष्टि में अपनी दृष्टि मिलाई।

राधा की आँखों में एक अप्रकट भावना नाच उठी। बाढ़ की तरह उमड़ते हुए क्रोध और वेदना प्रस्फुट हुए। वह भाव ऐसे लग रहे थे, मानों मुरारी को हाथ पकड़ कर रोक देंगे।

"राधा ! इस विषय में तुम्हारी ममता, बुज्जी के भविष्य में बाधा बनेगी ! याद रखना, कल अपनी नासमझी पर स्वयं तुम ही हाथ मलोगी। उस दिन पुनः ऐसा आवसर पाने मैं तुम्हारा मातृत्व भी पराजित हो जायेगा। मुझे क्षमा करो कि मैं ऐसा कह रहा हूं। जरा सोच लो....." मुरारी ने कहा।

राधा की आँखों में पानी भर आया। फिर भी वह रोई नहीं। उस की अंतरात्मा की वेदना कुछ और है। लेकिन मुरारी कुछ और ही सोच रहा है। कौन मातृ-हृदय यह नहीं चाहता कि अपनी संतान का भविष्य दिव्य ज्योत्स्ना न बने ? नहीं तो इस सृष्टि का आधार ही क्या रह जायेगा ? मातृत्व का अर्थ ही क्या होगा ?

राधा की स्मृति ने अतीत के अदृश्य पृष्ठों की राह ली—

x x x

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधा के इस संसार में आते ही पिता जी उठ गये। उसके तीन वर्ष बाद मां भी सदा के लिए दूर हो गई। मामा, 'भुजगंराव' की देख-रेख में उसका पालन हुआ। भुजंगराव 'पुसलूर' के एक धनवान व्यक्ति थे। उनकी एक मात्र सन्तान शंकरम् हैं। वह राधा से चार साल बड़ा है। दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते रहे। क्षण भर भी एक दूसरे से दूर रहना उन्हें नहीं भाता था। राधा नौवीं में ही पढ़ रही थी कि शंकरम् को कालिज की पढ़ाई के लिये 'गुंटूर' जाना पड़ा।

शंकरम् के कालिज जाते समय राधा को विकलता हुई। उसमें एक प्रकार की ममता ध्वनित हुई। ठीक रेल में पैर रखते हुए जब शंकरम् ने कहा—"अच्छा, चलता हूं राधी!" तब बहुत प्रयत्न करने पर भी राधा अपनी आँखों के आंसू रोक नहीं सकी।

शंकरम् के गुंटूर चले जाने के बाद राधा के लिये एकांत जीवन दूभर होने लगा। अकेली स्कूल जाना भी उसे बड़ा बुरा लगने लगा। लेकिन इतने में राधा का सयानी हो जाना, और घर में बैठ जाना, उसके लिए सुदिन ही सिद्ध हुए।

शंकरम् घर को चिट्ठियां लिखा करता था। उनमें राधा के बारे में बहुत लिखता। "राधी कैसी है, क्या कर रही है .....इत्यादि।" उस के लिए कई पुस्तकें भी भेजा करता। इन पुस्तकों को देखते समय या पढ़ते समय राधा की आँखों में शंकरम् की मूर्ति ही नाच उठती।

राधा सोचा करती— "शंकरम् सूर्य है तो मैं एक पद्म हूं; वह चन्द्र है तो मैं एक कुमुदिनी। शंकरम् एक ग्रह है तो मैं उस पर आश्रित एक उपग्रह।" जब-जब शंकरम् छुट्टियों में घर आता, राधा के लिये अच्छी अच्छी साड़ियां ले आता; शहर की कितनी ही मजेदार बातें बताता-अपने प्रोफेसरों को लड़के किस तरह तंग करते हैं, साथ की लड़कियों को कैसे छेड़ा करते हैं .....सभी बताता।

राधा बीच ही में बोलती—"ऐसा करना गलत बात है न शंकरम्? अविवाहित लड़कियों को इस तरह छेड़ना कौन सी भली बात है? तुम्हारी ये हरकतें कभी-कभी कैसे उदण्ड व अनुचित परिणामों के कारण बन बैठती हैं, इस पर भी तुम लोग कभी सोचा करते हो?"

"हां, राधी! ऐसा करना अनुचित अवश्य है ....." शंकरम् अपनी भूल मान लिया करता।

शंकरम् के बी. ए. में जाने के बाद छुट्टियों में घर आना बन्द हो गया। पत्रों में लिखा करता कि छुट्टियों में घर आने से अध्ययन में बाधा पड़ जाती है। उल्लास यात्रा के बहाने शंकरम् गर्मियों की छुट्टियों में भी घर नहीं आया। राधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को ऐसा लगा मानो किसी ने उसके हृदय को नोच दिया हो ।

समय बीतता गया । मानवों में, सृष्टि और समाज में अनगिनत अस्वाभाविक परिणामों का कारण केवल समय होता है । समय के परिवर्तन के परिणाम-स्वरूप कई अनहोनी बातें हो जाती हैं । तुरंत दुःख और अतुल आनन्द स्थानांतरित हो पाते हैं । किसी भी वस्तु के 'धर्म' का निर्णय किया जा सकता है; इसके परिणाम का अनुमान भी लगा सकते हैं । किन्तु समय के परिणामों का निर्णय करना सृष्टि के आदि से मानव-शक्ति के बाहर की बात रह गया है ।

एक दिन भुजंगराव ने राधा से उस के विवाह के सम्बन्ध में बताया । राधा को लगा कि उस पर वज्रपात हुआ है । पैरों के नीचे की धरती खिसकती सी लगी ।

"अच्छी तरह सोच ले बेटी, तुझे पाला-पोसा है मैं ने--तुझे किसी भिखारी के हाथों सौंपकर मैं बोझ से मुक्त होना नहीं चाहता । तेरे लिए मैं ने अच्छे संबन्ध ही देखे हैं.....खूब सोच के बता....."

रात भर राधा को नींद नहीं आई । क्या मामा जी उसको पहचानते नहीं ? या.....जान-बूझ कर ही अन्याय कर रहे हैं ?----बार बार यही प्रश्न उठता रहा उसके अंतर में । उसकी हृदयगत भावनाएं भला वे कैसे जान सकते हैं ? राधा को एक प्रकार का भय लगने लगा ।१ शंकरम् के सान्निध्य में जीवन बिताने की अपनी आशा कहां जायेगी ? यह अपश्रुति कैसी ?

उसके लिए एक ही आशा ज्योति है-"शंकरम्" । उसने शंकरम् को पत्र लिखा.....उसमें अपना हृदय खोल कर रख दिया--" शंकरम् ! यह जीवन, हृदय, भाव, वाक, कर्म-सभी तुम्हीं को अर्पित किये हैं मैंने, और कर रही हूं । स्वीकार कर मुझे अनुगृहीत नहीं करोगे ? चिट्ठी के लिए आँखों में दीप जलाये, दृष्टि में आशाएं भर प्रतीक्षा करती रहूंगी । तुम्हारी--'राधी' " ।

जिस चिट्ठी के लिए क्षणों को युगों में बदल कर राधा प्रतीक्षा करती रही, वह चिठ्ठी तो आई, किन्तु उसके हृदय में धूल झोंक कर उसे कलुषित कर गई ।

राधा की आशाएं भावना-शून्य हो गईं ।

"तुम में शायद आशाएं उत्पन्न कीं मैंने.....लेकिन, तुम्हें याद होगा,-'तुम्हारी ये हरकतें कभी-कभी कैसे अव्यक्त व अनुचित परिणामों के कारण बन बैठती हैं' तुम ने एक बार कहा था । वैसी ही एक घटना घट गई है यहां;

१. दक्षिण में परस्पर संबंधियों में भी विवाह होते हैं । मुख्यत : मामा की लड़की से ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस शहर के जज की लड़की 'निर्मला' से मेरा परिचय बढ़कर, हमारी अबोधता के कारण कुछ अनुचित परिणामों की ओर ही उन्मुख हो गया है। ऐसी परिस्थितियों में मैं निर्मला से दूर हो नहीं सकता। ऐसा होने पर उसके जीवन का नाश हो सकता है। शायद वह आत्महत्या के लिए भी सिद्ध हो जाय। इसीलिए मैं ने उसी को जीवन-संगिनी बनाने का निर्णय किया है। हमारे गत जीवन को टूटा हुआ स्वप्न समझो मुझे क्षमा करो राधी! न्याय के लिए आँखें फोड़ लेने वाले भी होते हैं.....हमारा जीवन भी उसी प्रकार का है।

पिता जी की ढूंढी हुई जगहों में से कोई अच्छी जगह चुन लो। पुनः पूछ रहा हूं, मुझे क्षमा करो। तुम्हारा शुभ-चिन्तक- शंकरम्।"

इस चिट्ठी के जितने पुरजे हुए, उतने राधा के हृदय के टुकड़े हुए। शंकरम् ने विश्वास के साथ उसे एक शिखर पर ले जाकर, बगल की दरार में ढकेल दिया। जज की लड़की का व्यामोह, ओहदा--इन्हीं में शंकरम् डूब गया। राधा का हृदय धड़कने लगा।

स्त्री में किसी भी प्रकार की भावना की अधिकता से परिणाम विपरीत रूप में प्रतिबिम्बित होते हैं। शंकरम् के पत्र से राधा को जो क्लेश हुआ, वह शत्रुता, प्रतिशोध के रूप में परिणत हो गया। शंकरम् को अपने हृदय से दूर कर देने की इच्छा बलवती हो गई। उसी की जायदाद की सहायता से वह एक धनवान की बहू बने--इसके लिए उसका हृदय तैयार नहीं हुआ। इसी लिए सारे संपन्न परिवारों के संबन्धों को ठुकरा कर एक निराधार युवक 'मुरारी' से शादी करने को वह तैयार हो गई।

भुजंगराव स्तब्ध रह गये!

"हां, बस इसी जगह बात पक्की कर दो.....।" राधा ने कहा। भुजंग राव ने कुछ कहने का प्रयत्न किया। किन्तु किसी विपरीत लक्ष्य की ओर उन्मुख राधा के समक्ष उन का प्रयत्न विफल हो गया।

राधा-मुरारी का विवाह हो गया। राधा ने सोचा कि शादी में शंकरम् आयेगा और उसको वह परिधि दिखाकर, उस की अवहेलना करूंगी, जो मैंने चाहकर अपने लिए चुन ली है। लेकिन, तार द्वारा शंकरम् के आशीर्वाद प्राप्त हुए। अंतिम बार अपने हृदय के किसी कोने में स्थित शंकरम् की स्मृति मात्र को भी उखाड़ फैंक कर राधा ने निश्वास छोड़ी।

पहली बार पति के घर जाकर राधा फिर 'पुसलूर' नहीं लौटी। भुजंगराव ने बहुत समझाया, अनुनय किया--"रीति-रिवाजों को छोड़ना नहीं चाहिए, तुम एक बार घर आओ बिटिया!" किन्तु राधा ने नकारात्मक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर ही दिया । राधा को भुजंगराव भी समझ नहीं सके ।

एक वर्ष बीत गया । मुरारी 'गुंटूर' में नौकर बन गया । राधा को चिट्ठी आई कि शंकरम् का निर्मला के साथ विवाह होने वाला है । चिट्ठी के साथ ही भुजंगराव भी आ गये, राधा को लेने के लिए । मुरारी ने तो राधा को जाने की अनुमति दे दी । किन्तु––"उनको खाने–पीने की तकलीफ होगी । शादी के दिन आ जाऊंगी," कह कर राधा ने टाल दिया । ठीक विवाह के दिन भी राधा ने बहुत बहाने बनाये । वह शंकरम् की शादी में नहीं गई ।

सात वर्ष काल-गर्भ में विलीन हो गये । केवल अपने चिह्न छोड़कर । राधा के तीन बच्चे हो गये । सबसे बड़ा 'बुज्जी', बाद की 'उमा' और सब से छोटा 'नीनी' । थोड़े से वेतन से जीवन दूभर होने लगा । किन्तु बचे कैसे ? चाह कर अपनाया हुआ मार्ग जो था .....।

इस बीच एक बार फिर भुजंगराव आये । उनसे पता चला, शंकरम् 'विशाख' में अपनी पत्नी के साथ रह रहा है । निर्मला के गर्भ हो कर गया । आपरेशन भी करने की आवश्यकता पड़ी थी । जो भी हो, अब उस के संतानवती बनने की कोई संभावना नहीं––सब कह कर मामा जी ने सांस भरी ।

मामा जी की बातें बड़े ही ध्यान से सुनने की इच्छा हुई राधा को ।

उस रात को मामा जी 'बुज्जी' और 'उमा' को आपने पास सुलाकर फूले नहीं समाये । उन को जी भर कर देखते रहे । राधा के हृदय में एक प्रकार का विकृताट्टहास ध्वनित हुआ ।

शंकरम् पिता नहीं बन सकता––इस भावना ने राधा को तृप्त किया ।

भुजंगराव के घर जाने के एक हफ्ते बाद ही वज्रपात हुआ । ज्ञात हुआ कि वे चल बसे । राधा दुखांबुधि में डूब गई । उस महान् मूर्ति की मृत्यु पर उसे काफी क्षोभ हुआ ।

क्रिया–क्रम के लिये शंकरम् ने राधा को बुलाया । मामा जी पर जो भक्ति थी उस के कारण पहले उसने सोचा कि चली चलूं.....किन्तु फिर सोचा कि जब अपने ही दूर हो गये हैं तो वहां अब जाने के लिए रह ही क्या गया है ?

महीने भर बाद मुरारी ने कहा कि शंकरम् का 'गुंटूर' को ही तबादला हुआ है ।

राधा क्षण–भर के लिए निरुत्तर हो गई । अपने हृदय और दृष्टि–पथ से दूर किये हुए शंकरम् को पुनः अपने समक्ष पाये ? राधा को भय लगने लगा । राधा की आत्मा के लिए यह एक परीक्षा थी । उसमें एक प्रकार का शोध प्रारम्भ हो गया । गत आठ वर्षों से मुरारी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्नी बन उसने अपने सती–धर्म का हृदय पूर्वक निर्वाह किया। उसमें किसी प्रकार के अविश्वास को कोई स्थान नहीं। किन्तु शंकरम् के आने की बात सुनकर फिर यह भय कैसा ? लेकिन..... वास्तव में यह भय नहीं, दोष है, प्रतिशोध की भावना.....उनकी भयंकर छायाओं का घर्षण।

सती राधा के लिए इस द्वेष और प्रतिशोध की भावना को अपने में उन्नत करने की आवश्यकता ही क्या है? जाने क्यों.....कोई समाधान नहीं..... राधा इससे बढ़कर हृदय–शोध नहीं कर सकी।

गुटूंर आने के बाद एक दिन शंकरम् निर्मला के साथ राधा से मिलने आया। वे कुछ क्षण भी राधा के लिए बाधक ही बने रहे। वह निर्मला के साथ रसोई में चली गई। शंकरम् और मुरारी ओसारे में बैठे बातें करते रहे।

लौटते हुए——"कल आप सब हमारे घर आइए....कार भेजूंगा" शंकरम् ने कहा। राधा कुछ नहीं बोली।

शंकरम् अपनी कार, अपनी गहनों से लदी हुई पत्नी को दिखाने आया। राधा ने तो यही सोचा।

अपनी मैली साड़ी देख स्वयं विरक्त भाव से वह हंस पड़ी। दूसरे दिन सवेरे कार आई। मुरारी और बच्चों को जाने के लिये कहा राधा ने।

"यह क्या कह रही हो राधा ! शंकरम् क्या सोचेगा ? वह दुःखी नहीं होगा ?"

"उसमें दुःखी होने योग्य हृदय नहीं है....." राधा बोली।

कुछ भी समझ में न आने के कारण मुरारी, बच्चों के साथ शंकरम् के घर के लिए रवाना हो गया।

काफी रात बीतने पर मुरारी ने लौटकर शंकरम् की कही बातें बताईं। भीतर ही भीतर राधा के अंतर में जलती आग धधक उठी।

"यह बात मैं मानूंगी नहीं..... इसके लिए मेरा मन, मेरे शरीर का प्रत्येक कण तैयार नहीं होगा। बुज्जी मेरा है, मेरा प्राण, उस पर किसी का कोई अधिकार नहीं....." राधा ने कहा।

शंकरम् ने कहला भेजा था कि उस का जीवन दूभर है। बुज्जी को उसे गोद दे दें। मुरारी की दृष्टि में जो विवशाता है, वह शंकरम् की बात पर 'हां' कह सकी। किन्तु राधा.....राधा में भंवर की तरह चकराने वाली एक अन्य भावना रुकावट सी बन गई।

"शंकरम् से निश्चयपूर्वक कह दो....." सवेरे आफिस जाते हुए पति को लक्ष्य करके राधा ने कहा। मुरारी ने रात को फिर बताया कि शंकरम् ने फोन किया है बुज्जी के विषय में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

राधा स्मृति से विलग हो गई ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

× × ×

न जाने मुरारी की आँख कब लग गई । राधा केवल यों ही बैठी रह गई । लालटेन में तेल खत्म हो गया । वह क्रमशः क्षीण होकर समाप्त हो गई ।

एक समय राधा की आशाएं और विश्वास भी इसी तरह क्षीण हो–होकर समाप्त हो गया था । शंकरम् उस दिन. दूर हो गया था, उसे अकेली छोड़कर ।

इस संसार में मानव स्वयं ही अपनी सज्जनता, त्याग, करुणा, तथा धर्म को छोड़ भ्रष्ठ हो जाता है.....दानव बन जाता है । इसका प्रमाण.....शंकरम् .....राधा ने सोचा ।

तीन की घंटी बज उठी । राधा सो गई ।

सवेरे सोकर उठके देखा, मुरारी स्नान कर, रात के भीगे कपड़े ही पहन कहीं जा रहा है ।

राधा को आश्चर्य हुआ ।

"इतने सवेरे कहां रवाना हुए हो ?" उसने पूछा । मुरारी ने उत्तर नहीं दिया । सोये हुए बुज्जी की ओर सरसरी दृष्टि से देख बाहर हो गया ।

अनंतर, राधा बहुत देर सोच में पड़ गई । "क्या वास्तव में बुज्जी का भविष्य बिगाड़ रही हूं मैं ?" भांति–भांति के विचार फिर उठाने लगे । वह विकल हो उठी ।

एक ओर उन्नत प्रतिशोध की भावना, दूसरी ओर मातृत्व—इन दोनों के बीच घर्षण । कितना ही समय विचारों में वह गया । बाहर किसी के आने की आहट हुई । मुरारी होगा.....अब तक काफी भी नहीं बनी है—यही सोचती हुई राधा बरामदे में आई । बुज्जी को गोद में लिए खड़े हुए शंकरम् को देख कर वह स्तब्ध रह गई ।

"राधी ।" शंकरम् बोला ।

राधा रसोई घर के दरवाजे की ओट में हो गई ।

"मुझे क्षमा करो राधी ! तुमसे अनुनय करने आया हूं । कम से कम मेरे जीवन में इतना तो करोगी इसी आशा से....." शंकरम् कहने लगा ।

इतने में जैसे मेघ गरज उठे—

"क्षमा करूं ? आपने कौन सी भूल की है ? आप तो पैसे वाले हैं..... अपनी धन–दौलत से आप मनुष्यों को खरीद सकते हैं, बेच सकते हैं; भला आपसे भी कोई गल्ती हो सकती है ?"

"राधी !"

"मेरा नाम राधा है । शंकरम् जी, मनुष्य के लिए एक बात काफी होती है । बुज्जी को आप नहीं पा सकेंगे । बुज्जी राधा का लड़का है, मुरारी की संतान । आप का इतना भाग्य नहीं । संतान पाने योग्य विशाल हृदय ईश्वर ने आप को प्रदान नहीं किया । पैसे से न खरीद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोने-पीटने से मिल जाएगा क्या ? गई वस्तु के लिए पछताना व्यर्थ है ? क्यों अपने शरीर और नेत्रों का नाश कर रही है ।

मनसा--बड़ा होनहार था मेरा पुत्र ! मैं कहती रही इसे पढ़ने छोड़ दो। पढ़ जाता तो कुछ कमाने योग्य बनता । कम से कम इस प्रकार भूख से तो न मरता। बेचारा दो-दो दिन का एक बार खाना खा कर खेतों को सुधारने के लिए इन पत्थरों से सिर मारता रहा, और सारा दिन काम करने पर मिलता भी कुछ न था । (कुछ रुक कर) अब इस घर में क्या रखा है ?

गोविन्द--जानता तो मैं भी हूं कि यहां मिलने के लिए कुछ रखा नहीं, पर करूं क्या ?

मनसा--करने को तो मैं रोज कहती हूं । पर मेरी बात कोई सुने तो न । मैं कहती हूं कि तुम ने मेरे लड़के को तो मार दिया, अब इस पुत्री की ओर तो ध्यान दो ।

गोविन्द--पागलों की तरह हर घड़ी बड़बड़ाया मत करो । लड़की की चिन्ता तो मुझ भी है । परन्तु मैं विवश हूं ।

मनसा--विवश क्या । आखिर जवान लड़की है इसके लिए घर भी तो ढूंढना होगा । और जिस स्थान पर गरीबी और लाचारी ने पहले ही कोई कसर न छोड़ी हो, भला वहां पर कोई शरीफ घराना कहां मिल सकता है। तभी तो मैं कहती हूं, कहीं और जगह चलो । कुछ काम कर लेंगे । अपना नया क्षेत्र बनाएंगे । कुछ तो हो सकेगा ।

गोविन्द--कान्ता की मां, यह हवाई किले बनाना छोड़ दो । इनसे कुछ बन नहीं पाएगा । तुम्हारे हवाई महल बनते बनते बम्बारी हो जाएगी ।

मनसा--तो फिर करोगे क्या ? सभी ललचाई आंखों से देख जाते हैं तुम्हारी लड़की को । गरीब से नाता जोड़ने कोई तैयार होता है ? दो बीघे ज़मीन और इस झोंपड़ी को देख किस का दिल भर आएगा ।

गोविन्द--तू सब कुछ ठीक कहती है । पर याद रख मैं इस वंश का नाश होने नहीं दूंगा ।

मनसा--वंश का नाश तो पहले ही हुआ जा रहा है । पुत्र हमें छोड़ गया । नौजवान लड़की आज नहीं तो कल बेगाने घर की बन जाएगी । वंश के नाश होने में कोई कसर बाकी है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोविन्द—दो बीघे ज़मीन और यह घर मेरे बाप दादा का है। केवल यही है जो मेरे वंश का नाम जीवित रखे हुए हैं वरना इस संसार में क्या वस्तु है जो नष्ट न हुई हो या न होगी।

मनसा—ये तो हैं ही, पर.....

गोविन्द—मैं इन्हें कभी नहीं छोड़ूंगा। यह परम्परा से इस वंश के चले आए हैं। मेरा इनसे सम्बन्ध जुड़ चुका है। मैं इन्हीं के साथ मर मिटूंगा।

मनसा—इससे बढ़ कर और क्या हो सकता है? खाने को पास कुछ है नहीं, बच्ची के लिए वर कोई मिलता नहीं, और बाप-दादा की सम्पत्ति की होड़ लगाए बैठे हो। अरे काम की बात करो। क्या दिया तुम्हारी इस बाप-दादा की सम्पत्ति ने, और क्या कुछ अब यह और देगी।

गोविन्द—अरी, बाहर जाने का कोई उपाय भी है। शाम का खाना पास नहीं, दूर देश जाने की आस लगाए बैठी है।

मनसा —उपाय क्या? इस दो बीघे ज़मीन से ही काम लो।

गोविन्द—आ गई अब तो रास्ते पर। कहती थी क्या देगी तुम्हारे बाप दादा की सम्पत्ति।

मनसा—रास्ते पर क्या? दस-बीस मिल जांएगे, जो हमारे सफर के लिए काफी हैं।

गोविन्द—अ.....च्छा.....तेरा मतलब इसे बेच देने से है। ऐसा कभी न होगा। मैं अपने वंश की इस मर्यादा को कभी त्यागने के लिए तैयार नहीं।। चाहे कुछ भी हो.....।

मनसा—कुछ क्या न होगा जो साफ दिखाई दे रहा है। कान्ता के लिए वर न मिलेगा, अपने लिए रोटी मयस्सर न होगी। कान्ता के बापू, रहने दो इस हठ को। हमने देख लिया है इस घर में रह कर। यहां कुछ मिलने वाला नहीं।

गोविन्द—अरी रहने दे, मुझे मूर्ख मत बना। तुम तो हमेशा अपनी ही धुन में मस्त रहोगी, मुझे न घर में चैन न बाहर आराम-

(हुक्का छोड़ बाहर निकल जाता है। दूसरी ओर से सिर पर घड़ा उठाए कान्ता का प्रवेश। हाथ में कुंए से पानी खींचने वाली रस्सी है)

कान्ता—(सिर पर घड़ा रखे ही) मां, ये गांव के लड़के मुझे पानी भी भरने नहीं देते। कोई घड़े को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पटका मारता है तो कोई रस्सी का।

मनसा—हां बेटी, गरीबों की चीज़ें पटका मारने को ही तो होती हैं। उन के अच्छे कामों पर अमीर हंसी उड़ाते हैं। गरीबों के गुण, उनके शुभकर्म औरों के लिए उपहास के साधन होते हैं।

कान्ता—अम्मां, इन लोगों को हमारे ऊपर हंसी उड़ाते हुए शर्म नहीं आती।

मनसा—शर्म! बेटी गरीबों की विशेषताएं अमीरों की ठोकरें हैं। हमारी इज़्ज़त औरों के हाथों में खिलौना है। हम तो हीन पक्षी की तरह है जिन्हें शिकारी अपने खेल के लिए मारा करते हैं। हां, तो तू पानी नहीं लाई (खड़ी होती हुई) ला, मैं पानी ले आती हूं।

कान्ता—(घड़े को सिर से उतारती हुई) पानी तो मां मैं ले आई हूं पर लोगों की तरेरी नज़र मुझ से देखी नहीं जाती।

मनसा—हां बेटी, तूं ठीक कहती है, लेकिन मैं भी तो बेबस हूं। हमारे ऊपर कौन दया करता है। हम किसी के दया के पात्र नहीं हो सकते। कोई हमें अच्छी नज़र से देख नहीं सकता।

कान्ता—यही नहीं मां, रास्ते पर चलते हुए भी मेरा रास्ता घेरे बैठते हैं ये लड़के। कोई खंगारे भरने लगता है तो कोई पीछे से सीटी बजाने लगता है।

मनसा—गरीब जो हुए बेटी हम। अमीरों की बेटियां इज्जत वाली होती हैं। गरीबी ने हमें तो बेच दिया है।

कान्ता—मां, अगर अमीर घर की होती तो लोग ऐसा न करते?

मनसा—नहीं। तब तेरे पीछे पैसों की ताकत होती। गरीबों की बहुबेटियों को यह गांव वाले बराबर सलूक के अधिकारी नहीं समझते। धन की गर्मी ने अन्धा बना दिया है इन्हें, ये किसी की लाचारी को देख नहीं सकते।

कान्ता—सब कोई आँखें फाड़ फाड़ कर देखने लगतेहैं

मनसा—बेटी, यह गांव अब हम गरीबों के लिए नहीं रहा। इस में हम पैदा हुए, इसी में हमारा पालन पोषण हुआ, हम इस की रज में बड़े हुए, परन्तु.....

कान्ता—अम्मां, परन्तु क्या?

मनसा—परिस्थितियां कुछ हमारे अनुकूल नहीं रही, और न ही इन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सुधरने की उम्मीद है । दिल करता है.....

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान्ता—क्या अम्मां ?

मनसा—दिल करता है इसे छोड़ कर कहीं दूर जांए ।

कान्ता—मां, आप को इस घर से प्यार नहीं रहा क्या ? आप इस से उकता क्यों गई ?

मनसा—नहीं । प्यार तो मुझे बहुत है । जहां हम जन्में हों, जिस की गोद में पले हों, भला उस से प्रेम क्योंकर नहीं हो सकता । इस झोंपड़ी की एक एक दीवार, इस को एक एक चीज़ अपनी ही कहानी सुनाने खड़ी है । यह दो बीधे ज़मीन जिस का तरे बापू को अभिमान है, अपनी आत्म कथा सुना रही है..... (कुछ रुक कर) प्रेम नहीं मुझे तो इन से मोह हो चुका है—

कान्ता—तो फिर आप इसे छोड़ने पर क्यों तुले हैं ? क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हम अपनी हालत यहीं सुधार लें ।

मनसा—नहीं । हमारी इस गरीबी और लाचारी ने हम से क्या काम न कराए होंगे । फिर यहां बाइज्ज़त कैसे रहा जा सकता है । मुझे तो कोई सहारा दिखाई नहीं देता ।

कान्ता—अम्मां, अगर हम गए तो हमारे घर में परदेश में कोई भी नहीं आएगा । हमारे यह सम्बन्धी वहां कैसे आंएगे ?

मनसा—बेटी, मानव में स्वार्थ कूट कूट कर भरा है । ये आते हैं तो केवल अपने स्वार्थ के लिये । हम से इन्हें कोई सहानुभूति नहीं । यदि सहानुभूति होती तो मेरी बेटी का आज तक विवाह न हुआ होता ।

कान्ता—(शर्माती हुई) अम्मां, ऐसी बातें न करो ?

मनसा—बात करना तो मैं भी नहीं चाहती। लेकिन मैं अपने सिर का भार कैसे उतारूं । मेरे पास तो बेटी के सिवाए और कुछ देने के लिए नहीं है । मेरी बेटी है और उस का स्वच्छ, सुकोमल और अविच्छिन्न चरित्र है । परन्तु, भला अब भी इस समाज में चरित्र के लिए कोई स्थान है । इसे तो धन दौलत चाहिए ।

(गोविन्द का प्रवेश)

गोविन्द —(दस दस रुपये के दस नोट पत्नी के आगे रखता हुआ) ये ले ।

मनसा—हैं ! ये कहां से टपक पड़े तुम्हारे पास । कहीं चोरी कर लाए क्या ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोविन्द—वही कर लाया हूं मैं।

मनसा—क्या कुछ ?

गोविन्द—वही कुछ जो तेरी आज तक इच्छा थी।

मनसा—स्पष्ट भी बोलते हो या कुछ सुनना चाहते हो।

गोविन्द—मैं अपनी दो बीघा ज़मीन और इस झोंपड़ी को बेच आया हूं।

कान्ता—हाय ! मैं कहां रहूंगी। कहां जाऊंगी मैं। मेरा.....

गोविन्द—दिल पर पत्थर रख कर मैं तेरी मां की इच्छा पूरी कर रहा हूं। परिस्थितियों और अपनी लाचारियों से तो मैं भी विवश हो चुका हूं। पर अभी मुझ में इन का मुकाबला करने का साहस था। लेकिन जब मेरे बाज़ू ही जवाब दें तो.....

मनसा—अच्छा किया। जब कहीं दूर बसेंगे तो यह बेबसी लाचारी छुपी रहेगी। शहरों में काम मिलेगा, कारखानों में मज़दूरी करेंगे, कमाएंगे और खाएंगे। देखता नहीं मंगल पिछले वर्ष गया था, आज कहते हैं हजारों का काम चला है उस का।

कान्ता—मैं नहीं चलूंगी। मैं अपनी इस झोपड़ी को छोड़ नहीं सकती। इस की सफाई कौन करेगा। इन फूलों को पानी कौन देगा। मेरी बोई सब्जियों को कौन देखेगा।

मनसा—ये सब चीज़ें इज़्ज़त के सामने कुछ भी नहीं हैं। गरीब हम ज़रूर हैं परन्तु हम न अपना मान नहीं बेचा है। जहां मान न हो वहां जीवन तुच्छ है।

कान्ता—नहीं, मैं नहीं जाऊंगी। मैं इसी चूलहे के धीमें प्रकाश में ऊन काता करूंगी, लोगों के स्वेटर बुना करूंगी।

मनसा—हां, यही तो लोग चहते है कि तेरी लाचारी इतनी बढ़े कि तू उन के सहारे पर जा गिरे।

कान्ता—नहीं, मैं नहीं चलूंगी।

मनसा—चलेगी नहीं तो क्या करेगी। तेरे ही लिए तो मैं यह सब कुछ कर रही हूं। खुद तो मैं इस संसार में कुछ दिनों की महमान हूं।

गोविन्द—अब सोच विचार का समय नहीं। यह घर आज मेरा घर नहीं रहा, यह ज़मीन आज मेरी जमीन नहीं रही। इस सहन पर अब मैं धूप नहीं तापा करूंगा, जैसे मेरे बाप-दादा तापा करते थे। इन खेतों में अब मेरी फसल नहीं उगा करेगी (गला भर आता है) आज से ही इस वंश का नाश हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझो । एक समय था इस वंश का सारे गांव में बड़ा मान था । परिस्थितियों ने पलटा खाया । दादा की मृत्यु के बाद ही इस का पतन इस तेजी से हुआ कि मैं केवल दो बीघे ज़मीन का मालिक रहा । आज वह भी मेरे हाथों से निकल रही है । हाय..... (कुछ सोच कर) कान्ता की मां, उठा अपने गुदड़ों को, अपनी रही सही सम्पत्ति को । देखते हैं तेरे शहर में हमारे लिए क्या रखा है । (सभी सामान इकट्ठा करने लगते हैं तथा अपनी गठड़ियोंको कन्धे पर रख कर आगे चलने लगते हैं ।)

गोविन्द--(दरवाजे पर माथा टेकता हुआ) आखरी प्रणाम हो आज हम सब का तुम्हें । मैं अपनी गलतियों की क्षमा चाहता हूं । तू मेरे शरीर का अंग था, मैं तुझे छोड़ नहीं सकता था, परन्तु परिस्थितियों ने धक्का मार के निकाल दिया है आज मुझे ।

\+ + +

(दो वर्ष बाद)

(एक छोटा सा कमरा । मनसा रोटी पका रही है तथा गोविन्द खाना खा रहा है)

गोविन्द--कान्ता की मां, है कोई और रोटी भी ।

मनसा--देती हूं ज़रा सबर करो ।

गोविन्द--सबर क्या करूं, कारखाने के लिए देरी हो रही है ।

मनसा--क्या हुआ फिर, घड़ी भर में तुम कौन सा आसमान हिला दोगे ।

गोविन्द--यह घर का काम नहीं है कि दो घड़ी देरी से भी आरम्भ करें तो फर्क न पड़ेगा । पांच मिन्ट देरी हुई तो सारे दिन की मज़दूरी जाएगी । और फिर मालिक के सामने कोई खड़ा नहीं हो सकता । चमड़ी उतारने को तैयार रहता है वह मज़दूर की ।

मनसा--तो क्या इतने मज़दूर उस का कुछ नहीं कर सकते ?

गोविन्द--कुछ क्या कर सकते हैं, सभी तो उस के सहारे जी रहे हैं । कहां जाएंगे जो उस की गाली गलोच न सुनेंगे । जल्दी कर तू जल्दी । जिस तन लागे वही तन जाने । ज़रा देरी हुई तो शाम को खाना चूल्हे की चूल । जान पहचान तो यहां सब से हो गई है परन्तु कोई तेरी सहायता के लिए नहीं आएगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनसा—(रोटी आटी में हाथ डुबाई)
यह लो। भाषण देने बैठो गा अब।

गोविन्द—कहती थी शहरों में खूब कमाई होगी। जीवन सुधरेगा, गरीबी छुपी रहेगी। देख लिया शहर। दो महीने तो काम की तलाश में ही भटकता रहा। रोजगार दफतर ने तो धक्के मार के निकाल दिया था "अन पढ़ों के लिए कोई जगह नहीं है"। यहां तो बेकार लोग भेड़ों की तरह फिरते हैं। अब काम मिला है तो तीन रुपए प्रतिदिन का, जिस पर तीनों की दो समय की रोटी का निर्भर है। काम में आजादी नहीं, अधिक कमाने की गुंजाइश नहीं।

मनसा—वह कैसे ?

गोविन्द—यह घर का काम नहीं कि जब जी करे देरी से शुरू किया और जब चाहे देर तक काम करते रहे। यह नौकरी है नौकरी, जो बाप की भी बुरी।

मनसा—क्या हुआ फिर जो नौकरी है तो, पैसे तो मिल ही जाते हैं।

गोविन्द—अरी तू नौकरी के काम और अपने काम के अन्तर को नहीं समझती। यहां तो जान तोड़ कर काम करो तो लाभ मालिक का, नहीं हुई तो नुकसान मजदूर का।

(उठता हुआ) मुझे पहले ही देरी हो गई है बातें करने का समय कहां है।

(बाहर निकल जाता है। दूसरी ओर से सिर पर पानी का घड़ा रखे कान्ता का प्रवेश)

कान्ता—(घड़ा नीचे रखते हुए) मां, तू तो कहती थी, शहर में बेइज्जती न होगी। वहां हमारी गरीबी छिपी रहेगी।

मनसा—हां बेटी, मुझे अपनी गल्ती का अहसास हो रहा है।

कान्ता—नलके पर तो कोई पानी भरने नहीं देता। एक तो पानी थोड़ी ही देर के लिए आता है और जब मैं पानी भरने जाती हूं तो एकदम आठ दस बाल्टियां आ जाती हैं। न जाने वे मेरी इन्तज़ारी में होते हैं क्या कि मैं जाऊं और वे भी नलके पर पहुंच जाएं। और फिर जो पानी भरता है तो नलका भी पूरा नहीं छोड़ता। यह शरारत नहीं तो और क्या है ?

मनसा—बेटी, इन लोगों के दिलों में शरारत और एब भरी पड़ी है। गरीबों के लिए कहीं भी तो जीने का ठिकाना नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान्ता—तो मां, हम से [illegible] यहां तो लोगों की दलेरी भी हमारा गांव न था ? अगर वे हमारी गरीबी को जानते थे तो हम भी तो उन की कमज़ोरी जानते थे । यहां तो सफैद कपड़े पहन कर सारे आँखों में धूल झोंकते हैं ।

मनसा—हां बेटी, यहां दिखावा ही दिखावा है । हम जैसे यहां कई गरीब हैं पर इन बूट–सूट से गरीबी छिपाए रखे हैं ।

कान्ता—दुःख तो मां जी, इस बात का है कि यह लोग हमें हमारी हालत पर भी नहीं छोड़ते, इस पर जलती में तेल का काम करते हैं । देखते नहीं.....

मनसा—बस करो बेटी, यह सब देख–सुन कर तो मैं पागल हो रही हूं ।

कान्ता—देखो न मां जी, किस तरह मेरी ओर घूर–घूर कर देखते हैं । एसा किसी अमीर लड़की की ओर देखते तो इन्हें वहीं न दबोच लिया जाता ।

मनसा—दुर्भाग्य तो हमारा अपना है दूसरों को क्या दोष दें । जीवन सुधारने के लिए घर–बार छोड़ यहां आए । मुझे क्या पता था मुझ बदकिस्मत को हर जगह ठोकरें ही लगेंगी ।

बहुत है । किसी का डर नहीं, जो दिल में आए कह देते हैं, मानो हम में समझ ही नहीं । इन लोगों को कब शर्म आएगी ।

मनसा—बेटी, हमारी दासता हम से पहले ही यहां पहुंची है ।

कान्ता—फिर मां, गांव में तो दुकान पर मुझे जाना न पड़ता था । यहां तो हर चीज़ खरीदनी पड़ती है और दुकान पर लोग घेरा डाले बैठते हैं । सामान भी जल्दी नहीं देते ।

मनसा—बेटी, तू पानी भरने और दुकान पर सामान लेने न जाया कर । मैं यह सब आप कर लूंगी ।

कान्ता—यह कैसे हो सकता है अम्मां ? लोगों के डर से हम अब काम भी नहीं कर सकेंगे । यहां निस्सन्देह चालाक दुनिया बसती है लेकिन शरीफ को भी तो जीवन बसर करना ही होगा ।..... (कुछ रुक कर) अभी तो मैं ने दूसरा घड़ा पानी का लाना है । (घड़ा उठा कर बाहर निकल जाती है—गोविन्द की पीछे से आवाज) कान्ता की मां, कान्ता की मां !

गोविन्द—कान्ता की मां ! कान्ता की मां !.....लो आ गया मैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनसा—(खड़ी होती हुई) क्या हो गया, कोई आफत आ गई ।

गोविन्द—आफत की क्या कोई कमी थी पहले, जो अब नई आ गई हो—(कुछ रुक कर) लो आज कारखाने से भी छुट्टी मिली ।

मनसा—क्या-क्या, कैसी छुट्टी ?

गोविन्द—पिछले हफ्ते जो मज़दूरों ने हड़ताल की थी कि उन की मज़दूरी बढ़ा दी जाए, उस का इवज़ाना आज मालिक ने दे दिया । हम सब को निकाल दिया और नए मज़दूर भरती कर लिए । कहता है "हमें मज़दूरों की कमी नहीं, तुम कहीं और जगह ज़्यादा मज़दूरी ढूंढ लो ।"

मनसा—हाय .....फिर अब क्या होगा । कहां जाएंगे अब हम ।

गोविन्द—अरी, जाना कहां है, अब भी कोई और जगह है तुम्हारे पास जहां हमें ले चलेगी ।

मनसा—कान्ता के बापू, मेरे ज़ख्मों पर नमक मत छिड़कों । मेरी भूलों को मत दोहराओ । मैं उन्हें केवल भूल जाना चाहती हूं ।

गोविन्द—भूलोगी कैसे ! हालत तो दिन-बदिन बिगड़ती ही जा रही है । इस मर्ज़ का कोई इलाज नज़र नहीं आता, कान्ता की मां !

मनसा—मेरी केवल एक ही इच्छा रही है । मेरी पुत्री को वर मिल जाए । अपने दिन तो मैं कैसे भी काट सकती हूं । परन्तु मेरी पुत्री के स्वभाव, सुशीलता, चरित्र को कौन देखता है । क्या इन सभी खूबियों का कोई अर्थ नहीं । क्या इस समाज में सभ्यता केवल डोंडी पिटाने के लिए रह गई है ।

गोविन्द—जितना पढ़ा-लिखा यह समाज है, इतने ही इस में ऐब भी बहुत हैं..... वह मेरा छोटा सा गांव था । जैसे-कैसे दो टुकड़े खाने को मिल ही जाते थे । अच्छा नहीं तो ऐरा-गैरा घर बेटी को मिल ही जाता । यहां तो अच्छी नीयत से कोई पूछता ही नहीं ।

मनसा—हां, जो इस दो टुकड़े रोटी का ही प्रश्न था, तो हमारा गांव ही अच्छा था । अब तो.....

गोविन्द—अब तो क्या ! तू ने सब तरह से बेच दिया मुझे । मैं कहीं का अब रहा नहीं । बाप-दादे का घर बेच दिया । रही-सही जमीन भी गई ।

मनसा—कान्ता के बापू, बस करो—बस करो । मैं केवल मरना चाहती हूं अब, परन्तु मुझे मौत नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आती । अगली बच्ची के समान
से मैं प्राण नहीं छोड़ सकती ।
हाये, उसे कोई घर मिलता ।

गोविन्द—यहां तो घर मिलने से रहा ।
गांव में होते तो दो बीघे ज़मीन
ही दे देते । वह भी यूं ही गई ।

मनसा—पहले ही जो तुम यह उपाय
ढूंढ लेते तो इस तरह जगह–
जगह की खाक तो न छाननी
पड़ती । मेरे बच्चे को मौत ने
छीन लिया परन्तु मुझे मौत न
आई । मैं ने यह सब.....

कान्ता—(पीछे से आ कर) अम्मां,
मैं सुन चुकी हूं सब कुछ ।
काश कि मैं लड़की न होती !
मैं सभी काम कर सकती थी ।
इस जवानी और इस शरीर से
केवल अपने लिए ही नहीं अपने
माता–पिता के लिए भी काम
कमा सकती थी । परन्तु मेरे
भाग्य ने मुझे किसी योग्य नहीं
छोड़ा । इस ने केवल मुझे
भूखी आँखों का शिकार ही
बनाए रखा है । अब मैं ने इस
समस्या का हल सोच लिया है मां!
मैं ने अपनी और हम सब की
बेबसी का कारण ढूंढ लिया है ।
अब वही करूंगी (जल्दी से बाहर
निकल जाती है)

मनसा—(उस की बीच्छा करती हुई)
कान्ता ! कान्ता ! बेटी कहां
जा रही हो । मैं तुम्हें किसी के
साथ जाने नहीं दूंगी । तुम मेरी
हठ से अनजान हो क्या !

कान्ता—(दूर से) अम्मां ! क्या तुम्हें
मेरे चरित्र पर शंका है ?

मनसा—नहीं ! शंका तो मुझे नहीं ।
पर तू जा कहां रही है ?

कान्ता—मैं केवल उस विधाता को
उलाहना देने जा रही हूं जिस ने
मुझे केवल मां–बाप के अपमान
के लिए पैदा किया । मेरे से
उन्हें सुख मिलना तो दूर रहा,
मैं उन के भार को भी कभी हलका
न कर सकी ।

मनसा—हाय ! पकड़ो मेरी बच्ची को ।
यह इन तेज कदमों से कहां जा
रही है । (पीछे दौड़ती है)
कान्ता के बापू, मेरी कान्ता को
पकड़ो । हाये ! यह तो कुएं
की ओर हो गई । कान्ता,
कान्ता ! कान्ता के बापू !
कान्ता, ठहरो मुझे भी साथ ले
चलो ।
(कान्ता की आवाज़) अम्मां,
मैं इस शहर में जीना नहीं चाहती
(घड़ाम से कुएं में कूद जाती है)
(मनसा उस के पीछे कुएं की
ओर दौड़ती है, परन्तु गोविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे पकड़ लेता है। दोनों रोते लगते हैं।)

गोविन्द—हाय ! मेरे जीवन का आज अन्तिम सहारा भी टूट गया..... धिक्कार है मेरे इस जीवन को, जिस ने बाप–दादा की सम्पत्ति छुड़ा कर नया रोज़गार अपनाने के लिए विवश कराया। परन्तु उस में भी सफलता न दी। और धिक्कार है इस समाज को, जो नंगी तसवीर को तो आँखें फाड़–फाड़ कर देख लेता है, परन्तु किसी की खूबी, सुशीलता की ओर आँख मूंद देता है, जिस के लिए औरों की बेबसी और लाचारी एक शुगल है।

● ● ●

(पृष्ठ ४५ का शेष)

भावना–वीचिका—दीख पड़ी।

उसी क्षण जोर की हवा चली।

उस वायु में 'स्त्री' की ध्वनि उठी..... ध्वनित हुई.....तथा.....प्रतिध्वनित होकर विलीन हो गई।

अप्रयत्न ही मुरारी का हाथ राधा के हाथ को छू गया।

अनु : "शरीफ"

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैदी की कलम से

अमर प्रदीप

हिमालय के किसी स्थान से

'प्रिय नीलिमा,

यह पत्र तुम्हें मिलेगा, इस में मुझे संदेह है। फिर भी इसे लिख रहा हूं। और लिख कर इसे पर्वतों की बर्फीली हवाओं के सहारे छोड़ दूंगा। आशा के इस सम्बल पर कि हिमराज की पवित्र वायु इसे उड़ा कर मेरे देश की भूमि पर कहीं डाल देगी। और यह तुम तक पहुंच जायेगा। इसका मकसद केवल इतना ही है कि मेरी मातृभूमि को और मेरे देश वासियों को यह इलम हो जाये कि हवलदार विक्रम सिंह कायर नहीं था।

रेडियम की घड़ी दो बजा रही है। पता नहीं चीनियों ने इसे क्यों मेरे पास छोड़ दिया। इस लिए कि इतनी लड़ाई के बावजूद यह घड़ी सही सलामत रह गई। शायद चीनियों को इस पर भी इतना गुस्सा हो। और उन्होंने इरादा कर लिया होगा कि मेरे साथ उसे भी दफना दिया जायेगा। वर्ना इन के इरादे किस समय क्या होगें, यह समझना बहुत मुश्किल है खैर इस घड़ी से जिन्दगी के बाकी घण्टे गिनने में आसानी ही होगी।

हां, तो मैं कह रहा था कि मेरी जिन्दगी और मौत के बीच अब कुछ घण्टों का ही फासला है। और प्रत्येक क्षण पास आती हुई मौत तुम्हारे साथ बिताये हुये प्रत्येक क्षण को मेरे पास ला रही है। मरने से पहिले यदि दो बातें लिख कर तुम्हें कुछ याद दिलाने की चेष्टा करूं तो बुरा तो नहीं मानोगी ?

आज से १ वर्ष पूर्व पंजाब के एक युवक की बदली अचानक कलकता के उस आफिस में हो गई जिस में तुम भी काम करती थीं। यों तो आफिस में और भी लड़कियां थीं, परन्तु न मालूम उस युवक आफिसर का दिल शुरू से ही तुम्हारी ओर क्यों खिंचता जा रहा था। इस से पहिले उस के दिल में यह कमजोरी कभी नहीं आई थी। और आज उसे यह मानने में भी हिचक नहीं कि तुम से पहिले भी उस ने कई लड़कियों से रोमांस लड़ाये थे। परन्तु उन में और तुम में बहुत फर्क रहा। उन्होंने जो चाहा उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें दिया और उस ने जो मांगा उसे मिला। दोनों ओर से संतुष्टि ! लेकिन तुम्हारी बात दूसरी थी तुम्हें समझने में उसने शुरू से ही गलती की और जब समझ गया तो पानी किनारे को लांघ चुका था। अचानक तुम इतनी बड़ी हो गई कि वह तुम्हारी तुलना में बहुत बौना हो गया।

और बौना हो कर चांद को पकड़ने की चेष्टा करना धृष्टता ही कहा जायेगा !

'शायद तुम समझ गई होगी कि मैं किस के बारे में लिख रहा हूं। यह अभागा युवक मैं ही था जिस ने तुम्हें भी अन्य आफिस गर्लज की तरह समझा। मेरे जीवन की यही सब से बड़ी गल्ती थी, नीलू ! परन्तु सोचता हूं आज वही गल्ती मुझे वरदान हो गई है। यदि तुम्हें पा लेता तो आज वह न पाता जो पा गया हूं। मातृभूमि पर शहीद होने का अभिमान !

यह सब तुम्हारे मेरे प्रति घृणा व उपेक्षा के भाव ही थे जिन्होंने मुझे इस अभिमान के निकट ला दिया। और मुझे पूर्ण विश्वास है कि अब तुम्हारी घृणा अवश्य मेरे प्रति प्यार में बदल जायेगी। वही प्यार जो मैं तुम से करता रहा हूं और चीनियों की गोलियों के बाद मेरी आत्मा तुम से करती रहेगी।

मुझे केवल एक ही दुःख है और वह यही कि तुम से बिछुड़ते समय मैंने तुम्हें कुछ भी नहीं बताया। यदि बता देता, तो क्या तुम मुझे रोकती ? शायद नहीं। तुम्हें विश्वास ही नहीं होता कि तुम्हारी उस एक बात पर मैं इतना बड़ा कदम उठा रहा हूं। परन्तु तुम भूल गई नीलू। यह माना कि तुम्हारा जन्म बंगाल की उस भूमि पर हुआ है जिस के कण कण में देश भक्ति का तूफान करवटें लेता है, लेकिन यदि तुम नें दूसरों को कायर समझा तो यह तुम्हारी गलती थी। हो सकता है [कि तुम्हारा अर्थ कुछ और हो। । परन्तु उस समय तो मुझे यही लगा, और मेरे अंदर का पंजाब खौल उठा।

लिखते समय बातों का तार टूट टूट जाता है। सोचता हूं, जीवन में अब तक तार टूटते ही रहे हैं। कभी जोड़ने की चेष्टा ही नहीं की। और जब एक तार होने का विचार किया, तो प्रारब्ध का वह धक्का लगा कि सब तार एक साथ ही टूट गये।

एक चीनी पहरेदार ऊंघ रहा है, परन्तु दूसरा बिल्ली की सी दृष्टि जमाये सामने बैठा है। उन्हें आर्डर है कि मेरे जरा भागने की कोशिश करते ही मुझ गोली से उड़ा दें। कितने बेवकूफ हैं यह चीनी सिपाही ! चोरों की तरह छिप कर भारतीय कभी भागे नहीं। उन्होंने शत्रु को छाती ही दिखाई है। पीठ नहीं। शायद हमारे कैद होने से व, पीछे हटने से तुम्हें भी यह विश्वास हो गया होगा कि हम मैदान से भाग निकले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि तुम्हारे मन में यह भ्रम तनिक भी आया हो तो इसे तुरन्त निकाल देना । हमारी लड़ाई की असली कहानी केवल चीनी ही बता सकते हैं । वह हजारों चीनी जो बर्फ में दबे पड़े हैं ।

'ओह ! चार बज गये ! क्षमा करना, नीलू । लिखते लिखते कुछ झपकी सी आ गई थी और मैं तुम्हारे सपने लेने लगा । सपना भी क्या चीज़ है । सब कुछ वास्तविक सा दिखाई देता है ।

अब केवल चार घण्टे शेष हैं । जिस के बाद यह सपने भी बन्द हो जायेंगे । इस लिए अब और न सोऊंगा । चीनियों ने जो कागज व कलम लिखने को दिये हैं उनका कुछ तो उपयोग होना ही चाहिये ।

सोचता हूं यदि में चित्रकार होता तो इस कलम से कागज पर तुम्हारी उन आँखों का चित्र अवश्य बनाता जिन में लोगों को मदहोश करने का नशा व उन्हें जलाने की अग्नि समान रूप से है ।

मैंने केवल पहिली चीज़ देखी थी । तुम्हें पाने का मुझ पर नशा सवार हो चुका था ओर मुझे विश्वास था कि अन्य लड़कियों की तरह तुम्हें भी मैं सहज प्राप्त कर लूंगा ।

महीने का आखिरी सप्ताह था । तुम मेरे कमरे में आई और कहा 'कि तुम्हें कुछ रुपयों की जरूरत है । मुझे याद है कि अचानक तुम्हें इस प्रकार मुझ से निसंकोच रुपया मांगते देख कर मैं बहुत हैरान हो गया था और सच पूछो तो अभी तक मैं यह नहीं समझ सका कि वह कौन सी बात थी जिस ने तुम जैसी क्रान्तिकारी लड़की को एक अजनबी व पर प्रान्त के आदमी के पास रुपये मांगने के लिये प्रेरित किया । शायद वही प्रेम जिसे तुम ने मेरे प्रति नफरत व्यक्त करते हुये भी स्वीकार किया ।

मैंने जेब से पर्स निकाल कर मेज पर फैंक दिया, और कहा कि जितना चाहो उस में से निकाल लो । उस समय तुम्हारी दृष्टि देख कर मैं एक बार सहम सा गया । मैं कोई कड़वी बात सुनने की अपेक्षा कर रहा था, परन्तु मुझे आश्चर्य हुआ जब तुम ने उस में से दस दस के पांच नोट निकाल लिये और 'धन्यवाद' कहती हुई वापिस चली गईं ।

इस के बाद महीने की तनख्वाह मिलने पर तुम ने मुझे वह पचास रुपय वापिस कर दिये । मैंने जब कहा कि इस की क्या जल्दी थी, तो तुमने हंस कर कहा कि यदि जरूरत पड़ेगी तो फिर ले लूंगी ।

और यह जरूरत तुम्हें पड़ती ही गई । हर मास तुम मुझ से कुछ रुपये लेतीं और फिर अगले मास वापिस कर देती ।

कितना बड़ा विश्वास तुम्हें मुझ पर था नीलू ! यह मैं पहिले न समझ सका था और जब मैंने उस विश्वास को चोट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुंचाई तो तुम्हारा नाराज होना लाजिमी था।

उन रुपयों के बदले मैंने तुम से अपना परिचय अधिक गहरा करना चाहा। तुम्हें याद होगा, जब एक दिन मैंने कहा था, 'चलो नीलिमा आज बंगला पिक्चर देख आयें।'

तुम ने कहा, 'क्या आपको बंगला आती है ?'

और जब मैंने ना कहा तो तुम ने कहा 'तो आप पिक्चर नहीं मेरी कम्पनी चाहते हैं' !

मैं कट कर रह गया। उस दिन मुझे पहिली बार आभास हुआ कि तुम किसी दूसरे धातु की बनी हुई हो।

इस के बाद मैंने तुम्हें कभी सिनेमा के लिये कहने का साहस नहीं किया। परन्तु रुपये फिर भी तुम मुझ से लेती रही। मैंने आफिस में इस बात का गुप्त रूप से पता चलाया तो मालूम हुआ कि तुम ने आज तक किसी से एक पैसा भी उधार नहीं लिया था।

फिर एक दिन तुम ने स्वयं मुझ से लेक चलने का आग्रह किया। मुझे सहसा विश्वास न हुआ। वह मेरी जिन्दगी का पहिला सुनहरी दिन था।

और इस के बाद तो मेरे सोने के दिनों की संख्या बेतहाशा बढ़ने लगी। घण्टों हम लोग कभी विक्टोरिया गार्डन के मैदान में, कभी बैलूर मठ व कभी दक्षिणेश्वर में गंगा के किनारे बैठ कर गुजार देते। तुम मुझ से पंजाब के बारे में कई बातें पूछती और मैं बंगाल का इतिहास सुना करता।

इन क्षणों में कई बार मैंने चाहा कि तुम्हारा हाथ अपने हाथ में लेकर उसे जोर से दबाऊं, परन्तु जब जब मेरी आँखों में वह उन्माद उतरा, तुम्हारे नयनों ने मुझे कुछ इस प्रकार देखा कि मैं आगे न बढ़ सका। कई बार मैंने कहना चाहा कि, 'नीलू, मैं तुम्हे जी जान से प्यार करता हूं, परन्तु जब भी यह कहने को शब्द होंठों पर आते, तुम्हारी आँखें मुझ पर इस प्रकार टिक जातीं कि मैं सब कुछ भूल जाता। आज तक नहीं समझ पाया कि किस प्रकार तुम मेरे दिल की बात तुरन्त ताड़ लेती थीं, और फिर लक्ष्मण रेखा की तरह अपनी आँखों से मुझे रोक देती थी।

फिर भी उन दिनों मैं मस्त था। केवल तुम से कुछ देर बातें करके ही मुझे ऐसा लगता था कि मैंने स्वर्ग का सुख पा लिया है। मुझे इस बात का गर्व भी बहुत रहा कि इतने बड़े आफिस की सब से खूबसूरत लड़की मुझ से इतना हिलमिल गई थी।

तभी मेरे दुर्भाग्य का वह दिन आ पहुंचा। उस दिन तुमने विक्टोरिया मैमोरियल देखने का प्रोग्राम बनाया।

दोपहर का समय था और मैमोरियल में बहुत कम लोग थे। उस दिन तुमने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरी साड़ी पहनी हुई थी, और उसी के साथ का ब्लाउज़ भी था। सोने का सा दमकता हुआ तुम्हारा वह रंग, नशीली आंखें, छोटी सी नासिका, पतले पतले गुलाब की पर्त से लाल लाल होंठ व मयूर की तरह लम्बी गर्दन! उस दिन तुम्हारे रूप की मैं ताब न ला सका। मेरे अन्दर का शैतान जाग उठा, और मैं वह कर बैठा, जिसकी मुझे कल्पना भी न थी। मृत्यु के द्वार पर बैठे हुए कैदी के इन शब्दों का विश्वास कर सकोगी, यही सोच कर मन का बोझ हल्का करने का प्रयास कर रहा हूँ।

उस दिन ऊपर के कमरे के जीने पर चढ़ते हुए, अचानक मेरा हाथ तुम्हारी कमर पर पड़ा, और दूसरे ही क्षण मैंने तुम्हें कस कर अपने से चिपका लिया। इससे पहिले कि तुम कुछ प्रतिवाद कर सकती कितने ही प्यार मैंने तुम्हारे गालों पर अंकित कर दिए।

आहत हिरणी की तरह तुम छटपटा उठीं : और मुझे होश तब हुआ जब कि तुम तड़ातड़ कई सीढ़ियां लांघ कर नीचे पहुंच गई थी।

मैं क्षमा-याचना के लिये जल्दी से नीचे पहुंचा, और तब तुमने पलट कर जिन नज़रों से देखा, वह तुम्हारे नयनों की दूसरी भाषा थी। मुझे लगा कि मैं नफरत के एक बड़े हौज़ में डूब रहा हूँ, और लाख सर उठाना चाह कर भी उस समय तुम्हारी आँखों की ओर न देख सका।

मेरी क्या हालत थी, इसे तो शायद मैं लिख न सकूंगा, परन्तु यह विश्वास करना कि उस रात मैं एक क्षण भी न सो सका। न मालूम क्यों रह रह कर मेरे दिमाग में यह ख्याल आता कि मैंने तुम्हारी हत्या कर दी है। सारी रात एक विचित्र प्रकार की घबराहट व बेचैनी मुझ पर छाई रही।

दूसरे दिन मैंने पक्का फैसला कर लिया कि यदि तुम मुझे क्षमा कर दोगी, तो तुम्हारे माता-पिता से तुम्हें सदा के लिये मांग लूंगा। परन्तु उस दिन तुम आफिस से गैर हाजिर रही। उस दिन मैंने तुम्हारे घर वालों के बारे में पता लगाया, तो मालूम हुआ कि तुम्हारे पिता आजादी की लड़ाई में फांसी पर चढ़ा दिये गए थे। बड़े भाई को क्रान्तिकारी होने के कारण कालेपानी की सजा हुई जो वहीं मर गया। दूसरा भाई बम बनाते समय अचानक बम चल जाने के कारण दुर्घटना में शहीद हो गया। अब घर पर बूढ़ी मां व एक छोटी बहिन जो स्कूल में पढ़ रही थी के सिवाय कोई न था।

आज तक जब भी मैंने कभी तुम से तुम्हारे घर के बारे में बात चलाई, तो तुम ने उसे सदा टाल दिया था। और आज जब इस इतिहास का पता चला तो तुमसे शादी करने का मेरा इरादा ताश के पत्ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तरह ढह गया। इतनी हीन आत्मा लेकर किस प्रकार तुम जैसी महान लड़की से विवाह की मांग करूंगा, इस साहस का मुझ में अभाव हो गया था।

तीसरे दिन जब तुम फिर आफिस न आई तो मुझ से रहा न गया। मेरा पाप मुझे बार बार धिक्कार रहा था। और मैंने सोचा जब तक तुम से माफी न मांग लूंगा, मुझे चैन न पड़ेगी। मैंने तुम्हारे घर का पता चलाया और तुमसे मिलने के लिये चल पड़ा।

तुम्हारे कमरे का दरवाज़ा भड़काया हुआ था। अचानक अंदर जाने की हिम्मत न पड़ी। तभी कमरे में से किसी के बोलने की आवाज़ सुनाई दी।

मैंने दराज में से झांक कर देखा। तुम हमारे आफिस की ही एक लड़की से बातें कर रही थी।

मैंने सुना। वह कह रही थी, तो तू शादी क्यों नहीं कर लेती, नीलू ?' 'शादी! किस से ?'

तुम्हारी आँखों के कोण विस्फारित हो गये थे।

उस लड़की ने मुस्कराते हुए कहा, 'क्यों ! आजकल तो तुम्हारा व मि० सिंह का रोमांस बहुत जोरों पर चल रहा है।'

और उसकी इस बात पर तुम एक दम गम्भीर हो गई।

उस लड़की से अधिक तुम्हारा उत्तर सुनने के लिए मैं बेताब था।

तभी तुमने कहना शुरू किया, 'मि० सिंह से मैंने प्यार की गल्ती अवश्य की है, परन्तु मेरे पति का जो चित्र मेरे दिल पर है वह इसके लायक नहीं। तू तो मुझे अच्छी तरह जानती है ? क्या तू समझती है कि सिंह मेरे पति होने के काबिल हैं ?

इसकी अपेक्षा कि मैं मि० सिंह जैसे किसी बड़े आफिसर की पत्नी बनूं, देश की आज़ादी के लिए, हिमालय पर खड़े, एक साधारण सिपाही की पत्नी बनने में मुझे अधिक गौरव होगा !

तुम्हारे परिवार को देखते हुए यदि तुमने यह शब्द कहे तो इसमें मुझे कोई आश्चर्य न लगा। दुख तो मुझे केवल इस बात का रहा, नीलू ! कि मैं तुम्हे पहिले पहिचान न सका। अब कौन सा मुह लेकर तुम्हार पास जाने का साहस कर सकता था।

मैं धीरे से वापिस मुड़ा ! दिमाग में बवंडर मचा हुआ था। अचानक उस बवंडर के बीच मुझे रोशनी दिखाई दी।

तुम एक लड़की होकर देश के लिए इतना सोच रही थी और मैं एक हृष्ट-पुष्ट युवक अपने देश के लिए क्या कर रहा था !

मैंने किसी को कुछ नहीं बताया और दूसरे ही दिन सेना में भर्ती हो गया। यही एक रास्ता था तुम्हारे करीब आने का। और सच मानना जिस समय मैंने हवलदार विक्रम सिंह की वर्दी पहिनी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मुझे लगा कि तुम मेरे पास खड़ी होकर मुझे तिलक लगा रही हो !

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम से बिछुड़ कर भी मैं कितना खुश था ! ऐसा लगता था कि तुम सदा मेरे पास हो बिल्कुल उसी प्रकार जिस तरह कि अब तुम मेरे सामने बैठी हुई हो और मैं तुम्हें अपनी कहानी सुना रहा हूँ ।

पौ फट रही है । जिंदगी और सिकुड़ गई है और मेरी कहानी भी अब प्रायः समाप्त होने वाली है ।

इसके बाद संक्षेप में यही कहना है कि मेरी आकांक्षा पूरी हुई । मुझे नेफा जाने का आर्डर मिला । उस रात मुझे ऐसा लगा कि अब मेरी मंजिल बिल्कुल पास आ गई है ।

हमारी बड़ी टुकड़ी वालोंग पर तैनात कर दी गई । कई दिनों तक कुछ नहीं हुआ । चीनियों की फौजी जमाव की खबरें हमारे पास पहुंच रही थीं; परन्तु हमें सख्त आर्डर था कि हम पहिले गोली न चलायें । वह समय बड़ी बेसब्री का था । हमारी पूरी टुकड़ी आगे बढ़ने के लिये बेचैन थी । हम दुश्मन को उसके घर में जाकर पछाड़ना चाहते थे, परन्तु लाचार थे ।

कुछ दिन यूंही गुजर गये । ऐसा लगा कि अब यह लड़ाई नहीं होगी । हमारे कुछ जवानों को वापिसी का हुक्म मिला और बाकी सिपाहियों के साथ मैं वहीं रह गया ।

तभी एक दिन खबर मिली कि शत्रु ने पूरी ताकत से हम पर हमला कर दिया है । हमने तुरन्त मोर्चे संभाल और अपने साथियों के साथ शत्रु के आने की बाट देखने लगे ।

दिन में कुछ नहीं हुआ । रात आई और शत्रु ने प्रबल वेग से हम पर आक्रमण किया । यह वह अवसर था जिसकी हम प्रतीक्षा कर रहे थे । दुश्मन ने बेतहाशा सैनिक हमारे मोर्चों पर झोंक दिए थे । उसे आशा थी कि पहिले झपाटे में ही वह वालोंग पर अधिकार कर लेगा । परन्तु पहिली रात ही हमने उसे बता दिया कि हम किस मिट्टी के बने हैं ।

अनगिनत हताहतों को छोड़ कर वह पीछे हट गया ।

दूसरे दिन उसने फिर हमला न किया हम समझ गये कि वह और सहायता की प्रतीक्षा कर रहा है । और उस रात फिर आक्रमण हुआ । हम जी तोड़ कर लड़े । शत्रु को फिर पीछे हटना पड़ा । दूसरे दिन फिर असंख्य चीनी सिपाहियों की लाशें जहाँ, तहाँ बिखरी पड़ी थीं । इधर हमारा भी काफी नुकसान हो चुका था ।

पूरे दिन हम कुमक की इन्तजार करते रहे । दिन छिपते छिपते हमें खबर मिली कि शत्रु ने हमारी कुमक को दो भाग में काट दिया है । हम समझ गये कि आज उसका आक्रमण अधिक प्रबल होगा । परन्तु हमारे हौसले बहुत बुलन्द थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें यकीन था कि अभी एक सप्ताह तक हम शत्रु को वालोंग पर अधिकार नहीं करने देंगे ।

हमला हुआ और जैसा कि आशा थी उसी वेग से हुआ । एक के बाद एक कतार चीनी सिपाहियों की आगे बढ़ रही थी । हमारी बन्दूकों की बाढ़ का उन पर कोई असर न हो रहा था और अब वह हमारे बिलकुल पास आ गये थे । अन्य कोई चारा न देख हमने संगीनें सम्भालीं और उनकी आगे वाली लाइन पर पिल पड़े । उन्हें शायद इसकी आशा न थी । कितने चीनियों को हमन इस हमले में यमलोक पहुंचाया इसका कोई अंदाज़ा नहीं । उनकी इस घबराहट का लाभ उठा कर हमारे बगल के मोर्चों ने ज़बरदस्त गोलाबारी की, और तीसरी बार दुश्मन मुँह की खाकर पीछे हट गया ।

लड़ाई एक बार मन्द पड़ गई और लगता था कि दुश्मन अब कोई नई चाल सोच रहा था । हम अपने मोर्चों पर सावधान जमें बैठे थे । तभी हुक्म मिला कि हम लोग पीछे हटना शुरू करें ।

दिन निकलते निकलते हमारी सेना का बड़ा भाग वहां से निकल गया था । निराशा के मारे मेरा बुरा हाल था ! मुझ कई जख्म लग चुके थे, परन्तु मैं किसी सूरत में भी पीछे जाना न चाहता था । तभी भगवान् ने मेरी सुन ली । हम पीछे हटने की सोच ही रहे थे कि दुश्मन की ओर से तीव्र गोलाबारी शुरू हो गई । शायद उसे हमारे इरादे का पता चल गया था ।

हजारों की संख्या में चीनी सिपाही गोलियां बरसाते हुए चट्टानों की ओट में आगे बढ़ रहे थे और मुश्किल से हम पचास सिपाही उन्हें आगे बढ़ने से रोक रहे थ ।

आज असली मौका था जबकि मैं दिन में इनकी सूरत अच्छी तरह देख सकता था । जहां किसी चीनी का सर ऊंचा हुआ मेरे बन्दूक की गोली उसे निशाना बना लेती थी । परन्तु आखिर कब तक हम उनका मुकाबला करते । मेरे साथी एक एक करके खत्म हो रहे थे ।

तभी चीनियों की ओर से जोर से आवाज़ सुनाई पड़ी, 'हथियार डाल दो ! हिन्दी, चीनी, भाई भाई हैं !'

कितना बशर्म मज़ाक था वह ! और कितना गलत उन्होंने हमें समझा था !

उनकी इस बात का जवाब हमारे सिपाहियों ने गोलियों से दिया । शायद उन्हें इसकी आशा न थी । उन्होंने फिर गोलियां दागनी शुरू कीं । बगल में उनका तोपखाना आ चुका था और दुश्मन ने हमें तीन ओर से घेर लिया था ।

अचानक दुश्मन का एक दस्ता मेरे सर पर आ पहुंचा । मैंने बन्दूक छोड़ कर स्टेनगन संभाली और मोर्चे से निकल पड़ा । मेरी स्टेनगन चारों ओर गोलियां बरसा रही थी । थोड़ी देर बाद मेरे कंधे व बाजुओं में भयंकर पीड़ा होने लगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मैं गिरा, फिर उठा, और फिर गोलियों की आखिरी किश्त उन्हें चुका दी। तभी दो गोलियाँ मेरे पैरों पर आकर लगीं। उसी समय एक गोला मेरे पास आकर फटा, और दूसरे ही क्षण मेरी आँखों के आगे अंधेरा छा गया। मैं लड़खड़ा कर गिर रहा था।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्होंने मेरे शरीर से पांच गोलियां निकाली हैं। और नीलू, अब तुम यह तो न कहोगी कि मैं केवल दफ्तर में काम करने वाला आफिसर हूँ।

पिछले कई दिनों से यह मुझे कम्यूनिस्ट लिट्रेचर पढ़ा रहे हैं। हर रोज़ एक नर्स जो मेरे जख्मों पर पट्टी बांधती है, मुझे माऊत्से तुंग की थ्यूरी समझाती है। पहिले तो मैं समझ नहीं पाया कि आखिर यह लोग मुझ से क्या चाहते हैं, और इसका भेद कल खला।

नर्स के साथ एक चीनी कैप्टन मेरे पास आया और कहा कि, 'अब तुम अच्छे हो गए हो?' मैं चुप रहा।

उसने फिर कहा, 'अब तो तुम को मालूम हो गया होगा, कि हम लोग कितने दयालु हैं, जो अपने कैदियों के साथ इतना अच्छा बर्ताव करते हैं।' मैं मुस्कराया। वह फिर कहने लगा, 'हिन्दुस्तान में मजदूर व किसानों पर बहुत जुल्म हो रहा है। नेहरू अमरीका से मिल कर गरीबों को पीस रहा है। हमारा नेता माऊत्से तुंग तुम लोगों की अमरीका के फंदे से निकाल कर सच्चा मज़दूर का राज्य कायम करना चाहता है। अब हम चाहते हैं कि तुम इस सत्य का प्रचार हमारे बड़े बड़े शहरों में करो। रेडियो पर स्पीच दो, ताकि नेहरू का असली रूप सब के सामने आ जाये।

मैंने कहा, 'यदि मैं इस झूठ को स्वीकार न करूँ तो?' उसका मुँह मेरी इस बात पर गुस्से से तमतमा उठा।'

उसने कहा, 'ऐसी सूरत में हम तुम्हें गोली मार देंगे।'

मैंने पूछा, 'क्या तुम्हारे यहां कैदियों से यही सलूक होता है?'

उसने मुँह बिचका कर उत्तर दिया, 'तुम हमारे कैदी नहीं हो! कैदियों की सूची जो हमने भारत सरकार को भेजी है, उसमें तुम्हारे जैसे कैदियों का नाम नहीं है। तुम तो पहिले ही भारत के अखबारों में लापता लिखे जा चुके हो। अब यदि हम तुम्हें गोली का निशाना बना भी देंगे, तो किसी कैदी को मारने का जुर्म नहीं करेंगे।'

यह हैं वे लोग जिन्हें हमने कभी भाई भाई कह कर गले लगाया था!

देश के लिए मैं लापता की सूची में हूँ। कैदियों में मेरा नाम नहीं है। तब मेरे देशवासी व तुम यही सोचते होंगे कि या तो मैं मर गया हूँ या कहीं भाग कर जंगल में छिप गया हूँ।

उफ़! कितने मक्कार हैं यह लोग!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यह मुझे शान से मरने भी नहीं देना चाहते ! यह मुझे मिटाना चाहते हैं, गद्दार बना कर। खूबसूरत लड़की, दौलत, व जीवन का लालच देकर !

मैंने उसकी इस बात पर हिकारत से थूक दिया। और उसन मुझे सजा सुना दी, कल सवेरे तुम्हें गोली मार दी जायेगी।

'यह है मेरे पिछले कुछ मास का इतिहास।

दिन निकल आया है। वे लोग आने वाले होंगे। सोचता हूँ, क्या एक गोली से मनुष्य मर नहीं सकता। तब फिर बीस की एक पल्टन निहत्थे आदमी पर एक साथ बीस गोलियां चला कर किस बहादुरी का सबूत देगीं।

चन्द सतरें और।

इस जीवन में तो तुम्हें पा न सका, इस लिये कि तुम्हारे लायक न था। और जब लायक बनने का समय आया तो जिंदगी ही दगा दे गई ! इसका गम न मुझे है न तुम्हें होना चाहिए। मुझे सब से बड़ा संतोष यही है कि तुम्हारे प्यार ने मुझे जिन्दगी का सही रास्ता दिखा दिया। इसलिये, नीलू ! मेरी मौत पर रोना नहीं!

'मेरे देशवासियो से और तुम से मेरा यही अन्तिम कथन है !

मृत्यु के पैरों की आहट पास आ रही है !

विदा—जय हिन्द !

विक्रम सिंह'

● ● ●

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर एक मोड़

कंवर गुलाटी

"लेकिन यह मैं कैसे भूल सकता हूँ, कि उसने मुझे धोखा दिया है। उसने मेरे विचारों, विश्वास, अधिकार, अपनेपन, और आत्मीयता सबको जला कर ख़ाक कर दिया है! उसन अपन हर वायदे को झुठलाया है। उसने मेरा ही नहीं तेरा भी अपमान किया है, दीदी! एक आग लगी है मेरे अन्दर हां दीदी–एक आग, प्रतिशोध की आग। और यह तब तक मुझे चैन नहीं लेने देगी जब तक मैं उससे बदला नहीं ले लूंगा।"

कमल के मुंह से यह शब्द सुनकर रानी दंग रह गई। वह अपन भैया के चेहरे को पढ़ने की कोशिश कर रही थी। लेकिन कमल के मुख पर उसके शब्दों जैसी ही दृढ़ता तथा सत्यता थी। स्नेह और प्यार की मोहकता और स्निग्धता लुप्त थी!. वह जानती थी कमल बड़ा ही ज़िद्दी है और वह ज़िसकार्य के लिये भी ज़िद्द पकड़ लेता है उसे पूरा करके छोड़ता है। रास्ते में आने-वाली कठिनाइयों या उसके बाद में होने वाले—परिणाम के विषय में सोचना उसकी आदत नहीं, फिर भी कहने लगी —

"लेकिन कमल, इसमें कोई बड़प्पन नहीं है। घर में उसका जीवन परिवार का और घर से बाहर केवल कालज की पढ़ाई तक का है! मेरे राजा भैया, संसार में एक से एक सुन्दर लड़की पड़ी है, तेरे लिए लड़कियों की कमी है क्या, उसका ध्यान छोड़ दे।"

"नहीं दीदी, नहीं, मैं वह सब कुछ कैसे भूल सकता हूँ। तुम उसकी वकालत तो कर रही हो, परन्तु तेरे भैया के दिल पर जो बीती है उसका ध्यान तुम्हें क्या नहीं आ रहा ? क्या यह सब एक दम हो गया है। दीदी यह बात आज से नहीं कितनी देर से हमारे सामने थी। आज वह सब के सामने स्वयं को इस बात से अंजान बताती है। जैसे उसका मेरा कोई नाता ही न हो। आज जब बात बहुत आगे बढ़ गई है, सभी जगह लोग इसकी चर्चा करने लगे हैं तो वह लोगों के सामने अपने को सच्चा बतलाने के लिये अपने घर वालों की आड़ ले रही है, जबकि यह सब कुछ उसके झूठे अभिमान और ज़िद्दी स्वभाव के कारण हुआ है! उसे आज हर वायदे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से इन्कार है। हर मुलाकात को वह एक झूठ, और हर बात को एक घटनामात्र बताती है। अपने नाम को, मेरे नाम के साथ जुड़ते देख वह बौखला उठी है। तुम नहीं जानती, उसने किन किन अवसरों पर मुझ से क्या क्या वायदे किए थे !" कमल ने कहा !

"समझ सकती हूँ, कमल ! तुम्हार दुख का अनुभव भी कर रही हूँ, लेकिन वह हर बात से इन्कार जो करती है। सहयोगी होने के नाते जो परस्पर औपचारिक ढंग से पहचान हो सकती है उससे आगे वह बढ़ी हो, वह ऐसा नहीं मानती। जब उसे ही तुम्हारा ध्यान नहीं तो तुम्हारे विचारों, तुम्हार दिल, तुम्हारे दिमाग पर ही वह क्यों छाई हुई है !" रानी बोली

"नहीं, उसे भूल जाना मेरे बस में नहीं। मैं कैसे भूल जाऊं वह सब कुछ जो सपना नहीं वास्तविकता थी। सच था, बिल्कुल सच ! पिछले साल की ही तो बात है जब कला पहली बार नियुक्त होकर, हमारे कालेज मे आई थी। और हमारे ही विभाग में। और धीरे धीरे कालेज के मेरे जीवन की सीमा से अलग वह मेरे व्यक्तिगत जीवन में भी छाने लगी! परिचय को बढ़ना था, बढ़ता चला गया। मेरी प्रकृति की चंचलता, लापरवाही तथा किसी भी मामले में गम्भीर न होने की आदत से तो तुम परिचित ही हो। जीवन में अपने संबंध में आने वाली हर लड़की के साथ को भी एक मजाक और एक तमाशा समझ कर भूल जाना मेरे लिये कोई नई बात नहीं है। परन्तु इस बचपन तथा भटकन से भी जी अब ऊब गया है, दीदी। और कला से मिलने के बाद मेरे विचारों में एक परिवर्तन हुआ। कई दिन मैं सोचता रहा। राह में होने वाली कठिनाइयों का भी ध्यान आया। कई भय और शंकाओं ने मेरी राहें रोक लीं। मैं सोचता, हो सकता है उसके मातापिता जाति भेद के कारण न माने। मेरे घर वालों से भी शंका हो सकती थी, परन्तु विश्वास था मेरी खुशी के लिए कोई भी इन्कार नहीं कर सकेगा। क्योंकि मैं सोचता, उसमें सुघड़ता, प्रणयता, आत्मीयता सूझबूझ, गम्भीरता सभी कुछ तो है। कई बार कदम डगमगाए, परन्तु जब भी मैं उसे देखता, उसके बारे में सोचता, मेरे विचार और भी दृढ़ हो जाते। और इससे सम्बद्ध एक एक घटना मुझ तो जैसे कल की ही बात मालूम होती है। हां जब मैंने उसे पहला पत्र लिखा था "तुम्हें इस तरह पत्र लिखने की बात कभी भी मैं ने नहीं सोची थी। तुम मुझे जान गई हो और मैं तुम्हें। क्या हमारे लिये यह काफी नहीं है। शक्ल, जाति और संसार को मैं नहीं मानता। हाथ बढ़ा रहा हूँ, हिम्मत हो तो थाम लो, बोलो करती हो हिम्मत ?" मानता हूँ, पहल मेरी तरफ़ से थी। एक ठोस सुझाव था, इस संबंध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में। पूरी तरह से सोचने का उसे पूरा अवसर दिया था मैंने। वह चाहती तो इस हाथ को उसी समय झटक सकती थी। उसी समय लौट सकती थी, स्वयं को रोक सकती थी। राह में आने वाली हर कठिनाइयों के प्रत्येक रूप के हर पहलू की सीमाओं की परिसीमा को परख सकती थी। और उसने यह सब कुछ किया भी, इस पर सोचा भी। इस पर अपनी अभिन्न सहेली माया से कई बार बहस भी की। कई दिन वह परेशान रही! माया से उसने सहायता मांगी। माया की हां, और साथ ने उसके विचारों को दृढ़ता प्रदान की। हां माया, जिसका मेरे प्रति स्नेह तथा जिसमें मेरी इच्छा के प्रति सम्मान की भावना असीम थी। वह मेरे और कला के लिये सब कुछ करने के लिए तैयार थी, और वह सदा करती भी रही! और उसी के द्वारा कला ने एक दिन मुझ से मिलने की प्रार्थना की। वह स्वयं को रोक नहीं पाई। उसके हृदय में भी कुछ भाव उठे, और उसने उन्हें मुझ तक पहुंचाने की चेष्टा में मुझे बुलवा भेजा" कमल ने कहा!

"तुम फिर मिले उससे" रानी ने उत्सुकता से पूछा!

"हां, मैं पहली बार कला को उसके पत्र के बाद कालेज के जीवन के बाहर मिला। निश्चित समय तथा स्थान पर हम मिले! हम कितनी ही देर बातें करते रहे! उसने राह में आने वाली कठिनाइयों की बात छेड़ी। सुनी सुनी कर मुझे परखने का प्रयास किया। और हम एक दूसरे के प्रति एक विश्वास लेकर उस शाम लौटे। लेकिन दीदी, काश वह मुझे न मिली होती, काश, मैं वहां न जाता। लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ! कालेज में कला से रोज़ भेंट होती। एक दूसरे के प्रति रुचि बढ़ती चली गई! हम एक दूसरे का दुख सुख सुनते। कई योजनाएँ बनाते, अपने भविष्य की! संकोच, झिझक भय कहां थे ये सब! आज उन सब बातों की याद आती हैं तो फ़ीकी हंसी बरबस होठों पर फैल जाती है! सुनने और सोचने को यह बातें सब बेकार सी लगती हैं। कई छोटी छोटी घटनाएं रोज़ होतीं। उनमें उसका अपनापन झलकता। सहानुभूति की भावना से ऊपर एक अधिकार और अपनेपन की भावना झलकती। क्या ऐसी घटनाओं से ही हमें एकदूसरे को अधिक समझने का अवसर नहीं मिलता। क्या इन्हीं से हमारे संबंधों में दृढ़ता और गहराई और प्यार को बढ़ावा नहीं मिलता।"

"लेकिन कमल....." उसकी दीदी बोली!

"नहीं दीदी सुनो, बोलो नहीं। मेरी बात सुनो। उसके मन में विश्वास था मेरे प्रति, एक तड़प थी उसके मन में मेरे लिए! जिसको वह कई बार मेरे सामने स्वीकार भी कर चुकी थी! और इसी प्यार, विश्वास, तथा तड़प को लेकर हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसन्न थे । परन्तु एक दूसरे के प्रति हमारे बीच आवश्यकता से अधिक लगाव तथा रुचि को लोग शंका की दृष्टि से देखने लगे । लोगों की, दूसरे सहयोगियों की नज़रें हमीं पर आकर टिक सी गईं,और हमारे संबंधों के साथ कई-कहानियां जोड़ी जाने लगीं । बात उड़ने लगी, परन्तु मेरे कदम और दृढ़ होते गए ! लेकिन कला के पांव कांप गए ! और एक रोज़ माया के घर उसने मुझे बुलवा भेजा । मन में कई शंकाएं लेकर मैं माया के घर पहुंचा, जहां कला मेरी प्रतीक्षा कर रही थी ।" "वहां उससे क्या बातचीत हुई तेरी !" रानी ने पूछा ! "हां ! मन की सभी शंकाएं उससे कह दी मैंने और उससे उसका समाधान मांगा । उससे इस घुटन, जलन, तड़पन, सिसकन, वेदना के कारण को समाप्त कर जीवन मे एक ठोस कदम उठाने को कहा ! उससे स्पष्ट शब्दों में उसके मन की बात जानने की बात कही । उसने कई शिकायतें की, कई शिकवे सुनाए और मेरे प्रति अपन विश्वास, प्यार, अपनेपन और लगाव की बात दोहराई । परन्तु मैं आज इस मामले का फैसला, अंतिम, फैसला, कर लेना चाहता था । और इसीलिये मैंने कला से कहा "देखो कला, हमें इस बात का अब कोई अंतिम फ़ैसला करना ही होगा । लेकिन कला एक बात याद रखो कि तुमने जो भी फ़ैसला करना है उस पर स्थिर रहना । अगर आज तुमने कदम आगे बढ़ाया और साथ देन का वायदा कर, बाद में किसी भी कारण-वश अपना कदम पीछे हटा लिया तो उसका अंजाम कुछ भी हो सकता है । मैं बहुत भावुक हूँ और तुम्हारे बाद के बदल जाने की सूरत में उसकी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप मैं कुछ भी कर सकता हूँ। अच्छी तरह से सोच कर फ़ैसला देना । लौटना है तो अभी लौट जाओ । और अगर तुमने एक बार साथ कदम बढ़ा लिया तो फिर हर कीमत पर तुम्हें उस पर स्थिर रहना होगा परन्तु उसका कहना था—मैं स्वतंत्र नहीं हूँ, कमल! मैं पराधीन हूँ । मेरी भी एक सीमा है ! चाहती भी हूँ लेकिन मैं सब कुछ चाहते हुए भी कुछ नहीं कर सकती । मेरे पांव बन्धे हैं । समाज के बन्धन तोड़ कर और घरवालों को छोड़ कर तुम्हारे साथ चले चलने की शक्ति मुझ में नहीं है ! हमें इस बात को यही समाप्त करना होगा, कमल, विश्वास है तुम मुझे गलत नहीं समझोगे । मैं कुछ भी तो नहीं कर सकती तुम्हारे लिये.... और इतना कह वह फ़फक पड़ी । मैं चुपचाप बैठा सुन रहा था । दृढ़ता में ढील नहीं थी । मुझे कुछ भी नहीं सूझ रहा था । कुछ पल मौन बैठा रहा । जड़ता के कारण देह सुन्न हो रही थी । हृदय में एक बवण्डर था। पिघल कर वह बह तो जाना चाहता था किन्तु आंखें जैसे मरू हो गई थीं ! क्या कहता उससे । क्या समझाता उसे । उसने अपना फ़ैसला दे दिया था । अब कहने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह ही क्या गया था। फिर भी फ़ीकी हंसी हंस कर बोला, "पगली कहीं की, इसमें रोने की क्या बात है। तुमने जब फ़ैसला कर ही लिया है, तो बात यहीं समाप्त हो जाती है। और सोच समझ कर किए गए फ़ैसले के लिए दुखी होने की कोई ज़रूरत है क्या ....."

और मैं वहां से चला आया। मन बहुत दुखी हुआ। कई दिन परेशान रहा। समय किसी तरह बीतता गया। हम दोनों एक दूसरे को देखते और अपरिचितों की भांति एक दूसरे से अलग राह पकड़ लेते। परिचित फिर अपरिचित होने का नाटक कर रहे थे। जैसे उनकी पहचान ही न हो, आपस में कोई संबंध ही न हो। माया यह सब कुछ देखती और परेशान हो जाती। मैंने कला को भुला देना चाहा, हालांकि मैं जानता था यह बहुत ही कठिन है। अभी मैं स्वयं को इसके लिये पूरी तरह से तैयार करने में सफल भी नहीं हो पाया था कि एक रोज़ माया न कला का सन्देशा दिया। सम्भलते सम्भलते मेरे कदम फिर डगमगा गए। न चाहते हुए भी मैं कला से फिर मिला, और उसकी बात सुनकर मुझे बहुत ही हैरानी हुई, उसने कहा "कमल, तुम्हें भूल पाना अब मेरे बस में नहीं है। मैं सोचती हूँ हमें एक बार कोशिश तो कर देखनी चाहिए, ताकि पूरी जिन्दगी यह अफ़सोस तो न रह जाए कि हमने कोशिश ही नहीं कर देखी। हो सकता है कोई राह निकल आए!" और उसकी इन बातों ने मुझे दोबारा उसके संबंध में सोचने पर मजबूर कर दिया। लेकिन दीदी, जब बात उस रोज़ खत्म हो गई थी तो फिर बात को बढ़ाने की क्या ज़रूरत थी। लेकिन ऐसा फिर नहीं हुआ। हां दीदी, फिर ऐसा नहीं हो सका! और हुआ यह कि एक नया विश्वास और साथ पा हम दोनों फिर घुलमिल गए। हंसी, मज़ाक, छेड़छाड़ फिर शुरू हो गई और लोगों की आंखों में जैसे फिर हम खटकने लगे। बात फिर उड़ने लगी। और हम फिर चर्चा का विषय बन गए! और वह फिर स्थिर नहीं रह सकी! और कोई भी ठोस कदम उठाने से पहले मजबूर होकर मुझे तुझ से उसके पास जाकर उसके मन की ठीक बात जान लेने की बात कहनी ही पड़ी।

और उसे आज सब बातों से इन्कार है! वह अपने नाम के साथ मेरे नाम को जुड़ते देख बौखला उठी है। जब अपनी सीमाओं, अपने बन्धनों, अपने घर वालों के घेरे को तोड़ कर मेरे साथ कदम से कदम मिला कर चलने की उसमें हिम्मत नहीं थी तो उस रोज़ माया के घर में हुई बातचीत के बाद मुझ से मिलने की क्या ज़रूरत थी। मुझे उस दुनियां में लौटा ले चलने की क्या ज़रूरत थी, जहां वह मेरे साथ नहीं रह सकती। क्या ज़रूरत थी मुझे प्यार के झूठे वायदे देकर भुलावा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देने की। उसने बात वहीं क्यों नहीं खत्म कर दी। आज जब मैं बहुत दूर निकल आया हूँ तो वह मुझे दूर के एक मोड़ पर अकेला छोड़ कर स्वयं लौट जाना चाहती है। बदनामी और जगहंसाई का विषय केवल मुझे बना कर स्वयं को निर्दोष बताती है। उसे मैं किस हृदय से माफ़ कर सकता हूँ। उसने मुझे धोखा दिया है! मैं उससे इसका बदला अवश्य लूंगा" और कमल की आवाज़ भर आई!

रानी अपने भैया की बातें सुन रही थी। सोच रही थी। वह कला से, कमल के ज़िद्द करने पर मिली थीं। परन्तु कला को तो उन बातों से इन्कार था। लेकिन कमल पर भी अविश्वास नहीं किया जा सकता था, क्योंकि कमल ने कभी झूठ नहीं बोला था। फिर भी वह अपने भैया को बरबादी की राह पर चलते कैसे देख सकती थी। न जाने कमल क्या कर बैठे। प्रतिशोध की आग में कला को जलाते हुए उसे भी तो हानि हो सकती थी। उसको दुखी देख रानी का मन भी भर आया, फिर भी कमल को समझाते हुए बोली, "प्रतिशोध लेने में कोई बड़प्पन नहीं है, शोभा नहीं है। किसी लड़की से बदला लेना तो बहुत ही आसान होता है। कला को तुम बदनाम करोगे, उसके पत्रों उसके साथ, उसकी मुलाकातों की कहानी को दूसरों से कहोगे। उसके विश्वास को धोखा दोगे। परन्तु कमल, इन बातों के होते हुए भी एक बात तुम क्यों भूल जाते हो कि तुमने उसे प्यार किया है। मान लेती हूँ, उसने तुम्हें धोखा दिया है। परन्तु उसकी सीमाओं और विवशताओं के बारे में भी तो सोचो ज़रा। प्यार त्याग मांगता है, त्याग पगले। बदला लेना तो बहुत आसान है! परन्तु संसार बहुत खराब है। लेने वाले बहुत हैं देने वाला कोई नहीं। देने में महानता है। त्याग में शान्ति है। जीवन कितना छोटा है। दुख अनगिनत हैं, सुख कहां हैं। कितने लोग अपने होते हैं, कौन किसी का दर्द समझ पाता है। जीवन की लम्बी, थकित और दुखित किसी की गाथा कौन सुनता है! भावनाओं में बह कर तू उसका अहित करने की बात तो सोच रहा है! परन्तु इस में तेरी शान नहीं है। और इस तरह बदला ले लेने के बाद भी तुम्हें कभी शान्ति नहीं मिलेगी। यह जलन, तड़पन, और बढ़ जाएगी और इसके फलस्वरूप एक ऐसा तूफान उठेगा, जिसमें सब कुछ जल कर ख़ाक हो जाएगा और उसमें तेरा अपना जीवन जल जाएगा, कमल, झुलस जाएगा! उसे माफ़ कर दे। इसी में तुम्हें सुख मिलेगा। देख, उसकी तरफ़ से मैं हाथ बांध कर माफ़ी मांगती हूं। कमल, अपनी दीदी की खातिर उसे माफ कर दे। और उसका ध्यान छोड़ दे।"

'लेकिन दीदी, उसने मुझे धोखा दिया है, उसने....."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मानती हूँ, तेरी सब बातें मानती हूँ। उसने तुम्हें धोखा दिया है यह भी मान लेती हूँ। परन्तु अपनी ही लगाई हुई आग उसे स्वयं भीतर ही भीतर भस्म कर देगी। उसके मन में एक टीस, एक जलन, एक तड़प सदा रहेगी, कि उसने तुम्हें धोखा दिया है! आज चाहे वह कुछ कह ले परन्तु एक रोज़ उसे इस बात का ध्यान अवश्य आएगा। उस दिन वह तड़पेगी, रोयेगी परन्तु उसकी उस समय कोई नहीं सुनेगा। वायदा कर कह तू उसे कुछ नहीं कहेगा। उसके हित की बात कभी नहीं सोचेगा। दे वचन! गुनाहगार के गुनाह को माफ कर देना ही उसकी सब से बड़ी सज़ा है, मेरे भैया" रानी बोली

कमल इसका अपनी दीदी को कोई उत्तर न दे सका! उसके मन के भीतर विचारों का एक तान्ता सा लग गया। उसके मन में कई विचार आए और उनका स्थान थोड़ी देर में दूसरे विचारों ने ले लिया! रानी के अंतिम शब्द उसके कानों में गूंजने लगे। और वह सोचने लगा, तो क्या कला की सबसे बड़ी सज़ा यही है कि वह उसे माफ़ कर दे। आखिर उसने उसे प्यार किया है। उसकी हर कमी, हर दोष को दुलारा है। वह उस कला को कैसे कोई हानि पहुँचा सकेगा जिसे उसने अपना सर्वस्व माना है। त्याग में शांति है। प्रतिशोध में कुढ़न है, जलन है, दुख है। परिसीमाओं की सीमा को लांघ कर मेरे साथ कदम से कदम मिला कर चलना उसके वश की बात नहीं है शायद! और वह मुस्करा कर अपनी दीदी से इतना ही कह सका अन्त में "शायद तुम ठीक ही कहती हो, दीदी। उसके भय और अपने पशुपन को उभरने का अवसर कभी नहीं दूंगा। यूं समझ लो, उसे कुछ कह ही नहीं सकूंगा....."

और इसके आगे कमल कुछ नहीं बोल सका। परन्तु कमल की–उस–मुस्कराहट के पीछे छिपा दर्द, और उसकी आंखों में आए आंसू उसकी दीदी से छिप न सके!

● ● ●

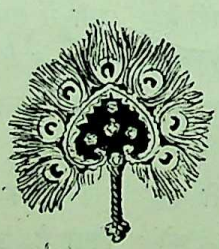

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकमात्र मन्दिर जो मानवनिर्मित नहीं

हिम-मंडित अमरनाथ की यात्रा

२३ अगस्त को पूर्णमाशी के दिन देश से हजारों यात्री १२७३० फुट की ऊंचाई पर स्थित, काश्मीर की प्रसिद्ध अमरनाथ गुफा में भगवान अमरनाथ के हिम पिंड के दर्शन को पहुंचे हैं ।

भारत में यही एक मन्दिर है, जो मानव-निर्मित नहीं है। यहां का शिवलिंग अपने आप हिम से बन जाता है और प्रसिद्धि है कि चन्द्रमा के घटने बढ़ने के साथ घटता बढ़ता रहता है । पूर्णिमा को यह अलौकिक पिंड पूर्ण आकार धारण करता है और अमावस्या को लोप हो जाता है ।

अत्यन्त प्राचीन काल से हर साल देश के कोने कोने से श्रद्धालु नर-नारी अमरनाथ की यात्रा को निकलते हैं । काश्मीर के प्राचीन इतिहासकार कल्हण (११५० ई०) ने राजतरंगिणी में राजा नर के राज्य काल के वर्णन में अमरनाथ यात्रा का उल्लेख किया है । कल्हण ने राजा नर का शासनकाल १०४८ से १००८ ई० पू० तक माना है । काश्मीर के उदार शासक सुलतान उनुल आबदीन ने भी, जिस ने १४२०-१४७१ ई० तक राज्य किया, श्री अमरनाथ गुफा के दर्शन किए । अकबर के दरबारी अबुल फज़ल ने भी अमरनाथ जी की यात्रा का उल्लेख किया है, जिस से पता चलता है कि अकबर के समय में भी हजारों यात्री प्रति वर्ष श्री अमरनाथ की यात्रा करते थे ।

श्री अमरनाथ की गुफा

श्री अमरनाथ गुफा पहलगाम से ३५ मील और श्रीनगर से ९५ मील दूर, समुद्र की सतह से १२७३० फुट की ऊंचाई पर बर्फ से ढके पर्वतों के बीच स्थित है । गुफा चूना पत्थर की है । आगे के भाग में गुफा की लम्बाई ५० गज और चौड़ाई ५० गज और बीच में ३० गज है । गुफा में एक साथ सैंकड़ों यात्री दर्शन व पूजा कर सकते हैं । गुफा के पास बहुत धीमे धीमे सरकने वाला हिमनद (ग्लेशियर) है और चारों ओर ऊंची बीहड़ पहाड़ियां हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहलगाम से अमरनाथ की यात्रा अत्यन्त सुन्दर साथ ही दुर्गम भी है। बीच में कठिन चढ़ाई और उतराई पड़ती है और कड़ी ठण्ड में हिमनद और तेज धार की पहाड़ी नदियों को पार करना पड़ता है। किन्तु चारों ओर की अपूर्व प्राकृतिक सुन्दरता को देख कर यात्री सब थकान और कष्ट भूल जाता है।

पहलगाम से ७ मील चलकर चन्दनवाड़ी पहला पड़ाव है, जहां यात्री रात को विश्राम लेते हैं। रास्ता अत्यन्त सुन्दर है। एक ओर ऊंचे पहाड़ हैं और दूसरी ओर दुग्ध गंगा की धवल धारा यात्री के साथ साथ चलती है।

इस के बाद १५०० फुट की कड़ी पिस्सूघाटी की चढ़ाई के बाद सुन्दर हरे–भरे रंग-बिरंगे जंगली फूलों से बिछे हुए मैदान हैं। इस के बाद यात्री ७ मील चल कर और १२०० फुट की चढ़ाई पार कर के वायुजन पहुंचता है, जहां से प्रसिद्ध शेषनाग झील एक मील रह जाती है। १० वर्ग मील में फैली यह झील हिम शिखरों से घिरी हुई है। इस में तैरते हुए बर्फ के टुकड़े सफेद हंसों के समान लगते हैं।

१४,००० फुट ऊंचे महागुणस दर्रे को पार करके यात्री नीचे उतर कर पंचतरिणी पहुंचता है जहां पांच नदियां समानांतर बहती हैं। इन नदियों की विस्तीर्ण घाटी बड़ी सुन्दर है। यहां से अमरनाथ गुफा ५ मील रह जाती है। यात्रा के अन्त में रास्ता सीधा है और दोनों ओर ऊंचे ऊंचे कैलाश, भैरों आदि शिखर लोहे के बने से दीखते हैं।

अमरनाथ जी की यात्रा में हर साल, जटाजूट धारी भभूत रमाए सैंकड़ों साधु होते हैं परन्तु अधिक संख्या साधारण संसारी जनों की होती है।

अमरनाथ जी की यात्रा बरसात में अगस्त के महीने में होती है क्योंकि इसी समय गुफा का रास्ता खुलता है। सितम्बर से जून तक गुफा बर्फ से ढकी रहती है। सावन की पूर्णिमा जिस दिन गुफा में अमरनाथ स्वामी के पूर्ण पिंड के दर्शन होते हैं रक्षा बन्धन की वजह से वैसे भी परम पवित्र दिन है।

संस्कृतियों का संगम

काश्मीर की प्राकृतिक सुषमा इतनी मनोहारी है कि इस के संस्कृतिक पक्ष की ओर यात्री का ध्यान जा पाता है। काश्मीर हिन्दु मुस्लिम और बौद्ध सांस्कृतियों का संगम स्थल है। आज भी तीनों संस्कृतियां जीती जागती साथ साथ फल फूल रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरनाथ जी की गुफा ही काश्मीर का एकमात्र पवित्र स्थल नहीं है, यहां अनेक और प्रसिद्ध मंदिर है। बारहवीं शताब्दी के कवि इतिहासकार कल्हण ने लिखा कि काश्मीर की तिल भर भी ज़मीन ऐसी नहीं है जिसे तीर्थ की संज्ञा न दी जा सकती हो।

जो नित्य प्रति रामायण सुनते थे

महाराजा रणजीत सिंह

देहरादून में १८ अगस्त को हिन्दी साहित्य समिति द्वारा आयोजित तुलसी जयन्ती समारोह के सभापति पद से भाषण करते हुए विद्वान डा० बलबीर सिंह ने कहा कि महाराजा रणजीत सिंह के राज्यकाल में श्री दरबार साहब की परिक्रमा में प्रतिदिन ज्ञानी संत सिंह रामचरितमानस की कथा किया करते थे और महाराजा रणजीत सिंह भी प्रतिदिन कथा सुनते थे। आप ने ज्ञानी संत सिंह द्वारा की हुई गोस्वामी तुलसी दास कृत रामायण की टीका उपस्थित जनों को दिखाई जो गुरुमुखी अक्षरों में थी।

शेकस्पीयर और तुलसीदास की तुलना करते हुए आप ने कहा कि शेकस्पीयर उस फोटोग्राफर के समान है जो डूबते हुए व्यक्ति की फोटो ले रहा है, और तुलसीदास केवल उस दृश्य का चित्रण ही नहीं करता अपितु भव सागर से तरने की भी सुझाता है।

['वीर प्रताप' से साभार]

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक समीक्षा

अनाड़ीराम और उसके साथी

मू० लेखक--श्री एन० नसोव

प्रकाशक--आत्माराम एंड संस, देहली ।

पृष्ठ संख्या--१६७

मूल्य--पांच रुपए ।

किशोर-साहित्य के लेखकों में श्री निकलाये विच नसोव का स्थान समकालीन सोवियत लेखकों में अन्यतम है और उनकी यह रचना 'प्रिक्लिउचेनिया नेज़नाई की ई एवो द्रुज़ेई', जिसका हिन्दी रूपान्तर 'अनाड़ी राम और उसके साथी' के रूप में प्रस्तुत किया गया है, अपने विषय की अत्यन्त लोकप्रिय एवं उत्कृष्ट रचना मानी जाती है । कहा जाता है कि सोवियत संघ में इस पुस्तक की ८ लाख से भी अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं और इस पुस्तक को राष्ट्रीय पुरस्कार के लिये भी चुना गया है ! हिन्दी में बाल-साहित्य की कमी यों तो सामूहिक रूप से है किन्तु किशोर वर्ग (तेरह वर्ष से सोलह-सत्रह वर्ष तक) के लिए उपयोगी पुस्तकों का तो नितान्त अभाव है । इस वर्ग के बालक या तो 'परी का जादू', 'किस्सा तोता मैना' जैसी पुस्तकें पढ़ते हैं जिनसे उनकी बौद्धिक रुचि अपरिष्कृत होती है अथवा नये साहित्य की वे पुस्तकें पढ़ते हैं जिनमें 'सैक्स' की समस्या को मनोवैज्ञानिक चित्रण की आड़ में काफी खुले रूप में चित्रित किया गया होता है । फलतः किसी भी प्रकार की रचनाओं द्वारा 'मनोरंजन और उपयोगिता' का वह सामंजस्य नहीं हो पाता जो इस वर्ग के बालक-पाठकों की अनिवार्य आवश्यकता है । ऐसी स्थिति में 'अनाड़ीराम और उसके साथी' का प्रकाशन निश्चय ही इस अभाव की पूर्त्ति के लिए एक प्रशंसनीय प्रयत्न है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक का मुख्य पात्र 'अनाड़ी राम' है जिसके कार्य-कलाप से सम्बन्धित मनोरंजक किन्तु उपयोगी घटनाओं का वर्णन छोटे-छोटे तीस अध्यायों के रूप में है। अनाड़ीराम तो अनाड़ीराम हैं ही बाकी पात्र भी जैसे सर्वश्री तमंचा सिंह, ज्ञानचन्द्र वंटिकानाथ, झटपटलाल, बड़बड़चंद, मातादीन, मिट्ठूलाल, अगरलाल, मगर लाल आदि अपने-अपने नामानुरूप गुणों के प्रतीक हैं। कहानी इतनी मनोरंजक है कि कहीं भी जी उकताता नहीं। इस पुस्तक की मनोरंजकता को परखने के लिए मैंने इसे प्रदीप और प्रमोद को पढ़ने के लिये दिया और दोनों ने एक सप्ताह में ही इसे समाप्त कर मुझे लौटा दिया और ऐसी ही और पुस्तक लाकर देने को कहा। जहां-तहां चित्र-योजना, चटपटी भाषा और रोचक वर्णन-शैली ने पुस्तक को और भी अधिक प्रभावपूर्ण बना दिया है। सब से बड़ी विशेषता तो यह कि रोचकता के साथ-साथ किशोरों के ज्ञान-वर्धन का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है। प्रत्येक अध्याय में किसी भी एक दो घटनाओं के बहाने कोई न कोई ऐसी बात कह दी गई है जिससे पढ़ने वालों का सामान्य ज्ञान बढ़े।

खटकने वाली बात सिर्फ एक दो जगह ही है। जैसे पृष्ठ २ पर किसी मुन्नी को देख कर किसी मुन्ने का यह गाना शुरू कर देना—'हमें तो लूट लिया मिलके.....' रूपान्तरकार श्री योगेन्द्र कुमार लल्ला की सुरुचि का प्रतीक नहीं! इस किस्म की हास्य कविताएं लिखना भले ही उपेक्षणीय हो सकें किन्तु किशोर-वय के बालकों के लिये उपयोगी पुस्तक में ऐसे बाज़ारू गीत की तुक देना उपयुक्त नहीं कहा जा सकता!

पुस्तक की छपाई-सफाई सुरुचिपूर्ण और प्रशंसनीय है! आशा है लब्ध-प्रतिष्ठ प्रकाशक महोदय अपने नये प्रकाशनों द्वारा इस क्षेत्र में अभाव-पूर्त्ति कर कीर्ति अर्जित करते रहेंगे!

—रञ्जन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालिख और लाली

लेखक—राजेन्द्र कुमार शर्मा ।
प्रकाशक—आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली—६
मूल्य—दो रुपया ।
पृष्ठ—१११

कालिख और लाली—श्री राजेन्द्र शर्मा द्वारा लिखा हुआ एकांकियों का एक संग्रह है । इसमें लेखक ने आठ एकांकी रखे हैं । सभी एकांकी किसी न किसी समस्या को लिए हुए हैं । लेखक काफी हद तक इनमें सफल रहा है । "कालिख और लाली"—नामक एकांकी देश की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है । इसमें व्यापारियों के हथकण्डों और स्वार्थपरायणता को, और नारी चरित्र की उज्ज्वलता का सुन्दर वर्णन है । इसमें लेखक का यह बताना उद्देश्य है कि नारी जाति ही पतनोन्मुख समाज को बचा सकती है ।

"ए" क्लास दिल्ली"—मध्यवर्गीय समाज का चित्र प्रस्तुत करता है परन्तु इसमें लेखक ने कहीं कहीं अतिशयोक्ति से काम लिया है, जिससे अस्वाभाविकता आ गई है ।

"आ बैल मुझे मार"—परिवार नियोजन की समस्याओं को लिए हुए है । समस्या का निर्वाह सुन्दर ढंग से हुआ है । पर नाम रखते सावधानी से काम नहीं लिया ।—यदि इसका नाम 'परिवार नियोजन" ही होता तो अधिक अच्छा होता ।

"रियाज" और "हाथ की सफाई"—अच्छे बन पड़े हैं । इनमें लेखक सफल है ।

"तलाक ब्यूरो" एक सुन्दर व्यंग्य है—परन्तु लेखक कथावस्तु का ठीक निर्वाह नहीं कर पाया । भोलाराम जैसे व्यक्ति समाज में विद्यमान तो अवश्य हैं—परन्तु ऐसे नहीं—जैसे दिखाए गए हैं । शायद लेखक पश्चिमीय ढंग से अधिक प्रभावित हो । इस विषय में हम अधिक नहीं कह सकते ।

"नया मोड़" में सच्चे प्रेम का और सच्ची मित्रता का निरूपण है । परन्तु, गोलाराम—तोपचन्द द्वारा जो आंकड़े प्रस्तुत किए गए हैं—इससे लेखक ने इस वर्ग के चरित्र को जान बूझ कर गिराया है—जो कि जंचता नहीं—नाम इसका युक्तियुक्त नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पहली [illegible]" एक सुन्दर [illegible] का [illegible] और [illegible] है।

सभी एकांकियों की भाषा सरस-सरल है। शैली सुन्दर है। अभिनय के राज इनमें अवश्य पाए जाते हैं। कहीं कहीं अस्वाभाविकता के अवश्य दर्शन होते हैं। वैसे लेखक का यह सफल और सुन्दर प्रयास है। इसके लिये शर्मा जी हमारी बधाई के पात्र हैं।

इसका प्रकाशन भी सुन्दर है--प्रकाशक भी बधाई का पात्र है। गैट-अप सुन्दर है। मूल्य ठीक ही है।

—मनोहर मैत्रेय

●

वारिस

लेखक का नाम--राजेन्द्र कुमार शर्मा।

प्रकाशक का नाम--आत्माराम एण्ड सन्ज, काश्मीरी गेट, दिल्ली।

मूल्य--२ रुपए ५० पैसे।

यह पुस्तक 'वारिस' अंग्रेज़ी के एक नाटक 'The Heiress" का हिन्दी अनुवाद है। मूल-लेखक (Ruth and Augustus Goet) रूथ तथा आगस्टस गुट्स है। यह अनुवाद श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा ने जो हिन्दी के उदीयमान अनुवादक हैं किया है। अनुवाद बहुत सुन्दर और सरल हिन्दी में किया गया है। जिससे मूल लेखक के भाव समझने में कठिनाई नहीं होती।

हिन्दी भाषा का साहित्य अनुवाद की दृष्टि से अभी पिछड़ा हुआ है। भाषाओं में आदान प्रदान आवश्यक है।

हम आशा रखते हैं कि योग्य अनुवादक अंग्रेज़ी के उच्च कोटि के ग्रन्थों का अनुवाद हिन्दी में प्रस्तुत करेंगे जिससे राष्ट्र भाषा की श्रीवृद्धि हो।

—एम० शर्मा

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध और शांति

सभी युद्ध अनैतिक हैं, युद्धों की सभी तैयारियां अनैतिक हैं; युद्ध के द्वारा लादे गये सभी परिणाम अनैतिक हैं।

●

युद्ध हमेशा बुरी चीज रहा है, लेकिन अब तो ऐसी भयानक वस्तु हो गया है कि वह संसार का विनाश कर सकता है। इसलिए युद्ध का अन्त करना अनिवार्य है।

●

युद्ध न केवल मनुष्य के जीवन से वरन उसके मस्तिष्क से भी दूर होना चाहिए। इसका अर्थ है विभिन्न प्रणालियों वाले देशों के बीच शान्ति-पूर्ण सह-अस्तित्व को पूर्ण मान्यता देना।

●

शान्ति तभी आ सकती है जबकि सब राष्ट्र स्वतन्त्र हों और मनुष्यों को सब जगह स्वतन्त्रता, सुरक्षा और समान अवसर प्राप्त हों।

—जवाहरलाल नेहरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष सूचना

स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू जी की पुण्य स्मृति में उनके
जन्म-दिवस के अवसर पर हिन्दी विभाग, पञ्जाब
'जन–साहित्य' का नवम्बर-दिसम्बर
१९६४ का अंक

नेहरू स्मृति विशेषांक

के रूप में प्रकाशित कर रहा है जिसमें भारत के
सुविख्यात लेखकों एवं नेताओं द्वारा
श्री नेहरू जी के जीवन की
सर्वांगीण झाँकी प्रस्तुत करने
की योजना है ।

लेखकों एवं पाठकों से प्रार्थना है कि वे अपनी प्रति एक रुपया अग्रिम
भेज सुरक्षित करवालें । ऐसा न हो बाद में पछताना पड़े ।

—सम्पादक

०४८२५२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी विभाग, पंजाब के दो अनूठे मासिक प्रकाशन

20222

स
प्त
सि
न्धु

ज
न
सा
हि
त्य

शोधपूर्ण एवं आलोचनात्मक साहित्यिक प्रबंधों का एक बोधक संचयन।

व्यंग्य-विनोद एवं सृजनात्मक सरस साहित्य का एक रोचक संकलन।

दोनों पत्रिकाएँ डी० पी० आई०, पंजाब, डायरैक्टर पंचायत, पंजाब, तथा संचालक, लोक शिक्षण, मध्यप्रदेश, द्वारा पंजाब के सभी स्कूलों, कालेजों, लायब्रेरियों एवं पंचायतों तथा मध्यप्रदेश के स्कूलों, कालेजों एवं लायब्रेरियों के लिए स्वीकृत हैं।

बढ़िया काग़ज़, सुन्दर छपाई, आकर्षक सैट-अप

प्रत्येक का :—

वार्षिक ६ रुपये — एक प्रति ५० पैसे

आज ही निदेशक, हिन्दी विभाग, पंजाब, पटियाला को मनीआर्डर भेजकर ग्राहक बनिए।

श्री लाल सिंह, डायरैक्टर जनरल, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला द्वारा प्रिंटिंग एण्ड स्टेशनरी डिपार्टमैंट, पंजाब, पटियाला से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

सम्पादक—डा० परमानन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Checked
1996 2006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri